विद्यापति ठाकुर की पदावली

श्रीनगेन्द्रनाथ गुप्त

द्वारा

संकलित और सम्पादित

श्रीमहाराज रमेश्वरसिंह महोदय

दर्भङ्गानरेश के व्यय से मुद्रित

इंडियन प्रेस, प्रयाग में मुद्रित

१९१०

विद्यापति ।

वन्दना ।

१

दूती ।

नन्दकनन्दन कदंबेरि तरु तरे धिरे धिरे मुरलि बलाव ।
समय संकेत निकेतन बइसल बेरि बेरि बोलि पठाव ॥ २ ॥
सामरी तोरा लागि अनुखने विकल मुरारि ॥ ३ ॥
जमुनाक तिर उपवन उदवेगल फिरि फिरि ततहि निहारि ।
गोरस बिके अवइते जाइते जनि जनि पुछ बनमारि ॥ ५ ॥
तोंहे मतिमान सुमति मधुसूदन वचन सुनह किछु मोरा ।
भनइ विद्यापति सुन बरजौवति बन्दह नन्दकिसोरा ॥ ७ ॥

---

१) बलाव = बजाता हे ।
३) सामरी = श्यामा, सुन्दरी ।
४) उदवेगल = उद्वेग सहित ।
५) गोरस = दुग्ध ।
६) मतिमान = अनुरक्त । हे सुमति, मेरी वचन कुछ सुनो, मधुसुदन तुम्हारे प्रति अनुरक्त हैं ।
७) भनइ = बोलता है । बरजौवति = श्रेष्ठ युवति ।

राधा वन्दना ।

२

देख देख राधा रूप अपार ।
अपरुब के विहि आनि मिलाओल खिति तल लावनि सार ॥ २ ॥
अङ्गहि अङ्ग अनङ्ग मुरछायत हेरए पड़इ अथीर ।
मनमथ कोटि मथन करु ये जेन से हेरि महिमह गीर ॥ ४ ॥
कत कत लखिमी चरनतल नेउछय रङ्गिनि हेरि विभोरि ।
करु अभिलाष मनहि पदपङ्कज अहोनिशि कोरि अगोरि ॥ ६ ॥

(४) महिमह = धरणीतल ।
(५) नेउछय = नौछावर । विभोरि = विह्वल ।

——:o:——

वयःसन्धि ।

३

दूती ।

शैशव यौवन दुहु मिलि गेल । श्रवणक पथ दुहु लोचन लेल ॥२॥
वचनक चातुरि लहु लहु हास । धरनिये चाँद करल परगास ॥४॥
मुकुर लइ अब करत शिङ्गार । सखि पूछइ कैसे सुरत बिहार ॥६॥
निरजने उरज हेरइ कतबेरि । हसइत अपन पयोधर हेरि ॥८॥
पहिल बदरि सम पुन नवरङ्ग । दिने दिने अनङ्ग अगोरल अङ्ग ॥१०॥
माधव पेखल अपरुब बाला । शैशव यौवन दुहु एक भेला ॥१२॥
विद्यापति कह तुहु अगेयानि । दुहु एक योग इहके कह सयानि ॥१४॥

(३) लहु = लघु ।
(९) बदरि = बेर । नवरङ्ग = नारङ्गी, नीँबू ।
(१०) अगोरल = घेर लिया, पहरा दिया ।
(११) पेखल = देखना ।

माधव ।

४

शैशव यौवन दरशन भेल । दुहु दल बले दन्द परि गेल ॥२॥
कबहु बाँधय कच कबहु बिथारि । कबहु झाँपय अङ्ग कबहु उघारि ॥४॥
अति थिर नयन अथिर किछु भेल । उरज उदय थल लालिम देल ॥६॥
चञ्चल चरन चित चञ्चल भान । जागल मनसिज मुदित नयान ॥८॥
विद्यापति कह सुन वर कान । धैरज धरह मिलायब आन ॥१०॥

---

(३) कच = केश । बिथारि = खोल देना ।
(८) मुदित = आनन्दित ।
(१०) आन = लेआ कर ।

—:o:—

दूती ।

५

शैशव यौवन दरशन भेल । दुहु पथ हेरइत मनसिज गेल ॥२॥
मदनक भाव पहिल परचार । भिन जनें देल भिन अधिकार ॥४॥
कटिक गौरव पाओल नितम्ब । एकक खीन अओके अवलम्ब ॥६॥
प्रकट हास अब गोपत भेल । उरज प्रकट अब तन्हिक लेल ॥८॥
चरन चपल गति लोचन पाव । लोचनक धैरज पदतले पाव ॥१०॥
नवकविशेखर कि कहइत पार । भिन भिन राज भिन बेवहार ॥१२॥

---

(६) अओके = दूसरा ।
(८) तन्हिक = तिसरा ।
(१२) नवकविशेखर = कवि विद्यापति ठाकुर की उपाधि ।

दूती ।

६

किछु किछु उतपति अङ्कुर भेल । चरन चपल गति लोचन लेल ॥२॥
अब सब खन रहु आँचरे हात । लाजे सखि गने न पुछय बात ॥४॥
कि कहव माधव वयसक सन्धि । हेरइते मनसिज मन रहु बन्धि ॥६॥
तइअओ काम हृदय अनुपाम । रोपल घट उचल करि ठाम ॥८॥
शुनइते रस कथा थापय चीत । यइसे कुरङ्गिनि शुनए सङ्गीत ॥१०॥
शैशव यौवन उपजल बाद । केओ न मान ए जय अवसाद ॥१२॥
विद्यापति कौतुक बलिहारि । शैशव से तनु छोड़ नहि पारि ॥१४॥

(१) अङ्कुर=उरजाङ्कुर ।
(७) तइअओ=तथापि ।
(८) रोपल घट उचल करि ठाम=ऊंचा स्थान देख कर घट (कुच) स्थापन किया ।

—:o:—

दूती ।

७

दिने दिने उन्नत पयोधर पीन । वाढ़ल नितम्ब माझ भेल खीन ॥२॥
आवे मदन बढ़ाओल दीठ । शैशव सकल चमकि देल पीठ ॥४॥
शैशव छोड़ल शशिमुखि देह । खत देइ तेजल त्रिबलि तिन रेह ॥६॥
अब भेल यौवन वङ्किम दीठ । उपजल लाज हास भेल मीठ ॥८॥
दिने दिने अनङ्ग अगोरल अङ्ग । दलपति पराभवे सैनक भङ्ग ॥१०॥
तकर आगे तोहर परसङ्ग । बूझि करव जे नह काज भङ्ग ॥१४॥
सुकवि विद्यापति कह पुन फोय । राधा रतन जैसे तुय होय ॥१२॥

(४) देल पीठ=पृष्ठ दिया, भाग गया ।
(६) खत=नासा खत (मट्टी में नाक घसना)
(१०) दलपति=शैशव । (जब शैशव गया तो शैशव के सकल लक्षण जाते रहे)
(११-१२) तिसके सामने तुम्हारा प्रसङ्ग करती हूं अर्थात् तुम्हारा बात कहती हूं । ऐसा बूझके काम करना के कर्म भग नहीं हो ।
(१३) फोय=खोलकर (साफ़ साफ़)

दूती ।

८

पहिल बदरि कुच पुन नवरङ्ग । दिने दिने बाढय पिड़य अनङ्ग ॥२॥
से पुन भइ गेल बीजकपोर । अब कुच बाढ़ल सिरिफल जोर ॥४॥
माधव पेखल रमनि सन्धान । घाटहि भेटल करत सिनान ॥६॥
तनु शुक बसन हिरदय लागि । ये पुरुख देखव ताकर भागि ॥८॥
उरहि लोलित चॉचर केश । चामरे झॉपल कनकमहेश ॥१०॥
भनह विद्यापति शुनह मुरारि । सुपुरुख विलसय से वरनारि ॥१२॥

(३) बीजकपोर = बीजपूर (बड़ा नींबू)
(७) शुक = कोमल (सुकुमार)
(१०) चामरे झॉपल कनक महेश = उरस्थलपर केश कैसा छोटा जैसा चामर से स्वर्ण महेश (पयोधर) झॉप दिया ।

—— ०: ——

माधव ।

९

खने खन नयन कोन अनुसरई । खने खन बसन धूलि तनु भरई ॥२॥
खने खन दशन छटा छट हास । खने खन अधर आगे गहु वास ॥४॥
चउकि चलय खने खन चलु मन्द । मनमथ पाठ पहिल अनुबन्ध ॥६॥
हृदय मुकुलि हेरि हेरि थोर । खने आचर दई खने होय भोर ॥८॥
बाला शैशव तारुन भेठ । लखइ न पारिअ जेठ कनेठ ॥१०॥
विद्यापति कह शुन वर कान । तरुनिम शैशव चिन्हइ न जान ॥१२॥

(४) गहु = ग्रहण करती है ।
(५) चउकि = चौंक कर ।
(१०) कौन बड़ा कौन छोटा अर्थात् शैशव प्रबल अथवा यौवन प्रबल यह लक्षित नहीं होता है ।
(१२) तरुनिम = तारुण्य ।

दूती ।

१०

खन भरि नहि रह गुरुजन माझे । वेकत अङ्ग न झपावय लाजे ॥२॥
वालाजन सङ्गे यव रहइ । तरुनी पाइ परिहास तँहि करइ ॥४॥
माधव तुय लागि भेटल रमनी । के कहु वाला के कहु तरुनी ॥६॥
केलिक रभस यव शुने आने । अनतए हेरि ततहि दए काने ॥८॥
इथे यदि केओ करए परचारी । कॉदन माखी हसि दए गारी ॥१०॥
सुकवि विद्यापति भाने । बाला चरित रसिक जन जाने ॥१२॥

(४) तॅहि = तिसको ।
(७) आने = दूसरे के पास ।
(९) परचारी = ठट्ठा ।
(१०) माखी = मिला कर ।

दूती ।

११

भौंह भाङ्गि लोचन भेल आड़ । तैअओ न शैशव सीमा छाड़ ॥२॥
आवे हसि हृदय चीर लए थोए । कुच कञ्चन अंकुरए गोए ॥४॥
हेरि हल माधव कए अवधान । जौवन परसे सुमुखि आवे आन ॥६॥
सखि पूछइते आवे दरसए लाज । सीचि सुधाए अध बोलिअ बाज ॥८॥
एत दिन शैशवे लाओल साठ । आवे सबे मदने पढ़ाउलि पाठ ॥१०॥

(१) आड = वक्र (कटाक्ष) ।
(३) थोए = रखती है ।
(४) गोए = गोपन करती है ।
(५) हल = चले। ।
(६) आन = अन्य रूप ।
(८) वाज = बोलना ।
(९) साठ = साथ ।

दूती ।

१२

पीन पयोधर दूबरि गता । मेरु उपजल कनक लता ॥ २ ॥
ए कान्ह ए कान्ह तोरि दोहाई । अति अपुरुब देखलि साई ॥ ४ ॥
मुख मनोहर अधर रङ्गे । फूललि मधुरि कमल सङ्गे ॥ ६ ॥
लोचन जुगल भृङ्ग अकारे । मधुक मातल उड़ए न पारे ॥ ८ ॥
भँऊहेरि कथा पूछह जनू । मदने जोड़लि काजर धनू ॥१०॥
भने विद्यापति दूति वचने । एत सुनि कान्ह करु गमने ॥१२॥

---

(१) दूवरि=क्षीणा (तन्वी)
(२) गता = गात्र । (मानो कि कनकलता में मेरु उत्पन्न हुआ अर्थात् शरीर क्षीण परन्तु पयोधर पूर्ण)
(४) साई=उसको । (६) मधुरि = वन्धूलिपुष्प । (९) जनू=नहीं ।

—:०.—

दूती ।

१३

जेहे अवयव पुरुब समय निचर विनु विकार ।
से आवे जाहु ताहु देखि झापए चिन्हिमि न वेवहार ॥ २ ॥
कन्हा तुरित शुनसि आए ।
रूप देखते नयन भुलल सरूप तोरि दोहाए ॥ ४ ॥
सैसव वापु बहीरि फेदाएल जौवने गहल पास ।
जेओ किछु धनि बिरुह बोलए से सेओ सुधा सम भास ॥ ६ ॥
जौवन सैसव खेदए लागल छाड़ि देहे मोर ठाम ।
एत दिन रस तोहे विरसल अबहु नहि बिराम ॥ ८ ॥

---

(१) निचर=निश्चल । (२) चिन्हिमि=मै नहीं चीन्हती (जानती) ।
(३) शुनसि आए=आकर सुनो । (५) वापु=विचारा । फेदाएल—खेद दिया ।
(६) विरुह=विरोध, क्रोध वाक्य । (८) विरसल=रस लेकर नीरस कर दिया ।

दूती ।

१४

कि आरे नव जौवन अभिरामा ।
जत देखल तत कहहि न पारिअ छओो अनुपम एक ठामा ॥ २ ॥
हरिन इन्दु अरबिन्द करिणि हिम पिक बूझ अनुमानी ।
नयन बयन परिमल गति तनु रुचि अओो अति सुललित बानी ॥ ४ ॥
कुच जुग पर चिकुर फुजि पसरल ता अरुझायल हारा ।
जनि सुमेरु उपर मिलि ऊगल चाँद बिहुन सबे तारा ॥ ६ ॥
लोल कपोल ललित माल कुण्डल अधर बिम्ब अध जाई ।
भौंह भमर नासा पुट सुन्दर से देखि कीर लजाई ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति से बर नागरि आन न पावए कोई ।
कंसदलन नारायन सुन्दर तसु रङ्गिनी पए होई ॥ १० ॥

---

(२) छओो अनुपम एक ठामा = एक स्थान में छ अनुपम वस्तु देखी ।
(३, ४) छ. सामग्री की वर्णना—हरिनतुल्य नयन, इन्दु बयन, अरविन्द परिमल, करिणी गति, हिम तनुरुचि, पिक सुललित बानी ।
(५) फुजि परसल = खुल कर फैल गया ।
(६) अरुझायल = लपट गया ।
(७) बिहुन = विहीन । अध जाई = नीचे जाता है
तुलना में बिम्ब हार मान
(८) कीर = शुक पक्षी ।
(१०) तसु = (तस्य) तिसका ।

दूती ।

१५

लघु लघु संचर कुटिल कटाख । दुअओ नयन लह एकहोक लाख ॥२॥
नयन बयन दुइ उपमा देल । एक कमल दुइ खञ्जन खेल ॥ ४ ॥
कन्हाइ नयना हालिअ निवारि ।
जे अनुपम उपभोग न आवए की फल ताहि निहारि ॥ ६ ॥
चाँद गगन बस अओ तारागन सूर उगल परचारि ।
निचय सुमेरु अथिक कनकाचल आनव कओने उपारि ॥ ८ ॥
जे चूरू कए सायर सोखल जिनल सुरासुर मारि ।
जल थल नाव समहि सम चालए से पावए एहि नारि ॥ १० ॥
भनइ विद्यापति जनु हरड़ावह नाह न हियरा लाग ।
दूती वचन थिर कए मानव राए सिवसिंह बड भाग ॥ १२ ॥

(२) दो नयन एक लक्ष का समान अनुमान होता है ।
(३) हलिय=चलो ।
(८) अथिक=है । उपारि=उखाड़ कर ।
(११) जनु हरड़ावह=जल्दी नहीं करो ।

माधव ।

१६

कनक लता अरविन्दा । दमना माझ उगल जनि चन्दा ॥२॥
केओ बोले सैवल छपला । केओ बोले नहि नहि मेघे झपला ॥४॥
केओ बोल भमए भमरा । केओ बोल नहि नहि चरए चकोरा ॥६॥
संसय पड़ल सबे देखी । केओ बोलए ताहि जुगुति विसेखी ॥८॥
भनइ विद्यापति गावे । बड पुने गुनमति पुनमत पावे ॥ १० ॥

(२) दमना=दौना (द्रोणपुष्प)

दूती ।

१७

माधव कि कहब सुन्दरि रूपे ।
कतेक जतन विहि आनि समारल देखलि नयन सरूपे ॥ २ ॥
पल्लवराज चरणयुग शोभित गति गजराजक भाने ।
कनक केदलि पर सिंह समारल तापर मेरु समाने ॥ ४ ॥
मेरु उपर दुइ कमल फुलाएल नाल बिना रुचि पाई ।
मणिमय हार धार बहु सुरसरि तँइ नहि कमल सुखाई ॥ ६ ॥
अधर बिम्ब सन दशन दाड़िम विजु रवि शशि उगथिक पासे ।
राहु दूरि बस नियरो न आवथि तँइ नहि करथि गरासे ॥ ८ ॥
सारङ्ग नयन वचन पुन सारङ्ग सारङ्ग तसु समधाने ।
सारङ्ग उपर उगल दस सारङ्ग केलि करथि मधुपाने ॥ १० ॥
भनहि विद्यापति सुन वरजौवति एहन जगत नहि आने ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन लखिमादेइपतिभाने ॥ १२ ॥

(२) समारल = सजाया ।
(१०) सारङ्ग = हरिन । सारङ्ग = कोयल । सारङ्ग = कामदेव ॥ समधाने = सन्धाने । सारङ्ग = पद्म (ललाट) । सारङ्ग = भ्रमर ।
(१२) देइ = देवी ।

—·०:—

माधव ।

१८

मञे तो आज देखलि कुरङ्गिनयनिआ ।
सरदक चान्द वदनिआ ॥ २ ॥
कनक लता जनि कुन्दि वैसाओल कुच जुग रतन कटोरवा लो ।
दशन जोति जनि मोति वैसाओल अधर तसु पवारवा लो ॥ ४ ॥

(३) कटोरवा = कटोरा ।

माधव ।

१६

जुगल सैल सिम हिमकर देखल एक कमल दुइ जोति रे ।
फुलालि मधुरि फुल सिन्दुर लोटाएल पाँति बइसलि गजमोति रे ॥२॥
आज देखल जत के पतिआएत अपरुब विहि निरमाण रे ॥३॥
विपरित कनक कदालि तर सोभित थलपङ्कज के रूप रे ॥४॥
तथहुँ मनोहर बाजन बाजए जनि जगे मनसिज भूप रे ॥५॥
भनइ विद्यापति एहु पूरव पुन तह ऐसनि भजए रसमन्त रे ।
बुझए सकल रस नृप सिवसिंघ लखिमादेइकर कन्त रे ॥७॥

---

(२) अधर और दन्त का वर्णन ।
(४) ऊरु और चरण ।
(५) नूपुर ध्वनि ।

—:०:—

माधव ।

२०

अधर सुशोभित बदन सुछन्द । मधुरी फूले पूजू अरबिन्द ॥ २ ॥
तहु दुहु सुललित नयन सामरा । विमल कमल दल बइसल भमरा ॥४॥
विशेखि न देखलि ए निरमलि रमनी । सुर पुर सञो चलि आइलि गजगमनी॥६॥
गिम सञो लावल मुकुता हारे । कुच जुग चकेव चरइ गङ्गाधारे ॥८॥
भनइ विद्यापति कविकण्ठहार । रस बूझ शिवसिंह नृप महोदार ॥१०॥

---

(५) विशेखि=विशेष, उत्तम ।
(९) कविकण्ठहार=विद्यापति ठाकुर की उपाधि ।

—:०:—

माधव ।

२१

चाँद सार लए मुख घटना करु लोचन चकित चकोरे ॥
अमिय धोए आँचरे जनि पोछल दह दिस भेल उजोरे ॥ २ ॥
कामिनि कोने गढ़ली ।
रूप सरूप मोहि कहइते असम्भव लोचन लागि रहली ॥४॥
गुरु नितम्ब भरे चलए न पारए माझ खीनिम निमाइ ।
भाँगि जाइति मनसिजे धरि राखलि त्रिवलि लता अरुझाइ ॥६॥
भनइ विद्यापति अदभुत कौतुक इ सब वचन सरूपे ।
रूपनरायन इ रस जानथि सिवसिंह मिथिला भूपे ॥८॥

---

(५) खीनिम=क्षीण, कृश । निमाइ=निर्मित ।
(६) भाँगि=टूट जाना । अरुझाइ=लपेट कर ।

—.o:—

दूती ।

२२

शुनह नागर कान। राजकुमरि राधिका नाम ॥२॥
जटिला वधू नवीन बालि । अपन सोभावे कर खेयालि ॥४॥
रस न परशे तकर अङ्ग । कैसने होयब तोहर सङ्ग ।
भने विद्यापति न शुने नीत । ता विनु कानू कि धरव चीत ॥८॥

---

(३) बालि=बाला ।
(४) खेयालि=खेल ।

दूती ।

२३

सुधामुखि के विहि निरमिल बाला ।
अपरुब रूप मनोभव मङ्गल त्रिभुवन विजयी माला ॥२॥
सुन्दर वदन चारु अरु लोचन काजरे रञ्जित भेला ।
कनक कमल माझे काल भुजङ्गिनि शिरियुत खञ्जन खेला ॥४॥
नाभि विवर सजे लोम लतावलि भुजगि निशास पियासा ।
नासा खगपति चञ्चु भरम भये कुच गिरि सन्धि निवासा ॥६॥
तिन वान मदन तेजल तिन भुवने अवधि रहल दउ वाने ।
विधि वड़ दारुण वधइते रसिक जन सौंपल तोहर नयाने ॥८॥
भनइ विद्यापति शुन वरयुवति इह रस केओ पय जाने ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमाने ॥१०॥

(१०) रमाने = रमण, वल्लभ ।

(सखीसे सखी)

२४

धनि मुख मण्डल चान्द विराजित लोचन खञ्जन भाँति ।
मदन चाप जिनि भौंह लग युग दशनहि मोतिम पाँति ॥२॥
सखि हेर रमन मोहिनि राइ ।
कत कत विदगध हेरितहि मुरछित मदन पराभव पाइ ॥४॥
कनक बिरोचि मनिहार विलम्बित अधरहि बिम्बु अकारा ।
नव उरज पर मोति विरोचित सुमेरु सुरसरिधारा ॥६॥

(५) विरोचि = विरचित ।
(६) सुरसरि = सुरसरित्, गङ्गा ।

(सखी के प्रति सखी)

२५

जाइति देखलि पथ नागरि सजनि गे आगरि सुबुधि सेयानि ।
कनक लता सनि सुन्दरि सजनि गे बिहि निरमाओल आनि ॥२॥
हस्ती गमन जकाँ चलइति सजनि गे देखइत राजकुमारि ।
जनिकर एहनि सोहागिनि सजनि गे पाओल पदारथ चारि ॥४॥
नील बसन तन घेरलि सजनि गे शिर देल चिकुर समारि ।
तापर भमरा पिबय रस सजनि गे पइसल पॉखि पसारि ॥६॥
केहरि सम कटि गुन अछि सजनि गे लोचन अम्बुजधारि ।
विद्यापति कवि गाओल सजनि गे गुन पाओलि अवधारि ॥८॥

(१) आगरि = अग्रगण्या ।
(३) जकाँ = तुल्य ।
(४) पदारथ चारि = चतुर्वर्गफल ।
(७) केहरि = केशरी, सिंह ।

—.०.—

सखी ।

२६

पथ गति नयने मिलल राधा कान । दुहु मने मनसिज पुरल सन्धान ॥२॥
दुहु मुख हेरइते दुहु भेल भोर । समय नहिं बूझत अचतुर चोर ॥४॥
विदगधि सङ्गिनि सब रस जान । कुटिल नयने कयल सावधान ॥६॥
चलल राजपथे दुहु उरझाइ । कह कविशेखर दुहु चतुराइ ॥८॥

(७) उरझाइ = मलिन ।

दूती ।

२७

भल भेल दम्पति शैशव गेल । चरन चपलता लोचने लेल ॥२॥
दुहुक नयन कर दूतक काज । भूषण भए परिणत भेल लाज ॥४॥
आवे अनुखन देअ आँचर हाथ । वाज सखी सञे नत कए माथ ॥६॥
हमे अवधारल सुन सुन कान्ह । नागर करथु अपन अवधान ॥८॥
भँउह धनुपि गुण काजर रेख । मारति रहत पोख अवसेख ॥१०॥
रस मय विद्यापति कवि गाव । राजा शिवसिंह बूझ रस भाव ॥१२॥

---

(१०) पोख=पुंख, तीर का अधोभाग ।

—:०:—

(माधव का अनुराग)

दूती ।

२८

फूजलि कवरि अवनत आनन कुच परसए परचारि ।
कामे कमल लए कनक सम्भू जनि पूजलि चामर ढारि ॥२॥
पलटि हेरि हल पेयसि वयना मदन सपथ तोहि रे ॥३॥
सामर लोमलता कालिन्दी हारा सुरसरि धारा ।
मज्जन कए माधवे वर मागल पुनु दरसन एक वेरा ॥५॥

---

(१) परचारि=प्रकाश करके ।
(४) लोमलता यमुना और हार गंगा तुल्य । (उभय का संगम)
(५) मज्जन=अवगाहन अर्थात् मग्न दृष्टि से देखकर ।

—०—

माधव ।

२९

चिकुर निकर तम सम पुनु आनन पुनिम ससी ।
नअन पङ्कज के पतिआओव एक ठाम रहु वसी ॥२॥
आजे मोञे देखलि वारा ।
लुबुध मानस चालक मअन कर की परकारा ॥४॥
सहज सुन्दर गोर कलेवर पीन पओधर सिरी ।
कनअलता अति विपरित फलल जुगल गिरी ॥६॥
भन विद्यापति विहिक घटन के न अदबुद जाने ।
राए सिवसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

---

(२) वारा = बाला ।
(४) मयन = मदन । परकारा = उपाय ।
(५) कनय = कनक ।
(७) अदबुद = अद्भुत ।

—— ०.——

माधव ।

३०

अमिअक लहरी वम अरविन्द । विद्रुम पल्लव फूलल कुन्द ॥२॥
निरखि निरखि मोञे पुनु पुनु हेरु । दमन लता पर देखल सुमेरु ॥४॥
सॉच कहओ मोञे साखि अनङ्ग । चान्दक मण्डल यमुना तरङ्ग ॥६॥
कोमल कनककेआ मुति पात । मसि लए मदने लिखल निज बात ॥८॥
पढ़हि न पारिए आखर पाति । हेरइते पुलकित हो तनु काति ॥१०॥
भनइ विद्यापति कहओ बुझाए । अरथ असम्भव के पतिआये ॥१२॥

---

(२) विद्रुम = प्रवाल । प्रवालपल्लव = ओष्ठाधर कुन्द पुष्प दन्त ।
(३) निरखि = निश्चित कर के । (७) कनककेआ = कनकेया । मुति = मूर्त्ति ।

माधव ।

३१

सजनि भल कए पेखल न भेलि ।
मेघमाल सञे तड़ितलता जनि हृदये शेल दइ गेलि ॥२॥
आध आचर खसि आध वदने हसि आधहि नयान तरङ्ग ।
आध उरज हेरि आध आँचर भरि तवधरि दगधे अनङ्ग ॥४॥
एके तनु गोरा कनक कटोरा अतनु काँचला उपाम ।
हारे हरल मन जनि बुझि ऐसन फाँस पसारल काम ॥६॥
दशन मुकुता पाति अधर मिलायत मृदु मृदु कहतहि भासा ।
विद्यापति कह अतए से दुख रह हेरि हेरि न पूरल आसा ॥८॥

(१) पेखल = देखना। (४) तवधरि = तदवधि। (५) अतनु = अनंग।

माधव ।

३२

ससन परस खसु अम्बर रे देखल धनि देह ।
नव जलधर तरे सञ्चर रे जनि बीजुरि रेह ॥२॥
आज देखलि धनि जाइत रे मोहि उपजल रङ्ग ।
कनक लता जनि सञ्चर रे महि निरअवलम्ब ॥४॥
ता पुन अपरुब देखल रे कुच जुग अरविन्द ।
विगसित नहिं किछु कारन रे सोझा मुख चन्द ॥६॥
विद्यापति कवि गाओल रे रस बुझ रसमन्त ।
देवसिंह नृप नागर रे हासिनि देवि कन्त ॥८॥

(१) ससन = श्वसन, पवन। (४) विना अवलम्बन से कनक लता चल रही है।
(६) विगसित = विकसित। सोझा = सम्मुख।
(८) देवसिंह = राजा शिवसिंह का पिता। हासिनी देवी = शिवसिंह की माता।

माधव ।

३३

जाइते मिललि कलावति रामा । से नहि देखल जे दिय उपामा ॥२॥
धइरजे बूझल चातुरि नारि । अनुभव कए गेल कुटिल निहारि ॥४॥
सौरभे जानल पद्मिनि जाति । अन्तरे लागि रहल दिन राति ॥६॥

——.०:——

माधव ।

३४

आनन लोलए वचन बोलए हसि । अमिअ वरिस जनि सरद पुनिम ससि ॥२॥
अपरुब रूप रमनियाँ । जाइत देखलि गजराजगमनियाँ ॥४॥
काजर रञ्जित धवल नयन वर । भमर मिलल जनि विमल कमल पर ॥६॥
भान भेल मोहि माँझ खीनि धनि । कुच सिरीफले भरे भाङ्गि जाइति जनि ॥८॥
कविशेखर भन अपरुब रूप देखि । राय नसरद साह भूललि कमल मुखि ॥१०॥

---

(८) सिरिफल=श्रीफल, बिल्वफल ।

(१०) राय नसरद साह=नसरत शाह—बंग देशीय पठान राजा ।

——.०.——

माधव ।

३५

अपरुव पेखल सोइ ।
कनक लताञे उयल किए हिमकर ऐसन लागल मोइ ॥ २ ।
कुटिल केश चञ्चल अति लोचन नासा आँतर भीन ।
राग अधर दशन मनि भेटल दुहु कुच दुहु कठीन ॥ ४ ।
त्रिवलिक माझे तसु निवि बान्धल नाभि सरोवर गोइ ।
भारि जघन सम्बल रहु दुआरे परदुखे दुखि नइ कोइ ॥ ६ ।

---

(१) सोइ = उसको ।

—.o.—

माधव ।

३६

सजनि अपरूप पेखल रामा ।
कनक लता अवलम्बन ऊयल हरिणहीन हिमधामा ॥ २ ।
नयन नलिन दउ अञ्जने रञ्जइ भौंह विभङ्ग विलासा ।
चकित चकोर जोर विधि बान्धल केवल काजर पासा ॥ ४ ।
गिरिवर गरुअ पयोधर पराशित गीमे गजमोतिम हारा ।
काम कम्बु भरि कनय शम्भु परि ढारत सुरधुनि धारा ॥ ६ ।
पयसि पयागे जाग शत जागइ सोइ पाए वहु भागी ।
विद्यापति कह गोकुलनायक गोपी जन अनुरागी ॥ ८ ।

---

(५) गीम = ग्रीवा । (७) पयागे = प्रयागे ।

—.o:—

माधव ।

३७

कामिनि करए सनाने । हेरितहि हृदय हनए पचबाने ॥ २ ॥
चिकुर गरए जलधारा । जनि मुखससि डरे रोअए अन्धारा ॥ ४ ॥
कुच जुग चारु चकेवा । निअकुल मिलत आनि कौने देवा ॥ ६ ॥
तें संकाञे भुज पासे । बाँधि धयल उड़ि जाएत अकासे ॥ ८ ॥
तितल बसन तनु लागू । मुनिहुक मानस मनमथ जागू ॥ १० ॥
भनइ विद्यापति गावे । गुनमति धनि पुनमत जनि पावे ॥ १२ ।

---

(२) हनए पचबाने = पञ्चबाण मदन तीर मारता है ।
(३) गरए = गलता है, झरता है ।
(५) चकेवा = चक्रवाक ।
(१२) गुनमति = गुणवती । पुनमत = पुण्यमन्त ।

——:०:——

माधव ।

३८

आजु मझु शुभ दिन भेला । कामिनि पेखल सनानक बेला ॥ २ ।
चिकुर गलय जलधारा । मेह बरिस जनि मोतिम हारा ॥ ४ ।
वदन पोछल परचूरे । माजि धएल जनि कनक मुकूरे ॥ ६ ॥
तेंइ उदसल कुच जोरा । पलटि वैसाओल कनक कटोरा ॥ ८ ॥
नीवि बन्ध करल उदेस । विद्यापति कह मनोरथ शेस ॥ १० ॥

---

(७) उदसल = प्रकाशित हुआ ।

——:०:——

माधव ।

३६

जाइत पेखल नहाइल गोरी । कति सञे रूप धनि आनलि चोरी ॥२।
केश निंगारइत वह जलधारा । चामरे गलय जनि मोतिम हारा ॥ ४ ॥
अलकहि तीतल तह्नि अति शोभा। अलिकुल कमले बेढ़ल मधु लोभा ॥ ६ ।
नीरे निरञ्जन लोचन राता । सिन्दूरे मण्डित जनि पङ्कज पाता ॥ ८ ।
सजल चीर रह पयोधर सीमा । कनक बेल जनि पड़ि गेल हीमा ॥ १० ।
ओ नुकि करतहि चाहे किय देहा । अबहि छोड़ब मोहि तेजब नेहा ॥ १२ ॥
ऐसन रस नहि पाओब आरा । इथे लागि रोइ गलय जलधारा ॥ १४ ॥
विद्यापति कह शुनह मुरारी । वसन लागल भाव रूप निहारी ॥ १६ ॥

(७) राता = लोहित ।
(११-१४) उयह (वस्त्र) देहको लुकाना चाहता है, (कहता है) अभी हमें छोडेगा (अर्थात् आर्द्र वस्त्र त्याग करके देह शुष्क वस्त्र धारण करेगा) ऐसा रस फिर नहीं पाऊँगा । इसी कारण से रोकर जलधारा त्याग करता है ।
(१६) रूप देख कर वसन को भी भाव लग गया ।

(सखी के सहित सखी की कथा)

४०

नहाइ उठल तीरे राहि कमलमुखि समुखे हेरल वरकान ।
गुरुजन सङ्गे लाजे धनि नतमुखि कैसने हेरब बयान ॥ २ ॥
सखि हे अपरुब चातुरि गोरि ।
सब जन तेज अगुसरि सञ्चरि आड़ वदन तहिँ फेरि ॥ ४ ।
तँहि पुन मोति हार टूटि फेकल कहइत हार टूटि गेल ।
सब जन एक एक चुनि सञ्चरु शाम दरश धनि लेल ॥ ६ ।
नयन चकोर कान्हु मुख शशिवर कयल अमिय रस पान ।
दुहु दुहु दरशन रसहु पसारल कवि विद्यापति भान ॥ ८ ॥

(४) अगुसरि = आगे जाकर ।
(६) सबकोई झुक कर टूटा हुआ हार का मोती चुनने लगे, तब राधिकाजी श्याम का दर्शन किया ।

माधव।

४१

नाहि उठल तीरे से धनि राहि। मझु मुख सुन्दरि अवनत चाहि ॥ २ ॥
ए सखि पेखल अपरुब गोरि। बल करि चित चोरायल मोरि ॥ ४ ॥
एकलि चललि धनि होइ अगुयान। उमगि कहइ सखि करह पयान ॥ ६ ॥
किये धनि रागि विरागिनि होय। आश निराश दगध तनु मोय ॥ ८ ॥
कैसे मिलव हमे से धनि अवला। चित नयन मझु दुहु ताहे रहला ॥ १० ॥
विद्यापति कह शुनह मुरारि। धैरज धए रह मिलब वरनारि ॥ १२ ॥

---

(५) अगुयान=आगे होकर।
(६) उमगि=द्रुतगति, दौड़ कर।

—·०·—

माधव।

४२

किय मझु दिठि पड़लि शशि वयना। निमिख निवारि रहल दुहु नयना ॥२॥
दारुण बंक विलोकन थोरा। काल होय किए उपजल मोरा ॥४॥
मानस रहल पयोधर लागि। अन्तरे रहल मनोभव जागि ॥६॥
श्रवण रहल अछ शुनइते राव। चलइते चाहि चरण नहि जाव ॥८॥
आशा पाश न तेजइ संग। अनायत कयल हमर सब अंग ॥१०॥

---

(१०) अनायत=अनायत्त, अपना अधीन नहीं रहा।

—·०·—

माधव ।

४३

मुख दरसने सुख पओोला रस बिलासे न भेला ।
सरद चान्द सोहाओोना उगितहि अथ गेला ॥२॥
हरि हरि विहि विघटाओलि गजगामिनि वाला ॥३॥
गुन अनुभवे मन मोहला अवसादल देहा ।
दुलभ लोभे फल पाओोला आवे प्राण सन्देहा ॥५॥
मेनका देवि पति भूपति रस परिनति जाने ।
नरनारायन नागरा कवि धीरे सरस भाने ॥७॥

(२) अथ=अस्त। (४) अवसादल=अवसन्न हुआ।

—,०,—

माधव ।

४४

गोधुलि पेखल वाला जब मन्दिर वाहर भेला ।
नव जलधर विजुरि रेहा दन्द पसारिय गेला ॥२॥
धनि अलप वयसि वाला जनि गाँथलि पुहप माला ।
थोरि दरसने आश न पूरल रहल मदन जाला ॥४॥
गोरि कलेवर नूना जनि काजरे उजोर सोना ।
केशरि जिनि माझ खिनि दुलह लोचन कोना ॥६॥
इपत हासनि सने मुझे हानल नयन वाने ।
चिरंजीव रहु रूपनरायन कवि विद्यापति भाने ॥८॥

(२) नवजलधर में बिजली रेखा की जैसा द्वन्द्व होता है, अर्थात् अंधेरा और उजाले का विपरीत भाव होता है। ऐसा ही गोधूलि के अन्धकार में बाला चली गई।
(३) पुहप=पुष्प। (४) नूना=छोटी। (६) दुलह=दुर्लभ।

—,०;—

माधव ।

४५

अपरूप पेखल आई ।
कनक गिरि आउध मुखे चान्दहु गरासे जाई ॥२॥
आओर पेखल कुच जुग माझे लोलिम मोतिम हारे ।
कनक महेश कामहु पूजल जनि सुरनदि धारे ॥४॥
हेरि हँसि उर अम्वरे झाँपल बङ्किम नयाने सेह ।
से विनु मोर चित्त बेआकुल धैरज नहिं धर देह ॥६॥

---

(१) आई=आज ।
(२) सेह=से ।

—:०:—

माधव ।

४६

आध बदन हेरि लोचन आध । देखव किये अरु पुन भेल साध ॥२॥
पुन नहिं दिठि भरि पेखल भेला । मेघ विजुरि जइसे उगि लुकि गेला ॥४॥
जाइते पेखल नागरि नारि । हृदए बुझाएल पलटि निहारि ॥६॥
मन्थर गमने बूझल अनुरागि । तिल एक देखल अवहु मन जागि ॥८॥
रूप भूलल आंखि गेलइ गेल । तबधरि जगभरि फुलशर भेल ॥१०॥

—:०:—

माधव ।

४७

लोचन चपल वदन सानन्द । नील नलिनि दले पूजल चन्द ॥ २ ॥
पीन पयोधर रुचि उजरी । सिरिफले फलालि कनक मजरी ॥ ४ ॥
गुनमति रमणी गजराजगती । देखलि मोञे जाइते वरजुवती ॥ ६ ॥
गरुअ नितम्ब उपर कुच भार । भाँगिवाके चाहए थेघिवाके पार ॥ ८ ॥
तनु रोमावलि देखिए न भेलि । निज धनु मनसये थेघ न देलि ॥ १० ॥
सम्भ्रम सकल सखीजन वारि । पेम बुझओलक पलटि निहारि ॥ १२ ॥
आओर चतुरपन कहहि न जाए । नयने नयन मिलि रहलि नुकाए ॥ १४ ॥
तखन सञो चाँद चँदन न सोहाव । अवोध नअन पुनु तठमाहि धाव ॥ १६ ॥

(८) भाँगिवाके = टूटने । थेघिवाके = अवलम्बन, सहारा देना ।
(१०) थेघ = अवलम्बन, सहारा । (१६) तठमाहि = उसी स्थान में ।

—०—

माधव ।

४८

देखल कमलमुखि बरनि न जाइ । मन मोर हरलक मदन जगाइ ॥ २ ॥
तनु सुकुमार पयोधर गोरा । कनक लता जनि सिरिफल जोरा ॥ ४ ॥
कुञ्जरगमनि अमिय रस बोले । श्रवणे सोहङ्गम कुण्डल दोले ॥ ६ ॥
भौंह कमान धयल तसु आगू । तीख कटाख मदन शर लागू ॥ ८ ॥
सब तह सुनिअ ऐसन वेवहारा । मारिअ नागर उबर गमारा ॥ १० ॥
विद्यापति कवि कौतुक गाव । बड़ पुने रसवति रसिक रिझाव ॥ १२ ॥

(६) सोहङ्गम = सुन्दर । (९) सब तह = सब से ।
(१०) नागर (चतुर) मारा जाता है । गमार (मूर्ख) बच जाता है । अर्थात् जो रसिक है उसको रूप का मोह अनुभव होता है, अरसिक को नहीं ।
(१२) रिझाव = प्रसन्न करता है ।

—०—

माधव ।

४६

अलखिते हमे हेरि विहुसलि थोर । जनि रयनि भेल चाँद उजोर ॥ २ ॥
कुटिल कटाख लाट पड़ि गेल । मधुकर डम्बरे अम्बर देल ॥ ४ ॥
काहिक सुन्दरि के ताहि जान । आकुल कए गेलि हमर परान ॥ ६ ॥
लीला कमले भमर धरु वारि । चमकि चललि गोरि चकित निहारि॥८॥
तें भेल वेकत पयोधर शोभ । कनय कमल हेरि काही न लोभ ॥ १० ॥
आध नुकायलि आध उदास । कुचकुम्भे कहि गेल अपनक आस॥ १२॥
से सवे अमिल निधि दए गेलि सन्देस । किछु नहि रखलह्नि रस परिसेस ॥ १४ ॥
भनइ विद्यापति दुहु मन जागु । विसम कुसुमशर काहु जनु लागु॥ १६॥

(३) लाट=सम्बन्ध ।

माधव ।

५०

अम्बर विघटु अकामिक कामिनि करे कुच झाँपु सुछन्दा ।
कनक सम्भु सम अनुपम सुन्दर दुइ पङ्कज दश चन्दा ॥ २ ॥
कत रूप कहब बुझाई ।
मन मोर चञ्चल लोचन विकले ओओ अनइते जाई ॥ ४ ॥
आड़ बदन कए मधुर हास दए सुन्दरि रहु सिर लाई ।
अओंधा कमल कान्ति नहि पूरए हेरइत जुग बहि जाई ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति सुन वरजौवति पुहवी नव पचवाने ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमाने ॥ ८ ॥

(१) विघटु=विघटित हुया, खुल गया ।
(२) कामिन जब हस्त द्वारा पयोधर आच्छादन कर ली, तब पयोधर कनक शम्भु तुल्य, दो हस्त कमल तुल्य, एव अङ्गुलियों के नख दश चन्द्र तुल्य शोभित हुए ।
(४) ओ ओ अनइते जाइ=मेरा मन और लोचन अनायत्त हुआ, अर्थात् मेरे अधीन नहीं रहा ।
(५) लाई=नीचे करके । (६) अओंधा=उलटा ।
(७) पुहवी=पृथिवी । नव पचवाने—नूतन पञ्चवाण, अर्थात् राजा शिवसिंह द्वितीय मदन तुल्य हैं ।

माधव ।

५१

गेलि कामिनि गजहु गामिनि विहसि पलटि निहारि ।
इन्द्रजालक कुसुमसायक कुहुकि भेलि वरनारि ॥ २ ॥
जोरि भुज युग मोरि वेढ़ल ततहि वयन सुछन्द ।
दाम चम्पके काम पूजल जैसे शारद चन्द ॥ ४ ॥
उरहि अञ्चल झाँपि चञ्चल आध पयोधर हेरु ।
पवन पराभवे शरद घन जनि वेकत कयल सुमेरु ॥ ६ ॥
पुनहि दरसने जीवन जुड़ायव टूटव विरहक ओर ।
चरणे यावक हृदय पावक दहइ सब अङ्ग मोर ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति शुन यदुपति चित थिर नहि होय ।
से जे रमनि परम गुनमनि पुन कि मिलव तोय ॥ १० ॥

---

(२) कुसुमसायक मदन ऐन्द्रजालिक है परन्तु नारीश्रेष्ठ मदन को भी मोहित (कुहक) किया ।

(७) ओर=सीमा ।

(८) चरण में यों अलक्तक है वह मेरे हृदय में अग्नि तुल्य हो कर सब शरीर दहन करता है।

(१०) वह परम गुणवती रमणी फेर क्या तुमको मिलेगी ?

—:०:—

माधव ।

५२

सहजहि आनन सुन्दर रे भँउह सुरेखलि आँखि ।
पङ्कज मधु पिवि मधुकर उड़ ए पसारए पाँखि ॥ २ ॥
ततहि धाओल दुहु लोचन रे जतहि गेलि वर नारि ।
आसा लुबुधल न तेजए रे कृपनक पाछु भिखारि ॥ ४ ॥
इङ्गित नयन तरङ्गित देखल वाम भउँह भेल भङ्ग ।
तखने न जानल तेसरे गुपुत मनोभव रङ्ग ॥ ६ ॥
चन्दने चरचु पयोधर गृम गजमुकुता हार ।
भसमे भरल जनि शङ्कर सिर सुरसरि जल धार ॥ ८ ॥
वाम चरण अनुसारल दाहिन तेजइते लाज ।
तखन मदन सरे पूरल गति गञ्जए गजराज ॥ १० ॥
आज जाइते पथ देखलि रे रूपे रहल मन लागि ।
तेहि खन सञो गुन गौरव रे धैरज गेल भागि ॥ १२ ॥
रूप लागि मन धाओल रे कुच कञ्चन गिरि साँधि ।
तेँ अपराधे मनोभव रे ततहि धएल जनि बाँधि ॥ १४ ॥
विद्यापति कवि गाओल रे रस बुझ रसमन्ता ।
रूपनरायन नागर रे लखिमा देविक सुकन्ता ॥ १६ ॥

---

(४) आशा से लुब्ध हो कर जैसा भिखारी कृपण का पीछा नहीं छोड़ता है वैसा ही मेरा नयन उसके पीछे गया ।

(१३) साँधि = सन्धि ।

—:o:—

माधव ।

५३

पथ गति पेखल मो राधा ।
तखनुक भाव परान पै पीड़लि रहल कुमुदनिधि साधा ॥ २ ॥
ननुया नयनि नलिन जनु अनुपम वङ्क निहारइ थोरा ।
जनि शृखल में खगवर बाँधल दिठिहु नुकाएल मोरा ॥ ४ ॥
आध वदनशशि विहसि देखाउलि आध पीहलि निअ बाहू ।
किछु एक भाग बलाहके झाँपल किछु एक गरासल राहू ॥ ६ ॥
कर जुग पिहित पयोधर अञ्चल चञ्चल देखि चित भेला ।
हेम कमलिनि जनि अरुणित चञ्चल मिहिर तर निन्द गेला ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति सुनह मधुरपति इह रस के पथ बाधा ।
हास दरस रसे सबहु बुझाएल नाल कमल दुइ आधा ॥१०॥

(१-२) पथ चलते में राधा को देखा । उस समय का भाव प्राणमें पीड़ा दिया । कुमुदनिधि (राधा का मुखचन्द्र) का साध रहा ।

(५) पीहलि=गोपन करना ।

(५-६) थोड़ा हँस कर मुखचन्द्र देखाइ, आधा अपनी बाँह से झाँप ली । कुछ अंश (मुखका) मेघ (नीलाम्बर) झाँप दिया, कुछ अंश राहु (केश) ग्रास किया ।

(७) पिहित=आवृत ।

(७-८) अञ्चल से आवृत पयोधर के उपर करयुगल देख कर चित्त चञ्चल हुआ, जैसा स्वर्ण कमल (पयोधर) चञ्चल रागयुक्त सूर्य्यतले (करतले) निद्रित हुआ ।

(९-१०) विद्यापति कहता है, सुनो मथुरापति, इस रस में कौन बाधा देता है ? हास्य और दर्शन रस से सब को बुझा दी के मृणाल और कमल दो आधा (तुम्हारा हस्त मृणाल और उसकी कुचकमल दो आधा—वियुक्त हुआ है । एकत्र होने से पूर्ण हो जायगा, यह सङ्केत हुआ) ।

माधव ।

५२

सहजहि आनन सुन्दर रे भेंउह सुरेखलि आँखि ।
पङ्कज मधु पिबि मधुकर उड़ए पसारए पाँखि ॥ २ ॥
ततहि धाओल दुहु लोचन रे जतहि गेलि वर नारि ।
आसा लुबुधल न तेजए रे कृपनक पाछु भिखारि ॥ ४ ॥
इङ्गित नयन तरङ्गित देखल वाम भउँह भेल भङ्ग ।
तखने न जानल तेसरे गुपुत मनोभव रङ्ग ॥ ६ ॥
चन्दने चरचु पयोधर गृम गजमुकुता हार ।
भसमे भरल जनि शङ्कर सिर सुरसरि जल धार ॥ ८ ॥
वाम चरण अनुसारल दाहिन तेजइते लाज ।
तखन मदन सरे पूरल गति गञ्जए गजराज ॥ १० ॥
आज जाइते पथ देखलि रे रूपे रहल मन लागि ।
तेहि खन सञो गुन गौरव रे धैरज गेल भागि ॥ १२ ॥
रूप लागि मन धाओल रे कुच कञ्चन गिरि साँधि ।
तेँ अपराधे मनोभव रे ततहि धएल जनि बाँधि ॥ १४ ॥
विद्यापति कवि गाओल रे रस बुझ रसमन्ता ।
रूपनरायन नागर रे लखिमा देविक सुकन्ता ॥ १६ ॥

---

(४) आशा से लुब्ध हो कर जैसा भिखारी कृपण का पीछा नहीं छोड़ता है वैसा ही मेरा नयन उसके पीछे गया ।

(१३) साँधि = सन्धि ।

—:०:—

माधव ।

५३

पथ गति पेखल मो राधा ।
तखनुक भाव परान पै पीड़लि रहल कुमुदनिधि साधा ॥ २ ॥
ननुया नयनि नलिन जनु अनुपम वङ्क निहारइ थोरा ।
जनि शृंखल में खगवर बाँधल दिठिहु नुकाएल मोरा ॥ ४ ॥
आध वदनशशि विहसि देखाउलि आध पीहलि निअ बाहू ।
किछु एक भाग बलाहके झाँपल किछु एक गरासल राहू ॥ ६ ॥
कर जुग पिहित पयोधर अञ्चल चञ्चल देखि चित भेला ।
हेम कमलिनि जनि अरुणित चञ्चल मिहिर तर निन्द गेला ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति सुनह मधुरपति इह रस के पथ बाधा ।
हास दरस रसे सबहु बुझाएल नाल कमल दुइ आधा ॥१०॥

(१-२) पथ चलते में राधा को देखा । उस समय का भाव प्राणमें पीड़ा दिया । कुमुदनिधि (राधा का मुखचन्द्र) का साध रहा ।

(५) पीहलि = गोपन करना ।

(५-६) थोड़ा हँस कर मुखचन्द्र देखाइ, आधा अपनी बाँह से झांप ली । कुछ अंश (मुखका) मेघ (नीलाम्बर) झांप दिया, कुछ अंश राहु (केश) ग्रास किया ।

(७) पिहित = आवृत ।

(७-८) अञ्चल से आवृत पयोधर के उपर करयुगल देख कर चित्त चञ्चल हुआ, जैसा स्वर्ण कमल (पयोधर) चञ्चल रागयुक्त सूर्य्यतले (करतले) निद्रित हुआ ।

(९-१०) विद्यापति कहता है, सुनो मथुरापति, इस रस में कौन बाधा देता है ? हास्य और दर्शन रस से सब को बुझा दो के मृणाल और कमल दो आधा (तुम्हारा हस्त मृणाल और उसकी कुचकमल दो आधा—वियुक्त हुआ है । एकत्र होने से पूर्ण हो जायगा, यह सङ्केत हुआ) ।

—:०:—

माधव ।

५४

दए गेलि सुन्दरि दए गेली रे दए गेलि दुइ दिठे मेरा ।
पुनु मनकर ततहि जाइअ देखिअ दोसरि बेरा ॥ २ ॥
सार चुनि चुनि हार जे गाँथल केवल तारा जोती ।
अधर रूप अनुपम सुन्दर चान्दे परीहलि मोती ॥ ४ ॥
भमर मधु पिवि पिवि मातल शिशिरे भीजलि पाखी ।
अलपे काजरे नयन आँजल ननुमि देखिय आँखी ॥ ६ ॥
कते जतने दूती पठाओल आनय गुया यान ।
सगरे रजनी बइसि गमाओल हृदय तसु पखान ॥८॥
भन विद्यापति सुनह नागर ओ नहि ओ रस जान ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमान ॥ १० ॥

(२) मेरा = मिलन । (६) आँजल = अञ्जित । ननुमि = कोमल ।
(८) ओ नहि ओ रस जान—वह (राधा) प्रेमरस नहीं जानती है ।

माधव ।

५५

जहाँ जहाँ पद युग धरइ । तँहि तँहि सरोरुह भरइ ॥ २ ॥
जहाँ जहाँ झलकत अङ्ग । तँहि तँहि बिजुरि तरङ्ग ॥ ४ ॥
की हेरल अपरुब गोरि । पैठल हिय माहा मोरि ॥ ६ ॥
जहाँ जहाँ नयन विकाश । तँहि तँहि कमल परकाश ॥ ८ ॥
जहाँ लहु हास सञ्चार । तँहि तँहि अमिय बिकार ॥ १० ॥
जहाँ जहाँ कुटिल कटाख । तँहि तँहि मदन शर लाख ॥ १२ ॥
हेरइते से धनि थोर । अव तिन भुवन अगोर ॥ १४ ॥
पुन किये दरशन पाव । अव मोहे इह दुख जाव ॥ १६ ॥
विद्यापति कह जानि । तुय गुणे देयव आनि ॥ १८ ॥

(१०) अमिय विकार = अमृत विकीर्ण ।
(१४) अब उसकी मूर्ती तीन भुवन को अगोरती है । अर्थात् सर्वत्र उसकी मूर्त्ति देखता हूँ ।

राधा की अनुराग ।

राधा ।

५६

ए सखि कि पेखल एक अपरूप । शुनइते मानावि सपन सरूप ॥ २ ॥
कमल युगल पर चाँदक माल । तापर उपजल तरुण तमाल ॥ ४ ॥
तापर बेढ़ल बिजुरि लता । कालिन्दि तीर धीर चलि जाता ॥ ६ ॥
शाखा शिखर सुधाकर पाँति । ताहि नव पल्लव अरुणक भाँति ॥ ८ ॥
विमल बिम्बफल युगल विकास । तापर कीर थीर करु बास ॥ १० ॥
तापर चञ्चल खञ्जन जोड़ । तापर साँपिनि झाँपल मोड़ ॥ १२ ॥
ए सखि रङ्गिनि कहल निसान । पुन हेरइते हमे हरल गेयान ॥ १४ ॥
भनइ विद्यापति इह रस भान । सुपुरुष मरम तुहु भल जान ॥ १६ ॥

(३) कमल युगल (चरण) पर चन्द्रमाला (नखराजि), उस पर तरुण तमाल (ऊरु) ।
(५) बिजुरि लता = पीत घडा ।
(७) शाखा शिखरमेँ (हस्तागुलि) चन्द्रपाँति (नखावली) । नवपल्लव—करतल ।
(९) विमल बिम्बफल = ओष्ठाधर । (१०) कीर = शुकपक्षी, नासा ।
(११) खञ्जन जोड़ = नयनयुगल । (१२) साँपिनी = वेणी । (१३) निसान = चिन्ह, सकेत ।

—:०:—

राधा ।

५७

कि कहब हे सखि कानुक रूप । के पतियायब सपन सरूप ॥ २ ॥
अभिनव जलधर सुन्दर देह । पीत बसन परा सौदामिनि रेह ॥ ४ ॥
सामर झामर कुटिलहि केश । काजरे साजल मदन सुवेश ॥ ६ ॥
जातकि केतकि कुसुम सुवास । फुलशर मनमथ तेजल तरास ॥ ८ ॥
विद्यापति कह कि कहब आर । शुन करल विहि मदन भँडार ॥ १० ॥

(४) परा = परिहित ।

—:०:—

माधव ।

५४

दए गेलि सुन्दरि दए गेली रे दए गेलि दुइ दिठे मेरा ।
पुनु मनकर ततहि जाइअ देखिअ दोसरि बेरा ॥ २ ॥
सार चुनि चुनि हार जे गाँथल केवल तारा जोती ।
अधर रूप अनुपम सुन्दर चान्दे परीहलि मोती ॥ ४ ॥
भमर मधु पिबि पिबि मातल गिरिरे भीजलि पाखी ।
कलपे काजरे नयन आँजल ननुनि देखिय आँखी ॥ ६ ॥
कते जतने दूती पठाओल आनय गुण यान ।
सगरे रजनी वइसि गमाओल हृदय ततु पखान ॥८॥
भन विद्यापति सुनह नागर ओ नहि ओ रस जान ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमान ॥ १० ॥

(२) मेरा=मिलन । (६) आँजल=अञ्जित । ननुनि=खञ्जन ।
(८) ओ नहिं ओ रस जान—वह (यथा) प्रेमरस नहीं जानती है ।

माधव ।

५५

जहाँ जहाँ पद युग धरइ । तँहि तँहि सरोरुह भरइ ॥ २ ॥
जहाँ जहाँ झलकत अङ्ग । तँहि तँहि बिजुरि तरङ्ग ॥ ४ ॥
की हेरल अपरुब गोरि । पैठल हिय माहा मोरि ॥ ६ ॥
जहाँ जहाँ नयन विकास । तँहि तँहि कमल परकास ॥ ८ ॥
जहाँ लहु हास सञ्चार । तँहि तँहि अमिय विकार ॥ १० ॥
जहाँ जहाँ कुटिल कटाख । तँहि तँहि मदन शर लाख ॥ १२ ॥
हेरइते से धनि थोर । अब तिन भुवन अगोर ॥ १४ ॥
पुन किये दरशन पाव । अब मोहे इह दुख जाव ॥ १६ ॥
विद्यापति कह जानि । तुय गुणे देयब आनि ॥ १८ ॥

(१०) अमिय विकार=अमृत विकीर्ण ।
(१४) अब उसकी मूर्ति तीन भुवन के अगोरती है । अर्थात् सर्वत्र उसकी मूर्ति देखता हूँ ।

राधा की अनुराग ।

राधा ।

५६

ए सखि कि पेखल एक अपरूप । शुनइते मानवि सपन सरूप ॥ २ ॥
कमल युगल पर चाँदक माल । तापर उपजल तरुण तमाल ॥ ४ ॥
तापर बेढ़ल बिजुरि लता । कालिन्दि तीर धीर चलि जाता ॥ ६ ॥
शाखा शिखर सुधाकर पाँति । ताहि नव पल्लव अरुणक भाँति ॥ ८ ॥
विमल बिम्बफल युगल विकास । तापर कीर थीर करु वास ॥१०॥
तापर चञ्चल खञ्जन जोड़ । तापर सापिनि झाँपल मोड़ ॥१२॥
ए सखि रङ्गिनि कहल निसान । पुन हेरइते हमे हरल गेयान ॥१४॥
भनइ विद्यापति इह रस भान । सुपुरुष मरम तुहु भल जान ॥१६॥

(३) कमल युगल (चरण) पर चन्द्रमाला (नखराजि), उस पर तरुण तमाल (ऊरु) ।
(५) विजुरि लता = पीत वस्त्र ।
(७) शाखा शिखरमें (हस्तांगुलि) चन्द्रपाँति (नखावली) । नवपल्लव—करतल ।
(९) विमल विम्बफल = ओष्ठाधर । (१०) कीर = शुकपक्षी, नासा ।
(११) खञ्जन जोड़ = नयन युगल। (१२) सापिनी = वेणी । (१३) निसान = चिन्ह, संकेत।

—:०:—

राधा ।

५७

कि कहब हे सखि कानुक रूप । के पतियायब सपन सरूप ॥ २ ॥
अभिनव जलधर सुन्दर देह । पीत बसन परा सौदामिनि रेह ॥ ४ ॥
सामर झामर कुटिलहि केश । काजरे साजल मदन सुवेश ॥ ६ ॥
जातकि केतकि कुसुम सुवास । फुलशर मनमथ तेजल तरास ॥ ८ ॥
विद्यापति कह कि कहब आर । शुन करल विहि मदन भँडार ॥ १० ॥

(४) परा = परिहित ।

—:०:—

माधव ।

५४

दए गेलि सुन्दरि दए गेली रे दए गेलि दुइ दिठे मेरा ।
पुनु मनकर ततहि जाइअ देखिअ दोसरि वेरा ॥ २ ॥
सार चुनि चुनि हार जे गाँथल केवल तारा जोती ।
अधर रूप अनुपम सुन्दर चान्दे परीहलि मोती ॥ ४ ॥
भमर मधु पिवि पिवि मातल शिशिरे भीजलि पाखी ।
अलपे काजरे नयन आँजल ननुमि देखिय आँखी ॥ ६ ॥
कते जतने दूती पठाओल आनय गुया यान ।
सगरे रजनी वइसि गमाओल हृदय तसु पखान ॥८॥
भन विद्यापति सुनह नागर ओ नहि ओ रस जान ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमान ॥ १० ॥

(२) मेरा=मिलन ।　　(६) आँजल=अञ्जित । ननुमि=कोमल ।
(८) ओ नहि ओ रस जान—वह (राधा) प्रेमरस नहीं जानती है ।

माधव ।

५५

जहाँ जहाँ पद युग धरइ । तँहि तँहि सरोरुह भरइ ॥ २ ॥
जहाँ जहाँ झलकत अङ्ग । तँहि तँहि बिजुरि तरङ्ग ॥ ४ ॥
की हेरल अपरुव गोरि । पैठल हिय माहा मोरि ॥ ६ ॥
जहाँ जहाँ नयन विकाश । तँहि तँहि कमल परकाश ॥ ८ ॥
जहाँ लहु हास सञ्चार । तँहि तँहि अमिय विकार ॥ १० ॥
जहाँ जहाँ कुटिल कटाख । तँहि तँहि मदन शर लाख ॥ १२ ॥
हेरइते से धनि थोर । अव तिन भुवन अगोर ॥ १४ ॥
पुन किये दरशन पाव । अव मोहे इह दुख जाव ॥ १६ ॥
विद्यापति कह जानि । तुय गुणे देयव आनि ॥ १८ ॥

(१०) अमिय विकार=अमृत विकीर्ण ।
(१४) अब उसकी मूर्ती तीन भुवन को अगोरती है । अर्थात् सर्वत्र उसकी मूर्त्ति देखता हूँ

राधा ।

६०

साखि आज मधुरिपु भेटल मो हटिऑं ।
लोचन जुगल जुड़ाएल बटिऑं ॥ २ ॥
दरसन लोभे पसार देल हमे सखि मुखे सुनि बड़रसी ।
तखने उपजु रस भेलिहु मोञे परबस विसरालि दुधहु कलसी ॥ ४ ॥
मधुरिपु सम नहिं देखिअ सोहाओन जे दिअ तन्हिक उपाम रे ।
सरद सुधानिधि जसु मुख नेओछन पङ्कज की लेब नाम रे ॥ ६ ॥
अधराञे लोचने जखने निहारलन्हि वाङ्क कइए भेंउह भङ्गारे ।
तखनुक अवसर जागल पचसर थाने थाने गेल अङ्गारे ॥ ८ ॥
दान कलपतरु मेदिनि अवतरु नृपति हिन्दु सुरतान रे ।
मेधा देविपति रूपनराअन सुकवि भनथि कण्ठहार रे ॥ १० ॥

(३) बड़रसी = कथोपकथन ।

——:०:——

राधा ।

६१

हमे हसि हेरला थोरा रे । सफल भेल सखि कौतुक मोरा रे ॥ २ ॥
हेरितहि हरि भेल आने रे । जनि मनमथे मन बेधल बाने रे ॥ ४ ॥
लखल ललित तसु गाते रे । मन भेल परसिअ सरसिज पाते रे ॥ ६ ॥
तनु पसरल विन्दुर रे । नेउछि नडाओल सनखत इन्दु रे ॥ ८ ॥
कॉपल परम रसाले रे । जनि मनसिज गरइ जपेलु तमालेरे ॥ १० ॥
विद्यापति कवि भाने रे । करत कमलमुखि हरि सावधाने रे ॥ १२ ॥

(८) नडाओल = फेंक दिया ।
(१०) जैसा तमाल वृक्ष गल कर कामदेव का नाम जपने लगा ।
(१२) सावधाने = भाव उद्दीपन, कन्दर्प आगरया ।

सखी सखी से ।

५८

आज कन्हाइ ऍ बाटे आओब बूझए न पारलि बेला ।
विधिक घटने भेल अकामिक लोचने लोचने मेला ॥ २ ॥
नव कलेवर निज पराभव थम्भ भेल बिनु काजे ।
दरसन रस रभस लीला लोभे गरासलि लाजे ॥ ४ ॥
सुन्दरि रे मन्दिर बाहर भेली ।
विजुअ रेह जलधर नाजी पुनु कइसे नुकि गेलि ॥ ६ ॥

(२) अकामिक = आकस्मिक । (३) थम्भ = स्तम्भित ।
(४) दर्शन रस और आनन्द लीला का लोभ लज्जाको ग्रास किया, अर्थात् लज्जा दूर हो ग
(६) नाजी = न्याय ।

—:०:—

राधा ।

५९

साए साए कॉ लागि कौतुक देखल निमिष लोचन आधे ।
मोर मनमृग मरम वेधल विषम बान वेआधे ॥ २ ॥
गोरस विरस वासि विशेषल छिकेहु छाड़ल गेहा ।
मुरलि धुनि सुनि मन मोहल विकेहु भेल सन्देहा ॥ ४ ॥
तीर तरङ्गिनि कदम्ब कानन निकट जमुना घाटे ।
उलटि हेरइत उलटि परल चरण चीरल कॉटे ॥ ६ ॥
सुकृति सुफल सुनह सुन्दरि विद्यापति वचन सारे ।
कंसदलन नरायन सुन्दर मिलल नन्दकुमारे ॥ ८ ॥

(३-४) दुग्ध विरस और बासी (यात्रा का अमङ्गल लक्षण)। छिकेहु = छींक सुन कर।
बिकेहु भेल सन्देहा = दुग्ध बेचना कठिन हुआ।

——:०——

राधा ।

६०

सखि आज मधुरिपु भेटल मो हटिऑं ।
लोचन जुगल जुड़ाएल वटिऑं ॥ २ ॥
दरसन लोभे पसार देल हमे सखि मुखे सुनि बड़रसी ।
तखने उपजु रस भेलिहु मोञे परवस बिसरालि दुधहु कलसी ॥ ४ ॥
मधुरिपु सम नहिं देखिअ सोहाओन जे दिअ तन्हिक उपाम रे ।
सरद सुधानिधि जसु मुख नेओछन पङ्कज की लेव नाम रे ॥ ६ ॥
अधराञे लोचने जखने निहारलन्हि वाङ्क कइए भॅउह भङ्गारे ।
तखनुक अवसर जागल पचसर थाने थाने गेल अङ्गारे ॥ ८ ॥
दान कलपतरु मेदिनि अवतरु नृपति हिन्दु सुरतान रे ।
मेधा देविपति रूपनराअन सुकवि भनथि कण्ठहार रे ॥ १० ॥

(३) बड़रसी = कथोपकथन ।

—०—

राधा ।

६१

हमे हसि हेरला थोरा रे । सफल भेल सखि कौतुक मोरा रे ॥ २ ॥
हेरितहि हरि भेल आने रे । जनि मनमथे मन बेधल बाने रे ॥ ४ ॥
लखल ललित तसु गाते रे । मन भेल परसिअ सरसिज पाते रे ॥ ६ ॥
तनु पसरल बिन्दुर रे । नेउछि नडाओल सनखत इन्दु रे ॥ ८ ॥
कॉपल परम रसाले रे । जनि मनसिज गरइ जपेलु तमालेरे ॥ १० ॥
विद्यापति कवि भाने रे । करत कमलमुखि हरि सावधाने रे ॥ १२ ॥

(८) नडाओल = फेंक दिया ।
(१०) जैसा तमाल वृक्ष गल कर कामदेव का नाम जपने लगा ।
(१२) सावधाने = भाव उद्दीपन, कन्दर्प जागरण ।

—०—

राधा ।

६२

सामर सुन्दर एँ वाटे आएल तें मोरि लागलि आँखी ।
आरति आँचर साजि न भेले सवे सखीजन साखी ॥ २ ॥
कहहि मो सखि कहहि मो कतए ताहेरि वासा ।
दूरहु दुगुन एडि़ मञे आवञो पुनु दरसन आसा ॥ ४ ॥
कि मोरा जीवने कि मोरा जौवने कि मोरा चतुरपने ।
मदन वाने मुरछलि अछञो सहञो जीव अपने ॥ ६ ॥
आध पदे यो धरते मोर देखल नागर जन समाजे ।
कठिन हृदय भेदि न भेले जाओ रसातल लाजे ॥ ८ ॥
सुरपति पाए लोचन मागञो गरुड़ मागञो पाखी ।
नन्देरि नन्दन मञे देखि आवञों मन मनोरथ राखी ॥१०॥

—:०:—

राधा ।

६३

जमुनक तिरे तिरे साँकड़ि वाटी । उवटि न भेलिहु सङ्ग परिपाटी ॥ २ ॥
तरु तर भेटल तरुन कन्हाइ । नयन तरङ्गे जनि गेलिहु सनाइ ॥ ४ ॥
के पतिपाएत नगर भरला । देखइते सुनइते मोर हृदय हरला ॥ ६ ॥
पलटि न हेरल गुरुजन लाजे । वचन मोञे चुकिलिहु सखिन्हिसमाजे॥८॥
एत दिन अछलिहु अपने गेयाने । आवे मोरा मरम लागल पचवाने ॥१०॥
निठुर सखी विसवास न देइ । परक वेदन पर बाटि न लेइ ॥१२॥
भनइ विद्यापति एहु रस भाने । राए सिवसिंह लखिमा देइ रमाने ॥१४॥

---

(१) सांकडि=संकीर्ण ।
(२) उवटि=पलट कर ।
(८) सखिन्हि=सखिगण ।

—०—

राधा ।

६४

अवनत आनन कए हमे रहलिहु वारल लोचन चोर ।
पिया मुखरुचि पिबए धाओल जनि से चाँद चकोर ॥ २ ॥
ततहु सञो हठे हरि मोञे आनल धएल चरन राखि ।
मधुक मातल उड़ए न पारए तइअओ पसारए पाँखि ॥ ४ ॥
माधवे बोललि मधुर वानी से सुनि मुदु मोञे कान ।
ताहि अवसर ठाम वाम भेल धरि धनु पचवान ॥ ६ ॥
तनु पसेवे पसाहनि भासलि तइसन पुलक जागु ।
चुनि चुनि भए काँचुअ फाटलि वाहु वलआ भागु ॥ ८ ॥
भन विद्यापति कम्पित कर हो बोलल बोल न जाय ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन साम सुन्दर काय ॥ १० ॥

---

(७) पसेवे = प्रस्वेद ।
(८) चुनि चुनि = चुन चुन शब्द करके । भागु = भग्न हुआ ।

—— o' ——

राधा ।

६५

से अवइते हम रमनि समाज । दिठि भरि न पेखल दारुण लाज ॥ २ ॥
शुनि चित उमत देखि आँखि भोर । चाँद उदय वन्दि रहल चकोर ॥४॥
मिलल पुरुप वर न पूरल काम । किए विधि दाहिन किए विधि वाम ॥६॥

——:o:——

राधा ।

६६

विके गेलिहुँ माधुर मधुरिपु भेटल साधे ।
तहि खने पञ्चसर लागल विधिवसे के करु बाधे ॥ २ ॥
हार भार भेल तहि खने चीर चाँदन भेल आगी ।
दखिनओ पवन दुसह भेल मोहि पापिनि वध लागी ॥ ४ ॥
कतने जतने घर अएलाहु केकर दधि दुध काजे ।
मनहु न मधुरिपु विसारिअ तेजल गुरुजन लाजे ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति सुवदनि दुइ दिठे होएत समाजे ।
मनक मनोरथ पूरत मधुरिपु आओब आजे ॥ ८ ॥

——:०.——

राधा ।

६७

कान्हू हेरब छल मने बड़ साध । कानू हेरइते भेल परमाद ॥ २ ॥
तबधरि अबोधि मुगुधि हम नारि । कि कहि कि सुनि किछु बुझइ न पारि॥४॥
साओन घन सम झरु दुनयान । अबिरत धस धस करत परान ॥६॥
का लागि सजनि दरशन भेल । रभसे अपन जिउ पर हाथे देल ॥८॥
न जानिय किय करु मोहन चोर । हेरइते प्राण हरि लइ गेल मोर ॥१०॥
एत सब आदर गेल दरशाइ । यत बिसरिय तत बिसर न जाइ ॥१२॥
विद्यापति कह शुन बर नारि । धैरज धर चिते मिलब मुरारि ॥१४॥

——:०:——

राधा ।

६८

कि कहव हे सखि इह दुख ओर । बाँशि निशास गरल तनु भोर ॥२॥
हठ सञे पैसय श्रवणक माझ । तैखने विगलित तनु मन लाज ॥४॥
बिपुल पुलके परिपूरय देह । नयने न हेरि हेरय जनु केह ॥६॥
गुरुजन समुखहि भावतरङ्ग । यतनहि वसने झाँपि सव अङ्ग ॥८॥
लहु लहु चरणे चलिय गृह माझ । दैव विहि आजु राखल लाज ॥१०॥
तनु मन विवश खसय निविबन्ध । की कहव विद्यापति रहु धन्द ॥१२॥

६९

कत न वेदन मोहि देसि मदना । हर नहि वला मोहि जुवति जना ॥२॥
विभूति भूपन नहि चान्दनक रेनू । वाघछाल नहि मोरा नेतक वसनू ॥४॥
नहि मोरा जटाभार चिकुरक वेनी । सुरसरि नहि मोरा कुसुमक सेनी ॥६॥
चान्दनक विन्दु मोरा नहि इन्दु गोटा । ललाट पावक नहि सिन्दुरक फोटा ॥८॥
नहि मोरा कालकूट मृगमद चारु । फनिपति नहि मोरा मुकुता हारु ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुन देव कामा । एक पए दूपन अछ ओहि नामक वामा ॥१२॥

राधा ।

७०

मनमथ तोहे कि कहब अनेक ।
दिठि अपराध पराण पथ पीड़सि इ तुय कोन विवेक ॥ २ ॥
दाहिन नयन पिशुन गण वारण परिजन वामहि आध ।
आध नयन कोने यव हरि पेखल ताहि भेल एत परमाद ॥ ४ ॥
पुर बाहिर पथ करत गतागत के नहि हेरत कान ।
तोहर कुसुम शर कतहुँ न सञ्चर हमर हृदय पाँच बान ॥ ६ ॥

—:o—

राधा ।

७१

आध नयन कए तहु कर आध । कतबे सहब मनसिज अपराध ॥ २ ॥
का लागि सुन्दरि दरसन भेल । जेओ छल जीवन सेओ दूर गेल ॥ ४ ॥
हरि हरि कओन कएल हमे पाप । जे सबे सुखद ताहि तह ताप ॥ ६ ॥
सब दिसि कामिनि दरसन जाए । तइअओ वेआधि विरह अधिकाए ॥ ८ ॥
कओनक कहब मेदिनि से थोल । शिव शिव एहि जनम भेल ओल ॥ १० ॥

—:o:—

राधा ।

७२

एहि बाटे माधव गेल रे । मोहि किछु पुछिओ न भेल रे ॥ २ ॥
माथुर जाइत जमुना तीर रे । आन्तर भेटल अहीर रे ॥ ४ ॥
मअनहु नयन जुझाए रे । हृदय न भेल बुझाए रे ॥ ६ ॥
मोहि छल होएत रतिरङ्ग रे । मधुर मधुरपति सङ्गे रे ॥ ८ ॥
चिकुर न भेल सँभारि रे । बुझलिहु कान्हे गोआरि रे ॥ १० ॥

—.o.—

राधा ।

७३

प्रथमहि हृदय बुझाओलह मोहि । बड़े पुने बड़े तपे पौलिस तोहि ॥ २ ॥
काम कला रस दैव अधीन । मञे विकाएब तञे बचनहु कीन ॥ ४ ॥
दूति दयावति कहहि बिसेखि । पुनु वेरा एक कइसे होएत देखि ॥ ६ ॥
दुर दुरे देखलि जाइते आज । मन छल मदने साहि देव काज ॥ ८ ॥
ताहि लए गेल बिधाता बाम । पलटलि डीठि सून भेल ठाम ॥१०॥

(२) पौलिस = पाइ । (८) साहि = साधि ।

राधा ।

७४

एक दिन हेरि हेरि हसि हसि जाय । अरु दिन नाम धय मुरलि बजाय ॥२॥
आजु अति नियरे करल परिहास । न जानिय गोकुल ककर विलास ॥४॥
साजनि ओ नागर सामराज । मूल विनु परधने माग वेयाज ॥६॥
परिचय नहि देखि आन काज । न करय सम्भ्रम न करय लाज ॥८॥
अपना निहारि निहरि तनु मोर । देइ आलिङ्गन भए विभोर ॥१०॥
खने खने वैदगधि कला अनुपाम । अधिक उदार देखिय परिनाम ॥१२॥
विद्यापति कह आरति ओर । बुझइ न बुझइ इह रस भोर ॥१४॥

सखी से सखी ।

७५

जखने दुहुक दीठि बिछूड़लि दुहु मने दुख लागु ॥
दुहुक आसा दीप मिझाएल मदन आँकुर भाँगु ॥ २ ॥
बिरह दहन दुहु सँतावए दुहु समीहए मेली ।
एकक हृदय अओके न पाओल ते नहि फाउलि केली ॥ ४ ॥
बाम नयना जओ भेल दूते ओ दाहिन रहु लजाइ ।
चेतन चेतन गुपुति पिरिति पर कहहु न जाइ ॥ ६ ॥
जइ नवचन्द पुरन्दर अन्तर चन्दन तासु समाने ।
दसमि दसा पथ अँगिरओ न करओ तेसर काने ॥ ८ ॥
मोहन सर मनोभवे साजल तनु पसाहल आगी ।
बिनु अवसरे की सखि बोलति पुनु दरसन लागी ॥ १० ॥
सीतलि उकुति जेहो जुगुति समदल छल आने ।
अब सओना जानि कन्हाइ मानि हल धनि धाने ॥ १२ ॥
दप्पन मुख प्रतिबिम्ब नाओ बेकत भेल बिकारे ।
पुनुक आसा काम पुरावओ भने कवि कण्ठहारे ॥ १४ ॥
हरि सरीसे जगत जानिअ रूपनरायन रन्ता ।
राए सिवसिंह सुचिरे जीवओ लखिमा देवि सुकन्ता ॥ १६ ॥

---

(३) समीहए=अभिलाष करता है ।
(४) फाउलि=प्राप्त हुआ ।
(७–८) यद्यपि बालचन्द्र शिव के ललाट में रहता है, तथापि आकाशस्थित पूर्णचन्द्र उसके तुल्य नहीं, अर्थात् व्यक्त प्रेम गुप्त प्रेम के तुल्य नहीं। राधा दशमी दशा (मृत्यु) स्वीकार करेगी परन्तु मनोभाव प्रकाश नहीं करेगी ।
(११) समदल=सम्वाद दिया था ।
(१५) रन्ता=राजा ।

—:०:—

सखी से सखी ।

७६

आइलि निकट बाटे छुइलि मदन साटे
दृढ़ बान्धे दरसिल केस ।
रमन भवन बेरि पलटि पाछु हेरि
आलि दिठि दए गेलि सन्देस ॥ २ ॥
आओर कि करति सखि परिनत ससिमुखि
कान्ह जदि न बूझ बिसेस ॥ ३ ॥
आचर धरइते करे लउलि लाज भरे
नमइते मुखेरि उपाम ।
न जानओ कमन जओ कमल नाल सओ
कमल भमोलल काम ॥ ५ ॥
कवि भने विद्यापति अभिनव रतिपति
सकल कलारस जान ।
राजवलभ जिवओ मति सिरि महेसर
रेणुक देवि रमान ॥ ७ ॥

---

(१) छुइलि=स्पर्श करि । साटे=कोड़ा, चाबुक ।
(२) आलि=सखि ।
(४) लउलि=नमित हुइ ।
(७) राजवलभ=राजसुहृत् ।

सखी से सखी ।

७७

जुवति चरित बड़ विपरीत बुझए के दहु पार ।
बुझए चेतन गुन निकेतन भूलल रह गमार ॥ २ ॥
साजनि नागरि नागर रङ्ग ।
सङ्गहि रहिअ तेसर न बुझ लोचन लोल तरङ्ग ॥ ४ ॥
वलित बदन बाङ्क बिलोकन कपटे गमन मन्दा ।
दुइ मन मिलल ठाम अंकुरल पेम तरुअर कन्दा ॥ ६ ॥

—:०:—

दूती ।

७८

कर किसलय सयन रचित गगन मडल पेखी ।
जनि सरोरुह अरुन सूतल बिनु बिरोधे उपेखी ॥ २ ॥
नव घन जञो निर बरीसए नयन उज्जल तोरा ।
जनि सुधाकर करें कवलित अमिय बम चकोरा ॥ ४ ॥
कह कमल वदनी ।
कमने पुरुसे हर अराधिअ जसु कारन तोञे खिनी ॥ ६ ॥
उत्तङ्ग पीन पयोधर उपर लखिअ अधर छाया ।
कनक गिरि पवार उपजल वापु मनोभव माया ॥ ८ ॥
तौं पुनु से नारि बिरहे झामरि पलटि परालि वेनी ।
साँस समीरन पिवए धाउलि जनि से कारि नगिनी ॥ १० ॥
भन विद्यापति सुनह जडवति सरूप मोर वचना ।
अपन मना थिर पए चाहिअ परे विवचने कोना ॥ १२ ॥

---

(८) बापु=श्रेष्ठ ।

—'०'—

सखी से सखी।

७९

सपनेहु न पुरल मनक साधे। नयने देखल हरि एत अपराधे ॥ २ ॥
मन्द मनोभव मन जर आगी। दुलभ पेम भेल पराभव लागी ॥ ४ ॥
चाँद बदनी धनि चकोर नयनी। दिवसे दिवसे भेलि चउगुन माजिनी ॥ ६ ॥
कि करति चाँदने की अरविन्दे। बिरह बिसर जञो सूतिअ निन्दे ॥ ८ ॥
अबुध सखी जन न बुझए आधी। आन औषध कर आन बेयाधी ॥ १० ॥
मनसिज मनके मन्दि बेवया। छाड़ि कलेवर मानस बेया ॥ १२ ॥
चिन्ता ए बिकल हृदय नहि थीरे। वदन निहारि नयन वह नीरे ॥ १४ ॥

(११) बेवथा = व्यवस्था।

—०—

माधव की दूती।

दूती।

८०

ए सखि ए सखि न बोलह आन। तुअ गुने लुबुधल निते आव कान ॥ २ ॥
निते निते निअर आव विनु काज। वेकतेओ हृदय नुकावए लाज ॥ ४ ॥
अनतहु जइते एतहि निहार। लुबुधल नअन हटए के पार ॥ ६ ॥
से अति नागर तोंजे तसु तूल। एक नले गाँथ दुइ जनि फूल ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति कवि कण्ठहार। एकसर मनमथ दुइ जिव मार ॥ १० ॥

६। हटए = फिराना।

—०—

दूती ।

८१

धनि धनि रमनि जनम धनि तोर ।
सब जन कान्हू कान्हू करि झुरए से तुय भावे विभोर ॥ २ ॥
चातक चाहि तियासल अम्बुद चकोर चाहि रहु चन्दा ।
तरु लतिका अवलम्बन करिए मझु मने लागल धन्दा ॥ ४ ॥
केश पसारि यब तुहु अछलि उर पर अम्बर आधा ।
से सब सुमरि कान्हू भेल आकुल कह धनि इथे कि समाधा ॥६॥
हसइते कब तुहु दशन देखायलि करे कर जोरहि मोर ।
अलखित दिठि कब हृदय पसारलि पुनु हेरि सखि कर कोर ॥८॥
एतहु निदेश कहल तोहे सुन्दरि जानि तोंहे करह विधान ।
हृदयपुतलि तुहु से शुन कलेवर कवि विद्यापति भान ॥ १० ॥

—:०:—

दूती ।

८२

जहि खने निअर गमन होय मोर । तहि खने कान्हू कुशल पूछ मोर ॥ २ ॥
मन दए बूझल तोहर अनुराग । पुन फले गुनमति पिआ मन जाग ॥ ४ ॥
पुनु पुछ पुनु पुछ मोर मुख हेरि । कहिलओ कहिनी कहवि कत बेरि ॥ ६ ॥
आन बेरि अवसर चाल आन । अपने रभस कर कहिनी कान ॥ ८ ॥
लुबुधल भमरा कि देव उपाम । बाधल हरिण न छाड़ए ठाम ॥१०॥

—:०:—

दूती ।

८३

शुन शुन ए सखि कहन न होइ । राहि राहि कए तनु मन खोई ॥ २ ॥
करइते नाम पेमे भइ भोर । पुलक कम्प तनु घरमहिं नोर ॥ ४ ॥
गद गद भाखि कहइ बर कान । राहि दरश बिनु निकसे परान ॥ ६ ॥
यव नहि हेरव तकर से मुख । तब जिउ भार धरब कोन सुख ॥ ८ ॥
तुहु बिनु आन नहि इथे कोइ । बिसरए चाह बिसर नहि होइ ॥१०॥
भनइ विद्यापति नहि विवाद । पूरब तोहर सब मन साध ॥१२॥

—.o —

दूती ।

८४

कण्टक माझ कुसुम परगास । भमर बिकल नहि पावए पास ॥ २ ॥
भमरा भेल घुरए सबे ठाम । तोहि बिनु मालति नहि बिसराम ॥ ४ ॥
रसमति मालति पुनु पुनु देखि । पिवए चाह मधु जी उपेखि ॥ ६ ॥
ओ मधुजीवी तोञे मधुरासि । सॉचि धरसि मधु मने न लजासि ॥ ८ ॥
अपनेहु मने गुनि बुझ अवगाहि । तसु दूषन बध लागत काहि ॥१०॥
भनइ विद्यापति तौं पय जीव । अधर सुधारस जौं पय पीव ॥१२॥

—.o:—

दूती ।

८५

अपना काज कओन नहि बन्ध । के न करए निअ पति अनुबन्ध ॥ २ ॥
अपन अपन हित सब केओ चाह । से सुपुरुष जे कर निरबाह ॥ ४ ॥
साजनि ताक जिबन थिक सार । जे मन दए कर पर उपकार ॥ ६ ॥
आरति अरतल आवए पास । अछइते वथु नहि करिअ उदास ॥ ८ ॥
से पुनु अनतहु गेले पाव । अपना मन पए रह पचताव ॥१०॥
भनइ विद्यापति दैन न भाख । बड़ अनुरोध बड़े पए राख ॥१२॥

(८) वथु=वस्तु ॥

—:०:—

दूती ।

८६

मुदित नयने हिय भुज युग चापि । सूति रहल तँहि किछु न अलापि॥ २ ॥
परसङ्गे करलहि नामहि तोरि । तवहि मिलिअ आँखि चाहे मुख मोरि ॥ ४ ॥
शुन धनि इथे नहि कहि आन छन्द । तोहे अनुरत भेल सामर चन्द ॥ ६ ॥
जोइ नयन भाङ्गि न सह अनङ्ग । सोइ नयने अब नोर तरङ्ग ॥ ८ ॥
जोइ अधर सदा मधुरिम हास । सोइ नीरस भेल दीघ निशास ॥१०॥
विद्यापति भन मिथि नह भाखि । गोबिन्द दास कह तुहु तहि साखि ॥१२॥

—:०:—

दूती ।

८७

कत अछ युवति कलामति आने । तोहि मानए जनि दोसरि पराने ॥ २ ॥
तुअ दरशन बिनु तिलाओ न जीवइ । दारुन मदन वेदन कत सहइ ॥ ४ ॥
शुन शुन गुनमति पुनमति रमनी । न कर विलम्ब छोटि मधु रजनी ॥ ६ ॥
सामर अम्बर तनुक रङ्गा । तिमिर मिलओ शशी तुलित तरङ्गा ॥ ८ ॥
सपुन सुधाकर आनन तोरा । पिउत अमिय हसि चान्द चकोरा ॥१०॥

—:o:—

दूती ।

८८

ए धनि कर अवधान । तो बिनु उनमत कान ।
कारण बिनु खने हास । कि कहए गद गद भास ॥ ४ ॥
आकुल अति उतरोल । हा धिक हा धिक बोल ॥ ६ ॥
कॉपए दुरबल देह । धरइ न पारइ केह ॥ ८ ॥
विद्यापति कह भाखि । रूप नरायन साखि ॥१०॥

—:o:—

दूती ।

८६

आजु हम पेखल कालिन्दि कूले । तुय विनु माधव विलुठय धूले ॥ २ ॥
कत शत रमणि मनहि नहि आने । किय विष दह समय जल दाने ॥ ४ ॥
मदन भुजङ्गमे दंशल कान । विनहि अमिय रस कि करव आन ॥ ६ ॥
कुलवति धरम काँच समतूल । मदन दलाल भेल अनुकूल ॥ ८ ॥
आनल बेचि नीलमणि हार । से तुहु पहिरवि करि अभिसार ॥१०॥
नील निचोले झाँपवि निज देह । जनि घन भितरे दामिनि रेह ॥१२॥
चौदिगे चतुर सखि चलु सङ्गे । आजु निकुञ्जे करह रस रङ्गे ॥१४॥
वल्लभ उज्जल निकप समान । निज तनु परिख हेम दशवान ॥१६॥

(१६) दशवान=दशगुण मूल्य ।

—:०:—

दूती ।

९०

आज पेखल नन्दाकिशोर ।
केलि बिलास सबहु अब तेजल अह निशि रहत बिभोर ॥ २ ॥
यवधरि चकित बिलोकि बिपिन तटे पलटि आओलि मुख मोरि ।
तवधरि मदनमोहन तरु कानने लुटइ धीरज पुन छोरि ॥ ४ ॥
पुन फिरि सोइ नयने यदि हेरवि पाओब चेतन नाह ।
भुजाङ्गिनि दंशि पुनहि यदि दंशय तवहि समय विष याह ॥ ६ ॥
अब शुभ खन धनि मनिमय भूपण भूषित तनु अनुपाम ।
अभिसरु वल्लभ हृदय बिराजह जनि मनि काञ्चन ॥ ८ ॥

—:०:—

दूती ।

६१

प्रथम सिरीफल गरवे गमओलह जौं गुनगाहक आवे ।
गेल जउवन पुनु पलटि न आवए केवल रह पचतावे ॥ २ ॥
सुन्दरि वचने करह समधाने ।
तोह सनि नारि दिवस दस अछलिहु ऐसन उपजु मेहि भाने ॥ ४ ॥
जउवन रूप तावे धरि छाजत जावे मदन अधिकारी ।
दिन दस गेले सेहओ पडाएत सकल जगत परचारी ॥ ६ ॥
विद्यापति भन जुवति लाखे लह पड़ल पयोधर तूले ।
दिने दिने आगे सखि ऐसनि होयब्रह वोसिनी घोरक मूले ॥ ८ ॥

—o:—

दूती ।

६२

से अति नागर तोञे सब सार । पसरओ मल्ली पेम पसार ॥ २ ॥
जौवन नगरि वेसाहब रूप । तते मुल होइह जते सरूप ॥ ४ ॥
साजनि रे हरि रस बनिजार । गोप भरमे जनु बोलह गमार ॥ ६ ॥
विधि वसे अधिक कर जनु मान । सोरह सहस गोपीपति कान्ह ॥ ८ ॥
तोह हुनि उचित रहत नहिं भेद । मनमथ मधये करव परिछेद ॥१०॥

—o—

दूती ।

१०१

यदि अवकास कहए नहि तोहि । कॉं लागि ततए पठओलए मोहि ॥ २ ॥
तोहरा हृदय वचन नहि थीर । नलनी पात जइसन बह नीर ॥ ४ ॥
आवे कि कहब सखि कहइते अकाज । अथिरक मधय भेल सम काज ॥ ६ ॥
आसा लागि सहत कत साठ । गरुअ न हो अमड़ाकाँ काठ ॥ ८ ॥
तोंहे नागरि गुन रूपक गेह । अनुदिने बुझल कठिन तुअ नेह ॥१०॥
तन्हिकाँ सतत तोहर परयाव । जनि निरधन मन कतए न धाव ॥१२॥
भनइ विद्यापति इ रस गाव । मगले कानट के नहि पाव ॥१४॥

(१४) कानट=जीर्ण वस्त्र ।

—:०:—

दूती ।

१०२

सुन्दर मन्दिरे थिर न थाकय ... न दय कान ।
चीर चिकुर एक न सम्बर ... आन ।
रामा सबहु तोहर उदेश ।
विरहे आउल कन्हाइ ... ४ ॥
सपन कारन सयन बरइ तु... ।
नयन मुदय मदन न देइ ... ६

दूती ।

१०३

तोहे कुल मति रति, कुलमति नारि । बाँके दरशने भुलल मुरारि ॥ २ ॥
उचितहु बोलइते आवे अवधान । संसय मेललहु तन्हिक परान ॥ ४ ॥
सुन्दरि कि कहव कहइते लाज । भोर भेला से परहु सञो बाज ॥ ६ ॥
थावर जङ्गम मनहि अनुमान । सबहिक विषय तोहर होअ भान ॥ ८ ॥
आओर कहि कि बुझओविसि तोहि । जनि उधमति उमतावए मोहि ॥१०॥

—.o.—

दूती ।

१०४

आसाञे मन्दिर निसि गमावए सुखे न सुत सञान ।
जखने जतए जाहि निहारए ताहि ताहि तोहि भान ॥ २ ॥
मालति सफल जीवन तोर ।
तोरे बिरहे भुअन भमए भेल मधुकर भोर ॥ ४ ॥
जातकि केतकि कत न अछए सबहि रस समान ।
सपनेहु नहि ताहि निहारए मधु कि करत पान ॥ ६ ॥
बन उपवन कुञ्ज कुटीरहि सबहि तोहि निरूप ।
तोहि बिनु पुनु पुनु मुरुछए अइसन पेम सरूप ॥ ८ ॥
साहर नवह सउरभ न सह गुजरि गीत न गाव ।
चेतन पापु चिन्ताञे आकुल हरखे सबे सोहाव ॥ १० ॥
जकर हृदय जतहि रतल से धसि ततहि जाए ।
जइअओ जतने बाँधि निरोधिअ निमन नीर थिराए ॥ १२ ॥
इ रस राए सिवसिंह जानए कवि विद्यापति भान ।
रानि लखिमा देवि वल्लभ सकल गुन निधान ॥ १४ ॥

—o.—

दूती ।

१०१

यदि अवकास कइए नहि तोहि । कोँ लागि ततए पठओलए मोहि ॥ २ ॥
तोहरा हृदय वचन नहि थीर । नलनी पात जइसन वह नीर ॥ ४ ॥
आबे कि कहब सखि कहइते अकाज । अथिरक मधय भेल सम काज ॥ ६ ॥
आसा लागि सहत कत साठ । गरुअ न हो अमड़ाकाँ काठ ॥ ८ ॥
तोँहे नागरि गुन रूपक गेह । अनुदिने बुझल कठिन तुअ नेह ॥१०॥
तन्हिकाँ सतत तोहर परयाव । जनि निरधन मन कतए न धाव ॥१२॥
भनइ विद्यापति इ रस गाव । मगले कानट के नहि पाव ॥१४॥

---

(१४) कानट=जीर्ण पत्र ।

—.o:—

दूती ।

१०२

सुन्दर मन्दिरे थिर न थाकय वचने न दय कान ।
चीर चिकुर एक न सम्बर कत न बुझओब आन ॥ २ ॥
रामा सबहु तोहर उदेश ।
विरहे आउल कन्हाइ फिरय देश विदेश ॥ ४ ॥
सपन कारन सयन वरइ तुअ परशन लागि ।
नयन मुदय मदन न देइ हृदय उठय आगि ॥ ६ ॥

—o.—

दूती ।

१०३

तोहे कुल मति रति, कुलमति नारि । बाँके दरशने भुलल मुरारि ॥ २ ॥
उचितहु बोलइते आवे अवधान । ससय मेललहु तन्हिक परान ॥ ४ ॥
सुन्दरि कि कहब कहइते लाज । भोर भेला से परहु सञो बाज ॥ ६ ॥
थावर जङ्गम मनहि अनुमान । सबहिक विषय तोहर होअ भान ॥ ८ ॥
आओर कहि कि बुझओविसि तोहि । जनि उधमति उमतावए मोहि ॥१०॥

—.०.—

दूती ।

१०४

आसाञे मन्दिर निसि गमावए सुखे न सुत सञान ।
जखने जतए जाहि निहारए ताहि ताहि तोहि भान ॥ २ ॥
मालति सफल जीवन तोर ।
तोरे विरहे भुअन भमए भेल मधुकर भोर ॥ ४ ॥
जातकि केतकि कत न अछए सबहि रस समान ।
सपनेहु नहि ताहि निहारए मधु कि करत पान ॥ ६ ॥
बन उपबन कुञ्ज कुटीरहि सबहि तोहि निरूप ।
तोहि बिनु पुनु पुनु मुरुछए अइसन पेम सरूप ॥ ८ ॥
साहर नवह सउरभ न सह गुजरि गीत न गाव ।
चेतन पापु चिन्ताञे आकुल हरखे सबे सोहाव ॥ १० ॥
जकर हृदय जतहि रतल से धसि ततहि जाए ।
जइअओ जतने बाँधि निरोधिअ निमन नीर थिराए ॥ १२ ॥
इ रस राए सिवसिंह जानए कवि विद्यापति भान ।
रानि लखिमा देवि वल्लभ सकल गुन निधान ॥ १४ ॥

—.०—

दूती ।

१०५

आनहु तोरहि नामे बजाव । तोरि कहिनी दिन गमाव ॥ २ ॥
सपनेहु तोर सङ्गम पाए । करवने की नहिं की विसुनाए ॥ ४ ॥
कि सखि पुछसि ताहेरि कथा । ताहि तह भलि तोरि अवथा ॥ ६ ॥
जाहि जाहि तुअ सङ्ग मेरी । चकित लोचन चउदिस हेरी ॥ ८ ॥
उठि आलिङ्गए अपनि छाआ । एतेहु पापिनि तोहि न दाआ ॥१०॥

---

(४) विसुनाए = विस्मृत होता है ।
(६) अवथा = अवस्था ।
(१०) दाआ = दया ।

——:०:——

दूती ।

१०६

जीवन चाहि यौवन बड़ रङ्ग । तव यौवन यव सुपुरुख सङ्ग ॥ २ ॥
सुपुरुख प्रेम कबहु नहि छाड़ । दिने दिने चाँदकला सम बाढ़ ॥ ४ ॥
तुहु से नागरि कानु रसकन्द । बड़ पुने रसवती मिले रसवन्त ॥ ६ ॥
तुहुँ यदि कहसि करिय अनुसँग । चोरि पिरीति होय लाख गुण रँग ॥८॥
सुपुरुष ऐसन नहि जग माझ । अते ताहे अनुरत बरज समाज ॥१०॥
भनइ विद्यापति इथे नहि लाज । रूप गुणवतिक इह बड़ काज ॥१२॥

——.०.——

दूती ।

११०

माधव कि कहब से विपरीते ।
तनु भेल जर जर भाविनि अन्तर चित रहल तसु भीते ॥ २ ॥
निरस कमल मुख करे अवलम्बइ सखि माझे वैसलि गोइ ।
नयनक नीर थिर नहि बांधइ पङ्क कएल महि रोइ ॥ ४ ॥
मरमक बोल वयने नहि बोलत तनु भेल कुहु शशि खीना ।
अवनि उपर धनि उठए न पारइ धयलि भुजा धरि दीना ॥ ६ ॥
तपत कनया जनि काजर भेल तनु अति भेल विरह हुतासे ।
कवि विद्यापति मने अभिलाषत कान्ह चलह तसु पासे ॥ ८ ॥

—:o.—

दूती ।

१११

लोटइ धरनि धरनी धरि सोइ । खने खन शास खने खन रोइ ॥ २ ॥
खने खन मुरछइ कंठ परान । इथि पर की गति दैवे से जान ॥ ४ ॥
ए हरि पेखलो से बर नारि । न जीवइ विनु कर परस तोहरि ॥ ६ ॥
केहो केहो जपय वेद दिठि जानि । केहो नव ग्रह पुछ जोतिअ आनि ॥ ८ ॥
केहो केहो धरि धातु विचारि । विरह बिखिन कोइ लखइ न पारि ॥१०॥

— o·—

दूती ।

११२

नयनक नीर चरन तल गेल । थलहुक कमल अम्भोरुह भेल ॥ २ ॥
अधर अरुण निमिषि नहि होए । किसलय सिसिरे छाड़ि हलु धोए ॥ ४ ॥
ससिमुखि नेरे ओल नहि होए । तुअ अनुरागे शिथिल सब कोए ॥ ६ ॥

— o —

दूती ।

११३

अविरल नयन गरए जलधार । नब जल बिन्दु सहए के पार ॥ २ ॥
कि कहब साजनि ताहेरि कहिनी । कहहि न पारिय देखलि जहिनी ॥ १ ॥
कुच युग ऊपर आनन हेरु । चान्द राहु डरे चढ़ल सुमेरु ॥ ६ ॥
अनिल अनल बम मलयज बीख । जेओ छल शीतल सेओ भेल तीख ॥ ८ ॥
चान्द सतावए सबिताहु जीनि । नहि जीवन एकमत भेलि तीनि ॥१०॥
किछु उपचार मान नहि आन । ताहि बेआधि भेषज पञ्चबान ॥१२॥
तुअ दरसन बिनु तिलाओ न जीव । जइअओ कलामति पीउख पीब ॥१४॥

— ० —

सखी से सखी ।

११४

राहिक नविन प्रेम सुनि दुति मुखे मनहि उलसित कान ।
मनोरथ कतहि हृदये परिपूरल आनन्दे हरल गेयान ॥२॥
सजनि बिहि कि पुरायब साधा ।
कत कत जनमक पुन फले मिलब सेहे गुनमति राधा ॥ ४ ॥
एत कहि माधब तोरित गमन करु पथ बिपथ नहि मान ।
सुन्दरि मन कर दूति बदन हेरि मनमथे जर जर प्रान ॥ ६ ॥
ऐसन कुञ्जे मिलल नव नागर सखि गन सञे जहाँ राइ ।
दुहु दुहु बदन हेरि दुहु आकुल विद्यापति कवि गाइ ॥ ८ ॥

सम्भाषण ।

माधव ।

११५

सहज प्रसनमुख, दरस हृदय सुख, लोचन तरल तरङ्ग ।
अकाश पाताल बस, सेओ कइसे भेल अस, चाँद सरोरुह सङ्ग ॥२॥
बिधि निरमलि रामा, दोसरि लाछि समा, भल तुलाएल निरमान ॥३॥
कुच मण्डल सिरि, हेरि कनक गिरि, लाजे दिगन्तर गेल ।
केओ अइसन कह, सेओ न जुगुति सह, अचल सचल कइसे भेल ॥५॥
माझ खीन तनु, भरे भाँगि जाए जनु, विधि अनुसए भेल साजि ।
नील पटोर आनि, अति से सुदृढ़ जानि, जतने सिरिजू रोम राजि ॥७॥
भन कवि विद्यापति, कामे रमनि रति, कउतुक बुझ रसमन्त ।
सिरि सिव सिंह राउ, पुरुब सुकृते पाउ, लखिमा देवि रानि कन्त ॥६॥

(३) लाछि=लक्ष्मी ।
(७) पटोर=रेशम ।
(९) राउ=राजा ।

—:०:—

माधव ।

११६

जकर नयन जतहि लागल ततहि सिथिल गेला ।
तकर रूप सरूप निरूपए काहु देखि नहि भेला ॥२॥
कमलवदनि एही जगत तकर पुन सराहिय सुन्दरि मीनत जाही रे ॥३॥
पीन पयोधर चीवुक चुम्बए कीए पटतर देला ।
वदन चान्द तरासे नुकाएल पलटि हेर चकोरा ॥५॥

—:०:—

माधव ।

११७

रामा अधिक चाङ्गिम भेल ।
कतने जतने कत अदबुद विहि विहि तोहि देल ॥ २ ॥
सुन्दर वदन सिन्दुर विन्दु सामर चिकुर भार ।
जनि रवि ससि सङ्गहि उगल पाछु कए अन्धकार ॥ ४ ॥
चञ्चल लोचन बाँके निहारए अञ्जन सोभा पाए ।
जनि इन्दीवर पवने पेलल अलि भरे उलटाए ॥ ६ ॥
उनत उरज चिरे झपावए पुनु पुनु दरसाए ।
जइअओ जतने गोअए चाहए हिमगिरि न नुकाए ॥ ८ ॥
एहनि सुन्दरि गुनक आगरि पुने पुनमत पाव ।
इ रस विन्दक रूपनराअन कवि विद्यापति गाव ॥१०॥

—— ० ——

माधव ।

११८

कवरी भये चामरि गिरि कन्दर मुख भय चाँद अकासे ।
हरिन नयन भय सर भय कोकिल गति भय गज वनवासे ॥ २ ॥
सुन्दरि किए मोहि सम्भासि न जासि ।
तुम डरे इह सब दूरहि पलायल तुहुँ पुन काहि डरासि ॥ ४ ॥
कुच भय कमल कोरक जले मुदि रहु घट परवेश हुतासे ।
दाड़िम सिरिफल गगने वास करु शम्भु गरल करु ग्रासे ॥ ६ ॥
भुज भय पङ्के मृणाल नुकाएल कर भय किशलय काँपे ।
कविशेखर भन कत कत ऐसन कहव मदन परतापे ॥ ८ ॥

——,०,——

माधव ।

११६

जनि हुतवहे हवि आनि मेराओल ता सम भेल विकार ।
दुअओ नयन तोर विषम मदन शर शालय हृदय हमार ॥ २ ॥
हरि हरि कॉलागि सुमुख विहुसि हसि हेरह जीवन परल सन्देह ॥ ३ ॥
पीन पयोधर अपरुव सुन्दर उपर मोतिम हार ।
जनि कनकाचल उपर विमल जल दुइ वह सुरसरि धार ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति सुन वर नागर सबहु होयत परकार ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा कन्त उदार ॥ ७ ॥

—:०:—

माधव ।

१२०

सुन्दरि गरुअ तोर विवेक ।
विनु परिचय पेमक ऑकुर पल्लव भेल अनेक ॥ २ ॥
कखने होएत सुफल दिवस वदन देखब तोर ।
वहुल दिवस भुखल भमर पिउत चॉद चकोर ॥ ४ ॥
भन विद्यापति सुन रमापति सकल गुन निधान ।
चिरे जिवे जिवओ राए दामोदर दसा सए अवधान ॥ ६ ॥

—.०.—

माधव ।

१२१

भौंह लता वड़ देखिअ कठोर, अञ्जने आँजि हासि गुन जोर ॥ २ ॥
सायक तोर कटाख अति चोख, व्याध मदन बधइ बड़ दोष ॥ ४ ॥
सुन्दरि सुनह वचन मन लाए, मदन हाथ मोहि लेह छुडाए ॥ ६ ॥
सहए के पार काम परहार, कत अभिभव हो की परकार ॥ ८ ॥
एहि जग तिनिहु विमल जस लेह, कुच युग शम्भु शरन मोहि देह ॥१०॥

—.०.—

राधा ।

१२२

तोरए मोञे गेलहु फूल । मोती मानिके तूल ॥ २ ॥
साजनि साजि अछोरसि मोरि । गरुवि गरुवि आरति तोरि ।
दिठि देखइते दिवस चोरि ॥ ५ ॥
एत कन्हाइ पर धन लोभ । जे नहि लुबुध सेहे पए सोभ ॥ ७ ॥
निकुञ्जकेर समाज । इथी नही मुख लाज ॥ ६ ॥
ढाकि रहे न अपजस रासि । से करए कान्ह जेन लजासि ।
जखने नागर नगर जासि ॥१२॥
पीन पयोधर भार । मदन राए भंडार ॥ १४ ॥
रतने जड़िलो ताहेरि माथ । मलिन हो तन देहे हाथ ॥ १६ ॥
भन कवि कण्ठहार । बस एतए के पार ॥ १८ ॥
सिरि सिवसिंह जानै तन्त । रतन सन लखीमा कन्त ।
सकल कला रस जे गुनमन्त ॥२१॥

— ० —

राधा ।

१२३

कुञ्ज भवन सञो निकसलि रे रोकल गिरिधारी ।
एकहि नगर बस माधव हे जनु कर बटवारी ॥ २ ॥
छाडु कन्हइया मोर आँचर रे फाटत नव सारी ।
अपजस होएत जगत भरि हे जनु करिअ उघारी ॥४॥
सङ्गक सखि अगुआलि हे हम एकसरि नारी ।
दामिनी आए तुलाएल हे एक राति अँधारी ॥ ६ ॥
भनहि विद्यापति गाओल रे सुनु गुनमति नारी ।
हरिक सङ्ग किछु डर नहि हे तोंह परम गमारी ॥ ८ ॥

—•०•—

राधा ।

१२४

कर धय कर मोहे पारे । देव मैं अपरुब [illegible] ए । ॥ ४ ॥
सखि सभ तेजि चलि गेली । न जान [illegible] भेली [illegible] ४ ॥
हम न जायब तुअ पासे । जाए [illegible] ६ ॥
विद्यापति एहो [illegible] रि म

राधा ।

१२७

कुच नख लागत सखिजन देख । गिरि कइसे नुकाएत नवससिरेख॥२॥
आरति अधिक न करिये लोभ । सबे राखए पहिलहि मुखसोभ ॥ ४ ॥
न हर न हर हरि हृदयक हार । दुहु कुल अपजस पहिल पसार ॥ ६ ॥
खर कए खेव लेहे निअ दान । रसिक पए राख गोपीजन मान ॥ ८ ॥
तोहे जदुकुल हमे कुलिन गोआलि । अनुचित बाट न कर बनमालि ॥१०॥
भनइ विद्यापति अरेरे गोआरि । बड़े पुने सम्भव आदर मुरारि ॥१२॥
राजा रूपनरायन जान । राए सिवसिंह सुखमा देइ रमान ॥१४॥

—— ० ——

सखी-शिक्षा ।
राधा की शिक्षा ।
दूती ।

१२८

शुनु शुनु विनोदिनि राइ । तोहे पुनु कहओं बुझाइ ॥ २ ॥
कानुक भाव जों होइ । हिय माह राखब गोइ ॥ ४ ॥
केहो जनु लखइते पार । वेकत करबि कुलचार ॥ ६ ॥
कानु उयब हिय माह । आन छले बिसरबि ताह॥ ८ ॥
गुरु दुरुजन तुय पाप । देखले देअब बहु ताप ॥१०॥
थीर करबि सदा चीत । जैसन से कुलवति रीत ॥१२॥
पुनु जनु भावह आन । इह कविशेखर भान ॥१४॥

——.०.——

राधा ।

१२५

तुअ गुन गौरव सील सोभाव । सेहे लए चढ़िलिहु तोहरी नाव ॥ २ ॥
हठ न करिअ कन्हु कर मोहि पार । सब तह बड़ थिक पर उपकार ॥ ४ ॥
आइलि सखि सबे साथे हमार । से सबे भेलि निकहि बिधि पार ॥ ६ ॥
हमरा भेलि कान्हु तोहरेओ आस । जे अँगिरिअ ता न होइअ उदास ॥ ८ ॥
भल मन्द जानि करिअ परिनाम । जस अपजस दूर रह गए ठाम ॥१०॥
हमे अबला कत कहब अनेक । आइति पड़ले बुझिअ बिबेक ॥१२॥
तोहे पर नागर हमे पर नारि । काँप हृदय तुअ प्रकृति बिचारि ॥१४॥
भनइ विद्यापति गावे । राजा सिवसिह रूपनराएन इ रस सकल से पावे ॥१६॥

—.०.—

राधा ।

१२६

नाव डोलाव अहीरे, जिवइते न पाओब तीरे, खर नीरे लो ।
खेव न लेअए मोले, हसि हसि की दहु बोले, जिव डोले लो ॥ २ ॥
कके बिके ऐलिहु आपे, बेढ़िलहु मोहि बड़ सापे, मोरे पापे लो ।
करितहुँ पर उपहासे, परिलिहुँ तन्हि विधि फाँसे, नहि आसे लो ॥ ४ ॥
न बुझसि अबुझ गोआरी, भाजि रहु देव मुरारी, नहि गारी लो ।
कवि विद्यापति भाने, नृप सिवसिंह रस जाने, नर कान्हे लो ॥ ६ ॥

—०—

दूती ।

१२९

प्रथमाह सुन्दरि कुटिल कटाख । जिव जोखे नागर दे दस लाख ॥ २ ॥
केओ दे हास सुधा सम नीक । जइसन परहोंक तइसन बीक ॥ ४ ॥
सुनु सुन्दरि हे नव मदन पसार । जनु गोपह आओब बनिजार ॥ ६ ॥
रोस दरसि रस राखब गोए । धयले रतने अधिक मूल होए ॥ ८ ॥
भलहि न हृदय बुझाओब नाह । आरति गाहक महग बेसाह ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुनह सयानि । सुहित बचन राखब हिय आनि ॥१२॥

(४) परहोंक = बोहनि, जो प्रथम बेचा जाता है ।

दूती ।

१३०

प्रथमहि अलक तिलक लेब साजि । चञ्चल लोचन काजरे आँजि ॥ २ ॥
जाएब बसने आङ्ग लेब गोए । दूरहि रहब तेँ अरथित होए ॥ ४ ॥
मोरे बोले सजनी रहब लजाए । कुटिल नयने देब मदन जगाए ॥ ६ ॥
झाँपब कुच दरसाओब कन्त । दृढ कए बाँधब निबिहुक अन्त ॥ ८ ॥
मान कइए किछु दरसब भाव । रस राखब तेँ पुनु पुनु आव ॥१०॥
हमे कि सिखउबि हे अओर से रङ्ग । अपनहि गुरु भए कहत अनङ्ग ॥१२॥
भनइ विद्यापति इ रस गाव । नागर कामिनि भाव बुझाव ॥१४॥

दूती ।

१३१

अपनहि नागरि अपनहि दूत । से अभिसार न जान बहूत ॥ २ ॥
की फल तेसर कान जनाए । आनव नागर नयने बझाए ॥ ४ ॥
ए सखि राखहिसि अपनुक लाज । परक दुआरे करह जनु काज ॥ ६ ॥
परक दुआरे करिअ जञो काज । अनु दिन अनु खने पाइअ लाज ॥ ८ ॥
दुहु दिस एक सञो होइक विरोध । तकरा बजइते कतए निरोध ॥१०॥

—·०·—

दूती ।

१३२

शुन शुन ए सखि वचन विशेस । आजु हम देव तोहे उपदेश ॥ २ ॥
पहिलहि बैठवि शयनक सीम । हेरइते पिया मुख मोडवि गीम ॥ ४ ॥
परशइते दुहु करे बारवि पानि । मौन रहवि पहु करइते बानि ॥ ६ ॥
यव हम सोपव करे कर आपि । साधसे धरवि उलटि मोहे कॉपि ॥ ८ ॥
विद्यापति कह इह रस ठाट । काम गुरु भए शिखाओव पाठ ॥१३॥

— ० —

दूती ।

१३३

तोहर साजनि पहिल पसार । हमरे वचने करिअ वेवहार ॥ २ ॥
अमिअक सागर अधरक पास । पओले नागर करव गरास ॥ ४ ॥
लहु लहु कहिनी कहव बुझाए । पिउत कुगयाँ गोमुख लाए ॥ ६ ॥
पहिल पढ़ओंक भला के हाथ । ते उपहास नहि गोपी साथ ॥ ८ ॥
मन्दा काज मन्दे कर रोस । मल पओलहि अलपहि कर तोस ॥ १० ॥

(६) गमार गउ के जैसा मुँह लगा के पीता है ।
(७) पढ़ओंक=बोहनी ।

राधा ।

१३४

परिहर ए सखि तोहे परणाम । हम नहि जाएब से पिया ठाम ॥ २ ॥
वचन चातुरि हम किछु नहि जान । इङ्गित न बूझिय न जानिय मान ॥ ४ ॥
सहचरि मिलि बनायत वेश । बाँधए न जानिय अपन केश ॥ ६ ॥
कभु नहि सुनिय सुरतक बात । कैसने मिलब माधव साथ ॥ ८ ॥
से वर नागर रसिक सुजान । हम अबला अति अलप गेयान ॥ १० ॥
विद्यापति कह कि बोलब तोय । आजुक मिलन समुचित होय ॥ १२ ॥

राधा ।

१३५

न जानिय पेम रस नहि रति रङ्ग । कैसे मिलब हम सुपुरुख सङ्ग ॥ २ ॥
तोहर बचने जब करव पिरीति । हम शिशुमति अति अपयश भीति ॥ ४ ॥
सखि हे हम अब कि बोलब तोय । ता सञे रमस कबहु नहि होय ॥ ६ ॥
से वर नागर नव अनुराग । पाँचशर मदन मनोरथ जाग ॥ ८ ॥
दरशने आलिङ्गन करब सोइ । जिउ निकसब जब राखब कोइ ॥१०॥
विद्यापति कह मिथइ तरास । सुनह ऐसे नह तकर बिलास ॥१२॥

——:०·——

दूती ।

१३६

काहे डरसि सखि चलु हम सङ्ग । माधव नहि परशब तुय अङ्ग ॥ २ ॥
इह रजनी फुल कानन माझ । कै एक फिरत साजि बहु राज ॥ ४ ॥
कुसुमक घोर धनुक धरि पानि । मारत शर बाला जन जानि ॥ ६ ॥
अतए चलह सखि भितर कुंज । यहाँ रह हरि महाबल पुंज ॥ ८ ॥
एत कहि आनल धनि हरि पास । पूरल बल्लभ सुख अभिलास ॥१०॥

—— ०·——

दूती ।

१३७

परिहर मने किछु न कर तरास । साधस नहि कर चल पिय पास ॥ २ ॥
दुर कर दुरमति कहलम तोय । विनु दुख सुख कबहु नहि होय ॥ ४ ॥
तिल आध दुख जनम भरि सुख । इथे लागि धनि कि होइय विमुख ॥ ६ ॥
तिला एक मुनि रहु दु नयान । रोगि करय जनि औखध पान ॥ ८ ॥
चल चल सुन्दरि करह सिङ्गार । विद्यापति कह एहि से विचार ॥१०॥

—— ० ——

दूती ।

१३८

सयन सीम रहि आवे । दुर कर से सब सकल सभावे ॥ २ ॥
मुख अवनत तेज लाजे । कत महि लिखसि चरन वेश्राजे ॥ ४ ॥
रामा रह पिआ पासे । अभिनव सङ्गम तेजह तरासे ॥ ६ ॥
पिआ सञो पहिलुकि मेली । होउ कमल के अलि केली ॥ ८ ॥
तरतम तञे कर दूरे । छैल इछहि छोड़ह मोर चीरे ॥१०॥
विद्यापति कवि भासा । अभिनव सङ्गम तेजह तरासा ॥१२॥

—— ० ——

दूती ।

१३९

हमे दरसइते कतहुँ वेश करु हमे हेरइते तनु झाँप ।
सुरत शिङ्गारे आजु धनि आओलि परशइत थर थर काँप ॥ २ ॥
शुन हे कान्हु कहिय अवधारि ।
सकल काज हम बुझल बुझायल न बूझल अन्तर नारि ॥ ४ ॥
अभिनव काम नाम पुन शुनइते रोखत गुन दरसाइ ।
अरि सम गञ्जए मन पुन रञ्जए अपन मनोरथ साइ ॥ ६ ॥
अन्तरे जिउ अधिक करि मानए बाहर न गनए तरासे ।
कह कविशेखर सहज विषय रत बिदगध केलिविलासे ॥ ८ ॥

—.०.—

दूती ।

१४०

जावे न मालति कर परगास । तावे न ताहि मधुकर विलास ॥ २ ॥
लोभ परीहरि सूनहि राँक । धके कि केओ कुअ डूब विपाक ॥ ४ ॥
तेज मधुकर एहन अनुबन्ध । कोमल कमल लीन मकरन्द ॥ ६ ॥
एखने इछसि एहन सङ्ग । ओ अति सैसबे न बुझ रङ्ग ॥ ८ ॥
कर मधुकर तोहे दिढ़ गेआँन । अपने आरति न मिल आन ॥१०॥

—.०.—

दूती ।

१४१

शुन शुन सुन्दर कन्हाइ । तोहे सोँपल धनि राइ ॥ २ ॥
कमलिनि कोमल कलेवर । तुहुँ से भूखल मधुकर ॥ ४ ॥
सहजे करबि मधुपान । भूलह जनि पाँचबान ॥ ६ ॥
परबोधि पयोधर परशिह । कुञ्जर जनि सरोरुह ॥ ८ ॥
गनइते मोतिम हारा । छले परशवि कुच भारा ॥१०॥
न बुझए रति रस रङ्ग । खने अनुमति खने भङ्ग ॥१२॥
सिरीस कुसुम जिनि तनु । थोरि सहबि फुलधनु ॥१४॥
विद्यापति कवि गाव । दूतिक मिनति तुय पाव ॥१६॥

—— ० ——

दूती ।

१४२

वारि विलासिनि जतने आनलि रमन करब राखि ।
जैसे मधुकर कुसुम न तोल मधु पिब मुख माखि ॥ २ ॥
माधव करब तेसनि मेरा ।
बिनु हकारे तुअ निकेतन आवए दोसरि बेरा ॥ ४ ॥
सिरिसि कुसुम कोमल ओ धनि तोहहु कोमल कान्ह ।
इङ्गित उपर केलि जे करब जे न पराभव जान ॥ ६ ॥
दिने दिने दूने पेम बढ़ाओब जैसे बाढ़सि सुससी ।
कौतुकहु किछु बाम न बोलब निअर जाउबि हसी ॥ ८ ॥

(४) हकार=बुलाना ।

—— ० ——

दूती ।

१४३

बूझब छयल पन आज ।
राहि मनि रतने आनल अति यतने
बाञ्धि सब रमणि समाज ॥ २ ॥
शिरिष कुसुम तनि अति सुकुमार धनि
आलिङ्गब दृढ़ अनुरागे ।
निर्भय करब केलि केहो नहि बूझ मेलि
भमर भरे माजरि न भाँगे ॥
पिरीतिक बोले नियरे बइसाओबि
नख हानि आनब कोल ॥
नहि नहि करि धनि कपटे भूलबि जनु
यदि कह कातर बोल ॥ ६ ॥

दूती ।

१४४

कोमल तनु पराभवे पाओब तेजि न हलबि तेँहु ।
भमर भरे कि माजरि भाँगए देखल कतहु केहु ॥ २ ॥
माधव बचन धरब मोर ।
नही नहि कय न पतिआएब अपद लागत भोर ॥ ४ ॥
अधर निरसि धुसर करब भाव उपजत भला ।
खने खने रति रभस अधिक दिने दिने ससि कला ॥ ६ ॥

दूती ।

१४५

सहजहि तनु खिनि माझ बेबि सनि सिरिसि कुसुम सम काया ।
तोहे मधुरिपुपति कैसे कए धरति रति अपरुब मनमथ माया ॥२॥
माधव परिहर दृढ़ परिरम्भा ।
भाँगि जाएत मन जीव सञे मदन विटपि आरम्भा ॥ ४ ॥
सैसव अछल से डरे पलाएल जौवन नूतन वासी ।
कामिनि कोमल पाहुन पचसर भए जनु जाइ उदासी ॥ ६ ॥
तोहर चतुरपन जखने धरति मन रस बूझति अवसेखि ।
एखने अलप बुधि न बुझ अधिक सुधि केलि करब जिव राखि ॥ ८ ॥
तोहे जे नागर मानओ धनि जिव सनि कोमल काँच सरीरा ।
ते परि करब केलि जे पुनु होअ मेलि मूल राख बनिजारा ॥१०॥
हमरि अइसनि मति मन दए सुन दुति दुर कर सबे अनुतापे ।
जओ अति कोमल तैअओ न ढरि पल कबहु भमर भरे कापे ॥१२॥

—०—

दूती ।

१४६

प्रथम समागम भूखल अनङ्ग । धनि बल जानि करब रतिरंग ॥ २ ॥
हठ नहि करबे आइति पाए । भूखल नहि दुहु कओरे खाए ॥ ४ ॥
चेतन कान्ह तोंहहि यदि आथि । के नहि जान महते नव हाथि ॥ ६ ॥
तुय गुन गन कहि कत अनुबोधि । पहिलहि सबहि हलालि परबोधि ॥ ८ ॥
हठ नहि करबे रति परिपाटि । कोमल कामिनि बिघटति साटि ॥१०॥
जाबे रभस सह ताबे बिलास । बिपति बुझिअ जओ न जाएब पास ॥१२॥
धसि परिहरि नहि धरबिए बाहु । उगिलल चन्द गिलय जन राहु ॥१४॥
भनइ विद्यापति कोमल काँति । कौशल सिरिस सुम आलि भाँति ॥१६॥

—०—

मिलन ।

सखी से सखी ।

१४७

सुन्दरि चललिह पहु घर ना । चहु दिग सखि सव कर धर ना ॥ २ ॥
जाइतहुँ लागु परेम डर ना । जइसे सासि काँप राहु डर ना ॥ ४ ॥
जइतेहि हार टुटिए गेल ना । भूपन बसन मलिन भेल ना ॥ ६ ॥
रोए रोए कजालि वहाय देल ना । अदङ्कहि सिन्दुर मेटाय गेल ना ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति गाओल ना । दुख सहि सहि सुख पाओल ना ॥१०॥

——,०——

राधा ।

१४८

अहे सखि अहे सखि लइ जनु जाहे । हम अति बालक आकुल नाहे ॥ २ ॥
गोट गोट सखी सभ गेलि वहराय । बजर कबाड़ पहु देलन्हि लगाय ॥ ४ ॥
तेहि अवसर पहु जागल कन्ते । चीर सम्भारलि जीउ भेल अन्ते ॥ ६ ॥
नहि नहि करे नयन ढर नोरे । काँच कमला भमरा झिकझोरे ॥ ८ ॥
जइसे डगमग नलनिक नीरे । तइसे डगमग धनिक शरीरे ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुनु कविराजे । आगि जारि पुनु आगिक काजे ॥१२॥

——,०——

दूती ।

१४६

अधिक नवोढा सहजहि भीति । आइलि मोर वचने परतीति ॥२॥
चरण न चलए निकट पहु पास । रहलि धरनि धरि मान तरास ॥४॥
अवनत आनन लोचन वारि । निज तनु मिलि रहलि वर नारि ॥६॥

— ० —

सखी से सखी कथा ।

१५०

कते अनुनये अनुगत अनुबोधि । पतिगृह सखिन्हि सोआउलि बोधि॥ २ ॥
बिमुखि सुतलि धनि सुमुखि न होए । भागल दल बहुलावए कोए ॥ ४ ॥
बालभु बेसनि बिलासिनि छोटि । मेलि न मिलए देलहु हिम कोटि ॥ ८ ॥
बसन भपाए बदन धर गोए । बादर तर सासि वेकत न होए ॥ ८ ॥
भुज जुग चाप जीव जो साँच । कुच कञ्चन कोरी फल काँच ॥१०॥
लग नहि सरए करए कसि कोर । करे कर बाँहि करहि कर जोर ॥१२॥
एत दिन सइसवे लाओल साठ । अब गए मदने पढ़ाओब पाठ ॥१४॥
गुरुजन परिजन दुअओ नेवार । मोहरे मुदल अछ मदन भँडार ॥१६॥
भनइ विद्यापति एहो रस भान । राए सिवसिंह लखिमा देवि रमान ॥१८॥

---

(४) बहुलावए = फिराता है ।

— ० —

सखी से सखी कथा ।

१५१

धनी बेयाकुलि कोमल कन्त । कोन परबोधब सखि परजन्त ॥२॥
सखी परबोधि सेज पर देल । पिया हरषि उठि कर धए लेल ॥४॥
नहि नहि करय नयन बह नोर । सूति रहलि धनि सेजक ओर ॥६॥
भनइ विद्यापति हे जुवराज । सभ सञो बड़ थिक ऑखिक लाज॥८॥

—— o: ——

सखी से सखी ।

१५२

सखी परबोधि शयन तले आनि । पिया हिय हरखि धयल निज पानि ॥ २ ॥
छुइते बालि मलिन भइ गेलि । बिधु कोरे कुमुदिनी मलिन भेलि ॥४ ॥
नहि नहि कह नयन झर नोर । शुति रहल राइ शयनक ओर ॥ ६ ॥
आलिङ्गय नीबिबन्ध बिनु खोरि । करे कुच परशे सेह भेल थोरि ॥ ८ ॥
आचर लेइ बदन पर झाँपे । थिर नहि होयत थर थर काँपे ॥१०॥
भनइ विद्यापति धैरज सार । दिने दिने मदनक होय अधिकार ॥१२॥

——.o ——

सखी ।

१५७

वामा वयन नयन वह नोर । कॉप कुरङ्गनि केसरि कोर ॥२॥
एके गह चिकुर दोसरे गह गीम । तेसरे चिबुक चउठे कुच सीम ॥४॥
निवि बन्द फोएक नहि अवकास । पानि पचमके बाढ़लि श्वास ॥६॥
राधामाधव प्रथमक मेलि । न पुरल काम मनोरथ केलि ॥८॥
भनइ विद्यापति प्रथमक रीति । दिने दिने वाला बुझति पिरीति ॥१०॥

—०—

सखी ।

१५८

बारि विलासिनि आकुल कान्ह । मदन कौतुकिया हटल न मान ॥२॥
एके धनि पदुमिनि सहजहि छोटि । करे धरइते करुणा कर कोटि ॥४॥
हठ परिरम्भणे नहि नहि बोल । हरि डरे हरिणी हरि हिये डोल ॥६॥
नयनक अञ्चल चञ्चल भान । जागल मनमथ मुदित नयान ॥८॥
विद्यापति कह ऐसन रग । राधामाधव पाहिलहि सग ॥१०॥

—०—

सखो।

१५५

अधर मगइते अओध कर माथ। सहए न पार पयोधर हाथ॥२॥
विघटल नीवी करे धर जाँति। अंकुरल मदन धरए कत भाँति॥४॥
कोमल कामिनि नागर नाह। कओने परि होएत केलि निरवाह॥६॥
कुच कोरक तबे कर गहि लेल। काँच बदर अरुण रुचि भेल॥८॥
लावए चाहिअ नखर विशेख। भौंह न आवए चान्दक रेख॥१०॥
तसु मुख सों लोभे रहु हेरि। चान्द झपाव बसन कत बेरि॥१८॥

—:o:—

सखी।

१५६

परशइते चमकि चलय पद आध। अनुमति न दए न कर रस बाध॥२॥
अभिनव नागर सुनागर मेलि। रस वैदग्धि अवधि भइ गेलि॥४॥
हठ परिरम्भ आरम्भन बेलि। धनि मुख मोड़ि रहल कर ठेलि॥६॥
आन कहइते आन कहे तङ्के। मरम कहइते विहसि वङ्के॥८॥
रति रन रङ्गहि भङ्ग न देल। न जानि काम केहन यश लेल॥१०॥

—o—

सखी ।

१५७

वामा वयन नयन बह नोर । कॉप कुरङ्गनि केसरि कोर ॥२॥
एके गह चिकुर दोसरे गह गीम । तेसरे चिबुक चउठे कुच सीम ॥४॥
निवि बन्द फोएक नहि अवकास । पानि पचमके बाढ़लि आस ॥६॥
राधामाधव प्रथमक मेलि । न पुरल काम मनोरथ केलि ॥८॥
भनइ विद्यापति प्रथमक रीति । दिने दिने बाला बुझति पिरीति ॥१०॥

—०—

सखी ।

१५८

बारि विलासिनि आकुल कान्ह । मदन कौतुकिया हटल न मान ॥२॥
एके धनि पदुमिनि सहजहि छोटि । करे धरइते करुणा कर कोटि ॥४॥
हठ परिरम्भणो नहि नहि बोल । हरि डरे हरिणी हरि हिये डोल ॥६॥
नयनक अञ्चल चञ्चल भान । जागल मनमथ मुदित नयान ॥८॥
विद्यापति कह ऐसन रग । राधामाधव पाहिलहि संग ॥१०॥

—०—

सखी।

१५९

एके अबला अओके सहजक छोटि। कर धरइते करुणा कर कोटि ॥२॥
आँकम नाम रहए हिअ हारि। जनि करिवरतर खसलि पओनारि॥४॥
नअन नीर भरि नहि नहि बोल। हरि डरे हरिण जइसे जिअ डोल ॥६॥
कौशल कुच कोरक करे लेल। मुख देखि तिरिविध संसअ भेल ॥८॥
वारि विलासिनि बेसनी कान्ह। मदन कउतुकिआ हटल न मान॥१०॥
भनइ विद्यापति सुनह मुरारि। अति रति हठे नहि जीवए नारि॥१२॥

सखी।

१६०

पहिलहि राधा माधव भेट। चकितहि चाहि बयन कर हेट ॥२॥
अनुनय काकु करतहि कान्ह। नवीन रमनि धनि रस नहि जान ॥४॥
हेरि हरि नागर पुलक भेल। काँपि उठि तनु सेद बहि गेल ॥६॥
अथिर माधव धरु राहिक हाथ। करे कर वाधि धर धनि माथ ॥८॥
भनइ विद्यापति नहि मन आन। राजा सिवसिंह लखिमा रमान॥१०॥

राधा ।

१६५

ए हरि बले यदि परशवि मोय । तिरिवध पातक लागत तोय ॥२॥
तुहु रस आगर नागर ढीठ । हम न बुझिय रस तीत कि मीठ ॥४॥
रस परसङ्गे उठय मझु काँप । वाघे हरिणी जनि कयलहि झाँप ॥६॥
असमय आश न पूरए काम । भल जन न कर विरस परिणाम ॥८॥
विद्यापति कह बुझलहु साँच । फलहु न मीठ होयत काँच ॥१०॥

—.०.—

राधा ।

१६६

रति सुविशारद तुहु राख मान । बाढिले यौवन तोहे देव दान ॥२॥
आवे से अलप रसे न पूरव आस । थोरि सलिले तुय न जाव पियास ॥४॥
अलपे अलपे यदि चाह नीति । प्रतिपद चान्द कला सम रीति ॥६॥
थोरि पयोधरे न पूरव पानि । न दिह नख रेह हरि रस जानि ॥८॥
भनइ विद्यापति कैसन रीत । काँचा दाडिम प्रति ऐसन प्रीत ॥१०॥

राधा ।

१६३

माधव ए बेरि दुरहु दुर सेवा ।
दिन दस धैरज कर यदुनन्दन हमे तप वरि वरु देवा ॥२॥
कोरि कुसुम मधु वेकत न रहते हठ जनु करिअ मुरारि ॥
तुअ इह दाप सहए के पारत हम कोमल तनु नारि ॥४॥
आइति हठ जओ करवह माधव तओ आइति नहि मोरी ॥
कॉचि बदरि उपभोगे न आओत उहे की फल तोरी ॥६॥
एतिखने अमिअ वचन उपभोगह आरति अनदिने देवा ॥
लखिमि नाथ भन सुन यदुनन्दन कलियुगे निते मोरि सेवा ॥८॥

राधा ।

१६४

अबला अंसुक वाजम्भु लेला । पानि पलवध नि ऑतर देला ॥२॥
हठ न करिह पहु न पूरत कामे । प्रथमक रभस विचारक ठामे ॥४॥
मदन भराडार सुरत रस आनी । मोहरे मुन्दल अछ असमय जानी ॥६॥
मुकुलित लोचन नहि परगासे । कॉप कलेवर हृदय तरासे ॥८॥
आवे नव जीवन समय निहारी । अपनहि वेकत होयत परचारी ॥१०॥
भनइ विद्यापति नव अनुरागी । सहिय पराभव पिय हित लागी ॥१२॥

—o—

राधा ।

१६६

गरवे न कर हठ लुबुध मुरारि । तुय अनुरागे न जीव वर नारि ॥२॥
तुहु नागर गुरु हम अगेयान । केलि कला सब तुहु भल जान ॥४॥
फुयल कवरि मोर टूटल हार । हम अबुध नारि तुहु त गोयार ॥६॥
विद्यापति कह कर अवधान । रोगि करय जइसे औखध पान ॥८॥

—०—

राधा ।

१७०

हमे अबला तोहे बलमत नाह । जीवक बदले पेम निरवाह ॥२॥
पठि मनसिज मत दरसह भाव । कउतुके करिबर करेनि खेलाव ॥४॥
परिहर कन्त देहे जिव दान । आज न होएत निसि अवसान ॥६॥
दइन दया नहि दारुन तोहि, । नहि तिरिबध डर हृदअ न मोहि ॥८॥
रमन सुखे जओ रमनी जीव । मधुकर कुसुम राखि मधु पीव ॥१०॥
भनइ विद्यापति पहु रसमन्त । रतिरस रभस होएत नहि अन्त ॥१२॥

राधा ।

१६७

चाणूरमरदन तुँहु बनमारि । सिरिस कुसुम हम कमलिनि नारि ॥२॥
दुति बड़ दारुण साधल बाद । करि करे सौंपल मालति माद ॥४॥
नयनक अञ्जन निरञ्जन मेल । मृगमद चन्दन घामे भिगि गेल ॥६॥
विदगध माधव तोहे परनाम । अबला बलि दय न पूजह काम ॥८॥
ए हरि ए हरि कर अवधान । आन दिवस लागि राखह परान ॥१०॥
रसवति नागरि रस मरिजाद । विद्यापति कह पूरब साध ॥१२॥

राधा ।

१६८

तरल नयन शर अथिर सन्धान । नवीन शिखागल गुरु पाँचबान ॥२॥
अगेयाने कओन करय बेभार । बले नहि लेओत जिवन हमार ॥४॥
आरति न कर कानु न धर चीर । हम अबला अति रतिरण भीर ॥६॥
प्रथम बयस लेश न पूरब आश । न पूरे अलप धने दारिद पियास ॥८॥
माधवि मुकुलित मालति फूल । ताहे नहि भूखल भमर अनुकूल ॥१०॥
अनुचित काजे भल नह परिणाम । साहस न करिय संशय ठाम ॥१२॥
भनइ विद्यापति नागर कान । मातल करि नहि अंकुश मान ॥१४॥

राधा ।

१६९

गरबे न कर हठ लुबुध मुरारि । तुय अनुरागे न जीव बर नारि ॥२॥
तुहु नागर गुरु हम अगेयान । केलि कला सब तुहु भल जान ॥४॥
फुयल कबरि मोर टूटल हार । हम अबुध नारि तुहु त गोयार ॥६॥
विद्यापति कह कर अवधान । रोगि करय जइसे औखध पान ॥८॥

—०—

राधा ।

१७०

हमे अबला तोहे बलमत नाह । जीवक बदले पेम निरवाह ॥२॥
पठि मनसिज मत दरसह भाव । कउतुके करिवर करेनि खेलाव ॥४॥
परिहर कन्त देहे जिव दान । आज न होएत निसि अवसान ॥६॥
दइन दया नहि दारुन तोहि । नहि तिरिबध डर हृदअ न मोहि ॥८॥
रमन सुखे जञो रमनी जीव । मधुकर कुसुम राखि मधु पीव ॥१०॥
भनइ विद्यापति पहु रसमन्त । रतिरस रभस होएत नहि अन्त ॥१२॥

राधा ।

१७१

निवि बन्धन हरि किय कर दूर । एहो पय तोहर मनोरथ पूर ॥२॥
हेरने कओन सुख न बुझ बिचारि । बड़ तुहु ढीठ बुझल बनमारि ॥४॥
हमर शपथ जौं हेरह मुरारि । लहु लहु तब हम पारब गारि ॥६॥
विहर से रहसि हेरले कओन काम । से नहि सहबहि हमर परान ॥८॥
कहॉं नहि शुनिय एहन परकार । करय विलास दीप लइ जार ॥१०॥
परिजन सुनि सुनि तेजब निशास । लहु लहु रमह परिजन पास ॥१२॥
भनइ विद्यापति एहो रस जान । नृप शिवसिंह लखिमा बिरमान ॥१४॥

—०—

राधा ।

१७२

सुनह नागर निविबन्ध छोर । गाठिते नहि सुरत धन मोर ॥२॥
सुरतक नाम सुनल हम आज । न जानिए सुरत करय कोन काज ॥४॥
सुरतक खोज करब जहॉं पॉओ । घरे कि अछय नहि सखिरे सुधॉओ ॥६॥
घेरि एकु माधव सुन मझु वानि । सखि सञे खोजि मागि देव आनि ॥८॥
विनति करय धनि मागे परिहार । नागरि चतुरि भन कविकण्ठहार ॥१०॥

—०—

राधा ।

१७३

बुझल मोहे हरि वहुत अकार । हिया मोर धसधस तुहु से गोआर ॥२॥
धिरे धिरे रमह टुटय जनु हार । चोर रभस नहि कर परचार ॥४॥
न दिह कुचे नख रेख घात । कइसे नुकायब काल परभात ॥६॥
न कर विघातन अधरहि दशने । लाज भय दुहु नहि तुय थान ॥८॥
न धर केश न कर ढिठ पन । अलपे अलपे करह निधुवन ॥१०॥
तोहे सोंपल तनु जनमक मत । अलपे समधान आजु अभिमत ॥१२॥
नागरि सुन कह कविकण्ठहार । बिन्धल कुसुम सर नहि से विचार ॥१४॥

—०—

माधव ।

१७४

एकि आ अनलहु न आवए पासे । कोरहु करइते कॉप तरासे ॥२॥
नहि नहि नहि पए भाखे । जइअओ जतने करिअ पए लाखे ॥४॥
सुमुखि विमुखि रह सोइ । पअ परलहु नहि परसनि होइ ॥६॥
सेज चकित रह जागी । छटपट कर जनि परसलि आगी ॥८॥

—०—

माधव ।

१७५

सबहु सखि परबोधि कामिनि आनि देल पिआ पास ॥
जनि बाधि व्याधा बिपिन सञो मृग तेज तीख निसास ॥२॥
बैसलि शयन समीप सुबदनि यतने समुहि न होइ ॥
भेल मानस बुलए दहो दिस देल मनमथे फोइ ॥४॥
सकल गात दुकूल दृढ़ अति कतहु नहि अबकास ॥
पानि परस परान परिहर पूरति की रति आस ॥६॥
निबिल निबिबँध कठिन कञ्चुक अधरे अधिक निरोध ॥
कठिन काम कठोर कामिनि मान नहि परबोध ॥८॥
करब की परकार आबे हम किछु न पर अवधारि ॥
कोपे कौसले करए चाहिअ हठहि हल हिअ हारि ॥१०॥
दिवस चारि गमाए माधव करब रति समधान ।
बड़ाहिका बड़ होअ धैरज सिंघ भूपति भान ॥१२॥

—— ० ——

राधा माधव ।

१७६

सखी ।

१७७

आएल माधव पाओल थाम । सम्भ्रम जागल मनमथ धाम ॥२॥
धनि मुख ढाकि रहल एक पास । बादर तरे शशी रहल तरास ॥४॥
चलु सब सखिजन इङ्गित जानि । करतल नाह धरल धनि पानि ॥६॥
रूठे बलय किये झन झन बाज । बाला किछुइ न कह भय लाज ॥८॥
कत कत सखिजन करय उपाइ । धनि मुख चान्द कबहु न देखाइ ॥१०॥
रति रस पण्डित नागर रंग । चापि धरल धनि वेणी भुजग ॥१२॥
दाहिन हाथ चिबुक गहि राख । सम्भ्रमे बदन इन्दु रस चाख ॥१४॥
नयन चकोर अमिय रस पीव । अपुरुब दुहुक जिउ तब जीव ॥१६॥
भुज धरि आनल कुसुम शयान । जनम सफल मानल पँचबान ॥१८॥
सघने आलिंगन निभय केलि । वल्लभ विदगध साफल भेलि ॥२०॥

—— ० ——

सखी ।

१७८

हरि करे हरिणनयनि तब सौंपि सखिगण चलु आन ठामे ।
अवसरे धनि कर धरि नागर विनति करय अनुपामे ॥२॥
हरिणनयनि धनि रामा ।
कानुक सरस परश सम्भाषणे मेटउ लाजक धामा ॥४॥
सुखद सेजोपर नागरि नागर बैसल नव रति साधे ।
प्रति अङ्ग चुम्बने रस अनुमोदने थर थर काँपय राधे ॥६॥
मदन सिंहासन करल आरोहण मोहन रसिक सुजान ।
भय गढ़ तोड़ल अलपे समाधल राखल सकल समान ॥८॥
कह कविशेखर गरुअ भोख भर कर जल थोर अहारे ।
ऐसन दुहु मन तलपइ पुन पुन उपजल अधिक विकारे ॥१०॥

—— ० ——

दूती ।

१७६

ए हरि माधव कि कहब तोय । अबला वध कए महत न होय ॥२॥
केश उधसल टूटल हार । नख घाते विदारल पयोधर भार ॥४॥
दशनहि दशल तुहु बनमारि । सिरिस कुसुम हेरि कमलिनि नारि ॥६॥
भनइ विद्यापति सुनु बरनारि । आगिक दहने आगि प्रतिकारि ॥८॥

—o—

दूती ।

१८०

जाति पदुमिनि सहति कता । गजं दमसालि दमन लता ॥२॥
लोभे अधिक मूल न मार । जे मूल राखए से बनिजार ॥४॥
अछल जोर सिरीफल भाति । कएलह छोल नारङ्ग काति ॥६॥
भनइ विद्यापति न करह लाथ । भूखल नखा दुहु हाथ ॥८॥

—o—

दूती ।

१८१

आवे न लहति आइति मोरि । परे परतख लखवि चोरि ॥२॥
बेरा एक जीव राख कन्हाइ । परक पेआसि देह पठाइ ॥४॥
चुम्बने लेपि काजर धार । अधर निरासि जे तोरलह हार ॥६॥
नखेरि खत कुचजुग लागु । से कइसे होइति गुरुजन आगु ॥८॥
भने विद्यापति रस सिङ्गार । सङ्केत आइलि तेजए के पार ॥१०॥

—०—

दूती ।

१८२

हृदय तोहर जानि न भेला । परक रतन आनि मोञे देला ॥२॥
कएल माधव हमे अकाज । हाथि मेराउलि सिंह समाज ॥४॥
राखह माधव मोरि विनती । देहे परीहरि परजुवती ॥६॥
चुम्बने नयन काजर गेला । दसने अधर खण्डित भेला ॥८॥
पीन पयोधर नखर मन्दा । जनि महेसर शिखर चन्दा ॥१०॥
न मुख वचन न चित थीरे । कॉप धन हन सवे सरीरे ॥१२॥
घर गुरुजन दुरजन सङ्का । न गुनह माधव मोहि कलङ्का ॥१४॥
कवि विद्यापति भान । आनक वेदन नइ बुझ आन ॥१६॥

—०—

सखी।

१८३

साजनि अकथ कहि न जाए।
अवल अरुण सासिक मण्डल भीतर रह नुकाए ॥२॥
कदलि ऊपर केसरि देखल केसरि मेरु चढ़ला।
ताहि ऊपर निशाकर देखल किर ता ऊपर बइसला ॥४॥
कीर ऊपर कुरङ्गिनि देखल चकित भमए जनी।
कीर कुरङ्गिनि ऊपर देखल भमर उपर फनी ॥६॥
एक असम्भव आओ देखल जल बिना अरबिन्दा।
बेबि सरोरुह ऊपर देखल जैसन दूतिय चन्दा ॥८॥
भन बिद्यापति अकथ कथा इ रस केओ केओ जान।
राजा शिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमान ॥१०॥

---

(८) बेबि=दुइ।

—०—

सखी।

१८४

प्रथम दरस रस रभस न जानए कि करति पहु सओ केली।
नवि नलिनी जनि कुञ्जरे गञलि दमने दमन तनु भेली ॥२॥
की आरे देखिअ अनूपे।
मधुलोभे मुकुल कुसुम दल कलपए आरति भूखल मधूपे ॥४॥

—०—

सखी ।

१८५

कुच कोरी फल नख खत रेह । नवससि छन्दे अङ्कुरल नव नेह ॥२॥
जिव जञो जनि निरधने निधि पाए । खने हेरए खने राख झपाए ॥४॥
नवि अभिसारिनि प्रथमक सङ्ग । पुलकित होए सुमरि रतिरङ्ग ॥६॥
गुरुजन परिजन नयन निवारि । हाथ रतन धरि वदन निहारि ॥८॥
अवनत मुख कर परजन देखि । अधर दसन खत निरखि निरेखि ॥१०॥

———o———

सखी ।

१८६

आज देखलिसि कालि देखलिसि आज कालि कत भेद ॥
सैसवे बापुडे सीमा छाडल जउवने बाँधल फेद ॥२॥
सुन्दरि कनककेआ मुति गोरी ॥
दिने दिने चान्द कला सञो बाढलि जउवन सोभा तोरी ॥४॥
बाल पयोधर वदन सहोदर अनुमापिय अनुरागे ॥
कओने पुरुष करें परसए पाओल जे तनु जिनल परागे ॥६॥
मन्द हासे वङ्किम कए दरसए चङ्गिम भॅउह बिभङ्गे ॥
लाजे वेआकुलि सामु न हेरए आउल नयन तरङ्गे ॥८॥
विद्यापति कविवर एहु गावए नव जउवन नव कन्ता ॥
सिवसिंह राजा एहो रस जानए मधुमति देवि सुकन्ता ॥१०॥

———o———

सखी ।

१८७

आजु विपरीत धनि देखिय तोय । बुझइ न पारिय संशय मोय ॥ २ ॥
तुय मुखमण्डल पुनिमक चाँद । काँ लागि भेल ऐसन छाँद ॥ ४ ॥
नयन युगल भेल कजर बिथार । अधर निरस करु कओन गमार ॥ ६ ॥
पीन पयोधर नख रेख देल । कनक कुम्भ जनि भगनहु भेल ॥ ८ ॥
अङ्ग विलेपन कुङ्कुम भार । पीताम्बर धरु इथे कि विचार ॥१०॥
सुजन रमनि तुहु कुलवति बाद । का सञे भुञलि मरमक साद ॥१२॥
कामिनि काहिनी कह संवाद । कह कविशेखर नह परमाद ॥१४॥

—.०—

सखी ।

१८८

कह कथि सामरि झामरि देहा । कओन पुरुष सञे लयलि नेहा ॥ २ ॥
अधर सुरङ्ग जनि निरस पवार । कओन लुटल तुय अमिय भण्डार ॥ ४ ॥
रङ्ग पयोधर अति भेल गोर । माजि धयल जनि कनय कटोर ॥ ६ ॥
न जाइह से पिया तन्हि एक गूने । फिरि आओल तुहुँ पुरुबक पूने ॥ ८
विद्यापति कवि इह रस भाने । राजा शिव

—:०—

सखी ।

१८९

ए धनि ऐसन कहबि मोय । आजु जे केसन देखिय तोय ॥२॥
नयन बयन आनहि भाँति । कहइते काहिनी भुलसि पाँति ॥४॥
सुरङ्ग अधर बिरङ्ग भेलि । का सञो कामिनि कयलि केलि ॥६॥
बेकत भइ गेल गुपुत काज । अतए ककर करह लाज ॥८॥
सघन जघन काँपय तोर । मदन मथन कयल जोर ॥१०॥
गोर पयोधर रातुल गात । नखक आँचर झापसि हाथ ॥१२॥
अमिय सागर तुहु से राहि । मुकुन्द मातङ्ग विहरे ताहि ॥१४॥
तें बुझिय मन बितथ देखि । बेकत कय न कह दोखि ॥१६॥
कह कविशेखर किकर लाजे । कह न काहिनी सखिनि समाजे ॥१८॥

—— ० ——

सखी ।

१९०

सुन सुन सुन्दरि नारि । मदन भण्डार के लेल कारि ॥२॥
कुन्तल कुसुम अतीते । हार तोडल कोन रीते ॥४॥
हेरइते नरवर विधाने । बुझि मझु न टुटे पिन्धाने ॥६॥
अलक तिलक मिटि गेल । सिन्दुर बिन्दुहि बिगलित भेल ॥८॥
विद्यापति रस पाव । प्रथम समागम पुनमति गाव ॥१०

—— ० ——

सखी ।

१६१

सामरि हे झामर तोर देह । की कह कइसे लावलि नेह ॥ २ ॥
नीन्दे भरल अछ लोचन तोर । अमिय भरमे जनि लुबुध चकोर ॥ ४ ॥
निरसि धुसर करु अधर पवार । कोने कुबुधि लुडु मदन भण्डार ॥ ६ ॥
कोने कुमति कुच नख खत देल । हाए हाए सम्भु भगन भए गेल ॥ ८ ॥
दमन लता सम तनु सुकुमार । फूटल बलय टूटल गृम हार ॥१०॥
केस कुसुम तोर सिरक सिन्दूर । अलक तिलक हे सेहओ गेल दूर ॥१२॥
भनइ विद्यापति रति अवसान । राजा सिवसिंह ई रस जान ॥१४॥

—•o:—

सखी ।

१६२

पुछओ ए सखि पुछओ तोय । केलि कला रस कहबि मोय ॥ २ ॥
वेश भूषण तोर सब छिल पूर । अलक तिलक मिटि गेलहु दूर ॥ ४ ॥
कुसुम कुल सब भेल भिन भीन । अधरे लागल दशनक चीन ॥ ६ ॥
कोने अबुझ कुचे नख खत देल । हा हा शम्भू भगन भई गेल ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति सुन वर नारि । सब रस लेल, मुरारि ।

राधा।

१६७

कि कहब हे सखि कहइते लाज। जेहो करल सोइ नागरराज ॥ २ ॥
पहिल वयस मभु नहि रति रङ्ग। दूति मिलायल कानुक सङ्ग ॥ ४ ॥
हेरइते देह मभु थर थर कॉप। सोइ लुबुध मति ताहे करु झॉप ॥ ६ ॥
चेतन हरल आलिङ्गन बेलि। कि कहब किये करल रस केलि ॥ ८ ॥
हठ करि नाह कयल कत काज। सेकि कहब इह सखिनि समाज ॥१०॥
जानसि तब काहे करसि पुछारि। से धनि जे थिर ताहि निहारि ॥१२॥
विद्यापति कह न कर तरास। ऐसन होयल पहिल बिलास ॥१४॥

—०—

राधा।

१६८

कि कहब हे सखि आजुक बात। मानिक पड़ल कुबनिक हात ॥२॥
काच काञ्चन न जानय मूल। गुञ्जा रतन करय समतूल ॥४॥
जे किछु कभु नहि कला रस जान। नीर खीर दुहुँ करय समान ॥६॥
तन्हि सौं कॅहा पिरिति रसाल। बानर कण्ठे कि मोतिम माल ॥८॥
भनइ विद्यापति इह रस जान। बानर मुह की शोभय पान ॥१०॥

—०:—

सखी ।

१६५

आज देखिय सखि बड़ अनमन सनि वदन मलिन सन तोरा ।
मन्द वचन तोहि के न कहल अछि से न कहिय किछु मोरा ॥२॥

राधा ।

आजुक रइनि सखि कठिन वितल अछि कान्ह रभस कर मन्दा ।
गुन अवगुन पहु एकओो न बुझलनि राहु गरासल चन्दा ॥४॥

सखी ।

अधर सुखायल केश ओरझायल घाम तिलक बहि गेला ।
वारि विलासिनि केलि न जानति भाल अरुण उड़ि गेला ॥६॥
भनहि विद्यापति सुन वर जौवति ताहे कहब किय बाधे ।
ये किछु पहु देल आँचर झाँपि लेल सखी सब कर उपहासे ॥८॥

—०—

राधा ।

१६६

प्रथम समागम के नहि जान । सम कए तौलल पेम परान ॥२॥
कसल कसउटा न भेल मलान । विनु हुतवह भेल बारह बान ॥४॥
विकलए गेलिहु रतन अमोल । चिन्हि कहु वनिके घटाओल मोल ॥६॥
सुलभ भेल सखि न रहए भार । काच कनक लए गाँथ गमार ॥८॥
भनइ विद्यापति असमय वानि । लाभ लाइ गेलाहु मुलहु भेल हानि ॥१०॥

—०—

राधा ।

१६७

कि कहब हे सखि कहइते लाज । जेहो करल सोइ नागरराज ॥ २ ॥
पहिल वयस मझु नहि रति रङ्ग । दूति मिलायल कानुक सङ्ग ॥ ४ ॥
हेरइते देह मझु थर थर कॉप । सोइ लुबुध मति ताहे करु झॉप ॥ ६ ॥
चेतन हरल आलिङ्गन वेलि । कि कहब किये करल रस केलि ॥ ८ ॥
हठ करि नाह कयल कत काज । सेकि कहब इह सखिनि समाज ॥१०॥
जानसि तब काहे करसि पुछारि । से धनि जे थिर ताहि निहारि ॥१२॥
विद्यापति कह न कर तरास । ऐसन होयल पहिल बिलास ॥१४॥

—:o—

राधा ।

१६८

कि कहब हे सखि आजुक बात । मानिक पड़ल कुबनिक हात ॥२॥
काच काञ्चन न जानय मूल । गुञ्जा रतन करय समतूल ॥४॥
जे किछु कभु नहि कला रस जान । नीर खीर दुहुँ करय समान ॥६॥
तन्हि सौं कॅहा पिरिति रसाल । वानर कण्ठे कि मोतिम माल ॥८॥
भनइ विद्यापति इह रस जान । वानर मुह की शोभय पान ॥१०॥

—o:—

सखो ।

१६५

आज देखिय सखि बड़ अनमन सनि वदन मलिन सन तोरा ।
मन्द वचन तोहि के न कहल अछि से न कहिय किछु मोरा ॥२॥

राधा ।

आजुक रइनि सखि कठिन वितल अछि कान्ह रभस कर मन्दा ।
गुन अवगुन पहु एकओ न बुझलनि राहु गरासल चन्दा ॥४॥

सखी ।

अधर सुखायल केश ओरझायल घाम तिलक बहि गेला ।
बारि विलासिनि केलि न जानति भाल अरुण उड़ि गेला ॥६॥
भनहि विद्यापति सुन वर जौवति ताहे कहब किय बाधे ।
ये किछु पहु देल आँचर झाँपि लेल सखी सब कर उपहासे ॥८॥

—.०—

राधा ।

१६६

प्रथम समागम के नहि जान । सम कए तौलल पेम परान ॥२॥
कमल कसउटा न भेल मलान । बिनु हुतवह भेल बारह बान ॥४॥
बिकलए गेलिहु रतन अमोल । चिन्हि कहु बनिके घटाओल मोल ॥६॥
सुलभ भेल सखि न रहए भार । काच कनक लए गाँथ गमार ॥८॥
भनइ विद्यापति असमय बानि । लाभ लाइ गेलाहु मुलहु भेल हानि ॥१०॥

—.०—

राधा ।

१६७

कि कहब हे सखि कहइते लाज । जेहो करल सोइ नागरराज ॥ २ ॥
पहिल वयस मझु नहि रति रङ्ग । दूति मिलायल कानुक सङ्ग ॥ ४ ॥
हेरइते देह मझु थर थर कॉप । सोइ लुबुध मति ताहे करु झॉप ॥ ६ ॥
चेतन हरल आलिङ्गन वेलि । कि कहब किये करल रस केलि ॥ ८ ॥
हठ करि नाह कयल कत काज । सेकि कहब इह सखिनि समाज ॥१०॥
जानसि तव काहे करसि पुछारि । से धनि जे थिर ताहि निहारि ॥१२॥
विद्यापति कह न कर तरास । ऐसन होयल पहिल विलास ॥१४॥

—०—

राधा ।

१६८

कि कहब हे सखि आजुक बात । मानिक पड़ल कुबनिक हात ॥२॥
काच काञ्चन न जानय मूल । गुञ्जा रतन करय समतूल ॥४॥
जे किछु कभु नहि कला रस जान । नीर खीर दुहुँ करय समान ॥६॥
तन्हि सों कॅहा पिरिति रसाल । बानर कण्ठे कि मोतिम माल ॥८॥
भनइ विद्यापति इह रस जान । बानर मुह की शोभय पान ॥१०॥

—०—

राधा ।

१६६

कि कहब हे सखि रजनिक बात । बड़ दुखे गमाओल माधव सात ॥ २ ॥
करे कुच झाँपय अधर मधुपान । वदने वदन दय वधय परान ॥ ४ ॥
नव यौवन ताहे रस परचार । रति रस न जानय कानु से गमार ॥ ६ ॥
मदने बिभोर किछुओ न जान । कतए विनति कर तैओ नहि मान ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति सुन वर नारि । तुहु मुगुधिनि सोइ लुबुध मुरारि ॥१०॥

—:o:—

राधा ।

२००

न कर न कर सखि मोहि अनुरोधे । कि करब हमहु तकर परबोधे ॥ २ ॥
अलप बयस हम कानु से तरुना । अतिहु लाज डर अतिहु करुना ॥ ४ ॥
लोभे निठुर हरि कयलन्हि केलि । कि कहब यामिनि जत दुख देलि ॥ ६ ॥
हठ भेल रस हम हरल गेयान । निविबन्ध तोड़ल कखन के जान ॥ ८ ॥
देल आलिङ्गन भुज युग चापि । तहि खन हृदय मझु उठल काँपि ॥१०॥
नयने वारि दरशाओल रोइ । तबहुँ कान्हु उपशम नहि होइ ॥१२॥
अधर निरस मझु करलनि मन्दा । राहु गरासि निशि तेजल चन्दा ॥१४॥
कुचयुगे देल नख परहारे । केशरि जानि गज कुम्भ बिदारे ॥१६॥
भनइ विद्यापति रसवति नारि । तुहु से चेतनि लुबुध मुरारि ॥१८॥

—o—

राधा ।

२०१

दृढ परिरम्भने पिडलि मदने । उवरि अयलाहुँ सखि पुरुब पुने ॥ २ ॥
टुटि छिड़ियायल मोतिम हारे । सिन्दुरे लुटायल सुरङ्ग पत्रारे ॥ ४ ॥
सुन्दर कुच युग नख खत भरी । जनि गज कुम्भ विदारल हरी ॥ ६ ॥
अधर दशन देखि जिव मोर कॉपे । चॉद मण्डल जनि राहुक झॉपे ॥ ८ ॥
समुद्र ऐसनि निशि न पाविय ऊरे । कखन उगत मोर हित भए सूरे ॥१०॥
मोञे नहि जाएव सखि तन्हि पिआ ठामे । वरु जिव मारि नड़ावथु कामे ॥१२॥
भनइ विद्यापति तेज भय लाजे । आगि जाड़िय पुनु आगिहिक काजे ॥१४॥

—o—

राधा ।

२०२

हम अति भीत रहल तनु गोइ । से रससागर थिर नहि होइ ॥२॥
रस नहि होएल कएल जे साति । दमन लता जनि दमसल हाति ॥४॥
पुनु कत काकु कएल अनुकूल । तबहुँ पाप हिय मझु नहि भूल ॥६॥
हमर अछल कत पुरुबक भागि । फिरि आओल हम से फल लागि ॥८॥
विद्यापति कह न करह खेद । ऐसन होयल पहिल सम्भेद ॥१०॥

—o—

राधा ।

२०३

कि कहब हे सखि आजुक विचार । से सुपुरुख मोहे कयल शिङ्गार ॥२॥
हसि हसि पहु आलिङ्गन देल । मनमथ अंकुर कुसुमित भेल ॥४॥
आचर परसि पयोधर हेरु । जनम पंगु जनि भेटल सुमेरु ॥६॥
जब निबिबन्ध खसाओल कान्ह । तोहर सपथ हम किछु जदि जान ॥८॥
रति चिने जानल कठिन मुरारि । तोहर पुने जिअल हम नारि ॥१०॥
कह कबिरञ्जन सहज मधु राइ । न कह सुधामुखि गेल चतुराइ ॥१२॥

——.०:——

राधा ।

२०४

कि करति अबला हठ कए नाह । निरदए भए उपभोगए चाह ॥ २ ॥
परम प्रबल पहु कोमल नारि । हाथि हाथ जनि पडलि पओनारि ॥ ४ ॥
कि कहब हे सखि नाह बिबेक । एकहि बेरि रस माग अनेक ॥ ६ ॥
करल काकु कत कर जुग लाए । तइओ मुगुध रति रचए उपाए ॥ ८ ॥
बिनु अबसर हठ रस नहि आव । फुलला फूल मधुकर मधु पाव ॥१०॥
भनइ विद्यापति गुनक निधान । जे बुझ ताहि लाग पञ्चबान ॥१२॥

—— ० ——

राधा ।

२०५

रामा तोरि बढ़ाउलि केलि ।
कतय देखलि नवि नलिनी मत मतङ्गज मेलि ॥२॥
गोर सरीर पयोधर कोरी परसे अरुण भेल ।
कनक बलरि जनि रतोपल मुकुले उदय देल ॥४॥
छैल जन जदि दैने न पाइअ ताहेरि हृदय मन्द ।
खने खने रतिरभसे आगर दिने दिने नव चन्द ॥६॥
मञे नवीना पिआ सआना कुपल कुसुम बान ।
केसरि कर करिनी पड़लि तासु महते छोड़ान ॥७॥
से जे अवसर मन न बिसर नयन चलए नीर ।
सिरिसि कुसुम खगे खेलौलन्हि भमर भरे जे भीर ॥१०॥
भने विद्यापति सुनह जौवति पेमक गाहक कन्त ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन सुरस बिन्द सुतन्त ॥१२॥

राधा ।

२०६

पहिलुकि परिचय पेमक सञ्चय रजनी आध समाजे ।
सकल कलारस सभरि न भेले वैरिनि भेलि मोरि लाजे ॥२॥
साए साए अनुसए रहलि बहूते ।
तन्हिहि सुबन्धुके कहिए पठाइअ जौं भमरा होअ दूते ॥४॥
खनहि चीर धर खनहि चिकुर गह करय चाह कुचभङ्गे ।
एकलि नारि हमे कत अनुरञ्जब एकहि बेर सबे रङ्गे ॥६॥
तखने विनय जत से सबे कहब कत कहए चाहल करे जोली ।
नवए रस रङ्ग भइए गेल भङ्ग ओड़ धरि न भेले बोली ॥८॥
भनइ विद्यापति सुन वर जौवति पहु अभिमत अभिमाने ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देइ विरमाने ॥१०॥

राधा ।

२०७

पिश्र रस पेसल प्रथम समाजे । कत खन राखब श्रखँडित लाजे ॥२॥
कह गजगामिनि जत मन जागे । अपन नागरि पन पिश्र श्रनुरागे ॥४॥
श्राचर चीर धरइ हसि हेरी । नहि नाहि वचन भनय कति वेरी ॥६॥
दुहु मन पुरल उभय रति रङ्गे । तइश्रश्रो से धनुगुन न छाड़ श्रनङ्गे ॥८॥
भनइ विद्यापति एहु रस जाने । नृप सिवसिंह लखिमा देइ रमाने ॥१०॥

—:०:—

माधव ।

२०८

सुबल सञो बइसि साम । कहय रजनि विलास काम ॥२॥
से जे सुवदनि सुन्दरि राइ । आवेशे हियाक माझ लाइ ॥४॥
चुम्बन करल कतहुँ छन्द । रभसे विहुसि मन्द मन्द ॥६॥
बहु विधि केलि करल सोइ । से सब सपन भेल मोइ ॥८॥
किय से वचन श्रमिय मीठ । भँउहु भङ्गिम कुटिल दीठ ॥१०॥
से धनि हियाक माझ जागे । विद्यापति कह नवीन रागे ॥१२॥

—.०—

कौतुक ।

राधा ।

२१५

पिय परदेस आस तुअ पासहि तें बोलह सखि आन ।
जे पतिपालक से भेल पावक इथी कि बोलत आन ॥ २ ॥
साजनि अघटन घटावह मोहि ।
पहिलहि आनि पानि पियतमे गहि करे धरि सोपलिहु तोहि ॥ ४ ॥
कुलटा भए यदि पेम बढ़ाविअ ते जीवने की काज ।
तिला एक रङ्ग रभस सुख पाओब रहत जनम भरि लाज ॥ ६ ॥
कुलकामिनि भए निअ पिय विलसे अपथे कतहु नहि जाइ ।
की मालती मधुकर उपभोगय किंवा लताहि सुखाइ ॥ ८ ॥
विद्यापति कह कूल रखले रह दूति बचने नहि काज ।
राजा शिवसिंह रूप नरायन लखिमा देइ समाज ॥ १० ॥

—— ०:——

राधा ।

२१६

निधन का जओ धन किछु हो करए चाह उछाह ।
सिआर का जओ सींग जनमए गिरि उपारए चाह ॥ २ ॥
दूती बुझलि तोहरि मती ।
छाड़रे चन्दा भरइते बुलह कि हरह ताहे विपती ॥ ४ ॥
पिपड़ी का जओ पाँखि जनमए अनल करए झपान ।
छोटा पानी चह चह कर पोठी के नहिं जान ।
जइओ जकर मूड़ पेच सन दूमए चाहए आन ।
हम तह के विपहु आगर ढोंढ़हु का थिक भान ॥ ८ ॥
झरक पानी डोभक कोंई गरब उपजू जाहि ।
भने विद्यापति दहक कमल दूमय चाहए ताहि ॥१०॥

——:o——

राधा ।

२२१

पहिल पसार संसार सार रस परहोंक पहिल तोहार हे ।
हठे आँचर मोर फेरि न हलवे रवें रस भए जाएत उधार हे ॥२॥
ए हरि ए हरि आरति परिहरि हठ न करिअ पहु बाट हे ।
जेहे बेसाहल से कि बेसाहब उचित मनोभव हाट हे ॥४॥
कञ्चने गढ़ल पयोधर सुन्दर नागर जीवन अधार हे ।
छुअइते रतन तुल न रह अधिक मुल किनहि न पार गमार हे ॥६॥
भनइ विद्यापति सुन हे सुचेतनि हरि सञो कइसन समान हे ।
कपट तेजिकहु भजह जे हरि सञो अन्त काल होअ ठाम हे ॥८॥

राधा ।

२२२

सगर सँसारक सारे । अछए सुरत रस हमर पसारे ॥२॥
छुइ जनु हलह कन्हाइ । आरति मान न हलिअ नड़ाइ ॥४॥
दुरहि रहओ मोरि सेवा । पहिल पढ़ओक उधारि न देवा ॥६॥
हृदय हार मोर देखी । लोभे निकट नहि होएब बिसेखी ॥८॥
मिलत उचित परिपाटी । मधय मनोज घरहि घर साटी ॥१०॥
विद्यापति कह [illegible] सञो कैसन रौक उधारी ॥१२॥

राधा ।

२१६

राहु तरासे चाँद हम मानि । अधर सुधा मनमथे धरु आनि ॥ २॥
जिव जञो जोगाएब धरब अगोरि । पिवि जनु हलह लगति हम चोरि ॥ ४ ॥
सहजहि कामिनि कुटिल सिनेह । आस पसाह बाँक ससि रेह ॥ ६ ॥
की कहु निरखह भेँउक भङ्ग । धनु हमें सौंपि गेल अपन अनङ्ग ॥ ८ ॥
कञ्चने कामे गढ़ल कुच कुम्भ । भङ्गइते मनव देइते परिरम्भ ॥१०॥
कैतव करथि कलामति नारि । गुन गाहक पहु बुझथि विचारि ॥१२॥
भनइ विद्यापति न करहि बाध । आसा बचने पुरहि धनि साध ॥१४॥
गरुड़नरायन नन्दन जान । राए सिवसिंह लखिमा देइ रमान ॥१६॥

—o—

राधा ।

२२०

हठे न हलब मोर भुज जुग जाति । भाङ्गि जाएब बिस किसलय काँति ॥ २ ॥
हठ न करिय हरि न करिय लोभ । आरति अधिक न रह सुख सोभ ॥ ४ ॥
हटिए हलिय निअ नयन चकोर । पीवि हलत धसि ससिमुख मोर ॥ ६ ॥
परसि न हलवे पयोधर मोर । भाङ्गि जाएत गिरि कनक कटोर ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति इ रस भान । लखिमा पति सिवसिंह नृप जान ॥१०॥

—o—

राधा ।

२२१

पहिल पसार ससार सार रस परहोंक पहिल तोहार हे ।
हठे ऑचर मोर फेरि न हलवे रवें रस भए जाएत उधार हे ॥२॥
ए हरि ए हरि आरति परिहरि हठ न करिअ पहु बाट हे ।
जेहे बेसाहल से कि बेसाहब उचित मनोभव हाट हे ॥४॥
कञ्चने गढ़ल पयोधर सुन्दर नागर जीवन अधार हे ।
छुअइते रतन तुल न रह अधिक मुल किनहि न पार गमार हे ॥६॥
भनइ विद्यापति सुन हे सुचेतनि हरि सञो कइसन समान हे ।
कपट तेजिकहु भजह जे हरि सञो अन्त काल होअ ठाम हे ॥८॥

राधा ।

२२२

सगर सँसारक सारे । अछए सुरत रस हमर पसारे ॥२॥
छुइ जनु हलह कन्हाइ । आरति मान न हलिअ नड़ाइ ॥४॥
दुरहि रहओ मोरि सेवा । पहिल पढ़ओक उधारि न देवा ॥६॥
हृदय हार मोर देखी । लोभे निकट नहि होएब बिसेखी ॥८॥
मिलत उचित परिपाटी । मधय मनोज घरहि घर साटी ॥१०॥
विद्यापति कह नारी । हरि सञो कैसन रौक उधारी ॥१२॥

राधा ।

२२३

गुन अगुन सम कय मानए भेद न जानए पहू ।
निअ चतुरिम कत सिखाउबि हमहु भेलिहु लहू ॥२॥
साजनि हृदय कहञो तोहि ।
जगत भरल नागर अछए बिहि छललिह मोहि ॥४॥
काम कला रस कत सिखाउबि पुब पछिम न जान ।
रभस बेरा निन्दे बेआकुल किछु न ताहि गेआन ॥६॥

राधा ।

२२४

कुटिल विलोक तन्त नहि जान । मधुरह बचने देइ नहि कान ॥
मनसिज भङ्गे वचन भञे जेओ । हृदय बुझाए बुझाए नहि सेओ ॥
कि सखि करब कओन परकार । मिलल कन्त मोहि गोप गमार ॥
कपट गमन हमे लाउलि वेरी । बाहु मूल दरसन हसि हेरी ॥
कुच जुग वसन सम्भरिकहु देल । तइअओ न मन तन्हिक वहरि भेल ॥
विमुख होइते आवे पर उपहास । तन्हिके सङ्गे कला सहवास ।
कि कए कि करब हमे झखइते जाए । कह दहु अरे सखि जिवन उपाए ।

सखी ।

२२५

यइ कौशल तुय राधे । किनल कन्हाइ लोचन आधे ॥ २ ॥
ऋतुपति हटवए नहि परमादी । मनमय मधय उचित मूलवादी ॥ ४ ॥
द्विज पिक लेखक मासि मकरन्दा । काँप भमर पद साखी चन्दा ॥ ६ ॥
वहि रतिरङ्ग लिखापन माने । श्री सिवसिंह सरस कवि भाने ॥ ८ ॥

—— ० ——

सखी ।

२२६

साँझक बेरि उगल नव ससधर भरमे विदित सवतहु ।
कुण्डल चक्र तरासे नुकाएल दुर भेल हेरथि राहु ॥ २ ॥
जनु वैसासि रे वदन हाथ वलाइ ।
तुअ मुख चाङ्गिम अधिक चपल भेल कति खन धरव नुकाइ ॥ ४ ॥
रतोपल जनि कमल वैसाओल नील नलिन दलतहु ।
तिलक कुसुम तहु माझ देखिकहु भमर आवथि लहु लहु ॥ ६ ॥
पानि पलव गत अधर विम्व रत दसन दालिम विज तोरे ।
कीर दूर भेल पास न आवए भौंह धनुहि के भोरे ॥ ८ ॥

—— ० ——

दूती ।

२२७

बदन कामिनि हे बेकत न करबे चउदिस होएत उजोरे ।
चाँदक भरमे अमिय रस लालचे ऐंठ कए जाएत चकोरे ॥ २ ॥
सुन्दरि तोरित चालिय अभिसारे ।
अबहि उगत ससि तिमिरे तेजब निसि उसरत मदन पसारे ॥ ४ ॥
अमिय बचन भरमहु जनु वाजह सौरभ बुजत आने ।
पङ्कज लोभे भमरे चलि आओव करत अधर मधुपाने ॥ ६ ॥
तोहे रसकामिनि मधुके जामिनि गेल चाहिय पिय सेवे ।
राजा सिवसिंह रुपनरायन कवि अभिनव जयदेवे ॥ ८ ॥

—.०.—

सखी ।

२२८

अम्बरे वदन झपावह गोरि । राज सुनइछिअ चाँदक चोरि ॥ २ ॥
घरे घरे पहरी गेल अछ जोहि । अबही दूखन लागत तोहि ॥ ४ ॥
कतए नुकाएब चाँदक चोर । जतहि नुकाओव ततहि उजोर ॥ ६ ॥
हास सुधा रसे न कर उजोर । वनिके धनिके धन बोलब मोर ॥ ८ ॥
अधरक सीम दसन कर जोति । सिदुरक सीम बेसाउलि मोति ॥१०॥
भनइ विद्यापति होह निसङ्क । चाँदहु कॉ थी भेद कलङ्क ॥१२॥

—.०—

दूती ।

२३३

त्रिवलि तरङ्गिनि पुर दुग्गम जानि मनमथे पत्र पठाउ ।
जौवन दलपति समर तोहर रतिपति दूत बढ़ाउ ॥२॥
माधव आवे साजिय दहु बाला ।
तसु सैसवे तोहे जे सन्तापलि से सबि अउति पाला ॥४॥
कुन्तल चक्क अंकुस तिलक कए चन्दन कवच अभिरामा ।
नयन कटाख बान गुन दए साजि रहलि अछ्छ बामा ॥६॥
सुन्दरि साजि खेत चलि आइलि विद्यापति कवि भाने ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

—.०.—

अभिसार ।

दूती ।

२३४

वारि विलासिनि आनबि कॉहा । तोँहि कान्ह वरु जासि तॉहा ॥ २ ॥
प्रथम नेह अति भिति राही । कते जतने कते मेराउबि ताही ॥ ४ ॥

सखी ।

२३१

सिरिहि मिलल देहा, न कुचे चान रेहा,
घामे न पिउल सुगन्धा ।
अधर मधुरी फूल, देखिअ ताहेरि तूल,
धयलहि अछ मकरन्दा ॥ २ ॥
रामा अइलि हे पिया विसराइ ।
पुरुष केसरि जानि, दमन लता धनि,
छुअइते जा अरिलाइ ॥ ४ ॥
गेलिहि कयलह मान, की अवसर आन,
की सिसु वालभु तोरा ।
मुसए गेलि धन, जागल परिजन,
लगहि कलाओक चोरा ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति, सुन बरजौवति,
इ रस केओ केओ जाने ।
राजा सिवसिंह, रूपनरायन,
लखिमा देवि रमाने ॥ ८ ॥

दूती ।

२३२

उठ उठ माधव कि सुतसि मन्द । गहन लाग देख पुनिमक चन्द ॥२॥
हार रोमावलि जमुना गङ्ग । त्रिवलि तरङ्गिनि त्रिप्र अनङ्ग ॥४॥
सिन्दुर तिलक तरनि सम भास । धूसर मुखससि नहि परगास ॥६॥
एहन समय पूजह पचबान । होअओ उगरास देह रतिदान ॥८॥
पिक मधुकर पुर कहइते बूल । अलपेओ अवसर दान अतूल ॥१०॥
विद्यापति कवि एहो रस भान । राय सिवसिंह सब रसक निधान ॥१२॥

दूती ।

२३७

चल चल सुन्दरि सुभ कर आज । ततमत करइत नहि हो काज ॥ २ ॥
गुरुजन परिजन डर करु दूर । विनु साहस सिधि आस न पूर ॥ ४ ॥
विनु जपले सिधि केओ नहि पाव । विनु गेले घर निधि नहि आव ॥ ६ ॥
ओ परवल्लभ तोँहि पर नारि । हम पय मध दुहु दिस गारि ॥ ८ ॥
तोह हुनि दरशन इह मन लाग । तत कए देखिय जेहन तुय भाग ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि । जे अङ्गीरिय तोँ न गुनिअ गारि ॥१२॥

दूती ।

२३८

धनि धनि चलु अभिसार ।
शुभ दिन आजु राजभने मनमथ पाओव कि रीति विचार ॥ २ ॥
गुरुजन नयन अन्ध करि आओल बान्धव तिमिर विशेष ।
तुय उर फुरत वाम कुच लोचन वहु मङ्गल करि लेख ॥ ४ ॥
कुलवति धरम करम अव सव गुरु मन्दिरे चलु राखि ।
प्रियतम सङ्गे रङ्ग करु चिरदिने फलत मनोरथ शाखि ॥ ६ ॥
नीरदे विजुरि विजुरी सञो नीरद किङ्किनि गरजन जान ।
हरिखे वरिसे फुल सव शाखी शिखिकुल दुहु गुन गान ॥ ८ ॥

दूती।

२३५

वारिस जामिनि कोमल कामिनि
निदारुण अति अन्धकार।
पथ निशाचर सहरे सञ्चर
घन पर जलधार ॥२॥
माधव प्रथम नेहे से भीति।
गये आपनहि सेत्र विलोकिय करिय तैसनि रीति ॥४॥
अति भयाउनि आतर जउनि कइसे कए आउति पार।
सुरतरस सुचेतन बालमु ता पति सबे असार ॥६॥
एत सुनि मने विमुख सुमुखी तोह मने नहि लाज।
कतए देखल मधु अपने जा मधुकर समाज ॥८॥

——:o:——

सखी।

२३६

जागल घर पर निन्दे भेल भोर। सेज तेजल उठि नन्दकिशोर ॥२॥
सघने गगने हेरि नखतर पाति। अवधि न पाओल छूटल राति ॥४॥
जलधर रुचिहर सामर काँति। युवति मोहन बेश धरु कत भाँति ॥६॥
धनि अनुरागिनि जानि सुजान। घोर अँधियारे करल पयान ॥८॥
पर नारि पिरितिक ऐसन रीत। चलल निभृत पथे न मानय भीत ॥१०॥
कुसुमित कानन कालिन्दि तीर। तहाँ चालि आओल गोकुल वीर ॥१२॥
शेखर पन्थ पर मिलल जाहि। आनल नागर भेटल राहि ॥१४॥

दूती ।

२४५

प्रणयि मनमथ करहि पाएत । मनक पाछे देह जाएत ॥ २ ॥
भूमि कमालिनि गगन सूर । पेम पन्था कतए दूर ॥ ४ ॥
बाध न करहि रामा । पुर बिलासिनि पिअतम कामा ॥ ६ ॥
वदन जिनिकहु करसि मन्दा । लग न आओत लाजे चन्दा ॥ ८ ॥
तेहि सङ्किय पथ उजोर । गमन तिमिरहि होएत तोर ॥१०॥
काज संसय हृदय वङ्का । कत न उपजए बिरह सङ्का ॥१२॥
सबहि सुन्दरि साहस सार । तेहि तेजि के करए पार ॥१४॥
सकल अभिसार सिद्धिदायक । रूपे अभिनव कुसुम सायक ॥१६॥
राए सिवसिंह रस अधार । सरस कह कवि कण्ठहार ॥१८॥

—— o ——

सखी ।

२४६

मृगमद पङ्क अलका । मुख जनु करह तिलका ॥ २ ॥
निपुन पुनिम के चन्दा । तिलके होएत गए मन्दा ॥ ४ ॥
सहजहि सुन्दरि बडि राही । कि करबि अधिक पसाही ॥ ६ ॥
उजर नयन नलिना । काजरे न कर मलिना ॥ ८ ॥
दूधक धोएल भमरा । मसि बुड़ि जाएत सामरा ॥१०॥
पयोधर गोरा । उलटल कनय कटोरा ॥१२॥
चल न करू । हिमे बुडि जाएत सुमेरू ॥१४॥
ति कबी । कतए तिमिर जहाँ रबी ॥१६॥

—— o ——

दूती ।

२४३

चरण नूपुर उपर सारी । मुखर मेखल करे निवारी ॥ २ ॥
अम्बरे समरि देह झपाइ । चलहि तिमिर पथ समाइ ॥ ४ ॥
समुद कुसुम रभस रसी । अवहि उगत कुगत ससी ॥ ६ ॥
आएल चाहिअ सुमुखि तोरा । पिसुन लोचन भम चकोरा ॥ ८ ॥
अलक तिलक न कर राधे । अङ्गे बिलेपन कराहि बाधे ॥१०॥
तजे अनुरागिनि ओ अनुरागी । दूषण लागत भूषण लागी ॥१२॥
भने विद्यापति सरस कवी । नृपतिकुल सरोरुह रवी ॥१४॥

—·०:—

दूती ।

२४४

चान्द वदनि धनि चान्द उगत जवे । दुहुक उजोरे दुरहि सजो लखत सवे ॥ २ ॥
चल गजगामिनि जावे तरुन तम । किम्बा कर अभिसारहि उपसम ॥ ४ ॥
चान्दवदनि धनि रयनि उजोरि । कओने परि गमन होएत सखि मोरि ॥ ६ ॥
तोहे परिजन परिमल दुरबार । दुर सजो दुरजने लखब अभिसार ॥ ८ ॥
चौदिस चकित नयन तोर देह । तोहि लए जाइते मोहि सन्देह ॥१०॥
आगरि अएल हु परआएत काज । विफल भेले मोहि जाइते लाज ॥१२॥

सखी ।

२४६

(अ)रि अनुचरि कय अनुमान । देहरि लागि बुझे वचन सन्धान ॥ २ ॥
(..)ल नहि देखल एक लोक । सुख सजो सूतल नहि दुख शोक ॥ ४ ॥
(..)क कण्टक सब भेल दूर । सब एक जागय मनमथ शूर ॥ ६ ॥
(..)र निचल भेल निरजन बाट । दुरजन नयनहि लागल कवाट ॥ ८ ॥
(..)शेखर कह पन्थ बियार । अभिसर सुन्दरि भय नहि आर ॥१०॥

—०—

सखी ।

२५०

जिनि करिबर राजहंसगति गामिनि चललिह सङ्केत गेहा ।
अमल तड़ित दण्ड हेम मञ्जरि जिनि अति सुन्दर देहा ॥ २ ॥
जलधर चामर तिमिर जिनि कुन्तल अलका भृङ्ग शैवाले ।
भौंह मदन धनु भ्रमर भुजङ्गिनि जिनि आध बिधुवर भाले ॥ ४ ॥
नलिनि चकोर सफरि सब मधुकर मृगि खञ्जन जिनि आँखी ।
नासा तिल फुल गरुड चञ्चु जिनि गिधिनी श्रवणे विशेखी ॥ ६ ॥
कनक मुकुर शशि कमल जिनिय मुख जिनि बिम्ब अधर पवारे ।
दशन मुकुता पाँति कुन्द करगबीज जिनि कम्बु कण्ठ अकारे ॥ ८ ॥
बेल ताल युग कनय कलस गिरि कटोरि जिनिय कुच साजा ।
बाहु मृणाल पाश बल्लरि जिनि सिंह डमरु जिनि माझा ॥१०॥
लोम लतावलि शैवाल कज्जल त्रिबलि तरङ्गिनि रङ्गा ।
नाभि सरोवर सरोरुह दल जिनि नितम्ब जिनिय गज कुम्भा ॥१२॥
उरुयुग कदलि करिबर कर जिनि थल पङ्कज जिनि पद पानी ।
नख दाडिम बीज इन्दु रतन जिनि पिकु अमिय जिनि बानी ॥१४॥
भनइ बिद्यापति सुनह मधुरमति राधा रूप अपारा ।
राजा सिवसिंह रूप नरायन एकादश अवतारा ॥१६॥

—०—

सखी ।

२५१

कुन्तल तिलक बिराज मुख शोभित सींदुर विन्दु ।
हेमलतामे समारु विधि कबि रवि तारा इन्दु ॥ २ ॥
इन्दुवदनि धनि नयन बिशाला । कमल कलित जनि मधुकर माला ॥ ४ ॥
देखलि कलावति अपरुब रमनी । जनि आइलि सुरपुर गजगमनी ॥ ६ ॥
वेनी बिमल बिराज तनु बस कुसुमावलि हार ।
श्याम भुजङ्गम देखिकहु कियो काम परहार ॥ ८ ॥
करु परहार मदन सर बाला । कुटिल कटाख बान कनियाला ॥१०॥
कम्बु कण्ठ मृणाल भुज बलित पयोधर हार ।
कनक कलस रसे पूरि रहु साञ्चित मदन भँडार ॥१२॥
मदन भँडार पयोधर गोरा । जनि उलटाओल कनक कटोरा ॥१४॥
श्यामा सुलोचनि सुरति रति अपरुब भूषन सार ।
विद्यापति कविराज कह सुफले करथु अभिसार ॥१६॥

—०—

सखी ।

२५२

कुन्द कुमुद गजमोतिम हार । पहिरल हृदय झाँपि कुचभार ॥ २ ॥
घोरहि शशधर किरण विथार । ऐसन समय कयल अभिसार ॥ ४ ॥
चहुदिश सचकित नयन निहार । मदन मदालसे चलइ न पार ॥ ६ ॥
मिलालि निकुञ्जे कुञ्ज नृप पास । कह कविशेखर केलि विलास ॥ ८ ॥

—०—

सखी ।

२५३

काजर रुचिहर रयनि विशाला । तसु पर अभिसार करु व्रजबाला ॥ २ ॥
घर सञो निकसय जइसन चोर । निशवद पद गति चललिहु थोर ॥ ४ ॥
उनमत चित अति आरति बिथार । गरुअ नितम्ब नव यौवन भार ॥ ६ ॥
कमलिनि माझ खीनि उच कुच जोर । धाधसे चलु कत भावे विभोर ॥ ८ ॥
रङ्गिनि सङ्गिनि नव नव जोरा । नव अनुरागिनि नव रसे भोरा ॥१०॥
अङ्गक अभरण बासय भार । नेपुर किङ्किनि तेजल हार ॥१२॥
लीला कमल उपेखलि रामा । मन्थर गति चलु धरि सखि शामा ॥१४॥
जतनहि निसरु नगर दुरन्ता । शेखर अभरण भेल वहन्ता ॥१६॥

——,o,——

राधा ।

२५४

लहु कय कहलह गुरुतर भार । दुतर रजनि दूर अभिसार ॥ २ ॥
घाट भुअङ्गम उपर पानि । दुहु कुल अपजस अङ्गिरल जानि ॥ ४ ॥
पर निधि हरलय साहस तोर । के जान कओन गति करवए मोर ॥ ६ ॥
तोरे बोले दूती तेजल निज गेह । जीव सजो तौलल गरुअ सिनेह ॥ ८ ॥
दसमि दसाहे बोलब की तोहि । अमिय बोलि बिख देलहे मोहि ॥१०॥

——io——

सखी ।

२५१

कुन्तल तिलक विराज मुख शोभित सींदुर बिन्दु ।
हेमलतामे समारु विधि कवि रवि तारा इन्दु ॥ २ ॥
इन्दुवदनि धनि नयन विशाला । कमल कलित जनि मधुकर माला ॥ ४ ॥
देखलि कलावति अपरुव रमनी । जनि आइलि सुरपुर गजगमनी ॥ ६ ॥
वेनी विमल विराज तनु बस कुसुमावलि हार ।
श्याम भुजङ्गम देखिकहु कियो काम परहार ॥ ८ ॥
करु परहार मदन सर वाला । कुटिल कटाख बान कनियाला ॥१०॥
कम्बु कण्ठ मृणाल भुज वलित पयोधर हार ।
कनक कलस रसे पूरि रहु साञ्चित मदन भँडार ॥१२॥
मदन भँडार पयोधर गोरा । जनि उलटाओल कनक कटोरा ॥१४॥
श्यामा सुलोचनि सुरति रति अपरुब भूषन सार ।
विद्यापति कविराज कह सुफले करथु अभिसार ॥१६॥

—०—

सखी ।

२५२

कुन्द कुमुद गजमोतिम हार । पहिरल हृदय झाँपि कुचभार ॥ २ ॥
थोरहि शशधर किरण विथार । ऐसन समय कयल अभिसार ॥ ४ ॥
चहुदिश सचकित नयन निहार । मदन मदालसे चलइ न पार ॥ ६ ॥
मिलालि निकुञ्जे कुञ्ज नृप पास । कह कविशेखर केलि विलास ॥ ८ ॥

—०—

सखी ।

२५७

आजु साजनि धनि अभिसार ।
चकित चकित कत बेरि विलोकइ गुरुजन भवन दुयार ॥ २ ॥
अति भय लाजे सघन तनु काँपइ झाँपइ नील निचोल ।
कत कत मनहि मनोरथ उपजत मनसिंधु मनहि हिलोल ॥ ४ ॥
मन्थर गमनि पन्थ दरसाओलि चतुर सखि चलु साथ ।
परिमले हरित हरित करि बासित भाविनि अवनत माथ ॥ ६ ॥
तरुण तमाल संग सुख कारण जंगम कांचन बेलि ।
केलि विपिन निपुन रस अनुसरि वल्लव लोचन मेलि ॥ ८ ॥

—०—

सखी ।

२५८

सहचरि बात धयल धनि श्रवने । हृदय हुलास कहत नहि वचने ॥ २ ॥
सहचरि समुझल मरमक बात । सजाओल जहसे किछु लखइ न जात ॥ ४ ॥
शेतांबरे तनु आवरि देलि । वाहु पवन गति संगे करि लेलि ॥ ६ ॥
जइसन चाँद पवने चलि आइ । अइसन कुञ्जे उदय भेलि राइ ॥ ८ ॥
कानु धरल जब राहिक हात । वैसल सुवदनि कह लहु बात ॥१०॥
कुच युग परशे तरसि मुख मोर । भनइ विद्यापति आनंद ओर ॥१२॥

—०—

माधव ।

२५५

कुसुमित कुञ्जहि कातर कान । कामिनि लागि कत करु अनुमान ॥ २ ॥
की करब कह मोरे सुबल सङ्घाति । कलावति कॉजि अवधि करु आति ॥ ४ ॥
दारुण गुरुजन किय करु बाधा । किय लागि मानिनि भै गेल राधा ॥ ६ ॥
तपनक तापे किय चलए न पार । गरुअ नितम्ब पीन कुचभार ॥ ८ ॥
सजन सहित किय बाढ़ल नेह । इथे किय धनि नहि तेजल गेह ॥१०॥
बिपद सम्पद किय बुझइ न पारि । कैसने बञ्चय से सुकुमारि ॥१२॥
बोधि सुबल कहु शुन गुनमन्त । शेखर कह धनि मिलब नितन्त ॥१४॥

—०—

माधव ।

२५६

रयनि छोटि अति भीरु रमनी । कति खने आओब कुञ्जरगमनी ॥ २ ॥
भीम भुजङ्गम सरणा । कत सङ्कट ताहे कोमल चरणा ॥ ४ ॥
विहि पाये कर परिहार । अबिधिने सुन्दरि करु अभिसार ॥ ६ ॥
गगन सघन महि पङ्का । बिधिनि बियारत उपजय शङ्का ॥ ८ ॥
दश दिश घन अन्धियारा । चलइते खलइ लखइ नहि पारा ॥१०॥
सब जानि पलटि भुललि । आओत मानवि भानत लोलि ॥१२॥
विद्यापति कवि कहइ । प्रेमहि कुलवति पराभव सहइ ॥१४॥

—०—

सखी ।

२५७

आजु साजनि धनि अभिसार ।
चकित चकित कत बेरि विलोकइ गुरुजन भवन दुयार ॥ २ ॥
अति भय लाजे सघन तनु काँपइ झाँपइ नील निचोल ।
कत कत मनहि मनोरथ उपजत मनसिंधु मनहि हिलोल ॥ ४ ॥
मन्थर गमनि पन्थ दरसाओलि चतुर सखि चलु साथ ।
परिमले हरित हरित करि बासित भाविनि अवनत माथ ॥ ६ ॥
तरुण तमाल संग सुख कारण जंगम कांचन बेलि ।
केलि विपिन निपुन रस अनुसरि वल्लव लोचन मेलि ॥ ८ ॥

—.०.—

सखी ।

२५८

सहचरि बात धयल धनि श्रवने । हृदय हुलास कहत नहि वचने ॥ २ ॥
सहचरि समुझल मरमक बात । सजाओल जहसे किछु लखइ न जात ॥ ४ ॥
शेतांबरे तनु आवरि देलि । वाहु पवन गति संगे करि लेलि ॥ ६ ॥
जइसन चाँद पवने चालि आइ । अहसन कुञ्जे उदय भेलि राइ ॥ ८ ॥
कानु धरल जब राहिक हात । वैसल सुवदनि कह लहु बात ॥१०॥
कुच युग परशे तरसि मुख मोर । भनइ विद्यापति आनंद ओर ॥१२॥

—.०.—

राधा ।

२५६

अरुणो किरन किछु अम्बर देल । दीपक सिखा मलिन भए गेल ॥ २ ॥
हठ तेज माधव जएबा देह । राखए चाहिअ गुपुत सिनेह ॥ ४ ॥
दुरजने जाएत परिजन कान । सगर चतुरपन होएत मलान ॥ ६ ॥
भमर कुसुम रमि न रह अगोरि । केओ नहि चेकत करए निअ चोरि ॥ ८ ॥
अपनेओ धन हे धनिक घर गोए । परक रतन परकट कर कोए ॥१०॥
फाव चोरि जौं चेतन चोर । जागि जाएत पुर परिजन मोर ॥१२॥
भनइ विद्यापति सखि कह सार । से जीवन जे पर उपकार ॥१४॥

——:०.——

राधा ।

२६०

पुरल पुर पुरजन पिसुने जामिनि आध अंधार ।
बाहु तरि हरि पलटि जाएब पुनु जमुना पार ॥ २ ॥
ऍ कुल कुलकलङ्क डराइअ ओ कुले आरति तोरि ।
पिरित लागि पराभव सहब इथि अनुमति मोरि ॥ ४ ॥
कान्हा तेज भुज गिम पास ।
पहु जनले दुरंत बाढ़त होएत रे उपहास ॥ ६ ॥
जगत कत न जुब जुवती कत न लावए पेम ।
बापु पुरुप विचखन चाहिअ जे कर आगिल खेम ॥ ८ ॥
गोचर एक मोर पए राखब राखवि दुअओ लाज ।
कबहु मुख मलान न करब होएत पुनु समाज ॥१०॥

——.०.——

सखी ।

२६५

दुहु रूप लावनि मनमथ मोहिनि निरखि नयन भुलि जाय ।
रजनी जनित रति विशेष अलापने आलस रहल दुहु गाय ॥२॥
चाँचर कुन्तल ताहे कुसुमदल लोलत आनहि भाँति ।
दुहु दोहा हेरि मुख हृदय बाढ़ल सुख बोलत भूलत पाँति ॥४॥
निज निज मन्दिर नागरि नागर चलइते करु अनुबन्ध ।
बिरह विषानले दुहु तनु जारल लोचने लागल धन्ध ॥६॥
भितक चीत पुतलि सन दुहु जन रहल विदायक बेला ।
प्रेम पयोनिधि उछलि उछलि पडु चेतन अचेतन भेला ॥८॥
दुहु जन चीत हेरि सहचरि घन घन गगनहि चाय ।
रजनी पोहाओल सब जन जागल से डरहि अधिक डराय ॥१०॥
शेखर बुझि तब कारि कत अनुभव दुहु सङ्ग भङ्ग कराव ।
निज निज मन्दिरे गमन करल दुहु गुरुजन भेद नहि पाव १२॥

—o—

सखी ।

२६६

अरुन लोचन धूमि घुमाएल । जनि रतोपल पवने पाओल ॥ २ ॥
आकुल चिकुरे वदन झापल । जनि तमाचजे चाँद चापल ॥ ४ ॥
माधव कर्के जाइति बासा । देखि सखी जन हो उपहासा ॥ ६ ॥
फुजलि नीवी आनि मेराउलि । जनि सुरसरि उतरे धाउलि ॥ ८ ॥
नखखत देल कुच सिरीफल । कमले झाँपि कि हो कनकाचल ॥१०॥
भने विद्यापति कौतुक गाओल । इ रस राए सिवसिंहे पाओल ॥१२॥

—o—

सखी ।

२६३

रजनी शेष बर नागरि नागर बइसल सेजक माही ।
हेरि सखि तोरित मन्दिर भीतर हासि हासि बइसल ताही ॥ २ ॥
सहचरि मेलि केलि कलपतरु कर कत रस परकासे ।
रजनिक रङ्ग कहइते नव नागरि पिया मुख झाँपल बासे ॥ ४ ॥
दुहु मुख निरखि हरखि सब सहचरि पुलकिनि रहल निहारि ।
पीत बसन लइ निज तनु झाँपल लाजे लजाओलि गोरि ॥ ६ ॥
तब हरि नागरि कोरे अगोरल डुबल सुख सिन्धु माझ ।
ललिता ललित कहि दुहु बेश खण्डित सजाओत अनुपम साज ॥ ८ ॥
दुहु रूपे मगन भेल सब सखीगन दिन रजनि नहि जान ।
अरुण उदय भेल जटिला शबद पाओल कविशेखर इह भान ॥१०॥

—·o·—

सखी ।

२६४

बिछोह बिकल भेल दुहुक परान । गर गर अन्तर झरय नयान ॥ २ ॥
दुहु मने मनसिज जागि रहु । तिल बिसरन नहे केहु काहु ॥ ४ ॥
निशबदे सूतल निन्द नहि भाय । बियोग बियाधि बियारल गाय ॥ ६ ॥
दुहुक दुलह नेह दुहु भल जान । दुहु जन मिलने मधय पचवान ॥ ८ ॥
कविशेखर जान इह रस रङ्ग । परबस पेम सतत नह भङ्ग ॥१०॥

—o—

सखी ।

२६५

दुहु रूप लावनि मनमथ मोहिनि निरखि नयन भुलि जाय ।
रजनी जनित रति विशेष अलापने आलस रहल दुहु गाय ॥२॥
चाँचर कुन्तल ताहे कुसुमदल लोलत आनहि भाँति ।
दुहु दोहा हेरि मुख हृदय बाढ़ल सुख बोलत भूलत पाँति ॥४॥
निज निज मन्दिर नागरि नागर चलइते करु अनुबन्ध ।
विरह विषानल दुहु तनु जारल लोचने लागल धन्ध ॥६॥
भितक चीत पुतलि सन दुहु जन रहल बिदायक बेला ।
प्रेम पयोनिधि उछलि उछलि पड़ु चेतन अचेतन भेला ॥८॥
दुहु जन चीत हेरि सहचरि घन घन गगनहि चाय ।
रजनी पोहाओल सब जन जागल से डरहि अधिक डराय ॥१०॥
शेखर बुझि तब करि कत अनुभव दुहु सङ्ग भङ्ग कराव ।
निज निज मन्दिरे गमन करल दुहु गुरुजन भेद नहि पाव १२॥

—०—

सखी ।

२६६

अरुन लोचन धूमि घुमाएल । जनि रतोपल पवने पाओल ॥ २ ॥
आकुल चिकुरे वदन झापल । जनि तमाचजे चाँद चापल ॥ ४ ॥
माधव कर्के जाइति बासा । देखि सखी जन हो उपहासा ॥ ६ ॥
फुजलि नीवी आनि मेराउलि । जनि सुरसरि उतरे धाउलि ॥ ८ ॥
नखखत देल कुच सिरीफल । कमले झाँपि कि हो कनकाचल ॥१०॥
भने विद्यापति कौतुक गाओल । इ रस राए सिवसिंहे पाओल ॥१२॥

—०—

सखी ।

२६७

अलसे पुरल लोचन तोर । अमिञे मातल चाँद चकोर ॥ २ ॥
निचल भँउह जे ले बिसराम । रण जिनि धनु तेजल काम ॥ ४ ॥
अरे रे सुन्दरि न कर लथा । उकुति वेकत गुपुत कथा ॥ ६ ॥
कुच सिरिफल करज सिरी । केसु विकासित कनअ गिरी ॥ ८ ॥
बहल तिलक उधसु केस । हसि परिछल कामे सन्देस ॥१०॥

(५) लथा=छलना ।

—:०:—

सखी ।

२६८

उधसल केश कुसुम छिरियाएल खण्डित दशन अधरे ।
नयन देखिय जनि अरुण कमल दल मधु लोभे वइसल भमरे ॥ २ ॥
कलावति कैतव न करह आज ।
कओन नागर सङ्गे रयनि गमओलह कह मोहि परिहरि लाज ॥ ४ ॥
पीन पयोधर नखरेख सुन्दर करे राखह कॉ गोरि ।
मेरु शिखर नव उगि गेल शशधर गुपुति न रहलिय चोरि ॥ ६ ॥
वेकतेओ चोरि गुपुत कर कतिखन विद्यापति कवि भान ।
महलम जुगपति चिरेजिव जीवथु ग्यास देव सुरतान ॥ ८ ॥

—०—

सखी ।

२६६

उधसल केसपास लाजे गुपुत हास रजनि उजागरे मुख न उजला ।
नख पद सुन्दर पीन पयोधर कनक सम्भु जनि केसु पुजला ॥ २ ॥
न न न न कर सखि परिनत ससिमुखि सकल चरित तोर बुझल विसेखी ॥ ३ ॥
अलस गमन तोर बचन बोलसि भोर मदन मनोरथ मोहगता ।
जृम्भसि पुनु पुनु जासि अरस तनु आतपे छूइलि मृणाल लता ॥ ५ ॥
वास पिन्धु विपरित तिलक तिरोहित नयन कजर जले अधर भरु ।
एत सबे लछन सङ्ग विचच्छन कपट रहत कति खन जे धरु ॥ ७ ॥
भने कवि विद्यापति अरे वर जौवति मधुकरे पाउलि मालति फुललि ।
हासिनि देवि पति देवसिंह नरपति गरुड़नरायन रङ्गे भूलालि ॥ ६ ॥

—०—

सखी ।

२७०

सुन्दरि वेकत गुपुत नेहा ।
बञ्चित आजु करय नहि पारव साखि देल तुय देहा ॥ २ ॥
सघने आलस सखी तुय मुखमण्डल गण्ड अधर छबि मन्दा ।
कत रस पाने कयल सव नीरस राहु उगिलल चन्दा ॥ ४ ॥
जागि रजनि दुहु लोहित लोचन अलस निमिलित भाँती ।
मधुकर लोहित कमल कोरे जनि शुति रहल मदे माती ॥ ६ ॥
वेकत पयोधरे नखरेख भूखल ताहे परल कच भारा ।
निज रिपु चाँद कलानिधि हेरइते मेरु पडल अँधियारा ॥ ८ ॥
नव कविशेखर कहय नइ पारत दोख सपति करि जानी ।
कत शत-वेरि चोरि करु गोपन वेरि एक वेकत वानी ॥१०॥

—०—

दूती ।

२७१

छल मनोरथ जौवन भेले कत न करब रङ्ग ।
से सबे पेम ओड़ धरि न रहल भेल हृदय भङ्ग ॥ २ ॥
तथुहु उपर छल मनोरथ आवे कि करब साध ।
अइसनि भए अपराधिनि भेलाहु जे छल तथिहु बाध ॥ ४ ॥
माधव आवे तञो इ बड़ दोस ।
जतए जे किछु बोलिअ चालिअ तथि गुरुजन रोस ॥ ६ ॥
अवस निकट आएब जाएब बिनअ कर से नारि ।
दिने साते पाचे बाटहु घाटहु दिठिहु हलु निहारि ॥ ८ ॥

—o—

राधा ।

२७२

आरे बिधिबस नयन पसारल पसरल हरिक सिनेह ।
गुरुजन गुरुतरे डरे सखि उपजल जिवहु सन्देह ॥ २ ॥
दुरजन भीम भुजङ्गम बम कुवचन विषसार ।
तेह तीखें विषे जनि माखल लाग मरम कनियार ॥ ४ ॥
परिजन परिचय परिहरि हरि हरि परिहर पास ।
सगर नगर बड़ पुरीजन घरे घरे कर उपहास ॥ ६ ॥
पहिलुक पेमक परिभव दुसह सकल जन जान ।
धैरज धनि धर मने गुनि कवि विद्यापति भान ॥ ४ ॥

—o—

राधा ।

२७३

दुर सिनेहा बचने बाढल मनक पिरीति जानि ।
अलपे काजे बड़ी दुर आँतर करमे पाओल आनि ॥ २ ॥
चरन नूपुर घन शबदए चान्दहु राति उजोरि ।
ननन्दि वैरिनि निन्दे न सोअए आवे अनाइति मोरि ॥ ४ ॥
दूती बोले बुझावह कान्हू ।
आजुक रअनि आए न होएत हृदये कोपथि जनु ॥ ६ ॥
चरन नुपुर करे उतारव सामर बसन तनु ।
खेड़हु कउतुके ननन्द बोधवि विलँब लागए जनु ॥ ८ ॥
ओ भरे लागल नव सिनेहा एँ भरे कुलक गारि ।
सकल पेम सम्भारि न होएते हठे विनासति नारि ॥ १० ॥
भन विद्यापति उगन्त सेविअ मदन चिन्तथु आउ ।
पिरीति कारने जिव उपेखव एँ बेरि होउ कि जाउ ॥ १२ ॥

—०—

दूती ।

२७४

यदि तोरा नहि खन नहि अवकाश । परके जतने कते देल विसवारा ॥ २ ॥
वेशवास कइ कके शुतह निचींत । चारि पहर राति भमत सुचीत ॥ ४ ॥

राधा ।

कर जोरि पइँया परि कहवि विनती । विसरि न हलविए पुरुव पिरिती ॥ ६ ॥
प्रथम पहर राति रभसे बहला । दोसर पहर परिजन निन्द गेला ॥ ८ ॥
निन्द निरुपइत भेल अधराति । तावत उगल चन्दा परम कुजाति ॥ १० ॥
भनहि विद्यापति तखनुक भाव । जेह पुनमत सेह जन पय पाव ॥ १२ ॥

—०—

सखी ।

२७५

कानने कातर कुलवति राहि । चकित नयन घन दश दिशि चाहि ॥ २ ॥
कोकिल कलरवे बिकल परान । गुनि गुनि भाविनि भेलि निदान ॥ ४ ॥
उपसि उषसि खसि खसि पुड़ु नोर । गद गद कण्ठ शबद घन घोर ॥ ६ ॥
ऐसन आयलि तपनक गेह । पूजा उपहार तँहि राखलि सेह ॥ ८ ॥
तँहि परनाम करि बैठलि धन्द । सखि गन कौतुक करु नाना छन्द ॥१०॥
उतपत तेजत दीघ निशास । खने रोदन करु खने करु हास ॥१२॥
कह कविशेखर सुनु सुकुमारि । धइरज धए रह मिलत मुरारि ॥१४॥

—·०·—

सखी ।

२७६

हरिणनयनि धनि चकित निहारनि अति उतकण्ठित भेला ।
सजन सभ जन तनु मन जीवन सौतिनि करि बिहि देला ॥ २ ॥
खने खन उठन खने खन बैसत उतपत तेजत शासा ।
खने खन चमकइ खने खन कम्पइ गद गद कहतहि भासा ॥ ४ ॥
कुलगुण गौरव अतिशय सौरभ बाम पाय ठेलल ताय ।
दारुण प्रेम थेह नहि मानत पलके पलके तलपाय ॥ ६ ॥
अरुणित आनन नोरे भरु लोचन पिया पथ हेरत राहि ।
शिशु पशु सङ्गत करि हरि आओत गोखुर धुलि उछिलाहि ॥ ८ ॥
कह कविशेखर धनि पुनि हेरह आओत नागर राज ।
तुय मन मानस अति खने पूरब हेरब पन्थक माझ ॥१०॥

— ० —

सखी ।

२७७

सज्जा तेजि बामा खन बहिराय । खने मुरछित तनु कान्दे उभराय ॥ २ ॥
खने बाहर आय चल आध पथ । दूति सह कलह करए अनुरत ॥ ४ ॥
दारुण दूती साधलि बाद । आज्ञु हम तेजब रति सुख साध ॥ ३ ॥

—:०:—

राधा ।

२७८

पाशरइते शरीर होय अवसान । कहइत न लय अब बुझह अवधान ॥ २ ॥
कहए न पारिय सहन न जाय । बचह सजनि अब कि कर उपाय ॥ ४ ॥
कोन विहि निरमिल इह पुन नेह । काहे कुलवति करि गढ़ल मझु देह ॥ ६ ॥
काम करे धरिय से करय वहार । राखय मन्दिरे इ कुल अचार ॥ ८ ॥
सहइ न पारिय चलइ न पारि । घन फिरि जैसे पिञ्जर माहा सारि ॥१०॥
एतहुँ बिपदे किय जीवय देह । भनइ विद्यापति विपम इ नेह ॥१२॥

—०—

सखी ।

२७९

कह कह सुन्दरि न कर बेयाज । देखिअ आजे अपुरव सबे साज ॥ २ ॥
मृगमदं पङ्के करसि अङ्गराग । कोन नागर परिनत होअ भाग ॥ ४ ॥
पुनु पुनु उठसि पछिम दिस हेरि । कखन जाएत दिन कत अछ बेरि ॥ ६ ॥
नेपुर उपर करसि कसि थीर । दृढ कए पहिरसि तम सम चीर ॥ ८ ॥
उठसि बिहुसि हासि तेजिय सार । मेरे मन भाव सघन अन्धकार ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुन वर नारि । धैरज कर मने मिलत मुरारि ॥१२॥

—०—

राधा ।

२८०

कैतुक चलति भवनके सजनि गे सङ्ग दश चौदिश नारी ।
बिच बिच शोभित सुन्दरि सजनि गे जनि घर मिलत मुरारी ॥ २ ॥
लइ अभरण कए षोड़श सजनि गे पहिर उतिम रङ्ग चीर ।
देखि सकल मन उपजल सजनि गे मुनिहुक चित नहि थीर ॥ ४ ॥
नील बसन तन घेरलि सजनि गे शिर लेल घोघट सारी ।
लग लग पहुके चलइते सजनि गे सँकुचल अङ्कम नारी ॥ ६ ॥
सखि सब देल भवनके सजनि गे घुरि आइल सभ नारी ।
कर धए लेल पहु लगकह सजनि गे हेरइ बसन उघारि ॥ ८ ॥
भय वर सनमुख बोलइ सजनि गे करे लागल सविलासे ।
नव रस रीति पिरीति भेल सजनि गे दुहु मन परम हुलासे ॥१०॥
विद्यापति कवि गाओल सजनि गे इ थिक नव रस रीति ।
बयस युगल समुचित थिक सजनि गे दुहु मन परम पिरीति ॥१२॥

—०—

राधा ।

२८१

घर गुरुजन पुर परिजन जाग । काहुक लोचन निन्दओ न लाग ॥ २ ॥
कोन परि जुगुति गमन होएत मोर । तम पिवि बाढ़ल चान्द उजोर ॥ ४ ॥
साहसे साहिअ प्रेम भँडार । अवहु न आनय करम चन्दार ॥ ७ ॥
दुहु अनुमान कयल विहि जोर । पाँखि न देलक विधाता भोर ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति जदि मन जाग । बड़े पुने पाविअ नव अनुराग ॥१०॥

—०—

सखी ।

२८२

नव अनुरागिनि राधा । किछु नहि मानए बाधा ॥ २ ॥
एकलि कएल पयान । पथ बिपथ नहि मान ॥ ४ ॥
तेजल मणिमय हार । उच कुच मानए भार ॥ ६ ॥
कर सञे कङ्कण मुदरि । पथहि तेजल सगरि ॥ ८ ॥
मणिमय मञ्जिर पाय । दूरहि तेजि चलि जाय ॥१०॥
यामिनि घन अंधियार । मनमथ हिय उजियार ॥१२॥
बिघिनि बियारल बाट । पेमक आयुधे काट ॥१४॥
विद्यापति मति जान । ऐसन न हेरि आन ॥१६॥

—·०—

सखी ।

२८३

गुरुजन नयन पगार पवन जञो सुन्दरि सतरि चललि ।
जनि अनुरागे पाछु धरि पेललि करे धरि कामे तिडली ॥२॥
कि आरे नवि अभिसारक रीती ।
के जान कओने बिधि कामे पढ़ाउलि कामिनि तिहुयन जीती ॥४॥
अम्बर सकल विभूषन सुन्दर घनतर तिमिर सामरी ।
केहु कतहु पथ लखहि न पारलि जनि मसि बुड़लि भमरी ॥६॥
चेतन आगु चतुरपन कइसन विद्यापति कवि भाने ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

—·०·—

राधा ।

२८०

कैतुक चललि भवनके सजनि गे सङ्ग दश चौदिश नारी ।
बिच बिच शोभित सुन्दरि सजनि गे जनि घर मिलत मुरारी ॥ २ ॥
लइ अभरण कए षोड़श सजनि गे पहिर उतिम रङ्ग चीर ।
देखि सकल मन उपजल सजनि गे मुनिहुक चित नहि थीर ॥ ४ ॥
नील बसन तन घेरलि सजनि गे शिर लेल घोघट सारी ।
लग लग पहुके चलइते सजनि गे सॅकुचल अङ्गम नारी ॥ ६ ॥
सखि सब देल भवनके सजनि गे घुरि आइल सभ नारी ।
कर धए लेल पहु लगकह सजनि गे हेरइ बसन उघारि ॥ ८ ॥
भय बर सनमुख बोलइ सजनि गे करे लागल सबिलासे ।
नव रस रीति पिरीति भेल सजनि गे दुहु मन परम हुलासे ॥१०॥
विद्यापति कवि गाओल सजनि गे इ थिक नव रस रीति ।
वयस युगल समुचित थिक सजनि गे दुहु मन परम पिरीति ॥१२॥

—०—

राधा ।

२८१

घर गुरुजन पुर परिजन जाग । काहुक लोचन निन्दओ न लाग ॥ २ ॥
कोन परि जुगुति गमन होएत मोर । तम पिबि बाढ़ल चान्द उजोर ॥ ४ ॥
साहसे साहिअ प्रेम भॅडार । अवहु न आवय करम चन्दार ॥ ७ ॥
दुहु अनुमान कयल बिहि जोर । पॉखि न देलक विधाता भोर ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति जदि मन जाग । बड़े पुने पाविअ नव अनुराग ॥१०॥

—०—

सखी ।

२८२

नव अनुरागिनि राधा । किछु नहि मानए बाधा ॥ २ ॥
एकलि कएल पयान । पथ बिपथ नहि मान ॥ ४ ॥
तेजल मणिमय हार । उच कुच मानए भार ॥ ६ ॥
कर सञे कङ्कण मुदरि । पथहि तेजल सगरि ॥ ८ ॥
मणिमय मञ्जिर पाय । दूरहि तेजि चलि जाय ॥१०॥
यामिनि घन अंधियार । मनमथ हिय उजियार ॥१२॥
विघिनि वियारल बाट । पेमक आयुधे काट ॥१४॥
विद्यापति मति जान । ऐसन न हेरि आन ॥१६॥

—:o.—

सखी ।

२८३

गुरुजन नयन पगार पवन जञो सुन्दरि सतरि चललि ।
जनि अनुरागे पाछु धरि पेललि करे धरि कामे तिडली ॥२॥
कि आरे नवि अभिसारक रीती ।
के जान कओने विधि कामे पढ़ाउलि कामिनि तिहुयन जीती ॥४॥
अम्बर सकल विभूषन सुन्दर घनतर तिमिर सामरी ।
केहु कतहु पथ लखहि न पारलि जनि मसि बुड़लि भमरी ॥६॥
चेतन आगु चतुरपन कइसन विद्यापति कवि भाने ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

—:o.—

सखी ।

२८४

प्रेम रतन खनि रमनी शिरोमनि
प्रिय विरहानल जानि ।
अन्तर जर जर नयने निझरे झर
वदने न निकसय बानि ॥ २ ॥
आजु की कहब हरि अनुराग ।
तैखने कानन चलति बिकल मन
कुल धरम लाज भय भाग ॥ ४ ॥
मन्थर गति अति चलइ न पारथि
चलतहि तबहुँ तुरन्त ।
हिया अति धसमसि शासहि मुखशशि
श्रम जल कन बरिखन्त ॥ ६ ॥
सङ्गिनि सहचरि दूरहि परिहरि
राहि एकाकिनि कुञ्जे ।
वल्लभ-मुरछित हेरि जियाओत
रूप सुधारस पुञ्जे ॥ ८ ॥

—:o:—

दूती

२८५

माधव धनि आयलि कत भाति ।
प्रेम हेम परखाओल कसोटिय भादव कुहु तिथि राति ॥ २ ॥
गगन गरज घन ताहे न गन मन कुलिस न कर मुख वङ्का ।
तिमिर अञ्जन जलधारे धोय जनि तेँ उपजावति सङ्का ॥ ४ ॥
भागे भुजग सिरे करे अभिनय करे झाँपल फनि मनि दीपे ।
जानि सजल घन से देइ चुम्बन तेँ तुय मिलन समीपे ॥ ६ ॥
नारि रतन धनि नागर ब्रजमनि रस गुने पहिरल हारे ।
गोविन्द चरणे मन कह कविरञ्जन सफल भेल अभिसारे ॥ ८ ॥

——:०:——

राधा

२८६

चन्दा जनु उग आजु कि राती । पिया के लिखिए पठाउवि पाती ॥ २ ॥
साओन सओ हमे करब पिरीती । जत अभिमत अभिसारक रीती ॥ ४ ॥
अथवा एहु बुझाओब हसी । पिबि जनु उगिलह सितल ससी ॥ ६ ॥
कोटि रतन जलधर तोहे लेह । आजुकि रअनि घनतम कए देह ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति शुभ अभिसार । भल जन करथि पर उपकार ॥१०॥

——.०.——

सखी ।

२८४

प्रेम रतन खनि रमनी शिरोमनि
प्रिय बिरहानल जानि ।
अन्तर जर जर नयने निझरे झर
वदने न निकसय बानि ॥ २ ॥
आजु की कहब हरि अनुराग ।
तैखने कानन चललि विकल मन
कुल धरम लाज भय भाग ॥ ४ ॥
मन्थर गति अति चलइ न पारथि
चलतहि तबहुँ तुरन्त ।
हिया अति धसमसि शासहि मुखशशि
श्रम जल कन बरिखन्त ॥ ६ ॥
सङ्गिनि सहचरि दूरहि परिहरि
राहि एकाकिनि कुञ्जे ।
वल्लभ मुरछित हेरि जियाओत
रूप सुधारस पुञ्जे ॥ ८ ॥

—:o:—

दूती

२८५

माधव धनि आयलि कत भाति ।
प्रेम हेम परखाओल कसोटिय भादव कुहु तिथि राति ॥ २ ॥
गगन गरज घन ताहे न गन मन कुलिस न कर मुख वङ्का ।
तिमिर अञ्जन जलधारे धोय जनि तेँ उपजावति सङ्का ॥ ४ ॥
भागे भुजग सिरे करे अभिनय करे झॉपल फनि मनि दीपे ।
जानि सजल घन से देइ चुम्बन तेँ तुय मिलन समीपे ॥ ६ ॥
नारि रतन धनि नागर ब्रजमनि रस गुने पहिरल हारे ।
गोविन्द चरणे मन कह कविरञ्जन सफल भेल अभिसारे ॥ ८ ॥

—.o:—

राधा

२८६

चन्दा जनु उग आजु कि राती । पिया के लिखिए पठाओवि पाती ॥ २ ॥
साओन सञो हमे करब पिरीती । जत अभिमत अभिसारक रीती ॥ ४ ॥
अथवा एहु बुझाओब हसी । पिवि जनु उगिलह सितल ससी ॥ ६ ॥
कोटि रतन जलधर तोहे लेह । आजुकि रअनि घनतम कए देह ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति शुभ अभिसार । भल जन करथि पर उपकार ॥ १० ॥

—.o—

राधा ।

२८७

आज मोञे जाएब हरि समागमे कत मनोरथ भेल ।
घर गुरुजन निन्द निरुपइते चन्दाए उदय देल ॥२॥
चन्दा भलि नहि तुअ रीति ।
एहि मति तोहँ कलङ्क लागल किछु न गुनह भीति ॥४॥
जगत नागरी मुखे जिनला हे गेला हे गगन हारि ।
ताहॅहु राहु गरास पड़ला देव तोह की गारि ॥६॥
एके मास विहि तोह सिरीजए दए सकलेओ बल ।
दोसर दिना पुर न रहसि एही पापक फल ॥८॥
भन विद्यापति शुन तोञे जुवति चॉदक न कर साति ।
दिना सोड़ह चॉदक आइति ताहितर भलि राति ॥१०॥

——:०:——

राधा ।

२८८

अगमने प्रेम गमने कुल जाएत चिन्ता पङ्क लागलि करिनी ।
मञे अबला दह दिस भमि झाखञो जनि ब्याध डरे भीरु हरिनी ॥२॥
चन्दा दुरजन गमन बिरोधी ।
उगल गगन भरि नखत वैरि मोरा के पहु आन परबोधी ॥४॥
कुहू भरमे पथ पद आरोपल आए तुलाएल पञ्चदशी ।
हरि अभिसार मार उदवेजक कञोने निवारब कुगत शशी ॥६॥

——.०——

सखी ।

२८६

प्रथम जउवन नव गरुअ मनोभव
छोटि मधुमास रजनी ।
जाग गुरुजन गेहा राखए चाह नेहा
संशअ पड़लि सजनी ॥२॥
नलनी दल निर चित न रहए थिर
तत घर तत हो बहारे ।
विहि मोर बड़ मन्दा उगि जनु जा चन्दा
सुनि उठि गगन निहारे ॥४॥
पयहु पथुक सङ्का पय पय धय पङ्का
कि करति ओनवि तरुनी ।
चलए चाह धसि पुनु पड़ खसि खसि
जालक छेकलि हरिनी ॥६॥
साए साए कमन वेदन तसु जाने ।
निकुञ्ज वन जे हरि जाइति कओने परि
अनुखने हन पचवाने ॥८॥
विद्यापति भन कि करत गुरु जन
नीद निरूपन लागी ।
वअनि नीर भरि धीरे झपावए
रयनि गमावए जागि ॥१०॥

—o—

राधा ।

२६०

गगने अब घन मेह दारुण सघन दामिनि झलकइ ।
कुलिश पातन शबद झन झन पवन खरतर बलगइ ॥ २ ॥
सजनि आजु दुरदिन भेल ।
कन्त हमरि नितान्त अगुसरि सङ्केत कुञ्जहि गेल ॥ ४ ॥
तरल जलधर बरिखे झरझर गरजे घन घन घोर ।
साम नागर एकले कैसने पन्थ हेरइ मोर ॥ ६ ॥
सुमरि मझु तनु अवश भेल जनि अथिर थर थर काँप ।
इ मझु गुरुजन नयन दारुण घोर तिमिरहि झाँप ॥ ८ ॥
तोरिते चल अब किये बिचारह जीवन मझु अगुसार ।
कविशेखर वचने अभिसार किये से बिघिन बिथार ॥१०॥

—०—

राधा ।

२६१

काजरे राङ्गलि सञे जनि राति । अइसना बाहर होइते साति ॥ २ ॥
तड़ितहु तेजलि मित अन्धकार । आसा संशय परु अभिसार ॥ ४ ॥
भल न कएल मञे देल विसवास । निकट जोए नसत कान्हक बास ॥ ६ ॥
जलद भुअङ्गम दुहु भेल सङ्ग । निचल निशाचर कर रसभङ्ग ॥ ८ ॥
मन अवगाहए मनमथ रोस । जिवओ देले नहि होएत भरोस ॥१०॥
अगमन गमन बुझए मतिमान । विद्यापति कवि एहु रस जान॥१२॥

—

राधा ।

२६२

झर झर बरिस सघन जलधार । दश दिश सबहु भेल अँधियार ॥ २ ॥
ए सखि किये करब परकार । अब जनु बारए हरि अभिसार ॥ ४ ॥
अन्तरे शाम चन्द्र परकाश । मनहि मनोभव लइ निज पाश ॥ ६ ॥
कैसने सङ्केत बञ्चब कान । सुमरइ जरजर अथिर परान ॥ ८ ॥
झलकइ दामिनि दहन समान । झम झन शबद कुलिश झन झान ॥ १० ॥
घर माह रहत रहइ न पार । की करब इ सब बिघिन बियार ॥ १२ ॥
चढ़ब मनोरथ सारथि काम । तोरित मिलायब नागर ठाम ॥ १४ ॥
मन मझु साखि देत पुनु बार । कह कविशेखर कर अभिसार ॥ १६ ॥

—o—

राधा ।

२६३

आएल पाउस निविड़ अन्धार । सघन नीर बारिसए जलधार ॥ २ ॥
घन हन देखिअ विघटित रङ्ग । पथ चलइते पथिकहु मन भङ्ग ॥ ४ ॥
कओने परि आओत बालभु हमार । आगु न चल अभिसारिनि पार ॥ ६ ॥
गुरुगृह तोजि सयन गृह जाथि । तथिहु बधु जन सङ्का आथि ॥ ८ ॥
नदिआ जोरा भउ अथाह । भीम भुजङ्गम पथ चलजाह ॥ १० ॥

—.o.—

राधा।

२६४

रयनि काजर बम भीम भुअङ्गम कुलिस परए दुरबार।
गरज तरज मन रोसे बरिस घन संसअ पड़ अभिसार॥ २॥
सजनी वचन छड़इते मोहि लाज।
जे होएत से होअओ बरु सबे हमे अङ्गिकरु साहस मन देल आज॥ ४॥
अपन अहित लेख कहइते परतेख हृदयक न पाइअ ओल।
चाँद हरिनवह राहु कवल सह पेम पराभव थोल॥ ६॥
चरन बेधिल फनि हित कए मानिल धनि नेपुर न करए रोल।
सुमुखि पुछओ तोहि सरूप कहसि मोहि सिनेह कत दुर ओल॥ ८॥
ठामहि रहिअ घुमि परसे चिह्निअ भुमि दिगमग उपजु सन्देह।
हरि हरि शिव शिव तावे जाइह जिव जावे न उपजु सिनेह॥ १०॥
भनइ विद्यापति सुनह सुचेतनि गमन न करह विलम्बे।
राजा सिवसिंह रूपनराएन सकल कला अवलम्बे॥ १२॥

माधव

२६५

काजरे साजलि राति। घन भए बरिसए जलधर पाँति॥ २॥
बरिस पयोधर धार। दूर पथ गमन कठिन अभिसार॥ ४॥
जमुन भयाउनि नीरे। आरति धसति पाउति नहि तीरे॥ ६॥
बिजुरि तरंगे डराइ। तौं भल कर जौं पलटि घर जाइ॥ ८॥
झाँखथि देव वनमाली। एहि निसि कोने परि आउति गोयाली॥ १०॥
भनइ विद्यापति बानी। तोहहुँ तह कान्हु नारि सयानी॥ १२॥

दूती ।

२६६

पन्थ पिछर निसि काजर कॉति । पातरे भै गेल दिगभॅराति ॥ २ ॥

चरने बेढ़ल अहि तें नहि सङ्क । सुन्दरि हृदय नूपुर पुर पङ्क ॥ ४ ॥

कि कहव माधव पिरीति तोहारि । तुय अभिसार न जीए वरनारि ॥६॥

वराह महिस मृग पाले पलाय । देखि अनुरागिनी बाघ डराय ॥८॥

फनि मनि दीप भरमे देइ फुक । कत बेरि लागल नगिनि मुखे मुख ॥१०॥

कह कविरञ्जन करह सन्तोस । आजुक विलम्ब गमने नहिं दोस ॥१२॥

दूती ।

२६७

बाट विकट फनिमाला । चउदिस बरिसए जलधर जाला ॥२॥

हे माधव बाहु तरिए नरि भागे । कतए भीति जौ दृढ़ अनुरागे ॥४॥

बन छलि एकलि हरिणी । व्याधकुसुमसरे पाउलि रजनी ॥६॥

विद्यापति कवि भाने । रूपनरायन नृप रस जाने ॥८॥

राधा।

२६८

कोमल कमल काञ्जि चिहि सिरिजल मो चिन्ता पिआ लागी।
चिन्ता भेरे नीन्दे नहि सोअओ रअनि गमावओ जागी॥ २॥
वरकामिनि हे काम पिआरी निसि अन्धियारि डरासी।
गुरु नितम्ब भेरे चलहि न पारसि कामक पीड़लि जासी॥ ४॥
साओन मेह झिमि झिमि बारिसए बहल भमए जल पूरे।
बिजुरि लता चक चक मक कर डीठी न पसरए दूरे॥ ६॥

—:०:—

सखी।

२६९

सखि हे अइसनि निसि अभिसार। तोहि तेजि करए के पार॥ २॥
भमए भुअङ्गम भीम। पङ्के पूरल चौसीम॥ ४॥
दिग मग देखिअ घोर। पएर दिअ बिजुरि उजोर॥ ६॥
सुकवि विद्यापति गाव। महघ मदन परयाव॥ ८॥

—०—

सहचरी ।

३००

निसि निसिअर भम भीम भुअङ्गम
जलधर विजुरि उजोर ।
तरुन तिमिर निसि तइअओ चललि जासि
बड़ सखि साहस तोर ॥ २ ॥
सुन्दरि कओन पुरुष धन जे तोर हरल मन जसु लोभे चलु अभिसार ॥ ३ ॥
आतर दुतर नरि से कइसे जएवह तरि
आरति न करिय झाप ।
तोरा अछ पचसर ते तोहि नहि डर
मोर हृदय वरु कॉप ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति अरे वर जउवति
साहस कहहि न जाए ।
अछय जुवति गति कमला देविपति
मन वस अरजुन राए ॥ ७ ॥

—o—

सखी ।

३०१

रिपु पचसर जानि अवसर
सब सिन साजे ।
हेरि सून पथ घटी मनोरथ
के जाने कि होइति आजे ॥ २ ॥
निफल भेलि जुवती ।
हरि हरि हरि राति तेज हरि
पलटालि नहि दूती ॥ ४ ॥
साजि अभिसारा पड़ि अन्धकारा
उगि जनु जा भोरा ।
आरति वेरा जओ हो मेरा
लाख गुन सुख थोरा ॥ ६ ॥

—— ० ——

राधा ।

३०२

हिम कर किरन हिम अनिवार । दिशि दिशि हिमगिरि पवन विथार ॥२॥
चललि रमनि धनि अकुल चीत । सङ्केत केलि निकुञ्जे उपनीत ॥ ४ ॥
न देखि तँहि वर नागर कान । कातर अन्तर आकुल परान ॥ ६ ॥
गुरुजन नयन पाश गन बारि । आओल कुलवति चारित उघारि ॥ ८ ॥
इथे यदि न मिलल से वर कान । कह साखि कैसने धरव परान ॥१०॥
कह कविशेखर सुन्दर राहि । धैरज धर हम आनव जाहि ॥१२॥

—— ० ——

दूती ।

३०७

जागल जामिक जन चउदिस गरज घन
सासु नहि तेजए गेहा रे ।
तइश्रो से चलले बुधि बले कउसले
एत वड़ तोहर सिनेहा रे ॥२॥
ए हरि तोहर धैरज जत से सबे कहब कत
धनि गेलि सून सँकेता रे ।
जदि न अएला हे तोहे धनि से कहलि कोहे
थोइआ गेलि मालति माला रे ॥४॥
सगरि रअनि जागि तुअ दरसन लागि
तरुतर तितलि बाला रे ।
भनइ विद्यापति सुन वर जउवति
नीन्द जगइते सन्देहा रे ॥६॥

सखी ।

३०८

कह कह सुन्दरि न कर वेयाजे ।
पुरुब सुकृत केदहु पाओल मदन महासिधि काजे ॥२॥
मृगमद तिलक अगर अनुलेपित सामर वसन समारि ।
हेरह पछिम दिश करवन होयत निश गुरुजन नयन निहारि ॥४॥
विनु कारन गृह करह गतागत मुनि नयन अरविन्दा ।
अति पुलकित तनु विहसि अकामिक जागि उठलि सानन्दा ॥६॥
चेतन हाथ लाथ नहि सम्भव विद्यापति कवि भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन सकल कला रस जाने ॥८॥

—o—

राधा ।

३०५

पइरि मोञे अइलिहुँ तरनि तरङ्ग । पथ लाँघल साए सहस भुअङ्ग ॥२॥
निसि निसाचर सञ्चर साथ । भागे न मोहि केहु धइलिहु हाथ ॥४॥
एत कए अइलिहुँ जीव उपेखि । तइअओ न भेले मोहि माधव देखि ॥६॥
तन्हि नहि पढ़लिए मदनक रीति । पिसुनक वचने कइलि परतीति ॥८॥
दूती दम्पति दुअओ अबोध । काज आलस दहु परम विरोध ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि । धैरज कए रह मिलत मुरारि ॥१२॥

—o—

दूती ।

३०६

कुसुमे रचित सेजा दीप रहल तेजा
परिमल अगर चन्दने ।
जबे जबे तुअ मेरा निफले बहलि बेरा
तबे तबे पीड़लि मदने ॥२॥
माधव तोरि राही वासक सजा ।
चरन सबद जाने चौदिस आपए काने
पिआ लोभे परिनति लजा ॥४॥
सुनिअ सुजन नामे अवधि न चुकए ठामे
जानि बन पइसल हरी ।
से तुअ गमन आसे निन्द न आवे पासे
लोचन लागल देहरी ॥६॥

—o—

दूती ।

३०७

जागल जामिक जन चउदिस गरज घन
सासु नहि तेजए गेहा रे ।
तइओ से चलले बुधि बले कउसले
एत बड़ तोहर सिनेहा रे ॥२॥
ए हरि तोहर थैरज जत से सबे कहब कत
धनि गेलि सून सँकेता रे ।
जदि न अएला हे तोहे धनि से कहलि कोहे
थोइआ गेलि मालति माला रे ॥४॥
सगरि रअनि जागि तुअ दरसन लागि
तरुतर तितलि बाला रे ।
भनइ विद्यापति सुन वर जउवति
नीन्द जगइते सन्देहा रे ॥६॥

सखी ।

३०८

कह कह सुन्दरि न कर बेयाजे ।
पुरुब सुकृत केदहु पाओल मदन महासिधि काजे ॥२॥
मृगमद तिलक अगर अनुलेपित सामर वसन समारि ।
हेरह पछिम दिश करवन होयत निश गुरुजन नयन निहारि ॥४॥
बिनु कारन गृह करह गतागत मुनि नयन अरविन्दा ।
अति पुलकित तनु विहसि अकामिक जागि उठलि सानन्दा ॥६॥
चेतन हाथ लाथ नहि सम्भव विद्यापति कवि भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन सकल कला रस जाने ॥८॥

—०—

राधा

३०९

सखि हे आज जाएब मोही ।
घर गुरु जन डर न मानब वचन चूकब नही ॥ २ ॥
चाँदने आनि आनि अङ्ग लेपब भूषन कए गजमोती ।
अञ्जन विहुन लोचन जुगल धरत धवल जोती ॥ ४ ॥
धवल वसने तनु झपाओब गमन करब मन्दा ।
जइओ सगर गगने उगत सहसे सहसे चन्दा ॥ ६ ॥
न हमे काहुक डीठि निवारवि न हम करब ओते ।
अधिक चोरी पर सँओ करिअ एहे सिनेहक लोते ॥ ८ ॥
भने विद्यापति सुनह जुवति साहसे सकल काजे ।
बुझ सिवसिंह रस रसमय सोरम देवि समाजे ॥ १० ॥

—:०:—

दूती ।

३१०

आज पुनिमा तिथि जानि मोये ऐलिहु उचित तोहर अभिसार ।
देह जोति ससिकिरण समाइति के विभिनावय पार ॥ २ ॥
सुन्दरि अपनहु हृदय बिचारि ।
आँखि पसारि जगत हम देखल के जग तुय सनि नारि ॥ ४ ॥
तोहें जनु तिमिर हीत कय मानह आनन तोर तिमिरारि ।
सहस विरोध दूरे परिहर धनि चल उठि जतय मुरारि ॥ ६ ॥
दूती वचन हीत कय मानल चालक भेल पचबान ।
हरि अभिसार चललि वर कामिनी विद्यापति कवि भान ॥ ८ ॥

—:०:—

सखी ।

३११

अबहु राज पथे पुरुजन जागि । चाँद किरन जग मण्डल लागि ॥२॥
सहए न पारय नव नव नेह । हेरि हेरि सुन्दरि पड़लि सन्देह ॥४॥
कामिनि कयल कतहुँ परकार । पुरुपक वेश कयल अभिसार ॥६॥
धम्मिल लोल झूट करि वन्ध । पहिरल वसन आन करि छन्द ॥८॥
अम्वरे कुच नहि सम्वरु भेल । वाजन यन्त्र हृदय करि लेल ॥१०॥
ऐसन मिलल कुञ्जक माझ । हेरि न चिह्नइ नागर राज ॥१२॥
हेरइते माधव पड़लहि धन्द । परशि भाङ्गल हृदयक दन्द ॥१४॥
भनइ विद्यापति सुन बर नारि । दूध समुद जनि राजमरालि ॥१६॥

—.०.—

माधव ।

३१२

राहु मेघ भए गरसल सूर । पथ परिचए दिवसहि भेल दूर ॥२॥
नहि बरिसए अवसर नहि होए । पुर परिजन सञ्चर नहि कोए ॥४॥
चल चल सुन्दरि कर गए साज । दिवस समागम सपजत आज ॥६॥
गुरुजन परिजन डर कर दूर । विनु साहसे अभिमत नहि पूर ॥८॥
एहि ससार सार वथु एह । तिला एक सङ्गम जाव जिव नेह ॥१०॥
भनइ विद्यापति कवि कण्ठहार । कोटिहु न घट दिवस अभिसार ॥१२॥

—०:—

दूती।

३१३

गुरुजन कहि दुरजन सञो वारि। कौतुके कुन्द करसि फुल धारि ॥२॥
कैतवे वारि सखी जन सङ्ग। अह अभिसार पूर रति रङ्ग ॥ ४ ॥
ए सखि बचन करहि अवधान। रात कि करति आरति समधान ॥६॥
अन्धकूप सम रयनि बिलास। चोरक मन जनि बसए बास ॥ ८ ॥
हरषित होए लङ्का के राए। नागर की करति नागरि पाए ॥१०॥

—:०:—

दूती।

३१४

दढ़ बिसोयासे तुय पन्थ निहारि। जासुन कुञ्ज रहल बनमारि ॥ २ ॥
सुन्दरि मा कुरु मनोरथ भङ्ग। अह अभिसारे दिगुन थिक रङ्ग ॥४॥
तुहु धनि सहजहि पदुमिनि जाति। तोहर विलम्ब उचित नह आति ॥६॥
भूखल जन यदि न पाअव अन्न। बिफल भोजन दिन अवसन्न ॥ ८ ॥
आरति रति दुहु नह समतूल। गाहक आदर सबहु तह मूल ॥ १० ॥
गए मिलि नागरि जदुमनि पाह। कह कविरञ्जन रस निरबाह ॥१२॥

—:०:—

दूती

३१५

जलद बारिस घन दिवस अन्धार । रयनि भरमे हमे साजु अभिसार ॥२॥
आसुर करमे सफल भेल काज । जलदहि राखल दुहु दिस लाज ॥४॥
मञे कि बोलव सखि अपन गेआन । हाथिक चोरि दिवस परमान ॥ ६ ॥
मञे दूती मति मोर हरास । दिवसहु के जा निअ पिआ पास ॥८॥
आरति तोरि कुसमसर रङ्ग । अनि जीवने देखिअ अभिसङ्ग ॥१०॥
दूती बचने सुमुखि भेल लाज । दिवस अएलाहु पर पुरुप समाज ॥१२॥

—— ० ——

सखी ।

३१६

तपनक तापे तपत भेल महीतल तातल बालुका दहन समान ।
चढ़ल मनोरथ भाविनि चलु पथ ताप तपन नहि जान ॥ २ ॥
पेमक गति दुरबार ।
नवीन यौवनि धनि चरण कमल जिनि तइओ कयल अभिसार ॥४॥
कुल गुण गौरव सति यश अपयश तृण करि न मानय राधे ।
मन माहा मदन महोदधि उछलल बूड़ल कुल मरियादे ॥ ६ ॥
कतहु विघिनि जितल अनुरागिनि साधल मनमय तन्त ।
गुरुजन नयन निवारइत सुवदनि पाठ करय मनमय तन्त ॥८॥
केलि कलावति कुसुम सरसि कुले कौशले करल पयान ।
यत छल मनारय पूरल मनमथ इह कविशेखर भान ॥ १० ॥

—— ० ——

सखी।

३१७

सुरत समापि सुतल वर नागर पानि पओधर आपी।
कनक शम्भु जनि पूजि पुजारे धएल सरोरुहे झाँपी॥ २॥
सखि हे माधव केलि विलासे।
मालति रमि अलि नाईं अगोरसि पुनु रतिरङ्गक आसे॥४॥
वदन मेराए धएलन्हि मुखमण्डल कमल मिलल जनि चन्दा।
भमर चकोर दुअओ अरसाएल पीवि अमिअ मकरन्दा॥६॥
भनइ अमिकर सुनह मधुरपति राधा चरित अपारे।
राजा सिवसिंह रूपनरायन सुकवि भनथि कण्ठहारे॥८॥

—:o—

दूती।

३१८

जलधरराचि अम्बर पहिराउलि सेत सारङ्ग कर बामा।
सारङ्ग अदन दाहिन कर मण्डित सारङ्ग गति चलु रामा॥२॥
माधव तोरे बोले आनल राही।
सारङ्ग मास पास सओं आनलि तोरित पठावह ताही॥४॥
सम्भू धरिनि वेरि आनि मेराउलि हरि सुत सुत धुनि भेला।
अरुनक जोति तिमिर पिवि ऊगल चन्द मलिन भए गेला॥६॥

—:o—

दूती ।

३१६

परक पेत्रसि आनलि चोरी । साति अङ्गिरलि आरति तोरी ॥ २ ॥
तोहि नही डर ओहि न लाज । चाहसि सगरि निशि समाज ॥ ४ ॥
राख माधव राखह मोहि । तोरित घर पठावह ओहि ॥ ५ ॥
तोहे न मानह हमर बाध । पुनु दरसन होइति साध ॥ ८ ॥
ओहओ मुगुधि जानि न जान । संशय पड़ल पेम परान ॥ १० ॥
तोहहु नागर अति गमार । हठे कि होइह समुद पार ॥ १२ ॥

—— ० ——

सखी ।

३२०

गगन मगन होअ तारा । तइअओ न कान्ह तेजय अभिसारा ॥२॥
अपना सरबस लाथे । आनक बोलि नुडिय दुहु हाथे ॥ ४ ॥
टुटल गटम मोती हारा । बेकत भेल अछ नख खत धारा ॥ ३ ॥
नहि नहि नहि पए भाखे । तइअओ कोटि जतन कर लाखे ॥८॥
भनहि विद्यापति बानी । एहि तीनुहु मह दूति सआनी ॥ १० ॥

—— ० ——

राधा।

३२१

हे हरि हे हरि सुनिय श्रवण भरि अब न बिलासक बेरा।
गगन नखत छल सेहो अवेकत भेल कोकिल करइछ फेरा ॥२॥
चकवा मोर शोर कय चुप भेल ओठ मलिन भेल चन्दा।
नगरक धेनु डगरकइ सञ्चर कुमुदिनि बसु मकरन्दा ॥४॥
मुखकेर पान सेहो रे मलिन भेल अवसर भल नहि मन्दा।
विद्यापति भन इहो न निक थिक जग भरि करइछ निन्दा ॥६॥

—.०.—

राधा।

३२२

कुमुदबन्धु मलीन भासा चारु चम्पक अरुन विकासा
शुद्ध पञ्चम गाव कलरव कलय कण्ठी कुञ्ज रे ॥ १ ॥
रे रे नागर जए देहे निअ घर छोड़ अञ्चल जाव पथ नहिं पथिक सञ्च
लाज डर नहि तो परानी दे मेरानी रे ॥ २ ॥
सुनिय दन्दा जनक रोरा चक्क चक्की विरह थोरा
निसि विरामा सघन हकाइत मुछूनारे ॥ ३ ॥
धोए हलु जनि नयन कज्जल अमिअ लए जानि कएल उज्ज्वल
अचहु न वल्लभ तुअ मनोरथ काम पूरओ रे ॥ ४ ॥
हृदय उखडु मोतिम हारा निफुल फुल मालति माला
चन्द्रसिंह नरेस जीवओ भानु जम्पए रे ॥ ५ ॥

—.०.—

लाथ (छलना)

राधा।

३२३

न कह न कह मिया अपवाद। सहजे यौवन ताहे कुल मरिजाद ॥२॥
सखि परसङ्गे निशि जागल हाम। विपरित होय जनु गुरुकुल ठाम ॥४॥
ऐसन वचन पुनु न कहबि मोय। रहसहि वचन साच जनि होय ॥६॥

—o—

राधा।

३२४

मन्दिरे अछलों सहचरि मेलि। परसङ्गे रजनी अधिक भई गेलि ॥२॥
जब सखी चललिह अपन गेह। तब मझु निंदे भरल सब देह ॥४॥
सूति रहल हम करि एक चीत। दैव विपाके भेल विपरीत ॥६॥
न बोल सजनि सुन सपन संवाद। हसइत केह जनि करे परिवाद ॥८॥
विषाद पडल मझु हृदयक माझ। तुरिते घुचायलों नीविक काज ॥१०॥
एक पुरुख पुन आओल आगे। कोपे अरुण आँखि अधरक दागे ॥१२॥
से भये चिकुर चीर आनहि गेल। कपाले काजर मुखे सिन्दुर भेल ॥१४॥
अन्तरे कहब केह अपयश गाव। विद्यापति कह के पतियाव ॥१६॥

—o—

नाथर ।

३२५

सखि हे नोहे हमर वहु सेवा ।
ऐसन वानी कवहुँ जनि बोलवि जाति कुल किये लेवा ॥२॥
गोकुल नगरे काह्नु रतिलम्पट यौवन सहज हमारा ।
तुहु सखि रभसे मोहे जनि बोलवि लोक करव पतियारा ॥४॥
केशर कुसुम हेरि हम कौतुके भुजयुगे मेटल ताही ।
दाड़िम भरमें पयोधर उपर पड़लहु कीर लोभाही ॥ ६ ॥
उभय चाकित भुजे इति उति पेखल तैं वेश भै गेल आन ।
इथे परिवाद कहसि मोहे वैरिनि इह कविशेखर भान ॥८॥

—— ०.——

राधा ।

३२६

खरि नरि बेगे भासलि नाइ । धरए न पारथि बाल कन्हाइ ॥ २ ॥
तैं धँसि जमुना भेलाहु पार । फूटल बलया टूटल हार ॥ ४ ॥
ए सखि ए सखि न बोल मन्द । बिरह बचने बाढ़ल दन्द ॥ ६ ॥
कुन्तल खसल जमुन माझ । ताहि जोहइते पड़लि साँझ ॥ ८ ॥
अलक तिलक तैं वहि गेल । सुध सुधाकर वदन भेल ॥१०॥
तटिनि तट न पाइअ बाट । तैं कुच गाड़ल कठिन काँट ॥१२॥
भने विद्यापति निअ अवसाद । वचन कउसले जिनिअ वाद ॥१४॥

—— ० ——

राधा ।

३२७

कुसुम तोरए गेलाहु जाहाँ । भमरे अधर खराडल ताहाँ ॥ २ ॥
तें चलि अयलाहुँ जमुना तीर । पवने हरल हृदअ चीर ॥ ४ ॥
ए सखि सरुप कहल तोहि । आन किछु जनु बोलसि मोहि ॥ ६ ॥
हार मनोहर वेकत भेल । उजर उरग संसअ गेल ॥ ८ ॥
तें धसि मजुरे जोड़ल झाँप । नखर गाड़ल हृदअ काँप ॥१०॥
भने विद्यापति उचित भाग । वचन पाटवे कपट लाग ॥१२॥

राधा ।

३२८

ननदी सरुप निरुपह दोसे ।
बिनु विचारे वेभिचार बुझओवह सासु करओह रोसे ॥ २ ॥
कउतुके कमल नाल सञो तोरल करए चाहल अवतसे ।
रोखे कोख सञो मधुकर धाओल तेंहि अधर करु दसे ॥ ४ ॥
सरोवर घाट बाट कराटक तरु देखहि न पारल आगू ।
साँकरि बाट उवटि कहु चललाहु तें कुच कराटक लागू ॥ ६ ॥
गरुअ कुम्भ सिर थिर नहि थाकए ते उधसल केशपाशे ।
सखि सञो हमे पाछु पड़लिहु तें भेल दीघ निसासे ॥ ८ ॥
पथ अपवाद पिशुने परचारल तथिहु उतर हम देला ।
अमरख चाहि धैरज नहिं रहले तें गदगद सर भेला ॥ १० ॥
भनइ विद्यापति सुन वरजवउति इ सबे राखइ गोइ ।
ननदी सञो रस रीति वढ़ाओव गुपुत बेकत नहिं होई ॥ १२ ॥

राधा और ननद की बातचीत ।

३२६

जाहि लागि गेलि हे ताहि कहाँ लइलि हे ता पति बइरि पितु कॉहा ।
अछलि हे दुख सुखे कहह अपने मुखे भूषन गमओलह जॉहा ॥२॥
सुन्दरि कि कए बुझाओब कन्ते ।
जन्हिका जनम होइते तोंहे गेलिहे अइलि हे तन्हिका अन्ते ॥४॥
जाहि लागि गेलाहुँ से चलि आएल ते मो धएलाहुँ नुकाइ ।
से चलि गेल ताहि लए चललाहुँ तें पथे भेलि अनेआइ ॥६॥
सङ्कर बाहन खेड़ि खेलाइते मेदिनि बाहन आगे ।
जे सबे अछलि सङ्गे से सबे चललि भङ्ग उबरि अएलाहुँ अछ भागे ॥८॥
जाहि दुइ खोज करइछह सासुन्हि से मिलु अपना सङ्गे ।
भनइ विद्यापति सुन वरजउवति गुपुत नेह रतिरङ्गे ॥१०॥

—— o ——

मानशिक्षा ।

सखी ।

२३०

खनरि खन महथि भइ किछु अरुन नयन कइ
कपटे धरि मान सम्मान लेही ।
कनक जञो पेम कसि पुनु पलटि बाङ्क हसि
आधि सञो अधर मधु पान देही ॥२॥
अरे रे इन्दुमुखि अढ़ न कर पिअ हृदय खेद हर
कुसुमसर रङ्ग संसार सारा ॥३॥
वचने बस होसि जनु ससरि भिन होइह तनु
सहजे वरु छाड़ि देव सअन सीमा ।
प्रथम रस भङ्ग भेले लोमे मुख सोभ गेले
बाँधि भुज पासे पिअ धरब गीमा ॥५॥
जदि नयन कमलबर मुकुलकेर कन्ति धर
खर नखर घात कइ सेहे वेला ।
परम पद लाभ सम मोदे चिरे हृदय रम
नागरी सुरत सुख अमिय मेला ॥७॥
सरस कवि सुरस भने चारुतर चतुरपने
नारि आराहियइ पञ्चवाना ।
सकल जन सुजन गति रानि लखिमाक पति
रूप नरायन सिवसिंह जाना ॥९॥

—:o—

सखी ।

३३१

हमर वचन सून सजनि । मान करवि आदर जानि ॥ २ ॥
जब किछु पिया पुछब तोय । अवनत मुख रहवि गोय ॥ ४ ॥
जब परिहरि चलए चाहि । कुटिल नयाने हेरवि ताहि ॥६॥
जब किछु आदर देखह थोर । झापि देखाओवि कुच ओर ॥८॥
वचन कहवि काँदन माखि । मान करबि आदर राखि ॥१०॥
जब करे धरि निकट आनि । उहु उहू कए कहवि वानि ॥१२॥
भनइ विद्यापति सोइ से नारि । मानक पिरिति राखय पारि ॥१४॥

——.०——

सखी ।

३३२

सखि अवलम्बने चलवि नितम्बिनि थम्भवि थम्भ समीपे ।
जब हरि करे धरि कोर बइसाओव आँचरे चोरायवि दीपे ॥२॥
सखि मान न रहत उदासे ।
सत सम्भासने वचन न परगासब जेहन कृपन असोयासे ॥४॥
लहु लहु हसि हासि मुख मोड़वि दशन देआओव हासे ।
वदन आध विनु साध न पूरब कुच दरसाओव पासे ॥६॥
वहुविध आदरे पहुक कातर लाखि विमुखि वइसव वामे ।
करे कर टेलव आलिङ्गन वारव सेज तेजि वइसव ठामे ॥८॥
करे कर जोरि मोरि तनु उठव अम्वर सम्वरि पीठे ।
भनइ विद्यापति उतकट सङ्कट उपजायव दीठे ॥१०॥

——०——

सखी ।

३३३

कोप करए चाह नयने निहारि रह
धरिवा न पारय हासे ।
न वोल परुस वाक न मुख अरुन थाक
चाँद कि जलइ हुतासे ॥२॥
ए सखि मान करिवा न जाने ।
कत खन सिखाउवि आने ॥४॥
न न न न न न भन पिअरे नखरे हन
जेओ जान तथिहु लजाइ ।
न कर भौह भङ्ग न धरि मोलइ अङ्ग
खनहि सुलभ भए जाइ ॥६॥
अपने अथिक सुखि न धर परेरे बुधि
विसम कुसुमसर माया ।
। विरह सोस भेले भल हो अधर देले
रौद सोहाउनि छाया ॥८॥
भनइ विद्यापति होइह दून रति
पूजबते पञ्चवाने ।
रूपिनि देबिपति मति सिरि रतिधर
सकल कलारस जाने ॥१०॥

—— o ——

राधा ।

२३४

दूरहि रहिय करिय मन आन । नयन पियासल हटल न मान ॥ २ ॥
हास सुधारस तसु मुख हेरि । बाँधलि ए बाँध निवी कत बेरि ॥ ४ ॥
की सखि करब धरब की गोय । करिय मान जौं आइति होय ॥ ६ ॥
धसमस करय रहओं हिय जाँति । सगर शरीर धरय कत भाँति ॥ ८ ॥
गोपहि न पारिय हृदय उलास । मूनलाहु वदन बेकत हो हास ॥ १० ॥
भनइ विद्यापति तोर न दोस । भूखल मदन बढ़ावय रोस ॥ १२ ॥

—o—

राधा ।

२३५

जखने जाइअ पिया सअनक पास । मन रह मान करब कत रास ॥ २ ॥
तसु कर परसे न रहए गेयान । नीवी कखने फूजए के जान ॥ ४ ॥
कोने परि पिया सञो करब सखि मान । मन मोर हरए मधय पचबान ॥ ६ ॥
कि करब मान मो न मन थीर । कामक आएत तरुनि सरीर ॥ ८ ॥

—:o:—

राधा की मान ।

राधा ।

३३६

लोचन अरुन बुझल बड़ भेद । रअनि उजागर गरुअ निवेद ॥ २ ॥
ततहि जाह हरि न करह लाथ । रअनि गमओलह जन्हिके साथ ॥४॥
कुच कुङ्कमे माखल हिअ तोर । जनि अनुरागे रॉगि करु गोर ॥ ६ ॥
अनके भूषने तोर कलङ्क । वड़े ओ भेद मन्देओ परसङ्ग ॥ ८ ॥
चिट गुड़े चुपड़लि राड़क पोरि । लओले लोथे वेकत भेल चोरि ॥१०॥
भनइ विद्यापति वजबाहु वाध । वड़ाक अनय मौन पय साध ॥ १२ ॥

—o—

राधा ।

३३७

कुङ्कम लओलह नख खत गोइ । अधरे विकाजर अयलाहे धोइ ॥ २ ॥
तइओ न रहल कपट बुधि तोरी । लोचन अरुने बेकत भेल चोरी ॥ ४ ॥
चल चल कन्हाइ बोल जनु आने । परतख चाहि अधिक अनुमाने ॥ ६ ॥
जानञो प्रकृति बुझञो गुनशीला । जस तोर मनोरथ मनसिज लीला ॥ ८ ॥
धन सौं जउबन छइलओ जाती । कामिनि विनु कइसे गेलि मधुराती ॥१०॥
वचने नुकावह बेकतेओ काजे । तोहे हासि हेरह हम बड़ि लाजे ॥१२॥
अपथहुँ सपथ बुझावह राधे । कोने परि खेओम सठ अपराधे ॥१४॥
भनइ विद्यापति पिअ अपराधे । उदघट न कर मनोरथ वाधे ॥ १६ ॥
देवसिंह सुत एहो रस जाने । राए सिवसिंह लखिमा देवि रमाने ॥१८॥

—o—

राधा ।

३३८

चल चल माधव मझु परनाम । चातुरि न रह चतुरक ठाम ॥ २ ॥
अधरक जोति मलिन भइ गेल । तुय अनुरूप रमनि हरि लेल ॥ ४ ॥
सिंदुरक विन्दु ललाटहि लागि । सोपलि सुन्दरि निज अनुरागि ॥ ६ ॥
प्रति अङ्के रति चिन बेकत होय । करतल चाँद झपावय कोय ॥ ८ ॥

—— ० ——

राधा ।

३३६

आध मुदित भेल दुहु लोचन वचन बोलत आध आधे ।
रतिक आलसे सामतनु झामर हेरि पुरल मोर साधे ॥ २ ॥
माधव चल चल चल तन्हि ठामे ।
जसु पद जावक हृदय भूखन अवहुँ जपत तसु नामे ॥ ४ ॥
कत चन्दन कत मृगमद कुंकुम तुय कपोल रहु लागि ।
देखि अनुरुप साति कयल विहि अतए मानिय रहु भागि ॥ ६ ॥

—— ० ——

राधा ।

३४०

सहस रमनि सौं भरल तोहर हिय करु तनि परसि न त्यागे ।
सकल गोकुल जानि से पुनमति धनि कि कहब ताहेरि भागे ॥२॥
पद जावक हृदय भिन अछ आओर करज खत ताहे ।
जाहि जुवति सङ्गे रअनि गमौलह ततहि पलटि बरु जाहे ॥४॥
नयनक काजर अधरें चोराओले नयन अधरकहु रागे ।
बदलल वसन नुकाओब कत खन तिला एक कैतव लागे ॥६॥
बड़ अपराध उतर नहि सम्भव विद्यापति कवि भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन सकल कलारस जाने ॥५॥

—:o:—

राधा ।

३४१

जावे रहिअ तुअ लोचन आगे । तावे बुझावह दिढ़ अनुरागे ॥ २ ॥
नयन ओते भेले सवे किछु आने । कपट हे माधव कति खन वाने ।
बुझल मधुरपति भालि तुअ रीति । हृदय कपट मुखे करह पिरीति ॥६॥
विनय वचन जत रस परिहास । अनुभवे बुझल हमे सेओ परिहास ।
हासि हासि करह कि सब परिहार । मधु विखे माखल सर परहार ॥१०॥

—:o:—

राधा ।

३४२

मनसिज बाने मोर हरल गेंआने । बोललह तोहे मोरि दोसरि पराने ॥२॥
वचनहु चुकलासि आवे की छड़ा । समुह निहारसि साहस वड़ा ॥ ४ ॥
कि तोहि बोलिवों कान्ह कि बोलिवओो तोही । बेरि बेरि कत परिपञ्चसि मोही ॥६॥
भॉगिले भासा तोलिले आसा । आवे कर्के करसि तोञे मुख परगासा ॥८॥
लाजक अपगमे चीन्हलि जाती । पेम करह अनतए गेलि राती ॥१०॥
खण्डित जुवति कवि विद्यापति भाने । पेअसि वचने लजाएल कान्हे ॥१२॥
रूपनरायन एहु रस जाने । राए सिवसिंह लखिमा देइ रमाने ॥१४॥

—:०.—

राधा ।

३४३

परिजन पुरजन वचनक रीति । पेम लुबुध मन भेलि परतीति ॥ २ ॥
निअ अपराध बोलत की आने । कुमुदहि भेल कमल के भाने ॥ ४ ॥
एहि अनुभवि बुझल सरूपे । नअन अछइते निमजालिहु कूपे ॥ ६ ॥
जदि तोहे माधव सहज विरागी । लोचन गीम कएल कथि लागी ॥ ८ ॥
पुनु जनु बोलह अइसनि भासा । कहुक कउतुके काहु निरासा ॥ १० ॥
नहि नहि बोलह दरसह कोपे । जतने जनाए करइछह गोपे ॥ १२ ॥
परतख गोपव के पतिआउ । बरु मनमथ सरे जीवन जाउ ॥ १३ ॥
भनइ विद्यापति एहु रस भाने । पुहविहि अवतरु नव पॅचवाने ॥१५॥
रूपनरायन एहु रसमन्ता । गुन निवास लखिमा देवि कन्ता ॥१८॥

— • —

राधा ।

३४४

आदरे अधिक काज नहिं बन्ध । माधव बुझल तोहर अनुबन्ध ॥२॥
आसा राखह नएन पठाए । कत खन कौसले कपट नुकाए ॥ ४ ॥
चल चल माधव तोह जे सआन । ताके बोलिय जे उचित न जान ॥ ६ ॥
कसिअ कसौटी चिह्निअ हेम । प्रकृति परेखिय सुपुरुख पेम ॥ ८ ॥
परिमले जानिअ कमल पराग । नयने निवेदिअ नव अनुराग ॥ १० ॥
भनइ विद्यापति नयनक लाज । आदरे जानिअ आगिल काज ॥ १२ ॥

—·०·—

राधा ।

३४५

माधव बुझल तोहर नेह ।
ओड़ धरइत हम राखि न पारिय आश की जइ देह ॥ २ ॥
तो सन माधव अति गुनाकर देखइत अति अमोल ।
जेहन मधुक माखल पाथर तेहन तोहर बोल ॥ ४ ॥
इ रीति दए हम पिरिति लाओल जोग परिनत भेल ।
अमृत वधि हम लता लाओल विषे फरि फरि गेल ॥ ६ ॥
भन विद्यापति सुनु रमापति सकल गुन निधान ।
अपन वेदन ताहि निवेदिअ जे परवेदन जान ॥ ८ ॥

—:०:—

राधा ।

३४२

मनसिज वाने मोर हरल गेँआने । वोललह तोहे मोरि दोसरि पराने ॥२॥
वचनहु चुकलासि आवे की छड़ा । समुह निहारसि साहस वड़ा ॥ ४ ॥
कि तोहि वोलिवोँ कान्ह कि वोलिवओ तोही । वेरि वेरि कत परिपछसि मोही ॥६॥
भाँगिले भासा तोलिले आसा । आवे कके करसि तोञे मुख परगासा ॥८॥
लाजक अपगमे वीन्हलि जाती । पेम करह अनतए गेलि राती ॥१०॥
खण्डित जुवति कवि विद्यापति भाने । पेअसि वचने लजाएल कान्हे ॥१२॥
रूपनरायन एहु रस जाने । राए सिवसिंह लखिमा देइ रमाने ॥१४॥

राधा ।

३४३

परिजन पुरजन वचनक रीति । पेम लुबुध मन भेलि परतीति ॥ २ ॥
निअ अपराध वोलत की आने । कुमुदहि भेल कमल के भाने ॥ ४ ॥
एहि अनुभवि बुझल सरूपे । नअन अछइते निमजालिहु कूपे ॥ ६ ॥
जदि तोहे माधव सहज विरागी । लोचन गीम कएल कथि लागी ॥ ८ ॥
पुनु जनु वोलह अइसनि भासा । कहुक कउतुके काहु निरासा ॥ १० ॥
नहि नहि वोलह दरसह कोपे । जतने जनाए करइछह गोपे ॥ १२ ॥
परतख गोपत्र के पतिआउ । वरु मनमथ सरे जीवन आउ ॥ १३ ॥
भनइ विद्यापति एहु रस भाने । पुहविहि अवतरु नव पँचवाने ॥१५।
रूपनरायन एहु रसमन्ता । गुन निवास लखिमा देवि कन्ता ॥१८॥

राधा ।

३४४

आदरे अधिक काज नहिं बन्ध । माधव बुझल तोहर अनुबन्ध ॥२॥
आसा राखह नएन पठाए । कत खन कौसले कपट नुकाए ॥ ४ ॥
चल चल माधव तोह जे सआन । ताके बोलिय जे उचित न जान ॥ ६ ॥
कसिअ कसौटी चिह्निअ हेम । प्रकृति परेखिय सुपुरुख पेम ॥ ८ ॥
परिमले जानिअ कमल पराग । नयने निवेदिअ नव अनुराग ॥ १० ॥
भनइ विद्यापति नयनक लाज । आदरे जानिअ आगिल काज ॥ १२ ॥

—:०:—

राधा ।

३४५

माधव बुझल तोहर नेह ।
ओड़ धरइत हम राखि न पारिय आश की जइ देह ॥ २ ॥
तो सन माधव अति गुनाकर देखइत अति अमोल ।
जेहन मधुक माखल पाथर तेहन तोहर बोल ॥ ४ ॥
इ रीति दए हम पिरिति लाओल जोग परिनत भेल ।
अमृत वधि हम लता लाओल विषे फरि फरि गेल ॥ ६ ॥
भन विद्यापति सुनु रमापति सकल गुन निधान ।
अपन वेदन ताहि निवेदिअ जे परवेदन जान ॥ ८ ॥

—:०:—

राधा ।

३४६

प्रथमहि गिरि सम गौरव भेल । हृदयहु हार ऑतर नहि देल ॥ २ ॥
सुपुरुप वचन कएल अवधान । भल मन्द दुअओ बुझव अवसान ॥४॥
चल चल माधव भलि तुअ रीति । पिसुन वचने परिहरलि पिरीति ॥६॥
परक वचने आपल कान । तहि खने जानल समय समान ॥८॥
आवे अपदहु हरि तेज अनुरोध । काहु का जनु हो बिहिक विरोध ॥१०॥
न भेले रङ्ग रभस दुर गेल । इथि हम खेद एकओ नहि भेल ॥१२॥
एके पए खेद जे मन्दा समाज । भलेहु तेजल आवे ऑखिक लाज ॥१४॥
भनइ विद्यापति हरि मने लाज । काहु का जनु हो मन्दा समाज ॥१६॥

—— ० ——

सखी ।

३४७

अहनिसि वचने जुड़ओलह कान । सुचिरे रहत सुख इ भेल भान ॥२॥
अवे दिने दिने हे बुझल विपरीत । लाज गमाए विकल भेल चीत ॥४॥
विहिक विरोधे मन्दा सओ भेट । भॉड़ छुइल नहि भरले पेट ॥६॥
लोभे करिअ हे मन्द जत काम । से न सफल होअ जओ विहि वाम ॥८॥

—— ० ——

राधा ।

३४८

बोलल बोल उत्तिम पए राख । नीच सवद जन की नहिं भाख ॥ २ ॥
हमे जे उत्तिम कुल गुनमति नारि । एत वा निअ मने हलब विचारि ॥ ४ ॥

सिनेह बढ़ाओल सुपुरुस जानि । दिने दिने कएलह आसा हानि ॥ ६ ॥
कत न जगत अछ रसमति फूल । मालति मधु मधुकर पए भूल ॥ ८ ॥
गेल दीन पुनु पलटि न आव । अवसर बहला रह पचताव ॥ १० ॥

—— ० ——

राधा ।

३४९

झटक झाटल छोड़ल ठाम । कएल महातरु तर विसराम ॥ २ ॥
ते जानल जिव रहत हमार । सेप डार टुटि परल कपार ॥ ४ ॥
चल चल माधव कि कहव जानि । सागर अछल थाह भेल पानि ॥ ६ ॥
हम जे अनओले की भेल काज । गुरुजने परिजने होएत लाज ॥ ८ ॥
हमरे वचने जे तोहहि विराम । फेकलेओ चेप पाव पुनु ठाम ॥१०॥

—— ० ——

राधा ।

३५०

सुपुरुस भासा चौमुख वेद । एत दिन बुझल अछल नहि भेद ॥२॥
नितहि अछ सब मन जाग । तोह बोलि विसरल हमर भाग ॥ ४ ॥
चल चल माधव की कहब जानि । समयक दोसे आगि बम पानि ॥ ६ ॥
रयनिक बन्धव जानि चन्द । भल जन हृदय तेजए नहि मन्द ॥ ८ ॥
कलियुग गतिके साधु मन भङ्ग । सबे विपरीत करब अनङ्ग ॥ १० ॥

—— ० ——

माधव ।

३५१

ए धनि मानिनि करह सञ्जात । तुय कुच हेमघट हार भुजङ्गिनि ताक उपर धर हात ॥२॥
तोंहे छाड़ि हम यदि परश कर कोय । तुय हार नागिनि काटब मोय ॥ ४ ॥

राधा ।

३४६

प्रथमहि गिरि सम गौरव भेल । हृदयहु हार ऑतर नहि देल ॥ २ ॥
सुपुरुष वचन कएल अवधान । भल मन्द दुअओ वुझव अवसान ॥४॥
चल चल माधव भलि तुअ रीति । पिसुन वचने परिहरलि पिरीति ॥६॥
परक वचने आपल कान । तहि खने जानल समय समान ॥८॥
आवे अपदहु हरि तेज अनुरोध । काहु का जनु हो विहिक विरोध ॥१०॥
न भेले रङ्ग रभस दुर गेल । इथि हम खेद एकओ नहि भेल ॥१२॥
एके पए खेद जे मन्दा समाज । भलेहु तेजल आवे ऑखिक लाज ॥१४॥
भनइ विद्यापति हरि मने लाज । काहु का जनु हो मन्दा समाज ॥१६॥

—— ० ——

सखी ।

३४७

अहनिसि वचने जुडओलह कान । सुचिरे रहत सुख इ भेल भान ॥२॥
अवे दिने दिने हे वुझल विपरीत । लाज गमाए विकल भेल चीत ॥४॥
विहिक विरोधे मन्दा सञो भेट । भॉड़ छुइल नहि भरले पेट ॥६॥
लोभे करिअ हे मन्द जत काम । से न सफल होअ जञो विहि वाम ॥८॥

—— ० ——

राधा ।

३४८

वोललि वोल उत्तिम पए राख । नीच सवद जन की नहि भाख ॥ २ ॥
हमे जे उत्तिम कुल गुनमति नारि । एत वा निअ मने हलव विचारि ॥ ४ ॥

सिनेह बढ़ाओल सुपुरुस जानि । दिने दिने कएलह आसा हानि ॥ ६ ॥
कत न जगत अछ रसमति फूल । मालति मधु मधुकर पए भूल ॥ ८ ॥
गेल दीन पुनु पलटि न आव । अवसर बहला रह पचताव ॥ १० ॥

—०—

राधा ।

३४६

झटक झाटल छोड़ल ठाम । कएल महातरु तर बिसराम ॥ २ ॥
ते जानल जिव रहत हमार । सेष डार टुटि परल कपार ॥ ४ ॥
चल चल माधव कि कहव जानि । सागर अछल थाह भेल पानि ॥ ६ ॥
हम जे अनओले की भेल काज । गुरुजने परिजने होएत लाज ॥ ८ ॥
हमरे वचने जे तोहहि बिराम । फेकलेओ चेप पाव पुनु ठाम ॥१०॥

—०—

राधा ।

३५०

सुपुरुस भासा चौमुख वेद । एत दिन बुझल अछल नहि भेद ॥२॥
नितहि अछ सब मन जाग । तोह बोलि बिसरल हमर भाग ॥ ४ ॥
चल चल माधव की कहव जानि । समयक दोसे आगि बम पानि ॥ ६ ॥
रयनिक वन्धव जानि चन्द । भल जन हृदय तेजए नहि मन्द ॥ ८ ॥
कलियुग गतिके साधु मन भङ्ग । सबे विपरीत करव अनङ्ग ॥ १० ॥

—०—

माधव ।

३५१

ए धनि मानिनि करह सञ्जात । तुय कुच हेमघट हार भुजङ्गिनि ताक उपर धर हात ॥२॥
तोंहे छाड़ि हम यदि परश कर कोय । तुय हार नागिनि काटव मोय ॥ ४ ॥

राधा ।

३४६

प्रथमहि गिरि सम गौरव भेल । हृदयहु हार आँतर नहि देल ॥ २ ॥
सुपुरुष वचन कएल अवधान । भल मन्द दुअओ बुझव अवसान ॥४॥
चल चल माधव भलि तुअ रीति । पिसुन वचने परिहरलि पिरीति ॥६॥
परक वचने आपल कान । तहि खने जानल समय समान ॥८॥
आवे अपदहु हरि तेज अनुरोध । काहु का जनु हो बिहिक विरोध ॥१०॥
न भेले रङ्ग रभस दुर गेल । इथि हम खेद एकओ नहि भेल ॥१२॥
एके पए खेद जे मन्दा समाज । भलेहु तेजल आवे आँखिक लाज ॥१४॥
भनइ विद्यापति हरि मने लाज । काहु का जनु हो मन्दा समाज ॥१६॥

—o—

सखी ।

३४७

अहनिसि वचने जुड़ओलह कान । सुचिरे रहत सुख इ भेल भान ॥२॥
अवे दिने दिने हे बुझल विपरीत । लाज गमाए विकल भेल चीत ॥४॥
विहिक विरोधे मन्दा सञो भेट । भाँड़ छुइल नहि भरले पेट ॥६॥
लोभे करिअ हे मन्द जत काम । से न सफल होअ जञो बिहि वाम ॥८॥

—o—

राधा ।

३४८

बोलिल बोल उत्तिम पए राख । नीच सवद जन की नहिं भाख ॥ २ ॥
हमे जे उत्तिम कुल गुनमति नारि । एत वा निअ मने हलव विचारि ॥ ४ ॥

मानिनि अपनेहु मने अनुमान । रुसइते आनहु बोल अगेआन ॥४॥
हाटक घटन सिरीफल सुन्दर कुचजुग कुटि करु आधे ।
पानि परस रस अनुभव सुन्दरि न करु मनोरथ बाधे ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति सुन वरजौवति विभव दया थिक सारा ।
माह छाह ककरो नहि भाव्रय ग्रीपम प्रान पियारा ॥८॥

—— ० ——

माधव ।

३५५

वदन चाँद तोर नयन चकोर मोर
रूप अमिय रस पीवे ।
अधर मधुरि फुल पिया मधुकर तुल
विनु मधु कत खन जीवे ॥ २ ॥
मानिनि मन तोर गढ़ल पसाने ।
कके न रभसे हसि किछु न उतर देसि
सुखे जाओ निसि अवसाने ॥ ४ ॥
पर मुखे न सुनसि निअ मने न गुनसि
न बुझसि छइलरि वानी ।
अपन अपन काज कहइते अधिक लाज
अरथित आदर हानी ॥ ६ ॥
कवि भने विद्यापति अरेरे सुन जुवति
नेह नुतन भेल माने ।
लखिमा देवि पति सिवसिंह नरपति
रुपनरायन जाने ॥ ८ ॥

हमर वचने यदि नह परतीति। बूझि करह शाति ये होय उचीत ॥६॥
भुज पाशे बाँधि जघन पर तारि। पयोधर पाथर हिय देह भारि ॥ ८ ॥
उरु कारागारे बाँधि राख दिन राति। विद्यापति कह उचित इह शाति ॥१०॥

—:o:—

माधव।

३५२

सुन सुन सुन्दरि कर अवधान। बिनु अपराधे कहसि काहे आन ॥ २ ॥
पुजलों पशुपति यामिनि जागि। गमन विलम्बन भेल तहि लागि ॥४॥
लागल मृगमद कुङ्कुम दाग। उचारइत मन्त्र अधरे नहि राग ॥ ६ ॥
रजनि उजागरि लोचन घोर। ताहि लागि तुहु मोहे बोलसि चोर ॥८॥
नव कविशेखर कि कहब तोय। शपथ करह तव परतीत होय ॥ १० ॥

—:o.—

माधव।

३५३

मान परीहर हे करु वचन मोरा। मार मनोभव हे धरु शरन तोरा ॥२॥
न कर न कर हे मोहि विमुख आजे। अपरुब पेमे हे पुन भेल समाजे ॥४॥
कमल वदनि हे करु आँकम दाने। बिनये के नहि हे जगते जय माने ॥८॥
विद्यापति कवि हे भन कवि धीरे। राजा शिवसिंह हे नरपति वीरे ॥१०॥

—:o·—

माधव।

३५४

सरदक ससधर सम मुख मराडल काँइ झपावसि वासे।
अलपेओ हास सुधारस वरिसओ छाड़ओ नयन पिआसे ॥ २ ॥

मानिनि अपनेहु मने अनुमान । रुसइते आनहु बोल अगेआन ॥४॥
हाटक घटन सिरीफल सुन्दर कुचजुग कुटि करु आधे ।
पानि परस रस अनुभव सुन्दरि न करु मनोरथ वाधे ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति सुन वरजौवति विभव दया थिक सारा ।
माह छाह ककरो नहि भावय ग्रीषम प्रान पियारा ॥८॥

—.०.—

माधव ।

३५५

वदन चाँद तोर नयन चकोर मोर
रूप अमिय रस पीवे ।
अधर मधुरि फुल पिया मधुकर तुल
विनु मधु कत खन जीवे ॥ २ ॥
मानिनि मन तोर गढ़ल पसाने ।
कके न रभसे हसि किछु न उतर देसि
सुखे जाओ निसि अवसाने ॥ ४ ॥
पर मुखे न सुनसि निअ मने न गुनासि
न बुझसि छइलरि वानी ।
अपन अपन काज कहइते अधिक लाज
अरथित आदर हानी ॥ ६ ॥
कवि भने विद्यापति अरेरे सुन जुवति
नेह नुतन भेल माने ।
लखिमा देवि पति सिवसिंह नरपति
रुपनरायन जाने ॥ ८ ॥

हमर वचने यदि नह परतीति । बूझि करह शाति ये होय उचीत ॥६॥
भुज पाशे बाँधि जघन पर तारि । पयोधर पाथर हिय देह भारि ॥ ८ ॥
उरु कारागारे बाँधि राख दिन राति । विद्यापति कह उचित इह शाति ॥१०॥

——:o:——

माधव ।

३५२

सुन सुन सुन्दरि कर अवधान । बिनु अपराधे कहसि काहे आन ॥ २ ॥
पुजलों पशुपति यामिनि जागि । गमन विलम्बन भेल तहि लागि ॥४॥
लागल मृगमद कुङ्कुम दाग । उचारइत मन्त्र अधरे नहि राग ॥ ६ ॥
रजनि उजागरि लोचन घोर । ताहि लागि तुहु मोहे बोलसि चोर ॥८॥
नव कविशेखर कि कहब तोय । शपथ करह तव परतीत होय ॥ १० ॥

——:o:——

माधव ।

३५३

मान परीहर हे करु वचन मोरा । मार मनोभव हे धरु शरन तोरा ॥२॥
न कर न कर हे मोहि विमुख आजे । अपरुब पेमे हे पुन भेल समाजे ॥४॥
कमल वदनि हे करु आँकम दाने । विनये के नहि हे जगते जय माने ॥८॥
विद्यापति कवि हे भन कवि धीरे । राजा शिवसिंह हे नरपति वीरे ॥१०॥

——:o:——

माधव ।

३५४

सरदक ससधर सम मुख मण्डल काँइ झपावसि वासे ।
अलपेओ हास सुधारस वरिसओ छाड़ओ नयन पिआसे ॥ २ ॥

माधव ।

३५७

वदन सरोरुह हासे नुकओलह तें आकुल मन मोरा ।
उदितओ चन्दा अँमिय न मुश्रए की पिवि जिउत चकोरा ॥ २ ॥
मानिनि देह पलटि दिठि मेला ।
सगरि रअनि जदि कोपहि गमओवह केलि रभस कोन वेला ॥ ४ ॥
तोर नअन एँ पथहु न सञ्चर अजुगुत कह न जाइ ।
अरुन कमलके कन्ति चोरओलह तें मने रहलि लजाइ ॥ ६ ॥
कामिनि कोपें मनोरथ जागल विद्यापति कबि गावे ।
जएमति देवि वर सन गहि सङ्कर बुझए सकल रस भावे ॥ ८ ॥

—०—

माधव ।

३५८

चउदिस जलदें जामिनि भरि गेलि । धाराजें धरनि बेआपिति भेलि ॥ २ ॥
गगन गरजें जागल पञ्चबान । एहना सुमुखि उचित नहि मान ॥ ४ ॥
नागरि पिसुन बचने करु रोप । पय परलहु नहि कर परितोस ॥ ६ ॥
बिहि समुचित धरु वामा नाम । हमे अनुमापि हलल फल ठाम ॥ ८ ॥
नागरि बचन अमिय परतीति । हृदय गढल हे पखानहु जीति ॥ १० ॥

—०—

माधव ।

३५६

पीन कनया कुच [illegible] नने चित हरि लेल मोर ॥ २ ।
परिहर सुन्दरि [illegible] भ्रमर करउ मधुपान ॥ ४ ।

माधव ।

३५६

काँ लागि वदन झाँपसि सुन्दरि
हरल चेतन मोर ।
पुरुष वधक भय न करह
इ वड़ साहस तोर ॥ २ ॥
मानिनि आकुल हृदय मोर ।
मदन वेदन सहइत न पारिय
शरन लेल तोर ॥ ४ ॥
किय गिरि वर कनय कटोर
ता देखि लागय धन्द ।
हियाक उपर शम्भु पूजित
वेढ़ि बालक चन्द ॥ ६ ॥
कर कमले परशइत चाहिय
विहि नह जदि वामा ।
तोहर चरणे शरण लेल
सदय होयब रामा ॥ ८ ॥
चञ्चल देखिअ आकुल भेल
व्याकुल भेल चीत ।
कह विद्यापति सुनह युवति
कानुक करह हीत ॥ १० ॥

——०——

माधव ।

३५७

बदन सरोरुह हासे नुकओलह तें आकुल मन मोरा ।
उदितओ चन्दा अँमिय न मुञ्चए की पिबि जिउत चकोरा ॥ २ ॥
मानिनि देह पलटि दिठि मेला ।
सगरि रअनि जदि कोपहि गमओवह केलि रभस कोन वेला ॥ ४ ॥
तोर नअन ऍ पयहु न सञ्चर अजुगुत कह न जाइ ।
अरुन कमलके कन्ति चोरओलह ते मने रहलि लजाइ ॥ ६ ॥
कामिनि कोपें मनोरथ जागल विद्यापति कवि गावे ।
जएमति देवि वर सन गहि सङ्कर वुझए सकल रस भावे ॥ ८ ॥

—— ० ——

माधव ।

३५८

चउदिस जलदें जामिनि भरि गेलि । धाराजें धरनि बेआपिति भेलि ॥ २ ॥
गगन गरजें जागल पञ्चबान । एहना सुमुखि उचित नहि मान ॥ ४ ॥
नागरि पिसुन बचने करु रोप । पय परलहु नहि कर परितोस ॥ ६ ॥
विहि समुचित धरु वामा नाम । हमे अनुमापि हलल फल ठाम ॥ ८ ॥
नागरि वचन अमिय परतीति । हृदय गढ़ल हे पखानहु जीति ॥ १० ॥

—— ० ——

माधव ।

३५९

पीन कनया कुच कठिन कठोर । वङ्किम नयने चित हरि लेल मोर ॥ २ ।
परिहर सुन्दरि दारुण मान । आकुल भ्रमर करउ मधुपान ॥ ४ ।

ए धनि सुन्दरि करे धरि तोर । हठ न करह महत राख मोर ॥ ६ ।
पुनु पुनु कत जे बुझायब बार बार । मदन बेदन हम सहइ न पार ॥ ८ ।
भनइ विद्यापति तुहुँ सब जान । आशा भङ्ग दुख मरन समान ॥१०।

—— ० ——

माधव ।

३६०

उपमिय आनन नीरज पङ्कज ससधर दिवस मलीने ।
भौंह अनूपम अधर सोहाउन नव पल्लव रुचि जीने ॥ २ ॥
सुन पेअसि की मोर परल गरुअ अपराधे ।
बह मलयानिल जार कलेवर न कर मनोरथ बाधे ॥ ४ ॥

——.०:——

माधव ।

३६१

साकर सूध दुधे परिपूरल सानल अमिअक सारे ।
सेहे वदन तोर अइसन करम मोर खारे पए बरिसए धारे ॥२॥
साजनि पिशुन बचन देहे काने ।
देहे विभिन विधाता आइति तोरा मोरा एके पराने ॥४॥
कोपहु सञो जदि समदि पठावह वचने न बोलह मन्दा ।
तोर वदन सन तोरे वदन पए खार न बरिसय चन्दा ॥६॥
चौदिस लोचन चमकि चलाबसि न मानसि काहुक शङ्का ।
तोर मुह सञो किछु भेद कराओब देल चान्द कलङ्का ॥८॥

——|०——

माधव ।

३६२

मालति मन जनु मानह आने ।
तोहरा सौं हम जे किछु भाखल सेह वचन परमाने ॥२॥
सभ परितेजि तोहि हम भजलहुँ ताहि करत के भङ्गे ।
जौ दुर्जन जन कोटि जतन कर तैओ जनम भरि सङ्गे ॥४॥
अनुखन मन धनि खिन्न करह जनि देव शपथ थिक लाखे ।
हमरा तोंहहि दोसरि नहि तेहनि मन अछि दृढ़ अभिलाखे ॥६॥
बिधिक दोख जत रोख कयल मत वचन कहल एक आधे ।
नागरि सेह जगत गुन आगरि जे खेम पति अपराधे ॥८॥
विद्यापति कह धैरज सब तँह मन जनु करह मलाने ।
तुअ गुन मन गुनि पहु रह अनुगत करत अधर मधु पाने ॥१०॥

—.o—

माधव ।

३६३

तनिहि लागि फुलल अरबिन्द । भूखल भमरा पिब मकरन्द ॥२॥
विरल नखत नभमण्डल भास । से सुनि कोकिल मने उठ हास ॥४॥
ए रे मानिनि पलटि निहार । अरुन पिबए लागल अन्धकार ॥६॥
मानिनि मान महघ धन तोर । चोरावए अएलाहु अनुचित मोर ॥८॥
तें अपराधे मार पँचवान । धनि धर हरिकिए राख परान ॥१०॥

—.o.—

माधव।

३६४

मानिनि मान आवहू कर ओड़। रअनि बहलि हे रहलि अछ थोड़ ॥२॥
गुनमति भए गुन न धरिअ गोए। सुपुरुस दाने अधिक फल होए ॥४॥
बेरा एक हेरह मन ताप। पेम लता तोड़ले बड़ पाप ॥६॥
लोचन भमर हमरे कह आस। तुअ मुख पङ्कज करओ विलास ॥८॥
भनइ विद्यापति मने गुनि भान। सिवसिंह राए रसिक रस जान ॥१०॥

—'०'—

माधव।

३६५

मानिनि कुसुमे रचलि सेजा मान महथ तेज जीवन जउवन धने।
आजुकि रअनि जदि विफले जाइति पुनु कालि भेले के जान जिवने ॥२॥
मानिनि मन्द पवन बह न दीप थिर रह नखतर मलिन गगन भरे।
तोर वदन देखि भान उपजु मोहि केसु फुल उपर भमरे ॥४॥

—.०'—

माधव।

३६६

मानिनि अरुन पूरब दिसा बहलि सगरि निसा
गगन मगन भेल चन्दा।
मुदि गेलि कुमुदिनि तइअयो तोहर धनि
मूदल मुख अरविन्दा ॥२॥

चान्द वदन कुवलय दुहु लोचन
अधर मधुर निरमाने।
सगर सरीर कुसुमे तुय सिरिजल
किए दहु हृदय पखाने ॥४॥
असकति करह ककन नहि परिहह
हार हृदय भेल भारे।
गिरि सम गरुअ मान नहि मुञ्चसि
अपुरुव तुअ वेवहारे ॥६॥
अवगुन परिहरि हेरह हरखि धनि
मानक अवधि विहाने।
राजा सिवसिंह रूपनराएन
कवि विद्यापति भाने ॥८॥

माधव।

३६७

आज परसन मुख न देखए तोरा। चिन्ताञे सहज विकल मन मोरा ॥२॥
आएल नयन हटिए कों लेसी। पछिलाहु जके हसि उतरो न देसी ॥४॥
ए वर कामिनि जामिनि गेली। अरथिते आरति चौगुन भेली ॥६॥
चन्दा पछिम गेल परगासा। अरुन अलङ्कृत पुरन्दर आसा ॥८॥
मानिनि मान कओन एहु वेरी। तिला एक आड़हु डीठि हल हेरी ॥१०॥
सयनक सीम तेजि दूर जासी। एकहु सेज भेलाहु परवासी ॥१२॥

माधव ।

३६८

मुख तोर पुनिमक चन्दा । अधर मधुरि फुल गल मकरन्दा ॥२॥
अगे धनि सुन्दरि रामा । रभसक अवसर भेलि हे बामा ॥४॥
कोपे न देहे मधुपाने । जीवन जौवन सपन समाने ॥६॥

——:०:——

माधव ।

३६९

पुरुबक प्रेम अइलहुँ तुय हेरि । हमरा अवइत वइसलि मुख फेरि ॥२॥
पहिल वचन उतरो नहि देलि । नयन कटाक्ष सँओ जीव हरि लेलि ॥४॥
तोंह शशिमुखि धनि न करिय मान । हमहुँ भमर अति विकल परान ॥६॥
आसा दए पुन न करिय निराश । होउ परसन मोर पूरह आश ॥८॥
भनइ विद्यापति सुनु परमान । दुहु मन उपजल बिरहक वान ॥१०॥

——:०:——

कवि ।

३७०

कत कत अनुनय करु वर नाह । ओ धनि मानिनि पलटि न चाह ॥२॥
वहुविध वानि विलपय कान । सुनइते शत गुन वाढ़य मान ॥४॥
गदगद नागर हेरि भेल भीत । वचन न निकसय चमकित चीत ॥६॥
परशइते चरन साहस न होय । कर जोढ़ि ठाढ़ि वदन पुनु जोय ॥८॥
विद्यापति कह सुन वर कान । कि करबि तुहुँ अब दुर्जय मान ॥१०॥

——०——

माधव ।

३७१

अरे अरे भमरा तोञे हित हमरा बॅउसि आनह गजगामिनि रे ।
आजु कि रूसलि कालि जञो बॅउसबि तीति होइति मधु जामिनि रे ॥२॥
तीति रजनिऑ तिनि जुगे जनिऑ दिठिहुक ओत· देसॉतर रे ।
सरोबर सोसे कमल असिलाएल नगर उजलि भेल पॉतर रे ॥४॥
एकसर मनमथ दुइ जिव मारए अपन अपन भिन वेदन रे ।
दुइ मन मेलि कमने वेकताओब दारुन प्रथम निवेदन रे ॥६॥
मानक भञ्जन जसु गुन रञ्जन विद्यापति कवि गाओल रे ।
लखिमा देबिपति सिवसिंह नरपति पुरुब जनम तपे पाओल रे ॥८॥

—— ० ——

कवि ।

३७२

अवनत बयनी धरनि नखे लेखि । जे कह श्याम नाम ताहि नहि पेखि ॥२॥
अरुन बसन परि बिगलित केश । अभरन तेजल झॉपल बेश ॥४॥
नीरस अरुन कमल वर वयनि । नयन नीरे बहि जाओत धरनि ॥६॥
ऐसन समय आओल बनदेवि । कहय चलह धनि भानुक सेवि ॥८॥
अवनत बयनी उतर नहि देल । विद्यापति कह से चलि गेल ॥१०॥

—— ० ——

सखी ।

३७३

कतए अरुन उदयाचल उगल कतए पछिम गेल चन्दा ।
कतय भमर कोलाहलें जागल सुखे सुतथु अरविन्दा ॥२॥

दूती ।

३७७

माधव इ नहि उचित विचारे ।
जनिक एहन धनि कामकला सनि से किय करु व्यभिचारे ॥२॥
प्रानहु ताहि अधिक कए मानव हृदयक हार समाने ।
कोन परिजुगुति आन के ताकब की थिक हुनक गेयाने ॥४॥
कृपिन पुरुष के केओ नहि निक कह जग भरि कर उपहासे ।
निज धन अछइत नहि उपभोगव केवल पराहिक आसे ॥६॥
भनइ विद्यापति सुनु मथुरापति इ थिक अनुचित काजे ।
मागि लायब वित से यदि हो नित अपन करव कोन काजे ॥८॥

—— ० ——

माधव ।

३७८

मदन कुञ्ज पर बैसल नागर बृन्दा सखि मुख चाहि ।
जोड़ि युगल कर विनति करत कत तोरित मिलायब राहि ॥२॥
हम पर रोखि बिमुख भइ सुन्दरि जबहु चललि निज गेहा ।
मदन हुताशने मझु मन जारल जीवने न बान्धइ थेहा ॥४॥
तुहु अति चतुर शिरोमनि नागरि तोहे शिखाओब बानि ।
तुहु विनु हमर मरम नहि जानत कइसे मिलायब आनि ॥६॥
चन्दन चाँद पवन भेल रिपु सम वृन्दावन वन भेल ।
मयुर कोकिल कत झङ्कार देत मझु मने मनमथ शेल ॥८॥

छल चल नयान बयान भरि रोयत चरण पकड़ि गड़ि जाव ।
हा हा से धनि हमे न हेरब सिह भूपति रस गात्र ॥१०॥

—०—

दूती ।

३७६

विरह बेयाकुल बकुल तरुतले पेखल नन्दकुमार रे ।
नील नीरज नयन सञो सखि ढरइ नीर अपार रे ॥२॥
पेखि मलयज पङ्क मृगमद तामरस घन सार रे ।
निज पानि पल्लव मुदि लोचन धरनि पड़ु असम्भार रे ॥४॥
वहइ मन्द सुगन्धि शीतल मन्द मलय समीर रे ।
जनि प्रलय कालक प्रबल पावक दहइ दून शरीर रे ॥६॥
अधिक वेपथु टुटि पड़ु खिति मसृन मुकुता माल रे ।
अनिल तरल तमाल तरुवर मुञ्च सुमनस जाल रे ॥८॥
मान मनि तेजि सुदति चलु जँहि राय रसिक सुजान रे ।
सुखद श्रुति अति सरस दण्डक सुकबि भनथि कण्ठहार रे ॥१०॥

—०—

दूती ।

३८०

सुन सुन गुनमति राइ । तो विनु आकुल कन्हाइ ॥२॥
किसलय शयन उपेखि । भूमि उपरे नख लेखि ॥४॥
तेज धनि असमय मान । कान्हुक तुहु से निदान ॥६॥

तुय मुख हृदि अवगाइ । बिलपय अवधि न पाइ ॥८॥
जे जग जीवन जान । तकर जलत परान ॥१०॥
भूपति कि कहब तोय । तोहे से पुरुख बध होय ॥१२॥

—.०.—

दूती ।

३८१

तोहर बिरह वेदन बाउर सुन्दर माधव मोर ।
खने अचेतन खने सचेतन खने नाम धरु तोर ॥२॥
रामा हे तो बड़ कठिन देह ।
गुन अपगुन न बुझि तेजलि जगत दुलह नेह ॥४॥
तोहर कहिनी कहइते जागय शुतइ देखय तोय ।
ए घर बाहिर धैरज नहि धर पथ निरखि रोय ॥६॥
कत परबोधि न माने रहसि न कर भोजन पान ।
काठ मुरति ऐसन अछय कबि बिद्यापति भान ॥८॥

— ० —

दूती ।

३८२

नयनक नीर निझर झरय चान्द निरखय ताव ।
तोहर वदन सुमरि तैखन मुरछि पड़ि जाव ॥२॥
रामा हे तेजह कठिन मान ।
पुरुख बिरह दुःसह दारुन इ बेरि राख परान ॥४॥

कुसुम लता धरि आलिङ्गय तुय कलेवर भाने ।
परसे विरस भइ गेल माधव मुरछि मदन बाने ॥६॥
सिरिस कुसुम सेज विछावए काम सरे अगेयान ।
गरल अधिक चन्दन लेपन तेजइते चाह परान ॥८॥

—०—

दूती ।

३८३

छोड़ल अभरन मुरली विलास । पदतले लुटय से पतवास ॥ २ ॥
जाक दरश बिनु झरय नयान । अब नहि हेरसि तकर वयान ॥ ४ ॥
सुन्दरि तेजह दारुन मान । साधय चरने रसिक बर कान ॥ ६ ॥
भागे नीमलय इह साम रसवन्त । भागे मिलय इह समय बसन्त ॥ ८ ॥
भागे मिलय इह प्रेम सङ्घाति । भागे मिलय इह सुखमय राति ॥१०॥
आजु यदि मानिनि तेजवि कन्त । जनम गमाओवि रोइ एकन्त ॥१२॥
विद्यापति कह प्रेमक रीत । जाचित तेजि न होय उचीत ॥१४॥

—०—

दूती ।

३८४

उमगल जग भम काहु न कुसुम रम परिमल कर परिहार ।
जकरि जतए रीति ते बिनु नही थिति नेह न विषम विचार ॥२॥
मालति तोहि बिनु भमर सदन्द ।
बहुत कुसुम वन सबही विरत मन
कतहु न पिव मकरन्द ॥४॥

विमल कमल मधु सुधा सरिस विधु नेह न मधुप विचार ।
हृदय सरिस जन न देखिय जति खन
तति खन सगर अँधार ॥६॥

——:०.——

दूती ।

३८५

रामा हे की आव बोलसि आन ।
तोहर चरने शरन से हरि अबहुँ न मिटे मान ॥२॥
गोवर्द्धन गिरि वाम करे धरि
जे कयल गोकुल पार ।
विरहे से खीन करक कङ्कन
मानय गरुय भार ॥४॥
कालि दमन करल जे जन
चरन युगल वरे ।
अब से भुजङ्ग भरमे भुलल
हृदये न धर हारे ॥६॥
सहजे चातक न छाड़य बरत
न वइसे नदि तीरे ।
नव जलधर वरिखन बिनु न पिये
ताहेरि नीरे ॥८॥
यदि दैव वशे अधिक पियास
पिवय हेरय थोर ।

तबहुँ तोहर नाम सुमरि
गलय शत गुन लोर ॥१०॥

—— ० ——

सखी ।

३८६

जावे सरस पिया बोलए हसी ।
तावे से वालभु तोञे पेअसी ॥२॥
जञो पए बोलए बोल निठुर ।
तञो पुनु सकल पेम जा दूर ॥४॥
ए सखि अपुरुब रीति ।
कँहाहु न देखिअ अइसनि पिरीति ॥६॥
जे पिआ मानए दोसरि परान ।
तकराहु बचन अइसन अभिमान ॥८॥
तैसन सिनेह जे थिर उपताप ।
के नहि बस हो मधुर अलाप ॥१०॥
हठे परिहर निअ दोसहि जानि ।
हसि न बोलह मधुरिम दुइ वानि ॥१२॥
सुरत निठुर मिलि भजसि न नाह ।
का लागि बढ़ावसि पिसुन उछाह ॥१४॥

—— ० ——

दूती ।

३८७

गगन मडल उग कलानिधि कते नेवारवि दीठि ।
जखने जे रह तँहि गमाइअ जे वहत दीअ पीठि ॥२॥
साजनि बड़ वथु उपकार ।
जाहेरि बचने परहित हो ताहेरि जिबन सार ॥४॥
साधु जन कॉ परहित लागि न गुन धन परान ।
राहु पियासल चान्द गरासए न हो खीन मलान ॥६॥
न थिर जिवन न थिर जउवन न थिर एहे सँसार ।
गेल अवसर पुनु न पाइअ किरिति अमर सार ॥८॥
कतए राघव राए घरिनी कतए लङ्कापुर बास ।
कते हनुमते साअर लॉघल किछु न गुनु तरास ॥१०॥
जखने जकर वाङ्क विधाता सब कला अनुमान ।
अधिक आपद धैरज करब कवि विद्यापति भान ॥१२॥

—— o ——

सखी ।

३८८

चॉद सुधा सम वचन विलास । भल जन ततहि जाएत विसबास ॥ २ ॥
मन्दा मन्द बोलए सबे कोय । पिवइते नीम बॉक मुह होय ॥ ४ ॥
ए सखि सुमुखि वचन सुन सार । से कि होइति भलि जे मुह खार ॥ ६ ॥
जे जत जैसन हृदय धर गोए । तकर तैसन तत गौरव होए ॥ ८ ॥
गौरव ए सखि धैरज साध । पहु नहि धरए सतओ अपराध ॥१०॥

जौं अछ हृदया मिलत समाज । अवसओ रहब ऑउधि भइ लाज ॥१२॥
काच घटी अनुगत जन जेम । नागर लखत हृदय गत पेम ॥१४॥
मधुर वचन हे सबहु तह सार । विद्यापति भन कवि कण्ठहार ॥१६॥

सखी ।

३८६

दुरजन दुरनए परिनति मन्द । ता लागि अवस करिअ नहि दन्द ॥ २ ॥
हठे जओ करबह सिनेहक ओल । फूटल फटिक वलअ के जोल ॥ ४ ॥
साजनि अपनें मन अवधार । नख छेदन के लाव कुठार ॥ ६ ॥
जतने रतन पए राखब गोए । तें परि जें परबस नहि होए ॥ ८ ॥
परगट करब न सुपहुक दोस । राखब अनुनअ अपन भरोस ॥१०॥
भनइ विद्यापति परिहर धन्ध । अनुखन नहि रह सुपहु अनुबन्ध ॥१२॥

राधा ।

३६०

अति नागर बोलि सिनेह वढाओल अवसर बुझलि बड़ाइ ।
तेलि बडद यान भल देखिअ पालॅव नहि उजिआइ ॥२॥
दूती बुझल तोहर बेवहार ।
नगर सगर भमि जोहल नागर भेटल निछछ गमार ॥४॥
गुञ्ज आनि मुकुता तोहे गॉथल कएलह मन्दि परिपाटी ।
कञ्चन चाहि अधिक कए कएलह काचहु तह भेल घाटी ॥६॥

सब गुन आगर सब तहु सूनल तें हमे लाओल नेहे ।
फल कारने तरु अवलम्बल छाहेरि भेल सन्देहे ॥८॥

—०—

राधा ।

३६१

हृदय कुसुम सम मधुरिम बानी । निअर अएलाहु तुअ सुपुरुष जानी ॥२॥
अबे कके जतन करह इथि लागी । कओन मुगुधि आलिङ्गति आगी ॥४॥
चल चल दूती की बोलब लाजे । पुनु पुनु जनु आवह अइसन काजे ॥६॥
नयन तरङ्गे अनङ्ग जगाई । अबला मारन जान उपाई ॥८॥
दिढ़ आसा दए मन बिघटावे । गेले अचिरहि लाघव पावे ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुनह सयानी । नागर लाघव न करिअ जानी ॥१२॥

—०—

राधा ।

३६२

हरि परसङ्ग न कर मझु आगे । हम नहि नायरि भया माधव लागे ॥ २ ॥
जकर मरमे वैसय बरनारी । ता सञे पिरिति दिवस दुइ चारि ॥ ४ ॥
पहिलहि न बुझल एत सब बोल । रूप निहारि पड़ि गेल भोल ॥ ६ ॥
आन भावइते विहि आन फल देल । हार भरमे भुजङ्गम भेल ॥ ८ ॥
ए सखि ए सखि जब रहूँ जीव । हरि दिगे चाहि पानि नहि पीब ॥१०॥
हम जञो जानितञो कानुक रीत । तब किय ता सञो बॉधय चीत ॥१२॥
हरिनी जानय भल कुटुम्ब विबाध । तबहुँ व्याधक गीत सुनइत करु साध ॥१४॥
भनइ विद्यापति सुन बरनारि । पानि पिये किय जाति विचारि ॥१६॥

—०—

राधा ।

३६३

सखि हे बूझल काह्न गोआरे ।
पितड़क टार काज दहु कओन लह ऊपर चक मक सारे ॥२॥
हम तौं कएल मन गेलहि होयत भल हम छल सुपुरुख भाने ।
तोहरे वचन सखि कएल आँखि देखि अमिय भरमे विष पाने ॥४॥
पसुक सङ्ग हुनि जनम गमाओल से कि बुझथि रति रङ्गे ।
मधु यामिनी मोरि आजे निफले गेलि गोप गमारक सङ्गे ॥६॥
तोहरे वचने कूप धस जोरल तें हमे गेलिहु अवाटे ।
चन्दन भरमे सिमर आलिङ्गल सालि रहल हिय काँटे ॥८॥
भनइ विद्यापति हरि बहुवल्लभ कएल बहुत अपमाने ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन लखिमापति रस जाने ॥

—— o ——

राधा ।

३६४

से वर सठगुण गुरुगण गुरुतर अछु गुन जलनिधि सार ।
हम अवला जाति ताहि दुखमति कइसे पाइअ पार ॥२॥
सजनि अरु कत कर परलाप ।
से मझु जइसन करलहि अपमान से बड हृदयक ताप ॥४॥
जे वरनारि सार करि लेल से पद सेवउ आनन्दे ।
तकर लागि जागि दिन रोअउ पीवउ से मकरन्दे ॥६॥

ताहि लागि अन पानि सब तेजउ जप करु तकर नाम ।
चम्पति पति कह सेहे जुवति वर गावउ तसु गुन गाम ॥८॥

—— ० ——

राधा ।

३६५

मधु सम वचन कुलिस सम मानस प्रथमहि जानि न भेला ।
अपन चतुरपन पिसुन हाथ देल गरुअ गरब दुर गेला ॥२॥
सखि हे मन्द पेम परिनामा ।
बड़ कए जीवन कएल पराधिन नहि उपचर एक ठामा ॥४॥
झापल कूप देखहि नहि पारल आरति चललहु धाइ ।
तखनुक लघु गुरु किछु नहि गुनले आवे पचतावके जाइ ॥६॥
एत दिन अछलाहु आन भाने हमे आवे बूझल अवगाहि ।
अपन मुर अपने हमे चाँछल दोख देव गए काहि ॥८॥
भनइ विद्यापति सुन वर जउवति चिते नहि गनव आने ।
पेमक कारन जिउ उपेखिय जग जन के नहि जाने ॥१०॥

——.०.——

राधा ।

३६६

पहिलहि चान्द कला देल आनि । झापल शैल शिखर एक पानि ॥२॥
अब विपरित भेल से सब काल । वासि कुसुम किए गाँथय माल ॥४॥
न बोलह सजनि न बोलह आन । की फल अछय भेटव कान ॥६॥
अन्तर वाहिर सम नह रीति । पानि तेल नह निविड़ पिरीति ॥८॥

हिय सम कुलिस वचन मधुधार । त्रिप घट उपर दुध उपहार ॥१०॥
चातुरि वेचह गाहक ठाम । गोपत पेम सुख इह परिनाम ॥११॥
तुहु कि न जानसि कि बोलब तोय । विद्यापति कह समुचित होय ॥१४॥

—o—

राधा ।

३६७

प्रेमक गुण कहइ सब कोइ । जे प्रेमे कुलवति कुलटा होइ ॥२॥
हम यदि जानिए पिरीति दुरन्त । तब किये पाश्रोब पापक अन्त ॥३॥
अब सब विष सम लागय मोइ । हरि हरि पिरीति करय जनु कोइ ॥६॥
विद्यापति कह सुन वरनारि । पानि पिये पाछे जाति विचारि ॥८॥

—o—

दूती ।

३६८

दूतिक वचन न सुनल राही । अपन मनहि विचारल ताही ॥२॥
कान्हुक तृन केश धरु तसु आगे । तबहुँ सुधा मुखि नहि अनुरागे ॥४॥
कत कत विनति कय कह वानी । मानिनि चरने पसारल पानी ॥६॥
सुन्दरि दूर कर असमय मान । इह सुख समय मिलल वर कान ॥८॥
तेजि नागर ओ सुख पुञ्जे । तुय लागि लुठइ केलि निकुञ्जे ॥१०॥
खेम अपराध चलह सोइ ठाम । इह सुख जानि समय अनुपाम ॥१२॥

—o—

दूती।

३६६

सुन माधव राधा सोयाधिनि भेल।
यतनहि कत परकार बुझाओल तइओ समति नहि देल ॥२॥
तोहर नाम सुनय जब सुन्दरि श्रवण मुदइ दुइ पानि।
तोहर पिरिति जे नव नव मानय से पुछय अब न बानि ॥४॥
तोहर केश कुसुम तृण ताम्बुल धयलहु राहिक आगे।
कोपे कमलमुखि पलटि न हेरल बैसलि विमुख बिरागे ॥६॥
एहन बुझि कुलिश सार तसु अन्तर कैसे मिटायब मान।
विद्यापति कह वचन अब समुचित आपे सिधारह कान ॥८॥

—:o:—

दूती।

४००

गेलाँहु पुरुब पेमे उतरो न देइ। दाहिन वचन वाम कइ लेइ ॥ २ ॥
ए हरि रस दय रुसलि रमनी। हम तह न आउति कुञ्जरगमनी ॥ ४ ॥
गइये मनावह रहओ समाजे। सब तह बड़ थिक आँखिक लाजे ॥ ६ ॥
जे किछु कहलक से अछि लेले। भल कय बूझब अपनहि गेले ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति नारी सोभावे। रुसलि रमनि पुनु पुनमत पावे ॥१०॥

—:o—

दूती।

४०१

माधव दुर्जय मानिनि मानि।
विपरित चरित पेखि चकित भेल न पुछल आध बानि ॥२॥

तुय रुप साम आखर नहि सुनत तुय रुप रिपु सम मानि ।
तुय जन सञो सम्भास न करइ कइसे मिलायब आनि ॥४॥
निल वसन वर कॉचक चूरि कर पौतिक माल उतारि ।
करिरद चुरि कर मोति माल वर पहिरन अरुनिम सारि ॥६॥
असित चित्र उर पर छल मेटल मलयज देइ लगाई ।
मृगमद तिलक धोइ दृगजल कच मुख सञो लए छपाई ॥८॥
एक तिल छल चारु चिबुक पर निन्दि मधुप सुत सामा ।
तृण अग्रे करि मलयज रञ्जल ताहि छपाओल रामा ॥१०॥
जलधर देखि चन्द्रातप झाँपल सामरि सखि नहि पास ।
तमाल तरुगन चुने लेपल शिखि पिक दूरे निवास ॥१२॥
मधुकर डरे धनि चम्पक तरुतल लोचन जल भरि पूर ।
सामर चिकुर हेरि मुकुर पटकल टुटि भै गेल सत चूर ॥१४॥
तुय गुनगाम कह एक सुक पण्डित सुनिताहि उठत रोसाइ ।
पिञ्जर झटकि फटीक पर पटकत धाए धयल तहि जाइ ॥१६॥
मेरु सम मान कोप सुमेरु सम देखि भेल रेनु समान ।
कवि चम्पति कह राहि मनाइते आप सिधारह कान ॥१८॥

—— o ——

दूती ।

४०२

नहि किछु पुछलि रहलि धनि वइसि नइ सेओ आइलि बाहरे ।
परम विरहि भए नहि नहि नहि कए गेलि दुर कए मोर करे ॥२॥
माधव कह कके रुसलि रमनी ।
कते जतने पेमसि परियोधलि न भेलि निमेरओ आनी ॥४॥

गोर कलेवर तसु मुख ससधर रोसे अनरुचि भेला।
रुप दरसन छ्ले जनि नव रतोपले कामे कनक वलि देला ॥६॥
नयन नीर धारे जनि टुटल हारे कुच गिरि पहरि परला।
कनक कलस करु मदने अमिअ तरु अधिक कि उभरि पलला॥

——:०:——

दूती।

४०३

गगनक चाँद हात धरि देल कत समुझायल नीत।
जत किछु कहल सबहु ऐसन भेल चित पुतरि सम रीत ॥२॥
माधव वोध न मानय राहि।
बुझइते अबुझ अबुझ मानिय कतए बुझाओब ताहि ॥४॥
तोहर मधुर गुन कत पय अलापल सबहु कठिन कय मान।
जैसन तुहिन बरिखे रजनिकर कमलिनि न सह परान ॥६॥

—— ० ——

माधव।

४०४

सजनि न वुझिय इ मझु भाग। आकुल चित मझु ताहि सजाग ॥२॥
वचनहु निज कइ न बोलय राहि। मोय जीवन विनु न बोलहि ताहि ॥४॥
मझु परसङ्ग से न दय कान। सेह विनु मझु मुख न फुरय आन ॥६॥
समधान चाहि न होय समधान। ते अतिरेक हानय पचवान ॥८॥
कह कविशेखर मन कर थीर। सहजहि नायरि भाव गभीर ॥१०॥

—— ० ——

दूती ।

४०५

जमुना तीर युवति केलि कर उठि उगल सानन्दा ।
चिकुर सेमार हार अरुझायल जूथे जूथे उग चन्दा ॥२॥
मानिनि अपुरुब तुअ निरमाने ।
पँचिवाने जानि सेना साजलि अइसन उपजु मोहि भाने ॥४॥
आनि पुनिम ससि कनक थोए कसि सिरिजल तुअ मुख सारा ।
जे सबे उबरल काटि नड़ाओल से सबे उपजल तारा ॥६॥
उबरल कनक औटि बटुराओल सिरिजल दुइ आरम्भा ।
सीतल छाह छैल छुइ छाड़ल छाडि गेल सबे दम्भा ॥८॥

—·०·—

दूती ।

४०६

सजल नलिनिदल सेज ओछाइअ परसे जा असिलाए ।
चन्दने नहि हित चान्द विपरित करब कओन उपाए ॥२॥
साजनि सुदृढ़ कइए जान ।
तोहि विनु दिने दिने तनु खिन विरहे विमुख कान्ह ॥४॥
कारनि वैदे निरसि तेजलि आन नहि उपचार ।
एहि वेआधि औषध तोहर अधर अमिय धार ॥६॥

—·०:—

दूती ।

४०७

सुन सुन गुनवति राधे । माधव बधि कि साधवि साधे ॥२॥
चाँद दिनहि दिन हीना । से पुन पलटि खने खने खीना ॥४॥
अङ्गुरी बलया पुन फेरी । भाङ्गि गढ़ायब बुझि कत बेरी ॥६॥
तोहर चरित नहि जानी । विद्यापति पुन शिरे कर हानी ॥८॥

—०—

दूती ।

४०८

नारङ्गि छोलङ्गि कोरि कि बेली । कामे पसाहलि आचर फेली ॥ २ ॥
आवे भेलि ताल फल तूले । कँहा लए जाइति अलप मूले ॥ ४ ॥
से कान्ह से हमे से धनि राधा । पुरुव पेम न करिअ बाधा ॥ ६ ॥
जातकि केतकि सरसि माला । तुअ गुन गहि गाथए हारा ॥ ८ ॥
सरस निरस तोह के बुझ आने । कहा लए चलति भेलि विमाने ॥१०॥
सरस कवि विद्यापति गावे । नागर नेह पुनमति पावे ॥१२॥

—:०—

सखी ।

४०९

एके तुहु नागरि सब गुने आगरि वइसासि चतुरि समाज ।
अपन बात आपु नहि समुझसि हठे नट कएल सब काज ॥२॥

सुन्दरि नाह किय करसि रोस ।
नियर आनि वात दुइ पुछह जानह गुन किय दोस ॥४॥
अपराध जानि गारि दस देवइ पिरित भाङ्गल कॉ लागि ।
पिरिति मँगइते जे उपदेसल तकर मुखे दिय आगि ॥६॥

—.o.—

सखी ।

४१०

कोकिल कुल कलरव काहल बाहर राव ।
मञ्जरि कुल मधुकर गुजरए से जनि गुजर गाव ॥२॥
मने मलान परान दिगन्तर एहु कीए न लाज ।
विरहिनि जन मरन कारन वेकत भउ विधुराज ॥४॥
सुन्दरि अवहु तेजिअ रोस ।
तु वर कामिनि इ मधु जामिनि अपद न दिअ दोस ॥६॥
कमल चाहि कलेवर कोमल वेदन सहए न पार ।
चान्दन चन्द कुन्द तनु तावए भाव न मोतिम हार ॥८॥
सिरिसि कुसुम सेज ओछाओल तइओ न आवए निन्द ।
आकुल चिकुर चीर न समर सुमर देव गोविन्द ॥१०॥

—o.—

दूती ।

४११

मधुर मधुर पिक रव तरु तरु सव
करु करु लतिका सङ्ग ।

ऐमन सोहाओन सुरति समय बन
पुनमति रच रतिरङ्ग ॥२॥
दखिन पवन वह सितल सबहु तह
मलयज रज लए आव ।
कओन जुवति मन मनसिज नहि हन
सबे कर वस परथाव ॥४॥
हरि हरि कोने परि रह हृदय धरि
हरि परिहरि एहि राति ।
देखि सुपहु नति रतिरङ्ग न करति
कोन कलावति जाति ॥६॥
विद्यापति कह सुन्दर सब तह
कर परसन मन आज ।
गुन गुनि सुवदनि मिलह रसिक मनि
पुन वले सुपहु समाज ॥८॥

सखी ।

४१२

मानिनि आव उचित नहि मान ।
एखनुक रङ्ग एहन सन लगइछ जागल पए पचवान ॥२॥
जुड़ि रयनि चकमक कर चाँदनी एहन समय नहि आन ।
एहि अवसर पिय मिलन जेहन सुख जकराहि हो से जान ॥४॥
रभसि रभसि अलि विलसि विलसि करि जे कर अधर मधु पान ।
अपन अपन पहु सबहु जेमाओल भुखल तुय यजमान ॥६॥

त्रिवलि तरङ्ग सितासित सङ्गम उरज शम्भु निरयान ।
आरति पति मगइछि परतिग्रह करु धनि सरबस दान ॥८॥
दीप दीपक देखि थिर न रहय मन दृढ़ करु अपन गेयान ।
सञ्चित मदन वेदन अति दारुन विद्यापति कवि भान ॥१०॥

—'०'—

दूती ।

४१३

विमल कमलमुखि न करिय माने । पाओल वदन तुय चाँद समाने ॥ १ ॥
कामे कपट कनकाचल आनी । हृदय वइसाओल दुइ करे जानी ॥ ४ ॥
तें पातके तोहि माझहि खीनी । लघु गति हंसहु तह अति हीनी ॥ ६ ॥
ऐं धने सुखित होयत युवराजे । वसने झपावह की तोर काजे ॥ ८ ॥
हसि परिरम्भि अधर मधु दाने । कखने फुजलि निवि केओ नहि जाने ॥१०॥
भनइ विद्यापति रसिक सुजाने । रुकुमिनि देवि पति सुन्दर कान्हे ॥१२॥

— ० —

सखी ।

४१४

की कुच अञ्चले राखह गोए । उपाचित कतए तिरोहित होए ॥२॥
उपजलि प्रीति हठहि दुर गेलि । नयनक काजरे मुख मसि भेलि ॥४॥
तें अवसादे अवस भेल देह । खत खरिआ सन भेल सिनेह ॥६॥
जञो वाजलि तञो ससअ गेलि । आनि नवओ निधि जनि देलि ॥८॥
भनइ विद्यापति एहु रस जान । राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमान॥१०॥

— ० —

ऐमन सोहाओन सुरति समय वन
पुनमति रच रतिरङ्ग ॥२॥
दखिन पवन वह सितल सवहु तह
मलयज रज लए आव ।
कओन जुवति मन मनसिज नहि हन
सबे कर बस परथाव ॥४॥
हरि हरि कोने परि रह हृदय धरि
हरि परिहरि एहि राति ।
दोखि सुपहु नति रतिरङ्ग न करति
कोन कलावति जाति ॥६॥
विद्यापति कह सुन्दर सब तह
कर परसन मन आज ।
गुन गुनि सुवदनि मिलह रसिक मनि
पुन वले सुपहु समाज ॥८॥

——:o:——

सखी ।

४१२

मानिनि आव उचित नहि मान ।
एखनुक रङ्ग एहन सन लगइछ जागल पए पचवान ॥२॥
जुड़ि रयनि चकमक कर चाँदनी एहन समय नहि आन ।
एहि अवसर पिय मिलन जेहन सुख जकराहि हो से जान ॥४॥
रभसि रभसि अलि विलसि विलसि करि जे कर अधर मधु पान ।
अपन अपन पहु सवहु जेमाओल भुखल तुय यजमान ॥६॥

त्रिवलि तरङ्ग सितासित सङ्गम उरज शम्भु निरयान ।
आरति पति मगइछि परतिग्रह करु धनि सरबस दान ॥८॥
दीप दीपक देखि थिर न रहय मन दृढ़ करु अपन गेयान ।
सञ्चित मदन वेदन अति दारुन विद्यापति कवि भान ॥१०॥

—:o:—

दूती ।

४१३

विमल कमलमुखि न करिय माने । पाओल वदन तुय चाँद समाने ॥ २ ॥
कामे कपट कनकाचल आनी । हृदय वइसाओल दुइ करे जानी ॥ ४ ॥
तेँ पातके तोहि माझहि खीनी । लघु गति हंसहु तह अति हीनी ॥ ६ ॥
एँ धने सुखित होयत युवराजे । वसने झपावह की तोर काजे ॥ ८ ॥
हसि परिरम्भि अधर मधु दाने । कखने फुजलि निवि केओ नहि जाने ॥१०॥
भनइ विद्यापति रसिक सुजाने । रुकुमिनि देवि पति सुन्दर कान्हे ॥१२॥

—o—

सखी ।

४१४

की कुच अञ्चले राखह गोए । उपचित कतए तिरोहित होए ॥२॥
उपजलि प्रीति हठहि दुर गेलि । नयनक काजरे मुख मसि भेलि ॥४॥
तेँ अवसादे अवस भेल देह । खत खरिआ सन भेल सिनेह ॥६॥
जञो वाजलि तञो संसअ गेलि । आनि नवओ निधि जनि देलि ॥८॥
भनइ विद्यापति एहु रस जान। राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमान॥१०॥

—o—

सखी।

४१५

मानिनि हम कहिअ तुअ लागि।
नाह निकटे पाइ जे जन वञ्चय तकर वड़हि अभागि ॥२॥
दिनकर बन्धु कमल सब जानय जल तहि जिवन होइ।
पङ्क विहिन तनु भानु सुखायत जलहि पटाओत सोइ ॥३॥
नाह समीपे सुखद जत वैभव अनुकुल होयत जोइ।
तकर विरहे सकल सुख सम्पद खने दगधय सोइ ॥६॥
तुहु धनि गुनमति बुझि करह रिति परिजन ऐसन भास।
सुनइते राहि हृदय भेल गदगद अनुमति कयल परकास ॥८॥

—,०:—

दूती।

४१६

अवयव सवहि नयन पए भास। अहनिसि झाखए पाओव पास ॥२॥
लाजे न कहए हृदय अनुमान। पेम अधिक लघु जानितहु आन ॥४॥
साजनि कि कहव तोर गेयान। पानी पाए सिकर भेल कान्ह ॥६॥
वाहर होइ आनहि काहिअ समाद। होएतओ हे सुमुखि पेम परमाद ॥८॥
जओ तह्निके जीवने तोह काज। गुरुजन परिजन परिहर लाज ॥१०॥
दगड दिवस दिवसहि हो भास। मास पाव गए वरसक पास ॥१२॥
तोहर जुड़ाइ तोहरे मान। गेल वुझाय केओ आन परान ॥१४॥

—०,—

दूती ।

४१७

सौरभ लोभे भमर भमि आएल पुरुब पेम विसवासे ।
बहुत कुसुम मधु पान पिआसल जाएत तुअ उपासे ॥२॥
मालति करिअ हृदय परगासे ।
कत दिन भमरे पराभव पाओव भल नहि अधिक उदासे ॥४॥
कओनक अभिमत के नहि राखए जीवओ दए जग हेरि ।
की करव तें धन अरु जीवने जे नहि विलसए वेरि ॥६॥
सबहि कुसुम मधुपान भमर कर सुकवि विद्यापति भाने ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

—०—

दूती ।

४१८

सिनेह बढ़ाओव इ छल भान । तोहर सोयाधिन करब परान ॥ २ ॥
भल भेल मालति भेलि हे उदास । पुनु न आओव मधुकरे तुअ पास ॥ ४ ॥
एतवा हम अनुतापक भेल । गिरि सम गौरव अपदहि गेल ॥ ६ ॥
अलपे बुझओलह निअ बेवहार । देखितहि निय परिनाम असार ॥ ८ ॥
भनहि विद्यापति मन दए सेव । हासिनि देवि पति गजासिंह देव ॥१०॥

—०—

सखी ।

४१९

मदन कुञ्ज तेजि चललि चतुर दूति पवनक गति सम गेल ।
खिति नखे लिखि देखि मुख झाँपल राहि उतर नहि देल ॥२॥

चतुर दूति तव मनहि बिचारल कहत ललिता सओ बात ।
काहे विमुख भइ बैसालि दूबरि कि भेल आजुक बात ॥४॥
हेरि ललिता सखि मृदु मृदु बोलत हमरि करम मन्द भेल ।
नागर किशोर कुञ्जे निशि बञ्चल चन्द्रावलि सओ केल ॥६॥
हसि हसि नियरे जाइ दूति बैसल कहतहि मधुरिम बानि ।
इह लघु दोखे रोख जब मानसि के कह तोहे सयानि ॥८॥
उठ उठ सुन्दरि मान दूर करि बाहु पसारि करु कोर ।
फटकि हात बात नहि सुनल कोपे भरल तनु जोर ॥१०॥
राहिक निठुर बचन शुनि सहचरि कोपे भरल सब गात ।
भूपतिनाथ कह रोखे तब बोलत जबहि फटकल हात ॥१२॥

—०—

दूती ।

४२०

अखिल लोचन तम ताप विमोचन उदयति आनन्द कन्दे ।
एक नलिनि मुख मलिन करय जनि इथे लागि निन्दह चन्दे ॥२॥
सुन्दरि बुझल तुय प्रतिमाती ।
गुन गन तेजि दोष एक घोषसि अन्ते अहिरिनि जाती ॥४॥
सकल जीव जन जिव समीरन मन्द सुगन्ध सुशीते ।
दीपक जोति परशे यदि नाशय इथे लागि निन्दह मारुते ॥६॥
स्थावर जङ्गम कीट पतङ्गम सुखद जे सकल शरीरे ।
कागद पत्र परशे जओ नाशय इथे लागि निन्दह नीरे ॥८॥

खने खने सकल कुसुम मन तोषय निशि रहुँ कमलिनि सङ्गे ।
चम्पक एक जइओ नहि चुम्बय इथे लागि निन्दह भृङ्गे ॥१०॥
पॉच पञ्च गुन दश गुग चौगुन आठ द्विगुण सखि माझे ।
कवि चम्पति कह कान्हु आकुल तो विनु विषाद न पावसि लाजे॥१२॥

—०—

राधा ।

४२१

तोहर वचन अमिय ऐसन तें मति भुललि मोरि ।
कतए देखल भल मन्द होअ साधु न फावए चोरि ॥२॥
साजनि आवे कि बोलव आओ ।
आगे गुनि जे काज न करए पाछे हो पचताओ ॥४॥
अपनि हानि जे कुलक लाघव किछु न शुनल तवे ।
मने मनमथ बानहि लागल आओव गमाओल हमे ॥६॥
जतने कत न के न वेसाहए गुँजा के दहु कीन ।
परक वचने कुअ धस देअ तैसन के मतिहीन ॥८॥
नागर भमर सबे केओ बोलए मने धनि जानल मोर ।
पढि गुनि हमें सब विसरल दोस नहि किछु तोर ॥१०॥
भने विद्यपति सुन तोञे जुवति हृदय न कर मन्द ।
राजा रूपनरायन नागर जनि उगल नव चन्द ॥१२॥

—०—

राधा ।

४२२

सोलह सहस गोपि मह रानि । पाट महादेवि करवि हे आनि ॥२॥
वोलि पठओलन्हि जत अतिरेक । उचितहु न रहल तन्हिक विवेक ॥४॥
साजनि की कहव कान्ह परोख । वोलि न करिअ वड़ाकाँ दोख ॥६॥
अव नित मति जदि हरलन्हि मोरि । जनला चोरे करव की चोरि ॥८॥
पुरवापरे नागरकाँ वोल । दूती मति पाओल गए ओल ॥१०॥

—— ० ——

राधा ।

४२३

कञ्चन जोति कुसुम परकाश । रतन फलव वोलि बढ़ाओल आश ॥ २ ॥
तकर मुले देल दुधक धार । फले किछु न हेरिय झनझनि सार ॥ ४ ॥
जाति गोयालिनि हम मतिहीन । कुजनक पिरीति मरन अधीन ॥ ६ ॥
हाए हाए विहि मोर एत दुख देल । लाभक लागि मूल डुवि गेल ॥ ८ ॥
कवि विद्यापति इह अनुमान । कुकुरक लाङ्गुल न होय समान ॥१०॥

—— ० ——

राधा ।

४२४

प्रथमक आदरें पुलक भेल जत न गुनल दाहिन वामे ।
मधुर वचन मधु भरमहि पीउल विष सम भेल परिनामे ॥२॥
कतने मनोरथे अछलहु सुन्दरि नागर भमर हमारे ।
जावे पाव रस तावे रहए वस विनु दोसे कर परिहारे ॥४॥

रभसक अवसर की नहि आङ्गिरए कत न करए परबन्धे ।
अवसर बेरि हेरि नहि हेरए फले जानिअ सबे धन्धे ॥६॥

—०—

राधा ।

४२५

चुझहि न पारल कपटक दीस । अमिय भरमे खाएल हम बीस ॥ २ ॥
अबे परतीति करत दहु कोए । सामर नहि सरलासय होए ॥ ४ ॥
ए सखि की परसंसह कान्ह । वचन सुधा सम हृदय पखान ॥ ६ ॥
मोहन जाल मदन सरे भोलि । आरति की न पठओलह्नि बोलि ॥ ८ ॥
बोलहिक भल सखि माधव नाम । बड़ु बोल छड़ परजन्तक ठाम ॥१०॥
अनुभवि दूर कएल अनुबन्ध । भुगुतल कुसुम भमर अनुसन्ध ॥१२॥
भनइ विद्यापति तोहे सखि भोरि । चेतन हाय कहाँ रह चोरि ॥१४॥

—

राधा ।

४२६

चानन भरम सेवलि हम सजनि पूरत सकल मनकाम ।
कन्तक दरश परश भेल सजनि सीमर भेल परिनाम ॥२॥
एकहि नगर बसु माधव सजनि परभाविनि बस भेल ।
हम धनि एहन कलावति सजनि गुन गौरव दूर गेल ॥४॥
अभिनव एक कमल फुल सजनि दौना निमक डार ।
सेहो फुल ओतहि सुखायल सजनि रसमय फुलल नेवार ॥६॥

राधा ।

४३३

कि कहब हे सखि पामर बोल । पाथर भासल तल गेल सोल ॥२॥
छेदि चम्पक चन्दन रसाल । रोपल सिमर जिवन्ति मन्दाल ॥४॥
गुनवति परिहरि कुजुवति सङ्ग । हिरा हिरन तेजि राङ्गहि रङ्ग ॥६॥
पण्डित गुनि जन दुख अपार । अछय परम सुख मूढ़ गमार ॥८॥
गिरिहि निविहित राङ्क परवीन । चोर उजोरल साधु मलीन ॥१०॥
विद्यापति कह विहि अनुबन्ध । सुनइते गुनि जन मन रहु धन्ध ॥१२॥

—०—

राधा ।

४३४

दहो दिस सुन सन अधिक पिआसल भरमैते वुल सभ ठामे ।
भाग विहिन जन आदर नहि लह अनुभव धनि जन ठामे ॥२॥
हे साजनि जनु लेहे भमिकरि नामे ।
विधिहिक दोख सन्तोख उचित थिक जगत विदित परिनामे ॥४॥
आतपें तापित सीतल जानिकहु सेओल मलय गिरि छाहे ।
ऐसन करम मोर सेहओ दूर गेल कएल दवानले दाहे ॥६॥
कते दुखे आज समुद्र तिर पाओल सगरेओ जले भेल छारे ।
एहना अवसर धैरज पए हित सुकवि भनथि कण्ठहारे ॥८॥

—०—

राधा ।

४३५

नागर हो से हेरितहि जान । चौसटि कलाक जाहि गेञान ॥ २ ॥
सरूप निरूपिअ कए अनुबन्ध । काठेओ रस दे नाना बन्ध ॥ ४ ॥
केओ बोल माधव केओ बोल कान्ह । मञे अनुमापल निछछ पखान ॥ ६ ॥
बरसहु दादस तुअ अनुराग । दूती तह तकरा मन जाग ॥ ८ ॥
कतएक हमे धनि कतए गोआला । जल थल कुसुम कैसन होअ माला ॥१०॥
पवन नहि सहए दीपक जोति । छुइले काच मलिन होअ मोति ॥१२॥
ई सबे कहिकहु कहिहह सेवा । अवसर पाए उतर हमे देवा ॥१४॥
परधन लोभ करए सब कोइ । करिअ पेम जञो आइति होइ ॥१६॥
नागरि जनके बहुल विलास । ककेहु वचने राखि गेलि आस ॥१८॥

—०—

राधा ।

४३६

कबहु रसिक सञो दरसन होय जनु दरसने होय जनु नेह ।
नेह विछोह जनु काहुक उपजय विछोह धरय जनु देह ॥२॥
सजनि दूर कर ओ परसङ्ग ।
पहिलहि उपजइत पेमक अङ्कुर दारुन विधि देल भङ्ग ॥४॥
जबहु दैव दोप उपजय पेम रसिक सञे जनु होय ।
कानु से गोपते नेह करि अब एक सबहु शिखाओल मोय ॥६॥
एहन औखध सखि कँहा नहि पाइअ जनि यौवन जरि जाव ।
असमञ्जस रस सहय न पारिय इह कविशेखर गाव ॥८॥

—०—

राधा ।

४३७

होअए जनि जओ पुनु होइ । जुवती भए जनमए जनु कोइ ॥२॥
जुवति जनु हो रसमन्ति । रसओ बुझए जनु हो कुलमन्ति ॥४॥
मागओ विहि एक पए तोहि । थिरता दिहह अवसानहु मोहि ॥६॥
सामि नागर रसधार । परवस जनु होअ हमर पियार ॥८॥
परवस बुझिह विचारि । पाए विचार हार कओन नारि ॥१०॥
विद्यापति अछ परकार । दन्द समुद होएत जीव दय पार ॥१२॥

—॰—

राधा ।

४३८

अपथ सपथ कए कड कत भूमि । खन मोँहँ ताकँ रहन भूमि ॥२॥
मोजे न जएबे माइ दुजन सङ्ग । नहि सुरतानय आसङ्ग ॥४॥
अवलोकव नहि ननिक रूप । आँखि अछइतँ खटँ रसमव कूप ॥६॥
विद्यापति कवि रसमे गाव । मनिक बटासदिन बुझ इ भाव ॥८॥

—॰—

राधा ।

४३९

अपनहि पेम तरुअर बाढ़ल कारन किछु नहि भेला ।
साखा पलव कुसुमे बेआपल सौरभ दह दिस गेला ॥२॥

सखि हे दुरजन दुरनय पाए।
मूर जओ मूड़हि सओ भाँगल अपदहि गेल सुखाए ॥४॥
कुलक धरम पहिलहि अलि आएल कओने देव पलटाए।
चोर जननि निजओ मने मने झाखओ रोओ वदन झपाए ॥६॥
अइसना देह गेह न सोहावए वाहर वम जनि आगि।
विद्यापति कह अपनहि आउति सिरि सिवसिंह लागि ॥८॥

—.o:—

दूती।

४४०

गगन मडल दुहुक भूषन एकसर उग चन्दा।
गए चकोरी अमिय पीवए कुमुदिनि सानन्दा ॥२॥
मालति काँइए करिअ रोस।
एकल भमर वहुत कुसुम कमल ताहेरि दोस ॥४॥
जातकि केतकि नवि पदुमिनि सव सम अनुराग॥
ताहि अवसर तोहि न विसर एहे तोर बड़ भाग ॥६॥
अभिनव रस रभस पओले कओन रह विवेक।
भने विद्यापति परहित कर तैसन हरि पए एक ॥८॥

—.o.—

दूती।

४४१

जलधि सुमेरु दुअओ थिक सार। सब तह गनिय अधिक वेवहार ॥२॥
मालति तोहे जदि अधिक उदास। भमर जाव आवे कमलिनि पास ॥

लाथ करसि कत अवसर पाए। देहरि न होअए हाथे झपाए ॥६॥
कुच युग कञ्चन कलस समान। मुनि जन दरसने उगए गेआन ॥८॥
तओ वरनागरि अपने गून। कओनक देले हो वड़ पून ॥१०॥

——:०:——

सखी।

४४२

पञ्चा सुनिअ भेलि महादेइ कनके नावे वोकान।
गगन परसि रह समीरन सूप भरि के आन ॥२॥
सुन्दरि अवे की देखह देह।
विनु हटवइ अरथ विहुन जैसन हाटक गेह ॥४॥
अपथ पथ परिचय भेले वसि दिन दुइ चारि।
सुरत रस खन एके पाविअ जाव जीव रह गारि ॥६॥

——०——

दूती।

४४३

तिन तुल अरु ता तह भए लहु मानिअ गरवि आहि।
अछइते जे वोल नही अछए से लहु सबहु चाहि ॥२॥
साजनि कइसन तोर गेयान।
जउवन रतन तोर सोआविन कके न करसि दान ॥४॥
जावे से जउवन तोर सोआविन तावे परवस होए।
जउवन गेले विसर भेले पुछि न पुछत कोए ॥६॥

एहि मही आध अथिर जीवन जउवन अलप काल ।
इथी जत जत न विलसिअ से रह हृदय साल ॥८॥
तोर धन धनि तोराहि रहत निधन होएत आन ।
दानक धरम तोराहि होएत कवि विद्यापति भान ॥१०॥

—:o:—

दूती ।

४४४

जहिआ कान्ह देल तोहि आनि । मने पाओल भेल चौगुन वानि ॥२॥
आवे दिने दिने पेम भेल थोल । कए अपराध वोलव कत बोल ॥४॥
आवे तोहि सुन्दरि मने नहि लाज । हाथक काकन अरसी काज ॥६॥
पुरुषक चञ्चल सहज सोभाव । कए मधुपान दहओ दिस धाव ॥८॥
एकहि वेरि तञे दुर कर आस । कूप न आवए पथिकक पास ॥१०॥
गेले मान अधिक होअ सङ्ग । बड़ कए की उपजाओव रङ्ग ॥१२॥

—:o:—

दूती ।

४४५

ए धनि मानिनि कठिन परानि । एतहुँ विपदे तुहुँ न कहसि बानि ॥२॥
ऐसन नह होय प्रेमक रीत । अवके मिलन होय समुचीत ॥४॥
तोहर विरहे यव तेजव परान । तव तुहुँ का सञे साधवि मान ॥६॥
के कह कोमल अन्तर तोय । तुहुँ सम कठिन हृदय नहि होय ॥८॥
अव यदि न मिलह माधव साथ । विद्यापति तव न कहव वात ॥१०॥

—:o—

दूती ।

४४६

दिवस तिल आध राखवि यौवन वहइ दिवस सब जाव ।
भल मन्द दुइ सङ्ग चलि जायव पर उपकार से लाभ ॥२॥
सुन्दरि हरि बधे तुहु भेलि भागि ।
राति दिवस सोइ आन नहि भावय काल विरह तुय लागि ॥४॥
विरह सिन्धु माहा डुबइते आछय तुय कुचकुम्भ नख देइ ।
तुहुँ धनि गुणवति उधार गोकुलपति त्रिभुवन भरि यश लेइ ॥६॥
लाख लाख नागरि जे कानु हेरइ से शुभ दिन कए मान ।
तुय अभिमान लागि सोइ आकुल कवि विद्यापति भान ॥

दूती ।

४४७

कत खन वचन विलासे । सुपुरुख राखिअ आशा पासे ॥ २ ॥
आवे हमे गेलिहु फेदाई । अथिरक आतर मधय लजाई ॥ ४ ॥
वोलि विसरलह रामा । सखि असवौलिहे कत कत ठामा ॥ ६ ॥
पर विपते न रह रङ्गे । कुसुमित कानन मधुकर सङ्गे ॥ ८ ॥
समय खेपासि कति भाँती । वड़ि छोटि भेलि मधुमासक राती ॥१०॥

दूती ।

४४८

कमल भमर जग अछए अनेक । सब तह से बड़ जाहि विवेक ॥२॥
मानिनि तोरित कर अभिसार । अवसर थोड़ेहु बहुत उपकार ॥४॥
मधु नहि देलह रहलि की खागि । से सम्पति जे परहित लागि ॥६॥
अपुजित लए तुलना तुअ देल । जाव जीव अनुतापक भेल ॥८॥
तोञे नहि मन्द मन्द तुअ काज । भलेओ मन्द हो मन्दा समाज ॥१०॥
भनइ विद्यापति दुति कह गोए । निअ क्षति विनु परहित नहि होए ॥१२॥

—:०:—

दूती ।

४४६

थिर नहि उजवन थिर नहि देह । थिर नहि रहए बालभु सञो नेह ॥२॥
थिर जनु जानह इ संसार । एक पए थिर रह पर उपकार ॥४॥
सुन सुन सुन्दरि कएलह मान । की परसंसह तोहर गेआन ॥६॥
कउलति कए हरि आनल गेह । मुर भाँगल सन कएलह सिनेह ॥८॥
आराति आनल विघटित रङ्ग । सुतारिक राव सरिस भेल सङ्ग ॥१०॥
विमुखि चलल हरि बुझि बेवहार । आवे कि गाओत कवि कएठहार ॥२॥

—०—

सखी ।

४५०

घाइते अधर निअल नहि लिसि धरइते मोललए बाँही ।
सुपहु सिनेहे न केलि रति भङ्गलए तोहि सनि पापिनि नाही ॥२॥

मानिनि अवहु पलटि चल पिआका पत्र पल मेटओ सवे अपराध ॥३॥
कइतवे हास गोप तोञे कएलए कर्के कर्के तोरि भेंउह चड़ली ।
पिआ सञो पउरुस कर्के तोञे वोललए जिह तोरि टुटि न पड़ली ॥५॥
सउरस लागि पिअ हिअ अराहिअ वइरस बास न करिआ ।
अछिकहु विपतरु पल्लव मेलव आँकुर भाँगि हलिआ ॥७॥
भनइ विद्यापति सुन सुन गुनमति ओल धरि के कर माने ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमाने ॥९॥

—:o:—

दूती ।

४५१

सुखे न सुतलि कुसुम सयन नयने मुञ्चसि वारि ।
तहाँ की करब पुरुख भूपण जहाँ असहनि नारि ।
राही हठे न तोलिअ नेह ।
कान्ह सरीर दिने दिने दूवर तोराहु जीव सन्देह ।
परक वचन हित न मानसि वुझसि न सुरत तन्त ।
मने तञो जञो मौन करिअ चोरि आनए कन्त ॥६॥
किछु किछु पिअ आसा दिहह अति न करब कोप ।
आधके जतने वचन वोलव सङ्गम करव गोप ॥८॥
नव अनुरागे किछु होएवा रह दिन दुइ चारि ।
प्रथम प्रेम ओल धरि राखए सेहे कलामति नारि ॥१०॥

—:o:—

सखी ।

४५२

कण्टक दोसें केतकि सञो रूसल हठे आएल तुअ पासे ।
भल न कएल तोहे अपद अधिक कोहे भमर के बोलल उदासे ॥२॥
जातकि अनुचिन एक बड़ भेला ।
निअ मधुसार सॉचि तोहें राखल भमर पिआसल गेला ॥४॥
ओहओ भमर मधुसार विवेचक गुरु अभिमानक गेहा ।
गुरु पद छाड़ि पुनु नहि आओत देखवाहु भेल सन्देहा ॥६॥
सेहओ सुचेतन गुनक निकेतन सबहि कुसुम रस लेइ ।
जेहे नागरि बुझ तकर चतुरपन सेहे न परिहरि देइ ॥८॥

—:o:—

दूती ।

४५३

भमइते भमर भरमे जञो भुललाहे आन लता नहि पासे ।
एतवा रोस दोस वस भए रहु दूर कर हृदअ उदासे ॥२॥
जइअओ सरोवर हिमकर निअ करे परसए सबहु समाने ।
कुमुदिनिकॉ ससि ससिकॉ कुमिदिनि जीवन के नाहि जाने ॥४॥
जेहन तोहर मन तन्हिको तइसन कत पतिअउवि हे भाखी ।
जगत विदित थिक सबकॉ सबतहु मनकॉ मन थिक साखी ॥६॥

—:o:—

दूती।

४५४

तुहु मान धएलि अविचारे। अवे कि करब प्रतिकारे ॥ २ ॥
तुहु एड़ाओलि रतने। मान हृदय करि धरलि जतने ॥ ४ ॥
मान गरुअ किय धरलि। कानुक करुना करने नहि सुनलि ॥ ६ ॥
वञ्चित भै पहु चलला। कलियुग पाप सतत तोहे फलला ॥ ८ ॥
न सुनलि महाजन मुखकाँ। जाचत वाघ न खाएत वनकाँ ॥१०॥
मानिनि मान भुजङ्गे। जारल वीख भरल सब अङ्गे ॥१२॥
सुकबि विद्यापति गाओल। पुरुव कृत फल पाओल ॥१४॥

—०—

दूती।

४५५

नु चालि आवसि पुनु चालि जासि। बोलओ चाहसि किछु बोलइते लजासि ॥२॥
ास दइए हरिकहु किए लेसि। अधराओ वचने उतरो न देसि ॥४॥

राधा।

ुन दूती तोञे सरूप कह मोहि। सङ्ग सञो कपट हमर भेल तोहि ॥६॥
ाह्निकरि कथा कहसि काँ लागि। जूड़िहू हृदय पजारसि आगि ॥८॥
ाह्निकर कउसल मोरा पअ दोस। कहलेओ कहिनी वाढ़य रोस ॥१०॥
भनइ विद्यापति एहु रस भान। राए सिवसिंह लखिमा देइ रमान ॥१२॥

—:०:—

सखी ।

४५६

कूपक पानि अधिक होअ काढ़ि । नागर गुने नागरि रति बाढ़ि ॥२॥
कोकिल कानन आनिअ सार । बरसा दादुर करए बिहार ॥४॥
अहनिसि साजनि परिहर रोस । तञे नहि जानसि तोरे दोस ॥६॥
छवओ बारह मासक मेलि । नागर चाहए रङ्गहि केलि ॥८॥
ते परि तकर करओ परिनाम । विरस बोल जनु होए विराम ॥१०॥
मोरे बोले दूर कर रोस । हृदय फुजी कर हरि परितोस ॥१२॥

—:०:—

सखी ।

४५७

जञो डिठिका ओल एहि मति तोरि । पुनु हेरसि किए परि गोरि ॥
अइसना सुमुखि करिअ कके रोस । मञे कि बोलिवो सखि तोरे दोस ॥
एहन अवथ रे इ बेवहार । पर पीड़ाए जीवन थिक छार ॥
भल कए पुछलए घुरि सँसार । तर सूते गढ़ि काट कुम्भार ।
गुन जञो रह गुननिधि सञो सङ्ग । विद्यापति कह इ वड़ रङ्ग ॥

—:०:—

राधा ।

४५८

कि कहव अगे सखि मोर अगेयाने । सगरिओ रयनि गमाओल माने
जखने मोर मन परसन भेला । दारुन अरुन तखने उगि गेल

. जन जागल कि करब केली । तनु झँपइते हमे आकुल भेली ॥६॥
धेक चतुरपने भेलाहूँ अयानी । लाभ के लोभे मूलहु भेल हानी ॥८॥
इ विद्यापति निआमति दोसे । अवसर काल उचित नहि रोसे ॥१०॥

सखी ।

४५६

झाँखि झाँखि न खिन कर तनु । भमर न रह मालति बिनु ॥२॥
ताहि तोहि रिति बाढ़ति पुनु । टुटलि वचन बोलह जनु ॥४॥
एहे राधे धैरज धरु । बालसु अओताह उछाह करु ॥६॥
पिशुन वचने बाढ़त रोस । बारए न पारिअ दिवस दोस ॥८॥
सुजन वचन टुट न नेहा । हाथे न मेट पखानक रेहा ॥१०॥

राधा ।

४६०

चरण नखर मनि रञ्जन छाँद । धरणी लोटायल गोकुल चाँद ॥२॥
ढरकि ढरकि पड़ु लोचन नोर । कत रूपे मिनति कयल पहु मोर ॥४॥
लागल कुदिन कयल हमे मान । अबहु न निकसय कठिन परान ॥६॥
रोख तिमिर एत वैरि किय जान । रतनक भै गेल गैरिक भान ॥८॥
नारि जनमे हम न करल भागि । मरण शरण भेल मानक लागि ॥१०॥
विद्यापति कह सुन धनि राइ । रोयसि काहे कह भल समुझाइ ॥१२॥

राधा।

४६१

जे छल से नहि रहले भाव। बोललि बोल पलटि नहि आव ॥ २ ॥
रोस छड़ाए बढ़ाओल हास। रूसल वओसव बड़ परेआस ॥ ४ ॥
कओने परि से हरि बहुड़त। माइ हे कओने परी ॥ ५ ॥
नारि सभाव कएल हमे मान। पुरुस विचखन के नहि जान ॥ ७ ॥
आदरे मोरा हानि गए भेल। वचनक दीसे पेम टुटि गेल ॥ ६ ॥
नागरे नागरि हृदयक मेलि। पाँचवान वले बहुड़त केलि ॥ ११ ॥
अनुनय मोरि बुझाउबि रोए। वचनक कौशले की नहि होए ॥ १३ ॥

दूती शिक्षा।

४६२

हरि बड़ गरवी गोप माझे वसइ। ऐसे करब जैसे वैरि न हसइ ॥ २ ॥
परिचय करब समय भल चाइ। आजु बुझब सखि तुय चतुराइ ॥ ४ ॥
पहिलहि वैसब श्याम कए वाम। सङ्केत जनाओब मझु परनाम ॥ ६ ॥
पुछइते कुशल उलटायब पानि। वचन न बान्धब सुनह सयानि ॥ ८ ॥
हरि यदि फेरि पुछय धनि तोय। इङ्गिते वेदन न जनायब मोय ॥ १० ॥
जब चिते देखब बड़ अनुराग। तैखने जनायब हृदय जनि लाग ॥ १२ ॥
सखीगन गनइते तुहुँ से सयानी। तोहे कि सिखायब चतुरिम बानी ॥ १४ ॥
विद्यापति कवि इह रस भान। मान रहुक पुनु जाउ परान ॥ १६ ॥

मोहि पति भल भेल ओतहि ओहओ गेल कि फल विकल कए देहे ।
करिअ जतन पए जओ पुनु जोलि हो टूटल सरस सिनेहे ॥४॥
तुनु काहु हे जतने दहु परिहर के ॥५॥
दिन दस जौवन तेहि अनाएत मन तहु पुछु परकारे ।
तुअ परसाद विखाद नयन जल काजरे मोर उपकारे ॥७॥
तें तओ करवि मसि मअन पास वैसि लिखि लिखि देखवासि तोही ।
तार हार घनसार सार रे सेओलव सन्ताओत मोही ॥६॥
कामिनि केलि भान थिक माधव आओ कुमुदिनि सओ चॉदे ।
दुरहु दुरहु तोहें पहु तओ बुझह दहु दरसने कत आनन्दे ॥११॥
भनइ विद्यापति अरे वर जौवति मेदिनि मदन समाने ।
लखिमा देविपति रूपनराएन सुखमा देवि रमाने ॥१३॥

—.०.—

सखी ।

४६८

राधामाधव रतनहि मन्दिरे निवसय शयनक सुखे ।
रसे रसे दारुन दन्द उपजल कान्त चलल ताहि रोखे ॥२॥
नागर अञ्चल करे धरि नागरि हसि मिनति करु आधा ।
नागर हृदय पॉच शर हानल उरज दराशि मन वाधा ॥४॥
देख सखि झुठक मान ।
कारण किछुइ वुझइ न पारिय तव काहे रोखल कान ॥६॥
रोख समापि पुनु रहसि पसारल ताहि मथध पॉच वान ।
अवसर जानि मानवति राधा विद्यापति कवि भान ।

—.०.—

सखी।

४६५

धनि भेलि मानिनि सखिगन माझ। अनुनय करइते उपजय लाज ॥२॥
पिरीतिक आरति विरति न सहइ। इङ्गित भङ्गिए दुहु सब कहइ ॥४॥
राहि सचेतनि कहु सयान। मनहि समाधल मन अभिमान ॥६॥
अधरे मुरलि जौ धयल मुरारि। फोइ कवरि धनि बाँधि समारि ॥८॥
जौ निज पुर धयल मुरारि। सखि लखि अनतय चलु वर नारि ॥१०॥
हरि जब छाया कर धनि पाय। धनि सम्भ्रमे वइसलि कर लाय ॥१२॥
कह कविशेखर बुझय सेयान। इङ्गिते रस पसारल पचवान ॥१४॥

—:०:—

राधा।

४६६

सबे सवतहु कह सहले नहिअ। जिव जञो जतने जोगओले रहिअ ॥२॥
परसि हलह जनु पिसुनक बोल। सुपुरुष पेम जीव रह ओल ॥४॥
मञे सपनेहु नहि सुमरञो देओं। अइसन पेम तोलि हल जनु केओ ॥६॥
रहिअ नुकओले अपना गेह। खल कौसले टुटि जाएत सिनेह ॥८॥
विमुख बुझाए न करिअए बोल। मुख सुखे धेङ्गुर काट पटोर ॥१०॥

—०—

राधा।

४६७

एत दिन छल पिआ तोह हम जेहे हिआ सीतल सील कलापे।
तोहे न कान धरु विनति दूर करु दुरजन दुरित अलापे ॥२॥

तोहि पति भल भेल श्रोतहि श्रोहश्रो गेल कि फल विकल कए देहे ।
करिश्र जतन पए जञो पुनु जोलि हो टूटल सरस सिनेहे ॥४॥
तुनु काह्नु हे जतने दहु परिहर के ॥५॥
दिन दस जौवन तेहि अनाएत मन तहु पुछु परकारे ।
तुश्र परसाद विखाद नयन जल काजरे मोर उपकारे ॥७॥
तें तञो करवि मसि मश्रन पास वैसि लिखि लिखि देखवासि तोही ।
तार हार घनसार सार रे सेश्रोलव सन्ताश्रोत मोही ॥६॥
कामिनि केलि भान थिक माधव श्राश्रो कुमुदिनि सञो चाँदे ।
दुरहु दुरहु तोहें पहु तञो बुझह दहु दरसने कत श्रानन्दे ॥११॥
भनइ विद्यापति श्ररे वर जौवति मेदिनि मदन समाने ।
लखिमा देविपति रूपनराएन सुखमा देवि रमाने ॥१३॥

—०—

सखी ।

४६८

राधामाधव रतनहि मन्दिरे निवसय शयनक सुखे ।
रसे रसे वारुन दन्द उपजल कान्त चलल ताहि रोखे ॥२॥
नागर श्रञ्चल करे धरि नागरि हसि मिनति करु श्राधा ।
नागर हृदय पाँच शर हानल उरज दराशि मन वाधा ॥४॥
देख सखि झुठक मान ।
कारण किछुइ वुझइ न पारिय तव काहे रोखल कान ॥६॥
रोख समापि पुनु रहसि पसारल ताहि मथध पाँच वान ।
श्रवसर जानि मानवति राधा विद्यापति कवि भान ॥८॥

—०—

राधा ।

४६६

आजु परल मोर कोन अपराधे । किय न हेरिय हरि लोचन आधे ॥२॥
आन दिन गहि गृम लाविय गेहा । वहुविध वचन वुझावए नेहा ॥४॥
मन दए हसि रहल पहु सोइ । पुरुपक हृदय एहन नहि होइ ॥६॥
भनइ विद्यापति शुन परमान । बाढ़ल प्रेम उसरि गेल मान ॥८॥

—— ० ——

राधा ।

४७०

कान्ह विरस कथि लागि । किये भेल हमर अभागि ॥ २ ॥
जव हम गेल पिया पास । तेजइ दीघल निशास ॥ ४ ॥
जवहु पुछल वेरि वेरि । सजल नयने रहु हेरि ॥ ६ ॥
जव हम रहल निहार । लोचन झरु अनिवार ॥ ८ ॥
तवधरि बुझल विचारि । कठिन जीवन वरनारि ॥१०॥
कविशेखर परमान । न जायत पाप परान ॥१२॥

——•०:——

राधा ।

४७१

सुनि सिरिखण्ड तरु से सुनि गमन करु छाड़त मदन तनु तापे ।
आरति मइलिहु तें कुम्भिलइलिहु के जान पुरुवकेर पापे ॥२॥

माधव तुश्र मुख दरसन लागी ।
वेरि वेरि आवओं उतर न पावओं भेलाहु विरह रस भागी ॥४॥
जखने तेजल गेह सुमरि तोहर नेह गुरु जन जानल तावे ।
तोहें सुपुरुस पहु हमे तओ भेलिहु लहु कतहु आदर नहि आवे ॥६॥

—o—

राधा ।

४७२

से काह्न से हम से पचवान । पाछिल छाड़ि रङ्ग आवे आन ॥२॥
पाछिलाहु पेमक कि कहव साध । आगिलाहु पेम देखिय अवे आध ॥४॥
वोलि विसरलह दय विसवास । से अनुरागल हृदय उदास ॥६॥
कवि विद्यापति इहो रस भान । विरल रसिक जन ई रस जान ॥८॥

—o:—

राधा ।

४७३

माधव वचन करिय प्रतिपाले ।
बड़ जन जानि शरन अवलम्बलि सागर होयत सताले ॥२॥
भुवन भमिये भमि तुय यश पाओलि चौदिसि तोहर बड़ाइ ।
चित अनुमान वुझि गुन गोरव महिमा कहलो न जाइ ॥४॥
आगा सभ केओ शील निवेदय फल जानिय परिनामे ।
वड़ाक वचन कबहु नहि विचलय निशिपति हरिन उपामे ॥६॥
भनइ विद्यापति शुनु वरजौवति एह गुन कोउ न आने ।
राय सिवसिंह रुपनारायन लाखिमा देइ पति जाने ॥८॥

—o—

राधा ।

४७४

माधव कि कहब तोहरो गेयाने ।
सुपहु कहलि जब रोष कयल तब कर मुनल दुहु काने ॥२॥
आयल गमनक वेरि न नीन टरु तइ किछु पुछिओ न भेला ।
एहन करमहीनी हम सनि के धनी कर से परसमनि गेला ॥४॥
जओ हम जानितहुं एहन निठुर पहु कुच कञ्चन गिरि साधि ।
कौशल करतल वाहुलता लय दृढ़ कए रखितहुं वांधि ॥६॥
इ सुमिरिय जव जओ मरिये तव वुझि पड़ हृदय पषाने ।
हेमगिरि कुमारि चरन हृदय धरि कवि विद्यापति भाने ॥८॥

—— ० ——

राधा ।

४७५

रोपलह पहु लहु लतिका आनि । परतह जतने पटवितह पानि ॥२॥
तँइ अरथित उपजित भेल से । तोहें विसरिल भल बोलत के ॥४॥
माधव वुझल तोहर अनुरोध । हेरितहुँ कयलह नयन निरोध ॥६॥
एकहु भवन वसि दरशन वाध । किछु न वुझिय पहु कि अपराध ॥८॥
सुपुरुष वचन सबहुँ विधि फूर । अमरखे विमरख न करिअ दूर ॥१०॥
भनइ विद्यापति एहो रस जान । रस वुझ सिवसिंह लखिमा देइ रमान ॥१२॥

—— ० ——

राधा ।

४७६

हि पेम रस ततहि दुरन्त । पुन कर पलटि पिरिति गुनमन्त ॥२॥
तहु सुनिअ अइसन वेवहार । पुनु टूटए पुनु गाँथए हार ॥४॥
कहु ए कहु तोहँहि सआन । विसरिअ कोप करिअ समधान ॥६॥
ाक आँकुर तोहें जल देल । दिने दिने वाढ़ि महातरु भेल ॥८॥
अ गुने न गुनल सउतिनि आछ । रोपि न काटिअ विषहुक गाछ ॥१०॥
नेह उपजल प्रानक ओल । से न करिअ दुर दुरजन बोल ॥१२॥
गत विदित भेल तोह हम नेह । एक परान कएल दुइ देह ॥१४॥
नइ विद्यापति करब उदास । बड़ाक वचने करिअ विसवास ॥१६॥

—·o·—

राधा ।

४७७

ागन गरज मेघा जामिनि घोर । रतनहु लागि न सञ्चरु चोर ॥२॥
हना तेजि अएलाहुं निअ गेह । अपनहु न देखिअ अपनुक देह ॥४॥
तिला एक माधव परिहर मान । तुअ लागि ससय परल परान ॥६॥
दुसह जमुना नरि अइलिहु भागि । कुचजुग तरल तरनि तां लागि ॥८॥
देह अनुमति हे जुझओ पंचवान । तोंहे सन नगर नागर नहि आन ॥१०॥
भनइ विद्यापति नारी सोभाव । अपनुक अभिमत उकुति जनाव ॥१२॥
राजा रुपनारायन जान । राए सिवसिंह लखिमा देइ रमान ॥१४॥

—o—

राधा ।

४७८

सवे परिहरि अएलाहुं तुय पास । विसरि न हलवे दए विसवास ॥२॥
अपने सुचेतन कि कहव गोए । तइसन करव उपहास न होए ॥४॥
ए कन्हाइ तोहर वचन अमोल । जाव जीव प्रतिपालव वोल ॥६॥
भल जन वचन दुअओ समतूल । वहुल न जानए रतनक मूल ॥८॥
हमे अवला तुअ हृदय अगाध । बड़ भए खेमिअ सकल अपराध ॥१०॥
भनइ विद्यापति गोचर गोए । सुपुरुष सिनेह अन्त नहि होए ॥१२॥

—— ० ——

राधा ।

४७९

पएर पड़ि विनवओ साजना रे जति अनुचित पडु मोर ।
जनु विघटावह नेहरा रे जीवन जौवन थोर ॥२॥
पलटह गुननिधि तोहे गुनरसिया जीवे करह वरु साति ॥३॥
पुछलेहु इ तरुन आपाहि रे अइसना लागए मोहि भान ।
की तुअ मन लागला रे किए कुशल पंचवान ॥५॥
काठ कठिन हिअ तोहरा रे दिनहु दया नहि तोहि ।
कंसनराएन गाविहा रे निरमम कान्हहि मोहि ॥७॥

—— ०:——

राधा ।

४८०

कुल ठाकुर हमे कुल नारि । अधिपक अनुचिते किछु न गोहारि ॥२॥
ने हसब पुनु माथ डोलाए । बड़ाक कहिनी बड़ि दुर जाए ॥४॥
सुन साजना वचन हमार । अपद न अंगिरिअ अपजस भार ॥६॥
ह परतिति आविअ पास । बड़ बोलि हमहु कएल विसवास ॥८॥
आवे मने गुनि भल नहि काज । वाजु राखए आंखिक लाज ॥१०॥

—o—

राधा ।

४८१

आसा दइए उपेखह आज । हृदय विचारह कओनक लाज ॥२॥
हमे अबला थिक अलप गेआन। तोहर छैलपन निन्दत आन ॥४॥
सुपहु जानि हमे सेओल पाओ। आवे मोर प्राण रहत कि जाओ ॥६॥
कएल विचारि अमिअके पान । होएत हलाहल इ के जान ॥८॥
कतहु न सुनले अइसन वात । सांकर खाइते भाङ्गए दात ॥१०॥

—o—

राधा ।

४८२

वारिस निसा मझे चलि अएलिहु सुन्दर मन्दिर तोर ।
कत महि आहि देहे दमसल चरणे तिमिर घोर ॥२॥
निज सखि मुख सुनि सुनि कहवसि पेम तोहार ।
हमे अबला सहए न पारल पचसर परहार ॥४॥

नागर मोहि मने अनुताप ।
कएलाहु साहस सिधि न पाविअ अइसन हमर पाप ॥६॥
तोह सन पहु गुन निकेतन कएलह मोर निकार ।
हमहु नागरि सवे सिखाउवि जनु कर अभिसार ॥८॥
कत न नागर गुनक सागर सवे न गुनक गेह ।
तोह सन जग दोसर नाहि तें हमे लाओल नेह ॥१०॥
केलि कुतूहल दुरहि रहओ दरशनहु सन्देह ।
जामिनि चारिम पहर पाओल आवे जाओं निज गेह ॥१२॥
मोरिओ सब सहचरि जानति होइति इ बड़ि साटि ।
विहि निकारुन परम दारुन मरओ हृदय फाटि ॥१४॥
भनें विद्यापति सुनह जुवति आसा न अवसान ।
सुचिरे जीवओ राए सिवसिंह लखिमा देवि रमान ॥१६॥

—o—

राधा ।

४८३

हे माधव भल भेल कएलह कूले ।
काच कञ्चन दुहु सम कए लेखलह न जानह रतनक मूले ॥२॥
तोंद हम पेम जते दुरे उपजल सुमरह से आवे ठामे ।
आवे पररमनि रंगे तोंहे भुललाहे विहुसिहु हसि हेर वामे ॥४॥
ऐसन करम मोर तें तोहे जदि भोर हमे अबला कुल नारी ।
विसुनक वचन कान जदि धएलह साति न कएलह विचारी ॥६॥

भनइ विद्यापति सुनह सुन्दरि चिते जनु मानद सङ्का ।
दिवस वाम सखि सवे खन न रहए चांदहु लागु कलङ्का ॥८॥

—— ० ——

राधा ।

४८४

तोह हम पेम जते दुरे उपजल सुमरवि से परिपाटी ।
आवे पररमनि रङ्ग रस भुलला हे कओने कला हम घाटी ॥२॥
भमरवर मोरे बोले बोलव कह्नाइ ।
विरह तन्त जदि बुझयि मनोभव की फल अधिक बुझाइ ॥४॥
तुलए सुमेरु साधु जन तुलना सवका धइरज धने ।
तोंहे निअ लोभे वचन आवे चुकला हे गरिमा धरवि कओने ॥६॥
पुरुप हृदय जल दुअओ सहजे चल अनुवन्धे बांध थिराइ ।
से जदि फुटल रह सहस धारे वह उचेओ नीचे पथे जाइ ॥८॥
भनइ विद्यापति नव कविशेखर पुहुवी दोसर कहां ।
साह हुसेन भृङ्ग सम नागर मालति सेनिक जहा ॥१०॥

—— ०:——

सखी ।

४८५

कुन्तल कुसुम निमाल न भेल । नयनक काजर अधर न गेल ॥२॥
कनक धराधर नहि ससिरेह । कोने परि कामे प्रकाशल नेह ॥४॥

नागर मोहि मने अनुताप।
कएलाहु साहस सिधि न पाविअ अइसन हमर पाप ॥६॥
तोह सन पहु गुन निकेतन कएलह मोर निकार।
हमहु नागरि सवे सिखाउवि जनु कर अभिसार ॥८॥
कत न नागर गुनक सागर सवे न गुनक गेह।
तोह सन जग दोसर नाहि तें हमे लाओल नेह ॥१०॥
केलि कुतूहल दुरहि रहओ दरशनहु सन्देह।
जामिनि चारिम पहर पाओल आवे जाओं निज गेह ॥१२॥
मोरिओ सब सहचरि जानति होइति इ वड़ि साटि।
विहि निकारुन परम दारुन मरओ हृदय फाटि ॥१४॥
भनें विद्यापति सुनह जुवति आसा न अवसान।
सुचिरे जीवओ राए सिवसिंह लखिमा देवि रमान ॥१६॥

—— ० ——

राधा।

४८३

हे माधव भल भेल कएलह कूले।
काच कञ्चन दुहु सम कए लेखलह न जानह रतनक मूले ॥२॥
तोंह हम पेम जते दुरे उपजल सुमरह से आवे ठामे।
आवे पररमनि रंगे तोंहे भुललाहे विहुसिहु हसि हेर वामे ॥४॥
ऐसन करम मोर तें तोहे जदि भोर हमे अबला कुल नारी।
पिसुनक वचन कान जदि धएलह साति न कएलह विचारी ॥६॥

भनइ विद्यापति सुनह सुन्दरि चिते जनु मानद सङ्का ।
दिवस वाम सखि सवे खन न रहए चांदहु लागु कलङ्का ॥८॥

—— ० ——

राधा ।

४८४

तोह हम पेम जते दुरे उपजल सुमरवि से परिपाटी ।
आवे पररमनि रङ्ग रस भुलला हे कओने कला हम घाटी ॥२॥
भमरवर मोरे बोले बोलव कह्नाइ ।
विरह तन्त जदि बुझथि मनोभव की फल अधिक बुझाइ ॥४॥
तुलए सुमेरु साधु जन तुलना सवका धइरज धने ।
तोहे निअ लोभे वचन आवे चुकला हे गरिमा धरवि कओने ॥६॥
पुरुप हृदय जल दुअओ सहजे चल अनुवन्धे वांध थिराइ ।
से जदि फुटल रह सहस धारे वह उचेओ नीचे पथे जाइ ॥८॥
भनइ विद्यापति नव कविशेखर पुहुवी दोसर कहा ।
साह हुसेन भृङ्ग सम नागर मालति सेनिक जहां ॥१०॥

—— ० ——

सखी ।

४८५

कुन्तल कुसुम निमाल न भेल । नयनक काजर अधर न गेल ॥२॥
कनक धराधर नहि ससिरेह । कोने परि कामे प्रकाशल नेह ॥४॥

राधा ।

ए सखि ए सखि पुरुष अज्ञान । भुजंग भनावथि रङ्ग न जान ॥६॥
दुरसौं सुनिय समय पचवान । परतख चाहि नहि के अनुमान ॥८॥
उपगति भेलिहु इ भेलि साति । अनुसय छितहि पोहाइलि राति ॥१०॥
भनइ विद्यापति एहु रस भाने । राए सिवसिंह लखिमा देइ रमाने ॥१२॥

—o.—

दूती ।

४८६

आदरि अनलह धएलह वारि । आंचर न छुड़लह वदन निहारि ॥२॥
सुदृढ़ेओ केम न बंधलह फोए । सबे रस सुन्दरि धएलह गोए ॥४॥
आवे कि पुछसि राहि भल नहि भेल । जतने आनल कान्ह तोरे दोसे गेल ॥६॥
गुनिगन पथ सह लगलउहे भोर । आंचर हीर हराएल मोर ॥८॥
सखिजन सोंपइते भेलउ हे राग । गेल पाइअ जौं हो बड़ भाग ॥१०॥

—.o —

राधा ।

४८७

एत दिन छलि नव रीति रे । जल मीन जेहन पिरीति रे ॥ २ ॥
एक हि वचन वीच भेल रे । हसि पहु उतरो न देल रे ॥ ४ ॥
एकहि पलङ्ग पर कान्ह रे । मोर लेख दूर देस भान रे ॥ ६ ॥
जाहि वन केओ न डोल रे । ताहि वन पिआ हसि बोल रे ॥ ८ ॥
धरव जोगियाक भेस रे । करव मजे पहुक उदेस रे ॥१०॥
भनइ विद्यापति भान रे । सुपुरुष न कर निदान रे ॥१२॥

—.o.—

राधा ।

४८८

वचन अमिअ सम मने अनुमानि । नियर अएलाहु तुअ सुपुरुप जानि ॥२॥
तसु परिनति किछु कहहि न जाए । सूति रहल पहु दीप मिझाए ॥४॥
ए सखि पहु अवलेप सही । कुलिस अइसन हिअ फाट नहीं ॥६॥
करे जुगे परसि जगाओल भाव । तइअओ न तेज पहु नीन्द सभाव ॥८॥
हाय झपाए रहल मुह लाए । जगइते निन्द गेल न होअ जगाए ॥१०॥

राधा ।

४८६

अपनेहि अइलिहु कएल अकाज । मान गमाओल अरजल लाज ॥२॥
आदर हरल वहल सुख सोभ । राङ्क न फावए मानिक लोभ ॥४॥
ए सखि ए सखि कि कहिवओं तोहि । दिवसक दोसे दुअसस भेल मोहि ॥६॥
हरि न हेरल मुख सएन समीप । रोसे वसाओल चरनहि दीप ॥८॥
वइसि गमाओल जामिनि जाम । कि करव भावि विधाता वाम ॥१०॥

राधा ।

४६०

दिने दिने बाढ़ए सुपुरुप नेहा । अनुदिने जैसन चान्दक रेहा ॥२॥
जे छल आदर तकरहु आधे । आओर होएत की पछिलाहु बाधे ॥४॥
विधिवसे जदि होअ अनुगति वाधे । तैअओ सुपहु नहि धर अपराधे ॥६॥
पुरत मनोरथ कत छल साधे । आवे कि पुछह सखि सब भेल वाधे ॥८॥

सुरतरु सेओल भल अभिमत लागी। तसु दूखन नहि हमहि अभागी ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुनह सयानी । आओत मधुरपति तुअ गुन जानी ॥१२॥

——:o:——

राधा ।

४६१

प्रथम प्रेम हरि जत बोलल अदरओ न भेल ।
बोलल जनम भरि जे रहत दिने दिने दुर गेल ॥२॥
कि दहु मोर अविनय परल कि मोर दीघर मान ।
कि पर पेअसि पिसुन वचन तथी पिआजे देल कान ॥४॥
साजनि माधव नहि गमार ।
पेमे पराभव बहुत पाओल करम दोस हमार ॥६॥
कत बोलि हरि जतने सेओल सुरतरु सम जानि ।
अनुभवे भेल कपट मन्दिर आवे की करब आनि ॥८॥
सुपहुक वचन वजर सम मों हिअ रेख लेल मान ।
अपना भासा बोलि विसरए इथि कि बोलत आन ॥१०॥

——:o:——

राधा ।

४६२

करओ विनअ जत जत मन लाइ । पिआ परिठव पचतावके जाइ ॥२॥
धन धइरज परिहरि पथ साचे । करम दोसे कनकेओ भेल काचे ॥३॥
निठुर वालम्भु सओ लाओल सिनेहे । न पुर मनोरथ न छाड़ू सन्देहे ॥६॥
सुपुरुस भाने मान धन गेल । हृदय मलिन मनोरथ भेल ॥८॥

जदि दूपन गुन पहु न विचार। बढ भए पसरओ पिसुन पसार ॥१०॥
परिजन चित नहि हित परयाव। घरसने जीव कतए नहि धाव ॥१२॥
हम अवधारि हलल परकार। विरह सिन्धु जिव दए वरु पार ॥१४॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि। धैरज कए रह भेटत मुरारि ॥१६॥

—·०·—

राधा।

४६३

कत न जीवन सङ्कट परए कत न मीलए नीधि।
उत्तिम तैअओ सता न छाड़य भल मन्द कर वीधि ॥२॥
साजनि गए बुझावह काहु।
उचित बोलइते जे होअ सेहे दैन भाखह जनु ॥४॥
जैसनि सम्पति तैसनि आसति पुरुप अइसन छला।
प्रान मान वेवि जदि प्रान जे राखीअ ता तें मरन भला ॥६॥

—०:—

राधा।

४६४

कत गुरु गञ्जन दुरजन बोल। मने किछु न गणल ओ रसे भोल ॥ २ ॥
कुलजा रीति छोड़ जसु लागि। से अब विसरल हमर अभागि ॥ ४ ॥
सुमरि सुमरि सखि कहव मुरारि। सुपुरुख परिहर दोख विचारि ॥ ६ ॥
जे पुनु सहचरि होय मतिमान। करय पिशुन वचन अवधान ॥ ८ ॥
नारि अवला हम कि बोलव आन। तुहुँ रसनानन्द गुणक निधान ॥१०॥

मधुर वचन कहि कानुके बुझाइ । एहि कर दोख रोख अवगाइ ॥१२॥
तुहुँ वरचतुरी हम किय जान । भनइ विद्यापति इह रस भान ॥१४॥

——:o:——

राधा ।

४६५

दुरजन वचन न लह सब ठाम । बुझए न रहए जावे परिनाम ॥ २ ॥
ततहि दूर जा जतहि विचार । दीप देले घर न रह अँधार ॥ ४ ॥
हमरि विनति सखि कहवि मुरारि । सुपहु रोस कर दोस विचारि ॥ ६ ॥
से नागरि तोहे गुनक निधान । अलपहि माने बहुत अभिमान ॥ ८ ॥
कके विसरलहि हे पुरुव परिपाटि । लाड़लि लतिका की फल काटि ॥१०॥
भनइ विद्यापति एहु रस जान । राए सिवसिंह लखिमा देवि रमान ॥१२॥

——.o.——

राधा ।

४६६

मधु रजनी सङ्गहि खेपवि कत काति छलि आस ।
विहि विपरिते सवे विघटल बहु रिपु जन हास ॥२॥
हे सुन्दरि कन्त न बुझ विसेख ।
पिशुन वचने उचित विसरि अपदहो निरपेख ॥४॥
कत गुरुजन कत परिजन कत पहरी जाग ।
एतहु साहसे मञे चलि अहालिहु एहन छल अनुराग ॥६॥

—— o|——

राधा ।

४६७

जातकि केतकि कुन्द सहार । गरुअ ताहेरि पुन जाहि निहार ॥ २ ॥
सब फुल परिमल सब मकरन्द । अनुभवे विनु न बुझिअ भल मन्द ॥ ४ ॥
तुअ सखि वचन अमिअ अवगाह। भमर वेआजे बुझओब नाह ॥ ६ ॥
एतवा विनति अनाइति मोरि । निरस कुसुम नहि रहिअ अगोरि ॥ ८ ॥
वैभव गेले भलाहु मंदि भास । अपन पराभव पर उपहास ॥१०॥

—— ० ——

राधा ।

४६८

दुइ मन मेलि सिनेह अङ्कुर दोपत तेपत भेला ।
साखा पल्लव फुले वेआपल सौरभ दह दिस गेला ॥२॥
सखि हे आवे कि आओत कन्हाइ ।
पेम मनोरथ हठे विघटओलहि कपटहि के पतियाइ ॥४॥
जानि सुपहु तोहे आनि मेराओल सोना गाथलि मोती ।
कैतव कञ्चन अन्ध विधाता छायाहु छाडलि सोती ॥६॥

—— ० ——

राधा ।

४६९

पहुक वचन छल पाथर रेख । हृदय धएल नहि होएत विशेख ॥ २ ॥
नागर भमर दुहु एक रीति । रस लए निरसि करए फिरि तीति ॥ ४ ॥
ओ पहिलहि वोल तोहेहि परान । पथ परिचय नहि राख निदान ॥ ६ ॥

यौवन अवधि राख अनुवन्ध । आगिला विषय अधिक परवन्ध ॥ ८ ॥
ओ वैसइते कत कर अवधान । अति सानन्द भए कर मधुपान ॥१०॥
उड़इते भर दे न कर सम्भाष । आगिला कुसुम अधिक अभिलाष॥१२॥
कि कहव माइ हे बुझत अनेक । नागर भमर दुअओ अविवेक ॥१४॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि । पेमक रसे वस होअ मुरारि ॥१६॥

——:o:——

राधा ।

५००

की हमे साँझक एकसरि तारा भादव चौठिक शशी ।
इथि दुहु माझ कओन मोर आनन जे पहु हसि न हेरसी ॥२॥
साए साए कहह कहह कहु कपट करह जनु कि मोर परल अपराधे ॥३॥
न मोञे कबहु तुअ अनुगति चुकलिहु वचन न बोलल मन्दा ।
सामि समाज पेमे अनुरञ्जिय कुमुदिनि सन्निधि चन्दा ॥५॥
भनइ विद्यापति सुनु वर जौवति मेदिनि मदन समाने ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमाने ॥७॥

——:o:——

राधा ।

५०१

बोलितहु साम साम पए बोलितहु नाहि सेसे तेँ विसवासे ।
अइसन पेम मोर विहि विघटाओल दूना रहलि दुरासे ॥२॥
सखि हे कि कहव कहइ न जाइ ।
मन्द दिवस फल गनहि न पारिअ अपदहि कुपुत कन्हाइ ॥४॥

जे लहु कथन जञो भरमहु बोलितहुँ जल थल थपितहु वेदे ।
अनुपम पिरिति पराइति परले रहत जनम धरि खेदे ॥६॥
अइसना जे करिअ से नहि करवे कवि रुद्रधर एहु भाने ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

—— ० ——

दूती ।

५०२

जइअओ जलद रुचि धएल कलानिधि तइअओ कुमुद मुद देइ ।
सुपुरुष वचन कवहु नहि विचलए जओं विहि वामेओ होइ ॥२॥
मालति कके तोञे होसि मलानी ।
आन कुसुम मधु पान विरत कए भमर देव मोञे आनी ॥४॥
दिन दुइ चारि आने अनुरञ्जब सुमरत सउरभ तोरा ।
आनक वचन अनाइति पड़ला हे से नहि सहजक भोरा ॥६॥

——:०.——

सखी ।

५०३

जति जति धमिअ अनल अधिक विमल हेम ।
रभस कोप कएकहु नागर अधिक करए पेम ॥२॥
साजनि मने न करिअ रोस ।
आरति जे किछु बोलए वालभु तें नहि तन्हिक दोस ॥४॥
कत न तुअ अनाइनि दरसि कत कए नहि दीव ।
ओ नहि अनङ्ग अधिक भुजङ्ग पवन पीवि जे जीव ॥६॥

सरस कवि विद्यापति गाओल रस नहि अवसान ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमान ॥८॥

—:o:—

दूती ।

५०४

दिवस मन्द भल न रहए सब खन विहि न दाहिन वाम लो ।
सेहे पुरुषवर जेहे धैरज कर सम्पद विपदक ठाम लो ॥२॥
माधव बुझल सबे अवधारि लो ।
जस अपजस दुअओ थिरे थाकए आओर दिन दुइ चारि लो ॥४॥
अपन करम अपनहि भूँजिय विहिक चरित नहि बाध लो ।
कातर पुरुष हृदय हारि मर सुपुरुष सह अवसाद लो ॥६॥
तीनि भुवन मही अइसन दोसर नही विद्यापति कवि भान लो ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमान लो ॥८॥

—:o:—

राधा ।

५०५

से भल जे वरु वसए विदेसे । पुछिअ पथुक जन ताक उदेसे ॥ २ ॥
पिआ निकटहि वस पुछिओ न पुछइ । एहन विरह दुख के दहु सहइ ॥ ४ ॥
धनि धैरज कर पिआ तोर रसिया । अवसउ दिन एक देत विहुसिया ॥ ६ ॥
मधुरिओ वचन सून नहि काने । आव अवसेओ हमे तेजव पराने ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति एहु रस भाने । राए सिवसिंह लखिमा देइ रमाने ॥१०॥

—:o—

दूती ।

५०६

करतल कमल नयन ढर नीर । न चेतए सभरन कुन्तल चीर ॥ २ ॥
तुम्र पथ हेरि हेरि चित नहि थीर । सुमरि पुरुव नेहा दगध सरीर ॥ ४ ॥
कते परि माधव साधव मान । विरहि जुवति माँग दरसन दान ॥ ६ ॥
जल मधे कमल गगन मधे सूर । आँतर चान कुमुद कत दूर ॥ ८ ॥
गगन गरज मेघा सिखर मयूर । कत जन जानसि नेह कत दूर ॥१०॥
भनइ विद्यापति विपरित मान । राधा वचन लजाएल कान्ह ॥१२॥

——:o:——

दूती ।

५०७

धन जऊवन रस रङ्गे । दिन दस देखिअ तलित तरङ्गे ॥ २ ॥
सुघटेओ विहि विघटावे । वाङ्क विधाता की न करावे ॥ ४ ॥
माधव इ तुम्र भलि नहि रीती । हठे न करिअ दुर पुरुव पिरीती ॥ ६ ॥
सचकित हेरए आसा । सुमरि समागम सुपहुक पासा ॥ ८ ॥
नयन तेजए जलधारा । न चेतए चीर न परिहए हारा ॥१०॥
लख जोजन वस चन्दा । तइअओ कुमुदिनि करए अनन्दा ॥१२॥
जकरा जा सञो रीति । दुरहुक दुर गेले दो गुन पिरीती ॥१४॥
विद्यापति कवि गाहे । वोलल वोल सुपहु निरवाहे ॥१६॥
रूप नराएन जाने । राए सिवसिंह लखिमा देवि रमाने ॥१८॥

——:o:——

दूती ।

५०८

बड़ जन जञो कर पिरीति रे । कोपहु न तेजय रीति रे ॥ २ ॥
काक कोइल एक जाति रे । भेम भमर एक भाति रे ॥ ४ ॥
हेम हरदि कत वीच रे । गुनहि बुझिअ उच नीच रे ॥ ६ ॥
मनि कादव लपटाय रे । तँइ कि तनिक गुन जाय रे ॥ ८ ॥
विद्यापति अवधान रे । सुपुरुष न कर निदान रे ॥१०॥

———:o:———

दूती ।

५०९

प्रथम तोहर पेम गउरवे गरवे वाउरि भेलि ।
अधिक आदर लोभ लुवधलि चुकलि तें रतिकेलि ॥२॥
खेमह एक अपराध माधव पलटि हेरह ताहि ।
तोह विना जदि अमिय पीउति तइअओ न जीउति राहि ॥४॥
कालि परसु मधुर जे छलि आज से भेलि तीति ।
आनहु बोलब पुरुष निरदय हठहि तेज पिरिती ॥६॥
तुहुँ जौं अव ताहि तेजव इ अति कओन बड़ाइ ।
तोंह विनु जव जीवन तेजव से वध लागव कॉइ ॥८॥
वइरिहु एक अपराध खेमिय राजपण्डित भान ।
रमनि राधा रसिक यदुपति सिंह भूपति जान ।

———:o:———

दूती ।

५१०

कतए गुजा कतए फल । कतए गुजा रतन तूल ॥ २ ॥
जे पुनु जानए मरम साच । रतन तेजि न किनए काच ॥ ४ ॥
अरे रे सुन्दर उतर देह । कओन कओन गुन परेखि नेह ॥ ६ ॥
अनेके दिवसे कएल मान । मधु छाड़ि आन न मागए दान ॥ ८ ॥
ऐसन मुगुध थीक मुरारि । गवउ भखए अमिअ छारि ॥१०॥

—.०.—

दूती ।

५११

तुअ विसवासे कुसुमे भरु सेज । बसन्तक रजनी चाँदक तेज ॥ २ ॥
मन उतकरिठत कतए न धाव । दह दिस सुन नयन भमि आव ॥ ४ ॥
हरि हरि हरि तुय दरसन लागि । नागरि रयनि गमाउलि जागि ॥ ६ ॥
सुपुरुस भए नहि करिअए रोस । बड़ भए कपटी इ बड़ दोप ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति गरुवि बोल । जे कुल राखए सेहे अमोल ॥१०॥

—०—

सखी ।

५१२

रसिकक सरवस नागरि वानि । भल परिहर न आदरि आनि ॥ २ ॥
हृदयक कपटि वचने पियार । अपने रसे उकट कुसियार ॥ ४ ॥
आवे कि बोलब सखि बिसरल देओ । तुअ रूपे लुबुध भही नहि केओ ॥ ६ ॥

दूती ।

५०८

बड़ जन जओ कर पिरीति रे । कोपहु न तेजय रीति रे ॥ २ ॥
काक कोइल एक जाति रे । भेम भमर एक भाति रे ॥ ४ ॥
हेम हरदि कत वीच रे । गुनहि बुझिअ उच नीच रे ॥ ६ ॥
मनि कादव लपटाय रे । तँइ कि तनिक गुन जाय रे ॥ ८ ॥
विद्यापति अवधान रे । सुपुरुष न कर निदान रे ॥१०॥

दूती ।

५०९

प्रथम तोहर पेम गउरवे गरवे वाउरि भेलि ।
अधिक आदर लोभ लुवधलि चुकलि तेँ रतिकेलि ॥२॥
खेमह एक अपराध माधव पलटि हेरह ताहि ।
तोह बिना जदि अमिय पीउति तइअओ न जीउति राहि ॥४॥
कालि परसु मधुर जे छलि आज से भेलि तीति ।
आनहु बोलव पुरुष निरदय हठहि तेज पिरिती ॥६॥
तुहुँ जौँ अब ताहि तेजब इ अति कओन बड़ाइ ।
तोंह बिनु जव जीवन तेजव से वध लागव कॉइ ॥८॥
वइरिहु एक अपराध खेमिय राजपण्डित भान ।
रमनि राधा रसिक यदुपति सिंह भूपति जान ।

दूती ।

५१०

कतए गुजा कतए फल । कतए गुजा रतन तूल ॥ २ ॥
जे पुनु जानए मरम साच । रतन तेजि न किनए काच ॥ ४ ॥
अरे रे सुन्दर उतर देह । कओन कओन गुन परेखि नेह ॥ ६ ॥
अनेके दिवसे कएल मान । मधु छाड़ि आन न मागए दान ॥ ८ ॥
ऐसन मुगुध थीक मुरारि । गवउ भखए अमिअ छारि ॥१०॥

—.०.—

दूती ।

५११

तुअ विसआसे कुसुमे भरु सेज । वसन्तक रजनी चाँदक तेज ॥ २ ॥
मन उतकण्ठित कतए न धाव । दह दिस सुन नयन भमि आव ॥ ४ ॥
हरि हरि हरि तुय दरसन लागि । नागरि रयनि गमाउलि जागि ॥ ६ ॥
सुपुरुस भए नहि करिअए रोस । बड़ भए कपटी इ बड़ दोप ॥ ८ ॥
भनइ विधापति गरुवि बोल । जे कुल राखए सेहे अमोल ॥१०॥

— ० —

सखी ।

५१२

रसिकक सरवस नागरि वानि । भल परिहर न आदरि आनि ॥ २ ॥
हृदयक कपटि वचने पियार । अपने रसे उकट कुसियार ॥ ४ ॥
आवे कि बोलव सखि विसरल देओ । तुअ रूपे लुबुध भही नहि केओ ॥ ६ ॥

पएर पखाल रोषे नहि खाए । अन्धरा हाथ भेटल हर जाए ॥ ८ ॥
तञे जे कलामति ओ अविवेक । न पिव सरोज अमिय रस भेक ॥१०॥
अकुलिन सञो जदि कए सदभाव । तत कए कतए चतुरपन फाव ॥१२॥
तोहरा हृदय न रहले लागि । कतए सुनल अछ जुड़ि हो आगी ॥१४॥
भनइ विद्यापति सह कत साति । से नहि विचल जकरि जे जाति ॥१६॥

——:o:——

दूती ।

५१३

जसु मुख सेवक पुनिमक चन्दा । नअनक नेओछन नव अरविन्दा ॥ २ ॥
अधर निमाल मधुरि फुल थाका । तोंहें कर्के पाउलि अमिअ सलाका ॥ ४ ॥
आइलि कलावति तुय रति साधे । तोहे परिहरलि कओन अपराधे ॥ ६ ॥
भउहक अनुचर मनमथ चापे । पिक पञ्चम परिपन्थि अलापे ॥ ८ ॥
जा सञो विहुसि दरस अनुरागे । अनलझॉपते कएल पआगे ॥१०॥
अनुभवि भङ्गुर भाव तोहारे । संसअ न तेजए हृदय हमारे ॥१२॥
की से अनागरि कि तोंहें अकामी । सहज तोहर वा परजन्तगामी ॥१४॥
भनइ विद्यापति न बोल सन्देहा । सुपुरुस वचन पसानक रेहा ॥१६॥
नृप सिवसिंह देव एहु रस जाने । सौभागे आगरि लखिमा देइ रमाने ॥१८॥

——·o·——

दूती ।

५१४

प्रथमहि कत जतन उपजओल हे तें आनलि पर रामा ।
बोललहु आन आन परिनति भेलि आवे परजन्तक ठामा ॥२॥

माधव आवे बुझलि तुय रीती ।
ए वेरि वले चेतन भेलिहु पुनु न करव परतीती ॥४॥
वाट हेरि वर नागरि रहलि सून सङ्केत निसि जागि ।
जे नहि फले निरवाहए पारिअ से हे करिअ कॉ लागि ॥६॥

—:o:—

दूती ।

५१५

ताके निवदिअ जे मतिमान । जलहि गुन फल के नाहि जान ॥ २ ॥
तोरे वचने कएल परिछेद । कौआ मुह न भनिअए वेद ॥ ४ ॥
तोहे बहुबल्लभ हमहि अज्ञानि । तकराहुँ कुलक धरम भेलि हानि ॥ ६ ॥
कएल गतागत तोहरा लागि । सहजहि रयनि गमाउलि जागि ॥ ८ ॥
धन्ध वन्ध सकल भेल काज । मोहि आवे तह्नि की कहिनी लाज ॥१०॥
दूती वचन सवहि भेल सार । विद्यापति कह कवि कराठहार ॥१२॥

—o—

दूती ।

५१६

तोंह हुनि लागल उचित सिनेह । हम अपमानि पठओलह गेह ॥ २ ॥
हमरिओ मति अपये चलि गेलि । दुधक माछी दूती भेलि ॥ ४ ॥
माधव कि कहव इ भल भेला । हमर गतागत इ दुर गेला ॥ ६ ॥
पहिलहि वोललह मधुरिम वाणी । तोहहि सुचेतन तोहहि सयानी ॥ ८ ॥
भेला काज बुझाओल रोसे । कहि की बुझओवह अपनुक दोसे ॥१०॥

—o—

दूती।

५१७

वचन रचन दए आनलि राही। अवसर जानि विसरलह ताही ॥ २ ॥
तोंहे बड़ नागर ओ बड़ि भोरी। अमिय पियओलह विप सौ घोरी ॥ ४ ॥
चल चल माधव भल तुअ काजे। जत बोललह तत सकल बेआजे ॥ ६ ॥
सुपुरुख जानि कएल विसवासे। के पतिआएत फुलल अकासे ॥ ८ ॥
पुरुख निठुर हिअ परिचय भेल। परधन लागि निजओ दुर गेल ॥१०॥
निअ मने न गुनल न पुछल केओ। अपन चरन अपने देल छेओ ॥१२॥
भनइ विद्यापति एहु रस जान। राए सिवसिंह लखिमा देइ रमान ॥१४॥

—०—

दूती।

५१८

आदरि आनलि परेरि नारी। कता कठिन दुतर तारी ॥ २ ॥
गेले सम्भव तोहहु तँहा। एखने पलटि जाएब कँहा ॥ ४ ॥
न कर माधव हेनि उकती। पुनु पठावए चाहिअ दूती ॥ ६ ॥
आनि विसरिअ भावक भोरा। गरुअ नीलज मानस तोरा ॥ ८ ॥
हायक रतन तेजह कोहे। के बोल नगर नागर तोहे ॥१०॥

—०—

दूती।

५१९

ओतए छलि धनि निअ पिअ पास। एतए आइलि धनि तुअ विशवास ॥ २ ॥
एतए न ओतए एकओ नहि भेलि। मदने आनि आहुति कए देलि ॥ ४ ॥

सुन सुन माधव वचन हमार । पाउलि निधि परिहरए गमार ॥ ६ ॥
तुअ गुन गन कहि कत अनुरोधि । निअ पिय लगसौं आनलि बोधि ॥ ८ ॥
एहन सिथिल बुझल तुअ नेह । आवे अनितहु मोहि होइति सन्देह ॥१०॥
ऍ वेरि जदि परिहरवह आनि । आनहु तेजवि अभिसारक वानि ॥१२॥
भनइ विद्यापति सुनह मुरारि । धनि परितोजिअ दोस विचारि ॥१४॥

—:o:—

दूती ।

५२०

माधव सुमुखि मनोरथ पुर । तुअ गुने लुबुधि आइलि एति दूर ॥ २ ॥
जे घर वाहर होइतें फेदाए । साहस तकर कहए नहि जाए ॥ ४ ॥
पथ पीछर एक रयनि अन्धार । कुच जुग कलसे जमुना भेलि पार ॥ ६ ॥
वारिद वरिस सकल महि पूल । सहसह चउदिस विसधर वूल ॥ ८ ॥
न गुनलि एहनि भयाउनि राति । जीवहु चाहि अधिक की साति ॥१०॥
भनइ विद्यापति दुहु मन बोध । कमल न विकस भमर अनुरोध ॥१२॥

—:o:—

दूती ।

५२१

माधव करिअ सुमुखि समधाने ।
तुअ अभिसार कएल जत सुन्दरि कामिनि करए के आने ॥ २ ॥
वरिस पयोधर धरनि वारि भर रयनि महा भय भीमा ।
तइअओ चललि धनि तुअ गुन मने गुनि तसु साहस नहि सीमा ॥४॥

देखि भवन भिंति लिखल भुजगपति जसु मने परम तरासे ।
से सुवदनि करे झपइते फनिमनि विहुसि आइलि तुअ पासे ॥६॥
निअ पहु परिहरि सँतरि विखम नरि अँगिरि महाकुल गारी ।
तुअ अनुराग मधुर मदे मातलि किछु न गुनल वर नारी ॥८॥
इ रस रसिक विनोदक विन्दक सुकवि विद्यापति गावे ।
काम पेम दुहु एक मत भए रहु कखने की न करावे ॥१०॥

——:o:——

दूती ।

५२२

निसि निसिअर भम भीम भुअङ्गम गगन गरज घन मेह ।
दुतर जमुन नरि से आइलि वाहु तरि एतवा तोहर नेह ॥२॥
हेरि हल हसि समुह उगओ ससि वरिसओ अमिअक धार ॥३॥
कत नहि दुरजन कत जामिक जन परिपन्थिअ अनुरागे ।
किछु न काहुक डर गुनल जुवति वर एहि परकिओ अभागे ॥५॥

——:o:——

दूती ।

५२३

अगर उगारि गारि मृगमद रस कय अनुलेपन देह ।
चललि तिमिर मिलि निमिखें अलख भेलि
काचक सनि मसि रेह ॥२॥

हे माधव हेरह हरखि धनि चाँद उगल जनि
महितल मेटि कलङ्क ।
घर गुरुजन हेरि पलटति कत वेरि
शशिमुखि परम ससङ्क ॥४॥
तुअ गुन गन कहि आनल असक साहि दइए सुमुखि त्रिसवास ।
ते परि पठाइअ जें परि पाविअ पर धन विनु परयास ॥६॥
जपल जनम जत मदन महामत विहि सफलित करु आज ।
विद्यापति भन कंसनराएन सोरम देवि समाज ॥८॥

—·०·—

माधव ।

५२४

शुन शुन गुणमति राधे । परिचय परिहर कोन अपराधे ॥ २ ॥
गगने उदय कत तारा । चान्द आन नहि अवतारा ॥ ४ ॥
आन कि कहब विशेखि । लाख लाखिमिचय न लेखि ॥ ६ ॥
शुनि धनि मनोहदि फ़ुर । तवहि मनहि मनहि मनपुर ॥ ८ ॥
विद्यापति कह मिलन भेल । शुनइते धन्द सबहि भै गेल ॥१०॥

—·०·—

राधा ।

५२५

तुहु जदि माधव चाहसि नेह । मदन साखि कए खत लिखि देह ॥ २ ॥
छोड़ब केलि कदम्ब विलास । दुर करब निज गुरुजन आस ॥ ४ ॥
हम विनु सपने न हेरब आन । हमर वचने करब जलपान ॥ ६ ॥
रजनि दिवस गुन गाओब मोर । आन जुवति कभु न करब कोर ॥ ८ ॥

ऐसन करज करव जव हात । तवहु तुय सञे मरमक वात ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुन वरकान । मान रहु पुन जाउ परान ॥१२॥

—०—

राधा ।

५२६

कुलकामिनि भए कुलटा भेलिहु किछु नहि गुनले आगु ।
सवे परिहरि तुअ अधीन भेलिहु आवे आइति लागु ॥२॥
माधव जनु होअ पेम पुराने ।
नव अनुराग ओल धरि राखव जे न विघट मोर माने ॥४॥
सुमुखि वचन सुनि माधवे भने गुनि अछिरल कए अपराधे ।
सुपुरुष सञो नेह कवि विद्यापति कह
ओल धरि हो निरवाहे ॥

—०—

राधा ।

५२७

माधव जगत के नहि जान ।
आरति आकुल जञो केओ आवए वड़ कर समधान ॥२॥
हमें जे भाविनि भादव जामिनि अएलाहु जानि सुठाम ।
तोहे सुनागर गुनक आगर पूरत सकल काम ॥४॥
कत न मन मनोरथ अछल सवे निवेदव तोहि ।
पूरुव पुने परीनति पओलाहे पुछि न पुछह मोहि ॥६॥

हमे हेरि मुख विमुख कएलह मन वेआकुल भेल ।
तोहे जञो परे हीत उदासिन जूग पलटि न गेल ॥८॥
एत सुनि हरि हसि हेरु धनि कयलह्नि सोर सदान ।
तखने सुन्दरि पुलके पुरलि कवि विद्यापति भान ॥१०॥

—॰—

राधा ।

५२८

माधव आए कबार उबेरलि जाहि मन्दिर वस राधा ।
चीर उघारि आध मुख हेरलह्नि चाँद उगल जनि आधा ॥२॥
माधव विलछि वचन बोल राही ।
जउवन रूप कलागुने आगरि के नागरि हम चाही ॥४॥
चीर कपूर पान हमे साजल पाअस अओ पकमाने ।
सगरि रअनि हमे जागि गमाओल खण्डित भेल मोर माने ॥६॥
तुअ चञ्चल चित नहि थपलायित महिमा भार गभीरे ।
कुटिल कटाख मन्द हसि हेरह भितरहु श्याम शरीरे ॥८॥
भनइ विद्यापति सुन वर जउवति चिते जनु मानह आने ।
राजा सिवसिंह रूप नरायन लखिमा देवि रमाने ॥१०॥

—॰—

सखी ।

५२६

मुख जब माजल रसिक मुरारि । सुन्दरि रहलि कराहि करे वारि ॥२॥
प्रेम सवहु गुन दहु कय लेल । मदन नयन युगल कर देल ॥४॥

करे कर वारइत उपजल हास । दुहु पुलकाइत गद गद भास ॥६॥
गरुत्र कोप तिरोहित भेल । नागर तवहु कोर पर लेल ॥८॥

—:o:—

सखी ।

५३०

दुरे गेल मानिनि मान । अमिया सरोवर डुवल कान ॥ २ ॥
मागय तत्र परिरम्भ । प्रेम भरे सुवदनी तनु जनि स्तम्भ ॥ ४ ॥
नागर मधुरिम भाप । सुन्दरी गद गद दीर्घ निशास ॥ ६ ॥
कोरे अगोरल नाह । करइ संकीरण रस निरवाह ॥ ८ ॥
लहु लहु चुम्बइ वयान । सरस विरस हृदि सजल नयान ॥१०॥
साहसे उरे कर देल । मनाहि मनोभव तव नहि भेल ॥१२॥
तोड़ल जव नीविबन्ध । हारि सुखे तवहि मनोभव मन्द ॥१४॥
तव कछु नाहक सुख । भन विद्यापति सुख कि दुख ॥१६॥

—:o.—

सखी ।

५३१

अपरुप राधामाधव रङ्ग । दुर्जय मानिनि मान भेल भङ्ग ॥ २ ॥
चुम्बइ माधव राहि वयान । हेरइ मुखशशी सजल नयान ॥ ४ ॥
सखिगण आनन्दे निमगन भेल। दुहु जन मन माहा मनसिज गेल ॥ ६ ॥
दुहु जन आकुल दुहु करु कोर । दुहु दरशने विद्यापति भोर ॥ ८ ॥

—.o:—

राधा ।

५३२

बड़इ चतुर मोर कान । साधन विनाहि भाङ्गल मझु मान ॥ २ ॥
योगीवेश धरि आओल आज । के इह समुझव अपरुप काज ॥ ४ ॥
शस वचने हम भिख लइ मेल । मझु मुख हेरइत गद गद भेल ॥ ६ ॥
कहे तव मान रतन देह मोय । समुझल तव हम सुकपट सोय ॥ ८ ॥
जे किछु कहल तव कहइत लाज । कोइ न जानल नागर राज ॥१०॥
विद्यापति कह सुन्दरि राइ । किये तुहु समुझवि से चतुराइ ॥१२॥

—— ० ——

सखी ।

५३३

गोकुले देव देयासिनि आओल नगरहि ऐसे पुकारि ।
अरुन वसन परिहि जटिल वेश धरि कान्ह दार माहा ठारि ॥ २ ॥
शुनि धनि जटिला तोरिते चलि आओल हेरइते चमकित भेल ।
हमर वधुक रीति देखि जनि आनमति कहि निज मन्दिर लेल ॥ ४ ॥
देव देयासिनि कान ।
जटिला वचने सुधामुखि नियरहि एक दिठि हेरइ बयान ॥ ६ ॥
कह तव अतनु देव इय पओल हृदि माहा पैसल काल ।
निरजने सोइ मन्त्र जव झारिय तव इह होयव भाल ॥ ८ ॥
एत शुनि जटिला घरहु दोंहे लेअल निरजने दुहु एक ठाम ।
सव जन निकसत वाहर वैसल पूरल कान्ह मन काम ॥ १० ॥

करे कर वारइत उपजल हास । दुहु पुलकाइत गद गद भास
गरुअ कोप तिरोहित भेल । नागर तबहु कोर पर लेल

——:o:——

सखी ।

५३०

दुरे गेल मानिनि मान । अमिया सरोवर डुबल का
मागय तब परिरम्भ । प्रेम भरे सुवदनी तनु जानि स्त
नागर मधुरिम भाप । सुन्दरी गद गद दीर्घ निश्वा
कोरे अगोरल नाह । करइ संकीरण रस निर
लहु लहु चुम्बइ वयान । सरस विरस हृदि सजल
साहसे उरे कर देल । मनहि मनोभव तब ना
तोड़ल जब नीविबन्ध । हरि सुखे तवहि मने
तब कछु नाहक सुख । भन विद्यापति

—— o.——

सखी ।

५३१

अपरुप राधामाधव रङ्ग । दुर्ज्जय
चुम्बइ माधव राहि वयान । हेरइ
सखिगण आनन्दे निमगन भेल । दुहु
दुहु जन आकुल दुहु कर कोर । दुहु

——:o:

राधा ।

५३५

अछलों हम अति मानिनि होइ । भाङ्गल नागर नागरि होइ ॥ २ ॥
कि कहब हे सखि आजुक रङ्ग । कान्नु आओल तहिँ दूतिक सङ्ग ॥ ४ ॥
वेणी बनाइ चाँचर केशे । नागर शेखर नागरि वेशे ॥ ६ ॥
पहिरल हार उरज करि उरे । चरणहि लेल रतननुपुरे ॥ ८ ॥
पहिलहि चलइते बामपद घात । नाचत रतिपति फुलधनु हात ॥१०॥
हेरि हम सचकित आदर केल । अवनत हेरि कोर पर लेल ॥१२॥
से तनु सरस परश जब भेल । मानक गरब रसातल गेल ॥१४॥
नासा परशि रहल हम धन्द । विद्यापति कह भाङ्गल दन्द ॥१६॥

—o—

सखी ।

५३६

बरनागर साजइ नागरी वेशा ।
मुकुट उतारि सीति सोढारल वेणी विरचित केशा ॥ २ ॥
चन्दन धोइ सिन्दुर भाले रञ्जइ लोचने अञ्जन अङ्का ।
कुण्डल खोलि कर्णफुल पहिरल भरि तनु केशर पङ्का ॥ ४ ।
वेशर खचित शतेश्वरी पहिरल चुरि कनक करकञ्जे ।
चरण कमल पाशे यावक रञ्जन ता पर मञ्जीर गञ्जे ॥ ६ ॥
काँचली माझे कदम्ब कुसुम भरि आरम्भन कुच आभा ।
अरुणाम्बर वर शाढि पहिरल वक्र विलोकन शोभा ॥ ८ ॥

धरि परिवादिनी श्याम सुमिलने शुभ अनुकूल पयाने ।
पहिलहि वाम चरण तुलि मोहन स्त्रीयागति लच्छन भाने ॥१०॥

—— ०:——

राधा ।

५३७

सजनि की कहब कौतुक ओर ।
अलखिते हाथ हाथ मोर सरवस मान रतन गेओ चोर ॥१२॥
ए नव यौवनी नवीन विदेशिनी आओ फुकारइ राधा ॥१४॥
सुनइते श्याम हरखि चिते आओल उठि धनी आदर केल ।
बाहु पकड़ि निज आसने वैसायल कत कत हरषित भेल ॥१६॥
तहि जाओत वीणा सुमाधुरी रिझि देयल मणिमाल ।
ऐसे बजाओत हमारि यन्त्रिया मोहन यन्त्र रसाल ॥१८॥
सुर अपसरी किये नागकुमारी तुहु सरूप कहबि तुहु मोय ।
आजुक दिवस सफल करि मानलो दुल्लभ दरशन तोय ॥२०॥
नामगाम कह कूल अवलम्बन ब्रजे आगमन किये काजा ।
सुखमयी नाम मथुरापुर यदुकुल गुणीजने पीड़इ राजा ॥२२॥
धनी कहे तुया गुणे रिझि प्रसन्न भेल मागह मानस जोय ।
मनोरथ कर्म्म याचलि यदि सुन्दरि मान रतन देह मोय ॥२४॥
हासि मुख मोड़ि पीठ देइ वैठल कानु कयल धनी कोर ।
टुटल मान बाढ़ल कत कौतुक भूपति के करु ओर ॥२६॥

—— ० ——

राधा।

५३८

सजनि की कहब कौतुक ओर।
अलखि ते हाथ हाथ मोर सरवस मान रतन गेओ चोर ॥२॥
अवनत वयने जबहुँ हम बइसल विगलित कुन्तल भार।
उर अम्बर ससरि सूत चरण धरि गाँथिय मोतिम हार ॥४॥
लहु लहु पद करि नूपुर परिहरि कैसे आओल सेह ढीठ।
शिर सपथि दइ सखिगणे निषेधइ नुकि रहल मझु पीठ ॥६॥
भृगमदचन्द ने मन भेल चञ्चल हेरइते वङ्किम गीम।
चिवुक चिकुरे धरि मुख समुखे करि चुम्वय वयनक सीम ॥८॥
घन घन चुम्वन दृढ़ परिरम्भन रहल हिये हिये लागि।
कविशेखर कह मदन सूति रह चमकि उठय जनु जागि ॥१०॥

—०—

राधा।

५३९

सबहुँ अपन भवन गेल। सुवदनि चित चमक भेल ॥ २ ॥
नासा परशि रहल धन्द। ईषत हसय वयन चन्द ॥ ४ ॥
सखिहे अपरुव वर कान। कँहा गेल मझु सेहन मान ॥ ६ ॥
जे किछु कहल रसिक राज। कहिते अवहु वासिय लाज ॥ ८ ॥
विद्यापति कह ऐसन कान। दास गोविन्द रस भान ॥१०॥

—०—

राधा।

५४०

धिक प्रिय कर जे प्रिय पर कोप। कुल कामिनि जन प्रेमक लोप ॥ २ ॥
भल जन मह हो अपजस ख्यात। प्रियतम मनसौं होयब कात ॥ ४ ॥
एकसरि तारा केओ न देख। चढ़लि आकाश अमङ्गल लेख ॥ ६ ॥
अपने सुख हरि करि जनु मान। कविवर विद्यापति एह भान ॥ ८ ॥

—o—

माधव।

५४१

कुसुमवान विलास कानन केस सुन्दर रेह।
निविल नीरद रुचिर दरसए अरुण जनि निज देह ॥२॥
आज देखु गजराजगति वरजुवति त्रिभुवन सार।
जनि काम देवक विजय वल्ली विहलि विहि संसार ॥४॥
सरद ससधर सरिस सुन्दर वदन लोचन लोल।
विमल कञ्चन कमल चढ़ि जनि खेलु खञ्जन जोल ॥६॥
अधर पल्लव नव मनोहर दसन दालिम जोति।
जनि विमल विद्रुमदल सुधारसैं सींचि धरु गजमोति ॥८॥
मत्त कोकिल वेनु वीनानाद त्रिभुवन भास।
मधुर हासैं पसाहि आनलि करए वचन विलास ॥१०॥
भमर भूधर सम पयोधर मह्य मोतिम हार।
जनि हेम निम्मित सम्भुसेखर गङ्ग निम्मल धार ॥१२॥

करभ कोमल कर सुशोभित जङ्घ जुग्र आरम्भ ।
मदन मल्ल वेश्राम कारने गढ़ल हाटक थम्भ ॥१४॥
सुकवि एहो कराठहारे गाश्रोल रूप सकल सरूप ।
देवि लखिमा कन्त जानए राज सिवसिंह भूप ॥१६॥



सखी ।

५४२

कुन्द भमर सङ्गम सम्भापन नयने जगाश्रोव अनङ्गे ।
आशा दए अनुराग वढ़ाश्रोव भङ्गिम अङ्ग विभङ्गे ॥ २ ।
सुन्दरि हे उपदेश धरिए धरि सुनु सुनु सुललित वानी ।
नागरिपन किछु कहवा चाहों कहलहु वुझए सयानी ॥४ ।
कोकिल कूजित कराठ वैसाश्रोव अनुरञ्जव रितुराजे ।
मधुर हास मुख मराडल मराडव घड़ि एक तेजव लाजे ॥ ६ ॥
कैतव कए कातरता दरसव गाढ आलिङ्गन दाने ।
कोप कइए परवोधल मानव घडि एक न करव माने ॥ ८ ॥
सम पसेवनि सह तनु दरसब मुकुलित लोचन हेरी ।
नखें हनि पिश्रा मानिठाम छोडाश्रोव सुरत वढाश्रोव केली ॥ १० ॥
जूझल मनमथ पुन जे जुझाएव वोलि बचन परचारी ।
गेल भाव जे पुनु पलटावए सेहे कलामति नारी ॥ १२ ॥
रस सिङ्गार सरस कवि गाश्रोल वुझए सकल रसमन्ता ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन लखिमा देविक कन्ता ॥ १४ ॥



सखी ।

५४३

सुन्दरि अछलि सखिगण सङ्ग । चञ्चल विघटय कामिनि अङ्ग ॥ २ ॥
अवनतवयनि बसन नहि हेरि । धनि भुज वल्लि झाप कत बेरि ॥ ४ ॥
अतनु पासे दृढ़ कए दए अम्बु । कोपे काम जनि बाँधल सम्भु ॥ ६ ॥
विहि विधुमण्डल मुख शाशि आनि । तोलि तोलावे दुयओ अनुमानि ॥ ८ ॥
आनन गुन गोरव नत भेल । चाँद चमकि तँहि अम्बर गेल ॥१०॥

—— ० ——

सखी ।

५४४

राधा वदन निरखि रहु कान । भावे भरल अङ्ग धरल धियान ॥२॥
राहि बुझल तसु मरमक बोल । बाहु पसारि कान्हु कर कोर ॥४॥
अधर सुधारस पुनु पुनु पीव । सखीगण हेरइते जीवन जीव ॥६॥

——::——

सखी ।

५४५

जे मुख सुन्दर अतुलन नाम । जसु परसादे जितलि जग काम ॥२॥
से मुख किए मुकुर तल देल । अपन पराभव अपनहि भेल ॥४॥
तुहु अति विदगध बधइते लाख । हेरि अवस भेलि अपन कटाख ॥६॥
जकर जे गुन से नहि जान । लोहकार किए चिन्हय कृपान ॥८॥

—— ० ——

सखी ।

५४६

देव अराधने चलु गोरी । सङ्गहि सम वय नवीन किशोरी ॥ २ ॥
चन्दन कुङ्कुम अरु फुल माल । लेअल वहु उपहार रसाल ॥ ४ ॥
चलु वर नागरि सङ्गव माह । सचकित नयने दिक दश चाह ॥ ६ ॥
ऐसन समय निविड़ वन माज । मिलल एकल विदगध राज ॥ ८ ॥
हेरि सुवदनि अति चमकित भेलि । कह कविशेखर दुहु जन मेलि ॥१०॥

—— ० ——

सखी ।

५४७

राधा माधव सुमधुर केलि । दुहु रूपे दुहु जन निमगन भेलि ॥ २ ॥
उलसित विनोद नागरवर कान । कहइ अमिय वानी हसित वयान ॥ ४ ॥
सुन्दरि की कहव तोहर वखान । अलपे जितल तुहु इह पचवान ॥ ६ ॥
गरुअ कमान नयान कोने एक । अरु एक ईषत हास परतेक ॥ ८ ॥
करहि सुकुसुम ताहि एक होइ । कुञ्चित केश दरशे एक सोइ ॥१०॥
अङ्गहि अङ्ग किरण कत भेल । हेरि पराभव भै चलि गेल ॥१२॥
कह कविशेखर की कहव कान । लाख वयाने नहि होत परमान ॥१४॥

—— ० ——

सखी ।

५४८

दुहु मुख हेरइते दुहु भेल धन्द । राही कह तमाल माधव कह चन्द ॥ २ ॥
चित पुतली जनि रहु दुहु देह । न जानिय प्रेम केहन मधु नेह ॥ ४

ए सखि देख देख दुहुक विचार । ठामहि कोइ लखइ नहि पार ॥ ६ ॥
धनि कह काननमय देखिय श्याम । से किये गुनव मझु परिणाम ॥ ८ ॥
चउकि चउकि देखि नागर कान । प्रति तरुतले देख राही समान ॥ १० ॥
दोहे दोहा यबहु निचय कय जान । दुहुक हृदय पैसल पचवान ॥ १२ ॥

सखी ।

५४६

दुहु रसमय तनु गुने नहि ओर । लागल दुहक न भाँगइ जोर ॥ २ ॥
के नहि कयल कतहुँ परकार । दुहु जन भेद करय नहि पार ॥ ४ ॥
जे खल सकल महीतल गेह । खीर नीर सम न हेरल नेह ॥ ६ ॥
जब कोइ वैरि आनल मुख आनि । खीर दगड देइ निरसत पानि ॥ ८ ॥
तबहुँ खीर उमड़ि पड़ तापे । विरहवियोग आग देइ झाँपे ॥ १० ॥
जब कोइ पानि आनि ताहि देल । विरहवियोग तवहि दूर गेल ॥ १२ ॥
भनइ विद्यापति एहन सुनेह । राधा माधव ऐसन नेह ॥ १४ ॥

सखी ।

५५०

राधा वदन हेरि कानु आनन्द । जलधि उछल जैसे हेरइते चन्द ॥ २ ॥
कतहु मनोरथ कौशलक भरि । राधा कान कुसुम शर समरि ॥ ४ ॥
पुलके पूरल तनु हृदये हुलास । नयन ढुलाढुलि लहु लहु हास ॥ ६ ॥
दुहुँ अति विदगध अनवधि नेहा । रस आवेशे विसरि निज देहा ॥ ८ ॥

हार टुटल परिरम्भन केलि । मृगमद कुङ्कुम परिमल गेलि ॥१०॥
निरसि अधर मधु पिवि मातोयार । भुखिल भमर कुसुम अनिवार ॥१२॥

—— ० ——

सखी ।

५५१

राही जव हेरल हरि मुख ओर । तैखने छल छल लोचन जोर ॥ २ ॥
जवहु कहलह्नि लहु लहु बात । तवहु कयल धनि अवनत मात ॥ ४ ॥
जव हरि धरलह्नि अञ्चल पाश । तैखने ढर ढर तनु परकाश ॥ ६ ॥
जव पहु परशल कञ्चुक सङ्ग । तैखने पुलके पूरल सव अङ्ग ॥ ८ ॥
पूरल मनोरथ मदन उदेस । कह कविशेखर पिरीति विशेस ॥१०॥

—— ० ——

राधा ।

५५२

कि पुछसि हे सखि कानु गुन नेहा । एकहि परान विहि गढ़ल भिन देहा ॥२॥
कहिल जे कहिनि पुछइ कत वेरि । कत सुख पावय मझु मुख हेरि ॥४॥
विनु मझु दरशे परशे नहि जीव । मो विनु पियासे पानि नहि पीव ॥६॥
घुनक आलसे जदि पलटि होउ पास । मान भये माधव उठय तरास ॥८॥
उर विन सेज परश नहि पाइ । चित्रहि विन ताम्बुल नहि खाइ ॥१०॥
आन सञे कहिनी न सह परान । आन सम्भासने हरय गेयान ॥१२॥
कह कविरञ्जन सुन वरनारि । तोहर प्रेम धने लुवुध मुरारि ॥१४॥

—— ० ——

राधा ।

५५३

हम अबला सखि किये गुन जान । से रसमय तनु रसिक सुजान ॥ २ ॥
कतहु जतने मोरे कोरे बइसाइ । बाँधल बेनि से कबरि खसाइ ॥ ४ ॥
कञ्चुक देल हिय पर मोर । परशि पयोधर भै गेल भोर ॥ ६ ॥
कण्ठे पहिराओल मनिमय हार । अङ्गे बिलेपल कुङ्कुम भार ॥ ८ ॥
बसन पहिराओल कय कत छन्द । किङ्किनि जालहि नीवि निबन्ध ॥ १० ॥
निज कर पल्लवे मझु मुख माज । नयनहि कयल सुकाजर साज ॥ १२ ॥
अलका तिलक दय चोरि निहारि । कह कविशेखर जाँओ बलिहारि ॥ १४ ॥

—o—

राधा ।

५५४

अलखिते गोप आएल चलि गेल । ससरि खसल चिर समरि न गेल ॥ २ ॥
आध बदन तहि देखल मोर । चान अँएठ कय चलल चकोर ॥ ४ ॥
काहु मोहि देखलिहु गेलाँहु लजाए । तखनुक लाज अबहु नहि जाए ॥ ६ ॥
आधहु आधिक सकोचित अङ्ग । मोलल मृनाल दोगुन भेल भङ्ग ॥ ८ ॥
चान्दने लेपित तनु रह सोए । बिरहक कसमसि निन्द नहि होय ॥ १० ॥
रसके तन्त बुझए जदि केओ । भाव मनए अभिनव जअदेओ ॥ १२ ॥

—o—

राधा ।

५५५

अलखिते आओल अलखिते गेल । न पूरल मनोरथ बेकत न भेल ॥ २ ॥
गुरुजन जागल भेल बिहान । चरन नखर हेरि आन बयान ॥ ४ ॥

हेरि हेरि की कहब कुलवति होइ । अङ्गने कन्हु चरन ।चिह्न सोइ ॥ ६ ॥
गुरुजन भय तब लेपइते चाइ । विरीति विशेष लेपइ न पाइ ॥ ८ ॥
-सभ्रम भेल मन भम अनिवारि । से डर भाङ्गल नयनक वारि ॥१०॥
जे पथे राति चलल रति चोर । से पथे मनोरथ, गेलहि मोर ॥१२॥
ेह रहल जनि सुध पसारि । कह कविशेखर प्रेम विचारि ॥१४॥

—— ० ——

राधा ।

५५६

कि कहब हे सखि तोहर समाज । कहइते कहिनी लागय लाज ॥ २ ॥
तूति घुमाओल हम अगेयान । अलखिते आओल नागर कान ॥ ४ ॥
ीन पयोधरे देलान्हि हात । तेरिते नुकाओल देह विगात ॥ ६ ॥
तबहि अधर रस पिवए मोर । जागल मनमथ बान्धल चोर ॥ ८ ॥
थर थर कॉपिय कोरे अगोरि । तव हम छुटल निन्द विभोरि ॥१०॥
करलि कोप जानि से वर कात । जे किछु कहल मोहे सोइ से सुजान॥१२॥
परिरम्भन वैरि मुदल ऑखि । ताहे भै गेल कविशेखर साखि ॥१२॥

—— ० ——

राधा ।

५५७

कानन कान्ह कान हम सुनल भइ गेल आनक आने ।
हेरइत शङ्करारिपु मोहि हरलनि कि कहब तानिक गेयाने ॥ २ ॥
चानन चान आङ्ग हम लेपलि तँइ वाढल अति दापे ।
अधरक लोभ सोइ विपधर ससरल धरइ चाह फेरि सापे ॥ ४ ॥

भनहि विद्यापति दुहुक मुदित मन मधुकर लोभित केलि ।
असह सहति कत कोमल कामिनी जामिनी जीव दय गेलि ॥ ६ ॥

—— ० ——

राधा ।

५५८

फुल एक फुलवारि लाओल मुरारि । जतनइ पटओलनि सुवचन वारि ॥ २
चौदिश बॉधलनि शीलकि आरि । जीव अवलम्बन करु अवधारि ॥ ४
तथुहुँ फुलल फुल अभिनव पेम । जसु मूल लहय न लाखहु हेम ॥ ६
अति अपरुब फुल परिनत भेल । दुइ जीव अछल एक भए गेल ॥ ८
पिशुन कीट नहि लागल ताहि । साहस फल देल विहि देल निरवाहि ॥१०
विद्यापति कह सुन्दर सैह । करिय यतन फलमत हो जैह ॥१२

—— ० ——

राधा ।

५५६

सखि हे से सब कहिते लाज । जे करे रसिक राज ॥ २ ॥
आङ्गिना आओल सेह । हम चलला गेह ॥ ४ ॥
अधरु आचर ओर । फुयल कवरी मोर ॥ ६ ॥
टीट नागर चोर । पाओल हेम कटोर ॥ ८ ॥
धरिते धाओल ताय । तोड़ल नखक धाय ॥१०॥
चकोरे चपल चॉद । पड़ल प्रेमेर फॉद ॥१२
कवि विद्यापति भान । पूरल दुहुक काम ॥१४॥

—— ० ——

समुखे न जाय सघन निशोयास। किए किरन भेल दशन विकाश ॥१२॥
जागल शशि चलत तव कान। न पूरल आश विद्यापति भान ॥१४॥

—:०:—

राधा।

५६५

कि कहब रे सखि आजुक रङ्ग। सपने हि शुतलु कुपुरुख सङ्ग ॥ २ ॥
बड सुपुरुख बलि आओलु धाइ। शुति रहलु मुखे आँचर झँपाइ ॥ ४ ॥
काँचालि खोलि आलिङ्गन देल। मोहे जगायल तँहि निद गेल ॥ ६ ॥
हे विहि हे विहि बड़ दुख देल। से दुख रे सखि अबहुँ ना गेल ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति इह रस धन्द। भेक कि जाने कुसुम मकरन्द ॥१०॥

—:०:—

राधा।

५६६

दरशने लोचन दीघर धाव। दिनमनि तेजि कमल जनि जाव ॥ २ ॥
कुसुदिनि चान्द मिलन सहवास। कपटे नुकाविअ मदन विकाश ॥ ४ ॥
सजनि माधव देखल आज। महिमा छाडि पलाएल लाज ॥ ६ ॥
नीवी ससरि भूमि पड़ि गेलि। देह नुकाविअ देहक सेलि ॥ ८ ॥
अपने हृदय बुझावए आन। एकसर सब दिस देखिय कान्ह ॥१०॥

—:०—

राधा।

५६७

जखने जाइ सयन पासे। मुख परेखए दरसि हासे ॥ २ ॥
तखने उपजु एहन भाने। जगत भरल कुसुम बाने ॥ ४ ॥

ताहे वेकत भेल सकल शरीर । तहि उपनीत समुखे यदुवीर ॥ ६ ॥
विपुल नितम्ब अति वेकत भेल । पालटि तापर कुन्तल देल ॥ ८ ॥
उरज उपर यब देयल दीठ । उर मोरि बैठलु हरि करि पीठ ॥ १० ॥
हासि मुख मोड़ये ढीठ मधाइ । तनु तनु झाँपिते झाँपन न जाइ ॥ १२ ॥
विद्यापति कहे तुहु अगेयानी । पुन काहे पलटि न पैठालि पानी ॥ १४ ॥

—— ० ——

राधा ।

५६३

ए सखि ए सखि कि कहब हाम । पिया मोर विदगध विहि मोरे वाम ॥ २ ॥
कत सुखे आओल पिया मझु लागि । दारुण शाश रहल तँहि जागि ॥ ४ ॥
धरे मोर आँधियार कि कहब सखि । पाशे लागल पिया किछुइ न देखि ॥ ६ ॥
चित मोर धस धस कहिते न पाइ । ए बड़ मन दुख रह चिरथाइ ॥ ८ ॥
विद्यापति कह तुँहु अगेयानि । पिया हिया करि काहे फेरि बयानि ॥ १० ॥

—— ० ——

राधा ।

५६४

शाश घुमायत कोरे अगोर । तहि आनि ढीठ पिठ रहु चोर ॥ २ ॥
कत कर आखर कहब बुझाइ । आजुक चातुरि रहब कि जाइ ॥ ४ ॥
नहि कर आरति ए अबुध नाह । अब नहि होएत वचन निरवाह ॥ ६ ॥
पीठ आलिङ्गने कत सुख पाव । पानिक पियास दुधे किये जाव ॥ ८ ॥
कत मुख मोरि अधर रस लेल । कत निसबद कए कुचे कर देल ॥ १० ॥

समुखे न जाय सघन निशोयास। किए किरन भेल दशन विकाश ॥१२॥
जागल शाश चलत तव कान। न पूरल आश विद्यापति भान ॥१४॥

—०:—

राधा।

५६५

कि कहब रे सखि आजुक रङ्ग। सपने हि शुतलु कुपुरुख सङ्ग ॥ २ ॥
बड़ सुपुरुख बलि आओलु धाइ। शुति रहलु मुखे आँचर झँपाइ ॥ ४ ॥
काँचालि खोलि आलिङ्गन देल। मोहे जगायल तँहि निद गेल ॥ ६ ॥
हे विहि हे विहि बड़ दुख देल। से दुख रे सखि अबहुँ ना गेल ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति इह रस धन्द। भेक कि जाने कुसुम मकरन्द ॥१०॥

—०:—

राधा।

५६६

दरशने लोचन दीघर धाव। दिनमनि तीजि कमल जानि जाव ॥ २ ॥
कुमुदिनि चान्द मिलन सहवास। कपटे नुकाविअ मदन विकाश ॥ ४ ॥
सजनि माधव देखल आज। महिमा छाडि पलाएल लाज ॥ ६ ॥
नीवी ससरि भूमि पड़ि गेलि। देह नुकाविअ देहक सेलि ॥ ८ ॥
अपने हृदय बुझावए आन। एकसर सब दिस देखिय कान्ह ॥१०॥

—.०—

राधा।

५६७

जखने जाइ सयन पासे। मुख परेखए दरसि हासे ॥ २ ॥
तखने- उपजु - एहन भाने। जगत भरल कुसुम बाने ॥ ४ ॥

की सखि कहव केलि विलासे । निज अनाइति पिआ हुलासे ॥ ६ ॥
नीवि विघटए गहए हारे । सीमा लाँघए मन विकारे ॥ ८ ॥
सिनेह जाल बढ़ावए जीवे । सङ्गहि सुधा अधर पिवे ॥१०॥
हरखि हृदय गहए चीरे । परसे अवस कर सरीरे ॥१२॥
तखने उपजु अइसन साधे । न दिअ समत न दिअ बाधे ॥१४॥
भने विद्यापति ओ हे सयानी । अमिअ मिझल नागरि वानी ॥१६॥

—— o ——

राधा ।

५६८

पहिलहि चोरि आएल पास । आङ्गहि आङ्ग नुकाव तरास ॥ २ ॥
बाहरि भेले देखिअ देह । जैसन खिनी चान्दक रेह ॥ ४ ॥
साजनि की कहब पुरुप काज । कौसल करइते तहि नहि लाज ॥ ६ ॥
एहि तह पाप अधिक थिक नारि । जे न गनए पर पुरुषक गारि ॥ ८ ॥
खन एक रङ्ग सङ्ग सब भाति । से से करत जकर जे जाति ॥१०॥
भनइ विद्यापति न कर विराम । अवसर पाए पुर तुअ काम ॥१२॥

—— o ——

राधा ।

५६९

ए धनि रङ्गिनि कि कहव तोय । आजुक कौतुक कहल न होय ॥ २ ॥
एकलि सुतल छलि कुसुम शयान । दोसर मनमथ करे फुलवान ॥ ४ ॥
नूपुर झुनु झनु आओल कान । कौतुके मूदि हम रहल नयान ॥ ६ ॥
आओल काहु वैसल मझु पाश । पास मोड़ि हम लुकाओल हास ॥ ८ ॥

कुन्तल कुसुम दाम हरि लेल । वरिहा माल पुनाहि मोहि देल ॥१०॥
नासा मोतिम गीमक हार । जतने उतारल कत परकार ॥१२॥
कञ्चुक फुगइते पहु भेल भोर । जागल मनमथ वान्धल चोर ॥१४॥
भनइ विद्यापति एहु रस भान । तुहु रसिका पहु रसिक सुजान ॥१६॥

—:०:—

सखी ।

५७०

हरि धरु हार चेडाकि परु राधा । आध माधव कर गिम रहु आधा ॥ २ ॥
कपट कोपे धनि दिठि धरु फेरी । हरि हसि रहल वदन विधु हेरी ॥ ४ ॥
मधुरिम हास गुपुत नहि भेला । तखने सुमुखि मुख चुम्वन देला ॥ ६ ॥
करे धरु कुच आकुल भेलि नारी । निरखि अधर मधु पिवए मुरारी ॥ ८ ॥
चिकुरे चमरे झरु कुसुमक धारा । पिविकहु तम जनि वम नव तारा ॥१०॥
विद्यापति कह सुन्दर वानी । हरि हसि मिललि राधिका रानी ॥१२॥

—०—

राधा ।

५७१

पहिलहि परसए करे कुचकुम्भ । अधर पिवएके कर आरम्भ ॥ २ ॥
तखनुक मदन पुलके भरि पूज । नीवीवन्ध विनु फोएले फूज ॥ ४ ॥
ए सखी लाजे कहव की तोहि । काह्रुक कथा पुछह जनु मोहि ॥ ६ ॥
धम्मिल भार हार अरुझाव । पीन पयोधर नख खत लाव ॥ ८ ॥
वाहु वलय ओंकम भरे भाङ्ग । अपन आइति महि अपना आङ्ग॥१०॥

—०—

की सखि कहब केलि विलासे । निअ अनाइति पिआ हुलासे ॥ ६ ॥
नीवि विघटए गहए हारे । सीमा लाँघए मन विकारे ॥ ८ ॥
सिनेह जाल बढ़ावए जीवे । सङ्गहि सुधा अधर पिवे ॥१०॥
हरखि हृदय गहए चीरे । परसे अवस कर सरीरे ॥१२॥
तखने उपजु अइसन साधे । न दिअ समत न दिअ बाधे ॥१४॥
भने विद्यापति ओ हे सयानी । अमिअ मिझल नागरि वानी ॥१६॥

—०—

राधा ।

५६८

पहिलहि चोरि आएल पास । आङ्गहि आङ्ग नुकाव तरास ॥ २ ॥
बाहरि भेले देखिअ देह । जैसन खिनी चान्दक रेह ॥ ४ ॥
साजनि की कहब पुरुष काज । कौसल करइते तन्हि नहि लाज ॥ ६ ॥
एहि तह पाप अधिक थिक नारि । जे न गनए पर पुरुषक गारि ॥ ८ ॥
खन एक रङ्ग सङ्ग सब भाति । से से करत जकर जे जाति ॥१०॥
भनइ विद्यापति न कर विराम । अवसर पाए पुर तुअ काम ॥१२॥

—०:—

राधा ।

५६६

ए धनि रङ्गिनि कि कहब तोय । आजुक कौतुक कहल न होय ॥ २ ॥
एकलि सुतल छलि कुसुम शयान । दोसर मनमथ करे फुलवान ॥ ४ ॥
नूपुर झुनु झनु आओल कान । कौतुके मूदि हम रहल नयान ॥ ६ ॥
आओल कान्हु वैसल मझु पाश । पास मोड़ि हम लुकाओल हास ॥ ८ ॥

कुन्तल कुसुम दाम हरि लेल । वारिहा माल पुनहि मोहि देल ॥१०॥
नासा मोतिम गीमक हार । जतने उतारल कत परकार ॥१२॥
कञ्चुक फुगइते पहु भेल भोर । जागल मनमथ वान्धल चोर ॥१४॥
भनइ विद्यापति एहु रस भान । तुहु रसिका पहु रसिक सुजान ॥१६॥

—·०·—

सखी ।

५७०

हरि धरु हार चेडाकि परु राधा । आध माधव कर गिम रहु आधा ॥ २ ॥
कपट कोपें धनि दिठि धरु फेरी । हरि हसि रहल वदन विधु हेरी ॥ ४ ॥
मधुरिम हास गुपुत नहि भेला । तखने सुमुखि मुख चुम्बन देला ॥ ६ ॥
करे धरु कुच आकुल भेलि नारी । निरखि अधर मधु पिवए मुरारी ॥ ८ ॥
चिकुरे चमरे झरु कुसुमक धारा । पिविकहु तम जानि वम नव तारा ॥१०॥
विद्यापति कह सुन्दर वानी । हरि हसि मिललि राधिका रानी ॥१२॥

—०—

राधा ।

५७१

पहिलहि परसए करे कुचकुम्भ । अधर पिवएके कर आरम्भ ॥ २ ॥
तखनुक मदन पुलके भरि पूज । नीवीवन्ध विनु फोएले फूज ॥ ४ ॥
ए सखी लाजे कहब की तोहि । काहुक कथा पुछह जनु मोहि ॥ ६ ॥
धम्मिल भार हार अरुझाव । पीन पयोधर नख खत लाव ॥ ८ ॥
वाहु वलय ऑकम भरे भाङ्ग । अपन आइति महि अपना आङ्ग ॥१०॥

—०—

राधा ।

५७२

पहिलाहि सरस पयोधर कुम्भ । आरति कत न करए परिरम्भ ॥ २ ॥
अधर सुधारस दरसए लोभ । राङ्कक हाथ रतन नहि सोभ ॥ ४ ॥
सजनि कि कहब कहइते लाज । काहुक आइति पललुह आज ॥ ६ ॥
नीवि ससरि कतए दहु गेलि । अपनाहु आङ्ग अनाइति भेलि ॥ ८ ॥
करतल तले धरिअ कुच गोए । पड़ले तलित झापि नाहि होए ॥१०॥
भनइ विद्यापति न कर सन्देह । मधुतह सुन्दरि मधुर सिनेह ॥१२॥

—.०.—

सखी ।

५७३

सघने आलिङ्गन करु कत छन्द । जनि घन दामिनि लागल दन्द ॥ २ ॥
बदने बदन धरु मनमथ फन्द । किये एक ठामे बान्धल युगल चन्द ॥ ४ ॥
घेरि रहल कच तिमिर वियार । जनि रण जीत उदय परचार ॥ ६ ॥
रागी अधर उरज अति चण्ड । लागल ए वदन खण्डन दण्ड ॥ ८ ॥
मदन महोदधि उछल हिलोर । जनि निधि युगल करत झकझोर ॥१०॥
श्रम जले पूरित दुहु भेल एक । जनि रतिमङ्गल जय अभिसेक ॥१२॥
कुच पर विदगध पानि विराज । कनक कलसे जनि किशलय साज ॥१४॥
सब कानन भरि परिमल भान । अलिकुल दुहु जन गुनगान ॥१६॥

—.०.—

राधा ।

५७४

पालङ्के शयन घूमे अचेतन
दीघल बहय श्वास ।
दीप कर लइ लुबुध माधव आओल हमर पास ॥२॥
सखि हे कहुसे ऐसन ढीठ ।
हरपे परशे अधिक लालसे
विषम तकर दीठ ॥४॥
जागइव डरे लहु लहु करे
बसन कयल दूरे ।
कनक गागरि वेकत निहारि
निज मनोरथ पूर ॥६॥
दीपक छुटाय झटिते जागल
भरमे कहलों चोर ।
डरे चोर पासे अन्धारे पइसल
से मोरे कयल कोर ॥८॥
हासिक रभसे बाँधि भुजपाशे
विलसे अधिक सुख ।
चम्पति पति वेकत कहय
चोरक निलज मुख ॥१०॥

राधा ।

५७२

पहिलहि सरस पयोधर कुम्भ । आरति कत न करए परिरम्भ ॥ २ ॥
अधर सुधारस दरसए लोभ । राङ्कक हाथ रतन नहि सोभ ॥ ४ ॥
सजनि कि कहब कहइते लाज । काह्नुक आइति पललुह आज ॥ ६ ॥
नीवि ससरि कतए दहु गेलि । अपनाहु आङ्ग अनाइति भेलि ॥ ८ ॥
करतल तले धरिअ कुच गोए । पड़ले तलित झापि नहि होए ॥१०॥
भनइ विद्यापति न कर सन्देह । मधुतह सुन्दरि मधुर सिनेह ॥१२॥

——:o:——

सखी ।

५७३

सघने आलिङ्गन करु कत छन्द । जनि घन दामिनि लागल दन्द ॥ २ ॥
बदने बदन धरु मनमथ फान्द । किये एक ठामे बान्धल युगल चन्द ॥ ४ ॥
घेरि रहल कच तिमिर विथार । जनि रण जीत उदय परचार ॥ ६ ॥
रागी अधर उरज अति चण्ड । लागल ए बदन खण्डन दण्ड ॥ ८ ॥
मदन महोदधि उछल हिलोर । जनि निधि युगल करत झकझोर ॥१०॥
श्रम जले पूरित दुहु भेल एक । जनि रतिमङ्गल जय अभिसेक ॥१२॥
कुच पर विदगध पानि विराज । कनक कलसे जनि किशलय साज ॥१४॥
सब कानन भरि परिमल भान । अलिकुल दुहु जन गुनगान ॥१६॥

——.o.——

राधा ।

५७४

पालङ्के शयन घूमे अचेतन
दीघल वहय शास ।
दीप कर लइ लुबुध माधव आओल हमर पास ॥२॥
सखि हे कहुसे ऐसन ढीठ ।
हरपे परशे अधिक लालसे
विपम तकर दीठ ॥४॥
जागइव डरे लहु लहु करे
बसन कयल दूरे ।
कनक गागरि वेकत निहारि
निज मनोरथ पूर ॥६॥
दीपक छूटाय झटिते जागल
भरमे कहलों चोर ।
डरे चोर पासे अन्धारे पइसल
से मोरे कयल कोर ॥८॥
हासिक रभसे बाँधि भुजपाशे
विलसे अधिक सुख ।
चम्पति पति वेकत कहय
चोरक निलज मुख ॥१०॥

—o—

राधा ।

५७५

चुम्बने लुबुध मुख अलखित भास । धरल चान्द चकोरक पास ॥ २ ॥
प्रिय मुख झाँपल कुन्तल भार । चान्द अगोरल धन अन्धियार ॥ ४ ॥
की कहब हे सखि रजनिक काज । कामहि कामे लजायल लाज ॥ ६ ॥
सहजहि माधव नव नव प्रेम । हाथिक दराड जड़ाओल हेम ॥ ८ ॥
निविड़ आलिङ्गन विगलित सेद । श्याम अरु गौर रेख रहु भेद ॥१०॥

—:०:—

माधव ।

२७६

अपरुब रूपक धामा । तीनि भुवन जिनि विहि विहु रामा ॥ २ ॥
शीलक शितल सोभावे । जेहन रहिय तेहन सोहावे ॥ ४ ॥
मधुर वचन मुख सीची । विहुस पसर जनि अमियक वीचि ॥ ६ ॥
हेरइते हरए पराने । परसन मनें परिरम्भन दाने ॥ ८ ॥
कि कहब रतिरङ्ग रीती । निरवधि बढ़लि बाढ़ पिरीती ॥१०॥
विद्यापति कवि गावे । पुने गुनमत गुनमति धनि पावे ॥१२॥

—·०·—

सखी ।

५७७

दूरहि उरु रहल गहि ठाम । चरने पाओल थल कमल उपाम ॥ २ ॥
खेद विन्दु परिपूरल देह । मोतिम फरलि सौदामिनि रेह ॥ ४ ॥
सङ्केत निकेत मुरारि निहारि । अपनि अधीनि रहलि नहि नारि ॥ ६ ॥

पुलकित भेल पयोधर गोर । दगध मदन पुन आँकुर तोर ॥ ८ ॥
वजइत वचने भेल स्वरभङ्ग । कदली दल जकाँ काँपय अङ्ग ॥१०॥
विद्यापति कविवर एह गाव । सकल अधिक भेल मनमथ भाव ॥१२॥

—.०—

सखी ।

५७८

कह कह सुन्दरी रजनी विलास । कैसे नाह पूरल तुय आश ॥ २ ॥
कतहु जतने विहि करि अनुमान । नायर नायरी करल निरमान ॥ ४ ॥
अखिल भुवन माह तुहु वर नारि । सुपुरुष नाह तोहे मिलल मुरारि ॥ ६ ॥

(राधा का उत्तर)

पियाक पिरीति हम कहइ न पार । लाख वयान विहि न देल हमार ॥ ८ ॥
करे धरि पिया मोर बैठाओल कोर । सुगन्धि चन्दने तनु लेपल मोर ॥१०॥
आपन मालति माला हियसे उतारि । कण्ठे पहिराओल जतने हमारि ॥१२॥
फुयल कवरी बान्धइ अनुपाम । ताहे वेढ़ल चम्पक दाम ॥१४॥
मधुर मधुर दिठी हेरय वयान । आनन्द जले परिपूरल नयान ॥१६॥
भनइ विद्यापति इह परसङ्ग । धनी भुलल कहइते रजनीक रङ्ग ॥१८॥

—.०.—

राधा ।

५७६

कनक धराधर गोर पयोधर
नागर आपल पानी ।

सेद सलिल विन्दु पुरल वदन इन्दु
बजइते गद गदि वानी ॥२॥
कि आरे कि कहब कौतुक आजे।
पुलकित तनु सहि चरन चलए नाहि
हेरितहि हरलनि लाजे ॥४॥
हृदय हृदय दए पहु निरदए भए
दिढ़ परिरम्भन देला।
ससरु कसनि डोर हार टुटल मोर
के जाने केहन मन भेला ॥६॥
जखने विहसि वधु हेरि वदन विधु
कयल अधर मधु पाने।
तखने भेलिहुँ सुधि कवि विद्यापति बुधि
श्री शिवसिंह रस जाने ॥८॥

—:०.—

राधा।

५८०

सॉझक वेरा जमुनाक तीरा
कदम्बेरि वन तरु तरा ॥१॥
अङ्कमि कानरा कि कहब समरा
सोझहि जूझल साखि कुसुमसरा ॥२॥
मोहि भेटल काहू। अनतए कहिनी कहह जनू ॥३॥

उर चिर हरी करे कच धरी
अधर पिवए मुख हेरी ॥४॥
पुनु पुनु भोरा परस कुच मोरा
निधने पाओल जनि कनय कटोरा ॥५॥
अरे जुवती बुझसि जुगुती
दोसरें मधुप मधुरपती ॥६॥
तोरे अनुमाने बिद्यापति भाने
राए सिवसिंह लखिमा देइ रमाने ॥७॥

सखी ।

५८१

कह कह सखि निकुञ्ज मन्दिरे आजु कि होयल धन्द ।
चपले झाँपल जनि जलधर नील उतपल चन्द ॥२॥
फणी मणिवर उगरे निरखि शिखिनी आनत गेल ।
सुमेरु उपरे सुरतरङ्गिनी केवल तरल भेल ॥४॥
किङ्किनी कङ्कन करु कलरव नूपुर अधिक ताहे ।
सुकाम नटने तुरि जति कहु ऐसन सकल शोहे ॥६॥
न कर गोपन निज परिजन इह बुझि अनुमान ।
विद्यापति कृत कृपाय ताहारे के न जान इह गान ॥८॥

राधा ।

५८२

आजु मझु सरस भरम रहु दूर । अपन मनोरथ से परिपूर ॥ २ ॥
कि कहब हे सखि कहइत हास । सब विपरीत भेल आजुक विलास ॥ ४ ॥
जलधर उलटि पड़ल महीमाझ । उयल चारु धराधर राज ॥ ६ ॥
मरकत दरपन हेरइत हाम । उच नीच न बुझि पड़लों सोइ ठाम ॥ ८ ॥
पुन अनुमानिये नागर कान । तकर वचने भेल समधान ॥१०॥
निवासे वास पुन देयल सोइ । लाजे रहलों हिये आनन गोइ ॥१२॥
सोइ रसिकवर कोरे अगोरि । आँचरे श्रमजल पोछल मोरि ॥१४॥
मृदु मृदु विजइत घुमल हाम । भनइ विद्यापति रस अनुपाम ॥१६॥

—:o:—

राधा ।

५८३

कि कहब ए सखि केलि विलासे । विपरित सुरत नाह अभिलासे ॥ २ ॥
कुचजुग चारु धराधर जानी । हृदय परत तें पहु देल पानी ॥ २ ॥
मातलि मनमथें दुर गेल लाजे । अविरल किङ्किनि, कङ्कन वाजे ॥ ६ ॥
धाम विन्दु मुख सुन्दर जोती । कनक कमल जनि फरि गेलि मोती ॥ ८ ॥
कहहि न पारिअ पिय मुख भासा । समुहु निहारि दुहु मने हासा ॥१०॥
भनइ विद्यापति रसमय वानी । नागरि रम पिय अभिमत जानी ॥१२॥

—.o—

सखी ।

५८४

आकुल चिकुरे वेढ़ल मुख सोभ । राहु करल ससिमण्डल लोभ ॥ २ ॥
बड़ अपुरुब दुइ चेतन मेलि । विपरित रति कामिनि कर केलि ॥ ४ ॥
कुच विपरीत विलम्बित हार । कनक कलस वम दूधक धार ॥ ६ ॥
पिअ मुख सुमुखि चुम्ब तेजि ओज । चान्द अधोमुख पिवए सरोज ॥ ८ ॥
किङ्किनि रटित नितम्बिनि छाज । मदन महारय वाजन वाज ॥१०॥
फूजल चिकुर माल धर रङ्ग । जनि जमुना मिलु गङ्ग तरङ्ग ॥१२॥
वदन सोहाओन स्नम जल विन्दु । मदने मोति लए पूजल इन्दु ॥१४॥
भनइ विद्यापति रसमय वानी । नागरी रम पिय अभिमत जानी ॥१६॥

—— ० ——

माधव ।

५८५

विगलित चिकुर मिलित मुखमण्डल चाँदे वेढ़ल घनमाला ।
मणिमय कुण्डल स्रवने दुलित भेल घामे तिलक वहि गेला ॥२॥
सुन्दरि तुय मुख मङ्गलदाता ।
रति विपरीत समर यदि राखवि कि करव हरि हर धाता ॥४॥
किङ्किनि किनि किनि कङ्कन कन कन घन घन नूपुर बाजे ।
रतिरणे मदन पराभव मानल जय जय डिण्डिम बाजे ॥६॥
तिले एकु जघन सघन रव करइते होयल सैनक भङ्ग ।
विद्यापति कवि ओ रस गायत जामुन मिलल गङ्ग तरङ्ग ॥८॥

——०——

राधा ।

५८६

सखि हे कि कहब किछु नहि फूरे ।
सपन कि परतेक कहय न पारिय किय नियर किय दूरे ॥२॥
तड़ित लतातल जलद समारल आँतर सुरसरि धारा ।
तरल तिमिर शशि सूर गरासल चौदिश खसि पड़ु तारा ॥४॥
अम्बर खसल धराधर उलटल धरणी डगमग डोले ।
खरतर वेग समीरन सञ्चरु चञ्चरिगण करु रोले ॥६॥
प्रणय पयोधि जले तन झाँपल ई नहि युग अवसाने ।
के विपरीत कथा पतियाएत कवि विद्यापति भाने ॥८॥

—:०:—

सखी ।

५८७

उदसल कुन्तल भारा । मुरुति सिङ्गार लखिमि अवतारा ॥ २ ॥
अतिशय प्रेम विकारा । कामिनि करतहि पुरुख वेहारा ॥ ४ ॥
डोलत मोतिम हारा । जामुन जल जैसे दुधक धारा ॥ ६ ॥
कङ्कन किङ्किनि वाजे । जय जय डिडिमडिम मदन समाजे ॥ ८ ॥
रसिक शिरोमनि कान । कविरञ्जन · रस गान ॥१०॥

—०—

सखी ।

५८८

केस कुसुम छिरिआएल फूजि । ताराएँ तिमिर छाड़ि हलु पूजि ॥२॥
हेरि पयोधर मनसिज आधि । सम्भु अधोगति धए समाधि ॥४॥

विपरित रमन रमए वरनारि । रति रस लालसे मुगुध मुरारि ॥६॥
चुम्बने करए कलामति केलि । लोचन नाह निमिलित हेरि ॥८॥
ता दुहु रूप ताहि परथाव । उदय वान दुहु जैसन सभाव ॥१०॥

—:०:—

राधा ।

५८६

बसन हरइते लाज दुर गेल । पिआक कलेवर अम्बर भेल ॥ २ ॥
अओधे मुहे निहारिए दीव । मुक्ला कमल भमर मधु पीव ॥ ४ ॥
मनमथ चातक नहिं लजाए । वड़ उनमतिआ अवसर पाए ॥ ६ ॥
से सवे सुमरि मनहु की लाज । जत सवे विपरित तहि कर काज ॥ ८ ॥
हृदयक धाधस धसमस मोहि । आओर कहव कि कहिली तोहि ॥१०॥

—:०:—

सखी ।

५६०

बदन झपावए अलकक भार । चान्दमडल जनि मिलए अन्धार ॥ २ ॥
लम्बित सोभए हार विलोल । मुदित मनोभव खेल हिंडोल ॥ ४ ॥
पिअतम अभिमत मने अवधारि । रति विपरित रतलि वर नारि ॥ ६ ॥
माल किङ्किनि कर मधुरि बाज । जनि जएतुर मनोभव राज ॥ ८ ॥
रभसे निहारि अधर मधु पीव । नाओी कुसुमसर आकट जीव ॥१०॥

— ० —

सखी ।

५६१

देख सखि रसिक युगल रस रङ्ग ।
अम्बर विनहि किये घन दामिनी रहत परस्पर सङ्ग ॥२॥
राधा वदन मधुर मधु माधव मुख चपक भरि रिझ ।
विनहि सरोवर कमल फुलल किये चन्द्र रसे रहु भिज ॥४॥
उरज उतङ्क कुम्भ परिहरि उर राजत अद्भुत रीत ।
बिनहि धरा किये कनक धराधर नमित जलद भरे भीत ॥६॥
कुन्द वदन किये मदन निशित शर बिम्ब अधर पर लागे ।
दाड़िम्ब विनहि बीज दाड़िम्ब फुल वेसाहत वल्लभ आगे ॥८॥

—.०.—

सखी ।

५६२

गौर देह सुधारस सुवदनि श्याम सुन्दर नाह रे ।
जलद उपर तड़ित सञ्चरु सरूप ऐसन आह रे ॥२॥
पीठि पर घन श्याम वेनी निरखि ऐसन भान रे ।
जनि अजर हाटक पाति कर गहि लिखन लेखु पॉच बान रे ॥४॥
खन न थिर रहु सघन सञ्चरु मनिक मेखल राव रे ।
मयन राय दोहाइ कह कह जघन रस ॥
रयनी वरु अवसान मानिये केलि नह
रसिक यदुपति रमणि राधा सिंह भूपति

सखी ।

५६३

रयनि समापलि रहलिछ थोर । रमनि रमन रति रस नहि ओर ॥ २ ॥
नागर निरखि सुमुखि मुख चुम्ब । जनि सरसिज मधु पिब विधुविम्ब ॥ ४ ॥
दृढ़ परिरम्भने पुलकित देह । जनि अँकुरल पुन दुहुक सनेह ॥ ६ ॥
धनि रसमगनी रसिक रसधाम । जनि विलसइ अभिनव रतिकाम ॥ ८ ॥
कि कहब अपरूब दुहुक समाज । दुयओ दुहुक कर अभिमत काज ॥१०॥
विद्यापति कह रस नहि अन्त । गुनमति जुवती कलामय कन्त ॥१२॥

सखी ।

५६४

हरि उर पर सूतलि वाला । कालिन्दि पुजल जैसे चम्पक माला ॥२॥
कानु धयल धनि भुज जुग माझ । कमले वेढ़ल जैसे मधुकर साज ॥४॥
रति रस अलसे दुहु तनु भोरि । भेद रहल किए साम किसोरि ॥६॥
कह कविशेखर दुहु गुन जानि । दुहु दुहु मिलल दुहु मन मानि ॥८॥

राधा ।

५६५

तरुअर वलि धर डारे जाँति । सखि गाढ आलिङ्गन तेहि भाँति ॥ २ ॥
मञे नीन्दे निन्दारधि करओ काह । सगरि रयनि कान्हु केलि चाह ॥ ४ ॥
मालति रस विलसए भमर जान । तेहि भाति कर अधर पान ॥ ६ ॥

कानन फुलि गेल कुन्द फुल। मालति मधु मधुकर पए भूल ॥८॥
परिठवइ सरस कवि कण्ठहार। मधुसूदन राधा वन विहार ॥१०॥

सखी।

५६६

दुहुक संजुत चिकुर फूजल। दुहुक दुहु बलाबल बूझल ॥२॥
दुहुक अधर दशन लागल। दुहुक मदन चौगुन जागल ॥४॥
दुअओ अधर करए पान। दुहुक कण्ठ आलिङ्गन दान ॥६॥
दुअओ केलि समे समे फेली। सुरत सुखे विभावरि गेली ॥८॥
दुअओ सअन चेत न चीर। दुअओ पिआसल पीवए नीर ॥१०॥
भने विद्यापति संसअ गेल। दुहुके मदने लिखन देल ॥१२॥

सखी।

५६७

भरि नायर कोर। विलसइ राही सुखक नहि ओर ॥२॥
धनि रङ्गिनि राही। विलसइ हरि सञे रस अवगाही ॥४॥
हरि मानस साधा। विलसइ श्याम पराजित राधा ॥६॥
हरि सुन्दर मुखे। ताम्बुल देइ चुम्बइ निज सुखे ॥८॥
धनि रङ्गिनि भोर। भुलल गरवे कह करि कोर ॥१०॥
दुहू दुहू गुन गाय। एकइ मुरलि
केहो कह मृदु भाष। नागरि प

केहो काढ़ि लय वेनु । रास रसे आजु भुजल काहु ॥१६॥
विद्यापति कवि भास । कहतहि हेरत गोविन्द दास ॥१८॥

—o—

सखी ।

५६८

निन्दे निन्दायलि वाला । निशि वासर जागइत भै गेल दुवला ॥ २ ॥
तड़ित लतावलि रामा । रतिरण छरमे भरमे भेल शामा ॥ ४ ॥
अलसहि अङ्ग अधीर । सम्वरण नहि करे पीतम चीर ॥ ६ ॥
मन सिधि साधलि राधा । आओल अलखिते न पड़लि बाधा ॥ ८ ॥
कह कविशेखर राय । धरम सरम लागि ओ रस निभाय ॥१०॥

—o—

सखी ।

५६६

दुहु मुख सुन्दर कि देव उपाम । कुवलय चाँद मिलल एक ठाम ॥ २ ॥
सामर नागर नागरि गोरि । नीलमणि काञ्चने लागल जोरि ॥ ४ ॥
निविड़ आलिङ्गन पिरीति रसाल । कनकलता जैसे वेढ़ल तमाल ॥ ६ ॥
राही पयोधरे प्रिय कर साज । कुवलय शम्भू पुजल कामराज ॥ ८ ॥
कविशेखर कह नयन हुलासे । नव घने थिर विजुरि परगासे ॥१०॥

—,—

राधा ।

६००

सामर पुरुसा मझु घर पाहुन रङ्गे विभावरि गेली ।
काचा सिरिधल नख मुति लओलाह्नि केसु पखुरिया भेली ॥२॥
से पिआ दए गेल केसु पखुरिआ धरय न पारल मोञे रे ॥३॥
सासि नव छन्दे अनुरागक आँकुर धएल मोञे आँचरे गोइ ॥४॥
काजरे कार सखीजन लोचन दीठिहु मलिन जनु होइ ॥५॥
नूतन नेह ससारक सीमा उपचित कइसनि चोरी ।
व्याध कुसुम सर सञो विघटाउलि रङ्ग कुरङ्गिनि मोरी ॥७॥
चारि भावे हमे भरमलि अछलाह समदि न भेले मोहि सेवा ।
कान्हु रूप सिरि सिवसिंह आएल कवि अभिनव जअदेवा ॥६॥

वसन्त ।

कवि ।

६०१

माघ मास सिरि पञ्चमि गजाइलि नवए मास पञ्चमहु रुआइ ।
अति घन पीड़ा दुख बड़ पाओल वनसपती भेलि धाइ हे ॥२॥
सुभखन वेरा सुकलपख हे दिनकर उदित समाइ ।
सोरह संपुनें वतिस लखनें जनम लेल रितुराइ हे ॥४॥
नाचए जुवतिगण हरषित जनम लेल वाल मधाइ हे ।
मधुर महारस मङ्गल गावंए मानिनि मान उडार हे ॥६॥
वह मलयानिल ओत उचित हे नव घन भउ उजियारा ।
माधवि फुल भल गजमुकुता तुल ते देल वन्द नेवारा ॥८॥

पीअरि पॉडरि महुअरि गावए काहरकार धथूरा ।
नागेसर कलि संख धूनि पुर तकर ताल समतूला ॥१०॥
मधु लए मधुकरे बालक दय हलु कमल पखुरिया फुलाइ ।
पौंअनाल तोरि करि सुत बॉधल केसु कइलि वघनाही ॥१२॥
नव नव पल्लव सेज ओछाओल सिर दहु कदम्बेरि माला ।
वैसलि भमरी हर उदगारए चक्का चन्द निहारा ॥१४॥
कनए केसुआ सुति पत्र लिखिए हलु रासि नछत्र कए लोला ।
कोकिल गणित गुणित भल जानए रितु वसन्त नाम थोला ॥१६॥
वाल वसन्त तरुण भए धाओल वढए सकल ससारा ॥१७॥
दखिन पवन घन आङ्ग उगारए किसलय कुसुम परागे ।
सुललित हार मजरि घन कज्जल अखितौं अञ्जन लागे ॥१९॥
नव वसन्त रितु अनुसर जौवति विद्यापति कवि गाया ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन सकल कला मन भाया ॥२२॥

—०—

सखी ।

६०२

नाचहु रे तरुनि तेजहु लाज । आएल वसन्त रितु वणिक राज ॥ २ ॥
हस्तिनि चित्रिनि पदुमिनि नारि । गोरि सामरि एक बुढ़ि वारि ॥ ४ ॥
विविध भॉति कएलन्हि सिङ्गार । परिहन पटोर गिम फुल हार ॥ ६ ॥
केउ अगर चन्दन घसि भर कटोर । ककरहु खोजीछा कपुर तवोॅर ॥ ८ ॥
केओ कुङ्कुम मरदाव ऑग । ककरहु मोतिआ भल छाज माग ॥१०॥

—०—

सखी ।

६०३

मलयानिले साहर डार डोल । कल कोकिल रव मञ्जन बोल ॥ २ ॥
हेमन्त हरन्ता दुहुक मान । भमि भमर करए मकरन्द पान ॥ ४ ॥
रङ्गु लागए रितु वसन्त । सानन्दित तरुणी अवरु कन्त ॥ ६ ॥
सारङ्गिनि कउतुके काम केलि । माधव नागरि जन मेलि मेलि ॥ ८ ॥

—— o ——

सखी ।

६०४

चल देखने जाउ रितु वसन्त । जहाँ कुन्द कुसुम केतकि हसन्त ॥ २ ॥
जहाँ चन्दा निरमल भमर कार । रयनि उजागरि दिन अन्धार ॥ ४ ॥
मुगुधलि भामिनि करए मान । परिपन्तिहि पेखए पञ्चवान ॥ ६ ॥
भनइ सरस कवि कण्ठहार । मधुसूधन राधा वन विहार ॥ ८ ॥

—— o ——

सखी ।

६०५

आएल ऋतुपति राज वसन्त । धाओल अलिकुल माधवि पन्थ ॥ २ ॥
दिनकर किरण भेल पय गण्ड । केशरकुसुम धयल हेमदण्ड ॥ ४ ॥
नृप आसन नव पीठलपात । कञ्चन कुसुम छत्र धरु माथ ॥ ६ ॥
मौलि रसाल मुकुल भेल ताय । समुखहि कोकिल पञ्चम गाय ॥ ८ ॥

शिखिकुल नाचत अलिकुल जन्त्र । आन द्विजकुल पढ़ आशीषमन्त्र ॥१०॥
चन्द्रातप उड़े कुसुमपराग । मलय पवन सह भेल अनुराग ॥१२॥
कुन्दवल्ली तरु धरल निशान । पाटल तूण अशोकदल बान ॥१४॥
किंशुक लवङ्गलता एक सङ्ग । हेरि शिशिर ऋतु आगे देल भङ्ग ॥१६॥
सैन्य साजल मधुमाक्षिककुल । शिशिरक सबहु कयल निरमूल ॥१८॥
उधारल सरसिज पाओल प्राण । निज नव दले करु आसन दान ॥२०॥
नववृन्दावन राज्ये विहार । विद्यापति कह समयक सार ॥२२॥

—.०:—

कवि ।

६०६

नव वृन्दावन नव नव तरुगण नव नव विकसित फुल ।
नवल वसन्त नवल मलयानिल मातल नव अलिकुल ॥२॥
विहरइ नवल किशोर ।
कालिन्दि पुलिन कुञ्जवन शोभन नव नव प्रेम विभोर ॥४॥
नवल रसाल मुकुल मधु माति नव कोकिलकुल गाय ।
नव युवतीगण चित उमतायइ नव रसे काननें धाय ॥६॥
नव युवराज नवल नव नागरी मिलये नव नव भाँति ।
निति निति ऐसन नव नव खेलन विद्यापति मति माति ॥८॥

— ० —

कवि ।

६०७

मधुऋतु मधुकर पाँति । मधुर कुसुम मधुमाति ॥ २ ॥
मधुर वृन्दावन माझ । मधुर मधुर रसराज ॥ ४ ॥

मधुर युवतीगण सङ्ग । मधुर मधुर रसरङ्ग ॥६॥
मधुर मादल रसाल । मधुर मधुर करताल ॥८॥
मधुर नटन गति भङ्ग । मधुर नटनी नटरङ्ग ॥१०॥
मधुर मधुर रसगान । मधुर विद्यापति भान ॥१२॥

—— ० ——

सखा ।

६०८

आएल वसन्त सकल रसमण्डल कुसुम भेल सानन्द ।
फुलति मल्ली भूखल भ्रमरा पीवि गेल मकरन्द ॥२॥
भाविनि आवे कि करह समधाने ।
नहि नहि कए परिजन परवोधह लखन देखिय आवे आने ॥४॥
नख पद केसु पयोधर पूजल परतख भए गेल लोते ।
सुमेरु शिखर चढ़ि ऊगल ससधर दह दिस भेल उजोते ॥६॥
विनु कारने कुण्डल कैसे आकुल एहओ जुगति नहि ओछी ।
कुमकुमकेर चोरि भलि फाउलि कॉध न भेलिए पोछी ॥८॥
भनइ विद्यापति अरे वर जौवति एहु परतख पॅचवाने ।
राजा सिवसिंह रूप नरायन लखिमा देवि रमाने ॥१०॥

—— ० ——

सखी ।

६०९

अभिनव कोमल सुन्दर पात । सवारे वने जनि परिहल रात ॥२॥
मलय पवन डोलय वहु भांति । अपने कुसुम रसे अपने माति ॥४॥

देखि देखि माधव मने उलसन्त । विरिदावन भेल वेकत वसन्त ॥६॥
कोकिल बोलए साहर भार । मदने पाओल जग नव अधिकार ॥८॥
पाइक मधुकर कर मधु पान । भमि भमि जोहए मानिनि जन मान ॥१०॥
दिसि दिसि से भमि विपिन निहारि । रास बुझाय मुदित मुरारि ॥१२॥
भनइ विद्यापति इ रस गाव । राधा माधव अभिनव भाव ॥१४॥

—:०:—

सखी ।

६१०

लता तरुअर मण्डप जीति । निरमल शशधर धवलिय भीति ॥ २ ॥
पँउम नाल अइपन भल भेल । रात परीहन पल्लव देल ॥ ४ ॥
देखह माइहे मनचित लाय । वसन्त विवाह कानने थलि आय ॥ ६ ॥
मधुकर रमणी मङ्गल गाव । दुजवर कोकिल मन्त्र पढ़ाव ॥ ८ ॥
करु मकरन्द हथोदक नीर । विधु वरियाती धीर समीर ॥१०॥
कनय केसुया सुति तोरण तूल । लावा विथरल वेलिक फुल ॥१२॥
केशु कुसुम करु सींदुर दान । जउतुक पाओल मानिनि मान ॥१४॥
खेलए कउतुक नव पचवान । विद्यापति कवि दृढ़ कय भान ॥१६॥
अभिनव नागर बुझय वसन्त । भति महेश रेनुक देवि कन्त ॥१८॥

—:०:—

कवि

६११

वाजत द्रिगि द्रिगि धोद्रिम द्रिमिया ।
नटति कलावती श्याम सङ्गे माति करे करु ताल प्रबन्धक धनिया ॥२॥

डम मग डम्फ डिमिकि डिमि मादल रुणु झुनु मञ्जीर बोल ।
किङ्किणी रणरणि वलया कनकनि निधुवने रास तुमुल उतरोल ॥४॥
वीणा रवाव मुरज स्वरमण्डल सा रि ग म प ध नि स बहुविध भाव ।
घेंटिता घेंटिता घेनि मृदङ्ग गरजनि चञ्चल स्वरमण्डल करु राव ॥६॥
श्रमभरे गलित लोलित कवरियुत मालति माल विथारल मोति ।
समय वसन्त रास रस वर्णने विद्यापति मति क्षोभित होति ॥८॥

—:०:—

कवि ।

६१२

ऋतुपति राति रसिक वरराज । रसमय रास रभस रसमाझ ॥ २ ॥
रसवति रमणीरतन धनि राहि । रास रसिक सह रस अवगाहि ॥ ४ ॥
रङ्गिनिगण सब रङ्गहि नटइ । रणरणि कङ्कन किङ्किनि रटइ ॥ ६ ॥
रहि रहि रास रचय रसवन्त । रतिरत रागिनी रमन वसन्त ॥ ८ ॥
रटति रवाब महतिक पिनाश । राधारमण करु मुरलि विलास ॥१०॥
रसमय विद्यापति कवि भान । रूपनारायण भूपति जान ॥१२॥

—:०:—

कवि ।

६१३

मलय पवन वह । वसन्त विजय कह ॥ २ ॥
भमर करइ रोल । परिमल नहि ओल ॥ ४ ॥
ऋतुपति रङ्ग देला । हृदय रभस भेला ॥ ६ ॥
अनङ्ग मङ्गल मेलि । कामिनि करथु केलि ॥ ८ ॥

तरुन तरुनि सङ्गे। रइनि खेपवि रङ्गे ॥१०॥
विरहि विपद लागि। केसु उपजल आगि॥१२॥
कवि विद्यापति भान। मानिनी जिवन जान॥१४॥
नृप रुद्रसिंह वरु। मेदिनी कलप तरु॥१६॥

—o—

सखी।

६१४

अभिनव पल्लव वइसक देल। धवल कमल फुल पुरहर भेल ॥२॥
करु मकरन्द मन्दाकिनि पानि। अरुण अशोग दीप दिहु आनि ॥ ४ ॥
माइ हे आज दिवस पुनमन्त। करिय चुमाओन राए वसन्त ॥ ६ ॥
सपुन सुधानिध दधि भल भेल। भमि भमि भमरइ हकारइ देल ॥ ८ ॥
केसु कुसुम सीदूर सम भास। केतकि धूलि विथुरलहु परवास ॥१०॥
भनइ विद्यापति कवि कण्ठहार। रस बुझ शिवसिंह शिव अवतार ॥१२॥

—o—

सखी।

६१५

दखिन पवन वह दश दिश रोल। से जनि वादी भासा बोल ॥ २ ॥
मनमथ कोँ साधन नहि आन। निरसावल से मानिनि मान ॥ ४ ॥
माइ हे शीत वसन्त विवाद। कवने विचारव जय अवसाद ॥ ६ ॥
दुहु दिश मधय दिवाकर भेल। दुजवर कोकिल साखिता देल ॥ ८ ॥
नवपल्लव जयपत्रस भाति। मधुकर माला आखर पाति ॥१०॥
वादी तह प्रतिवादी भीत। शिशिर विन्दु हो अन्तर शीत ॥१२॥

तवहु जे गोपसि कि कहव तोय । वजर निवारन करतल दोय ॥ ६ ॥
पाओल हे सखि मौनके ओर । पिया परदश चलव मोहे छोरे ॥ ८ ॥
समय समापन कि फल आर । पेमक समूचित अवहु विचार ॥१०॥

—:०:—

राधा ।

६२५

हरि कि मथुरापुर गेल । आजु गोकुल शून भेल ॥ २ ॥
रोदति पिञ्जर शुके । धेनु धावइ माथुर मुखे ॥ ४ ॥
अव सोइ जमुना कूले । गोप गोपी नहि बुले ॥ ६ ॥
सायरे तेजव परान । आन जनमे होयव कान ॥ ८ ॥
कानु होयव जव राधा । तव जानव विरहक वाधा ॥१०॥
विद्यापति कहु नीत । अव रोदन होय समुचीत ॥१२॥

—०—

राधा ।

६२६

अव मथुरापुर माधव गेल । गोकुल माणिक के हरि लेल ॥ २ ॥
गोकुले उछलल करूणाक रोल । नयनक जले देख वहय हिलोल ॥ ४ ॥
शून भेल मन्दिर शून भेल नगरी । शून भेल दश दिश शून भेल सगरी ॥ ६ ॥
कैसे हम जाओव जमुना तीर । कैसे निहारव कुञ्ज कुटीर ॥ ८ ॥
सहचरि सञो जहाँ कयल फुलवारि । कैसे जीयव ताहि निहारि ॥१०॥
विद्यापति कहे कर अवधान । कौतुके छापि तंहि रहु कान ॥१२

—.०—

राधा ।

६२७

काल्हि कहल पिया ए साँझहिरे जायव मोये मारूअ देश ।
मोये अभागली नहि जानल रे सङ्ग जइतँओ योगिनी वेश ॥२॥
हृदय बड़ दारुन रे पिया बिनु विहरि न जाय ॥३॥
एक शयन सखि शुतल रे अछल बालभु निशि मोर ।
न जानल कति खन तेजि गेलरे विछुरल चकेवा जोर ॥५॥
शून शेज हिय शालय रे पियाए विनु घर मोये आजि ।
विनति करहु सहिलोलिनि रे मोहि देह अगि हर साजि ॥७॥
विद्यापति कवि गाओल रे आवि मिलत पिय तोर ।
लखिमा देइ वर नागर रे राय शिवसिंह नहि भोर ॥६॥

—— ० ——

राधा ।

६२८

धहए घुलिए घुलि भमरि करूना कर आहा दइ आइ की भेज ।
कोर सुतल पिआ आन्तरो न देअ हिया के जाने कओन दिग गेल ॥२॥
अरे कैसे जीउव मञेरे सुमरि बालभु नव नेह ॥३॥
एकहि मन्दिर बसि पिआ न पुछए हसि मोरे लेखे समुदक पार ।
इ दुइ जौवना तरुन लाख लह से आवे परस गमार ॥५॥
पट सुति घुनि घुनि मोति सरि किनि किनि मोरे पियाञे गायल हार ।
लखे लेखि ताहि हम हरवा गायल से आवे तोलत गमार ॥७॥

अरेरे पथिक भइआ समाद लए जइह जाहि देस बस मोर नाह ।
हमर से दुख सुख तह्नि पिआ कहिह सुन्दरि समाइलि वाह ॥६॥
भनइ विद्यापति अरेरे जुवति अबे चिते करह उछाह ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखि देवि वर नाह ॥११॥

—०—

राधा ।

६२६

हमर नागर रहल दुरदेश । केऊ नहि कह सखि कुशल सन्देश ॥२॥
ए सखि काहि करब अपतोस । हमर अभागि पिया नहि दोस ॥४॥
पिया विसरल सखि पुरूब पिरीति । जखन कपाल वाम सब विपरीति ॥६॥
मरमक वेदन मरमहि जान । आनक दुख आन नहि जान ॥८॥
भनइ विद्यापति न पुरल काम । कि करति नागरि जाहि विधि वाम ॥१०॥

—०—

राधा ।

६३०

पिया छल चन्द हम छल देहा । के पापि तोडत ऐसन नेहा ॥२॥
पिया छल खञ्जन हम छल खञ्जनि । के बाँधल पिया मरम नहि जानि ॥४॥
पिया छल साम तरु हम छल लता । के भाङ्गल तरू न बुझि वेबथा ॥६॥
पिया छल कामकला हम छल कामिनि । पिया विनु नहि जाए दिन यामिनि ॥८॥

—०—

राधा ।

६३१

सेओल सामि सब गुन आगर सदय सुदृढ़ नेह ।
तहु सवे सवे रतन पावए निन्दहु मोहि सन्देह ॥२॥
पुरुख बचन हो अवधान ।
ऐसन नहि एहि महिमण्डल जे परवेदन जान ॥४॥
नहि हित मित कोऊ बुझावए लाख कोटी तोहे सामी ।
सवक आसा तोहे पुरावह हम विसरह काञी ॥६॥

—०—

राधा ।

६३२

न जानल कोन दोसे गेलाह विदेस । अनुखने भखइते तनु भेल सेस ॥२॥
बुझहि न पारल निअ अपराध । प्रथमक प्रेम दइवे कए बाध ॥४॥
वेरि एक दइव दाहिन जञो होए । निरधन धन जके धरव मोञे गोए ॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि । धइरज कए रह मिलत मुरारि ॥८॥

—०—

राधा ।

६३३

दारुन कन्त निठुर हिअ सखि रहल विदेस ।
केओ नहि हित मझु सम्बरए जे कहत ऊपदेस ॥२॥
ए सखि हरि परिहरि गेल निज न बुझीय दोस ।
करम विगाति गति माइ हे काहि करवो रोस ॥४॥

अरेरे पथिक भइआ समाद लए जइह जाहि देस बस मोर नाह ।
हमर से दुख सुख तह्नि पिआ कहिह सुन्दरि समाइलि वाह ॥६॥
भनइ विद्यापति अरेरे जुवति अवे चिते करह उछाह ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखि देवि वर नाह ॥११॥

—०—

राधा ।

६२६

हमर नागर रहल दुरदेश । केऊ नहि कह सखि कुशल सन्देश ॥२॥
ए सखि काहि करव अपतोस । हमर अभागि पिया नहि दोस ॥४॥
पिया विसरल सखि पुरुब पिरीति । जखन कपाल वाम सब विपरीति ॥६॥
मरमक वेदन मरमहि जान । आनक दुख आन नहि जान ॥८॥
भनइ विद्यापति न पुरल काम । कि करति नागरि जाहि विधि वाम ॥१०॥

—०—

राधा ।

६३०

पिया छल चन्द हम छल देहा । के पापि तोड़त ऐसन नेहा ॥२॥
पिया छल खञ्जन हम छल खञ्जनि । के बाँधल पिया मरम नहि जानि ॥४॥
पिया छल साम तरु हम छल लता । के भाङ्गल तरू न बुझि वेबथा ॥६॥
पिया छल कामकला हम छल कामिनि । पिया विनु नहि जाए दिन यामिनि ॥८॥

—०—

राधा ।

६३१

सेओल सामि सब गुन आगर सदय सुढ़ढ़ नेह ।
तहु सबे सबे रतन पावए निन्दहु मोहि सन्देह ॥२॥
पुरुख वचन हो अवधान ।
ऐसन नहि एहि महिमण्डल जे परवेदन जान ॥४॥
नहि हित मित कोऊ बुझावए लाख कोटी तोहे सामी ।
सवक आसा तोहे पुरावह हम विसरह काञी ॥६॥

——:o:——

राधा ।

६३२

न जानल कोन दोसे गेलाह विदेस । अनुखने भखइते तनु भेल सेस ॥२॥
बुझहि न पारल निअ अपराध । प्रथमक प्रेम दइबे करु बाध ॥४॥
वेरि एक दइव दाहिन जञो होए । निरधन धन जके धरव मोञे गोए ॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि । धइरज कए रह मिलत मुरारि ॥८॥

——o——

राधा ।

६३३

दारुन कन्त निठुर हिअ सखि रहल विदेस ।
केओ नहि हित मझु सञरए जे कहत उपदेस ॥२॥
ए सखि हरि परिहरि गेल निज न बुझीय दोस ।
करम विगति गति माइ हे काहि करवो रोस ॥४॥

मोहि छल दिने दिने बाढ़त देख हरि सञे नेह ।
आवे निज मने अवधारल पहु कपटक गेह ॥६॥

—:०:—

राधा ।

६३४

नयनक ओत होइते होएत भाने । विरह होएत नहि रहत पराने ॥ २ ॥
से आवे देसान्तर आतर भेला । मनमथ मदन रसातल गेला ॥ ४ ॥
कओन देस बसल रतल कओन नारी । सपने न देखए निठुर मुरारि ॥ ६ ॥
अमृत सिचलि सनि बोललछि बानी । मन पतिआएल मधुरपति जानी ॥ ८ ॥
हम छल दुदुत न जाएत नेहा । दिने दिने बुझलक कपट सिनेहा ॥१०॥

—:०:—

राधा ।

६३५

एहन करम मोर भेल रे । पहु दुरदेस गेल रे ॥२॥
दय गेल वचनक आस रे । हमहु आयव तुय पास रे ॥४॥
कतेक कयल अपराध रे । पहु सञे छुटल समाज रे ॥६॥
कवि विद्यापति भान रे । सुपुरुख न कर निदान रे ॥८॥

—०—

राधा ।

६३६

एत दिन हृदय हरख छल आवे सब दूर गेल रे ।
रॉकक रतन हेड़ाएल जगतेओ सुन भेल रे ॥२॥

विहि निरदय कोने दोसें दहु देल दुख मन मधरे।
मन कर गरल गरासिय पाप आतमवध रे ॥४॥
जीवन लाग मरन सन मरन सोहावन रे।
मोर दुख के पतिआएत सुनह विरहि जन रे ॥६॥
विद्यापति कह सुन्दरि मन धीरज धरु रे।
अचिर मिलत तोर प्रियतम मन-दुख परिहरु रे ॥८॥

—.o:—

राधा।

६३७

कत दिन आस दए धरब हिया। जऊवन काल विदेस रहु पिया ॥ २ ॥
से जव आगे नियर मभु अछला। मन किछु भल मन्द हम नहि गनला ॥ ४ ॥
अब से सब पीरचय भेल। कानु निठुर परीहरि गेल ॥ ६ ॥
एक दिस विषम कुसुमसर। अओकादिस गरुअ गरिम डर ॥ ८ ॥
राखब सिल कओन परि। ऐसन दोस न बुझल हरि ॥१०॥

—'o,—

राधा।

६३८

पुरुब जत अपुरुब भेला। समय वसे सेहओ दुर गेला ॥२॥
काहि निवेदओ कुगत पहु। जे किछु करिअ भुजिअ सेहु ॥४॥
सनहि साजनि धैरज सार। नीरसि कह कवि कराठहार ॥६॥

—:o:—

मोहि छल दिने दिने बाढ़त देख हरि सञे नेह ।
आवे निज मने अवधारल पहु कपटक गेह ॥६॥

——:o:——

राधा ।

६३४

नयनक ओत होइते होएत भाने । विरह होएत नहि रहत पराने ॥ २ ॥
से आवे देसान्तर आतर भेला । मनमथ मदन रसातल गेला ॥ ४ ॥
कओन देस बसल रतल कओन नारी । सपने न देखए निठुर मुरारि ॥ ६ ॥
अमृत सिचलि सनि बोललहि बानी । मन पतिआएल मधुरपति जानी ॥ ८ ॥
हम छल दुटुत न जाएत नेहा । दिने दिने बुझलक कपट सिनेहा ॥१०॥

——:o:——

राधा ।

६३५

एहन करम मोर भेल रे । पहु दुरदेस गेल रे ॥२॥
दय गेल वचनक आस रे । हमहु आयब तुय पास रे ॥४॥
कतेक कयल अपराध रे । पहु सञे छुटल समाज रे ॥६॥
कवि विद्यापति भान रे । सुपुरुख न कर निदान रे ॥८॥

—— o ——

राधा ।

६३६

एत दिन हृदय हरख छल आवे सब दूर गेल रे ।
रँकक रतन हेड़ाएल जगतेओ सुन भेल रे ॥२॥

बिहि निरदय कोने दोसें दहु देल दुख मन मधरे।
मन कर गरल गरासिय पाप आतमवध रे ॥४॥
जीवन लाग मरन सन मरन सोहावन रे।
मोर दुख के पतिआएत सुनह विरहि जन रे ॥६॥
विद्यापति कह सुन्दरि मन धीरज धरु रे।
अचिर मिलत तोर प्रियतम मन दुख परिहरु रे ॥८॥

राधा।

६३७

कत दिन आस दए धरब हिया। जऊबन काल विदेस रहु पिया ॥ २ ॥
से जब आगे नियर मझु अछला। मन किछु भल मन्द हम नहि गनला ॥ ४ ॥
अब से सब परिचय भेल। कानु निठुर परिहरि गेल ॥ ६ ॥
एक दिस विषम कुसुमसर। अओकादिस गरुअ गरिम डर ॥ ८ ॥
राखब सिव कओन परि। ऐसन दोस न बुझल हरि ॥१०॥

राधा।

६३८

पुरुब जत अपुरुब भेला। समय वसे सेहओ दुर गेला ॥२॥
काहि निवेदओ कुगत पहु। जे किछु करिअ भुजिअ सेहु ॥४॥
सबहि साजनि धैरज सार। नीरसि कह कवि बयठहार ॥६॥

राधा ।

६३९

मञे छलि पुरुब पेम भरे भोरी । भान अछल पिआ आइति मोरी ॥ २ ॥
ए सखि सामि अकामिक गेला । जिवहु अराधन न अपन भेला ॥ ४ ॥
जाइते पुछलन्हि भलेओ न मन्दा । मन वसि मनहि वढ़ाओल दन्दा ॥ ६ ॥
सुपुरुस जानि कयल हमे मेरी । पाओल पराभव अनुभव वेरी ॥ ८ ॥
तिला एक लागि रहल अछ जीवे । विन्दु सिनेह वरइ जनि दीवे ॥१०॥
चॉद वदनिधनि न भॉखइ आने । तुअ गुन सुमरि आओव पुनु काह्ने ॥१२॥
भनइ विद्यापति एहु रस जाने । राए सिवसिंह लखिमा देवि रमाने ॥१४॥

—— ० ——

राधा ।

६४०

कौतुक दुहु कुलकमल तियागल जे पद पङ्कज आस ।
पहुक भीन दिन न गनल न गनल मरन तरास ॥२॥
सजनि निकरुण हृदय मुरारि ।
अव घर जाइत ठाम नहि पाविय परिजन देअइ गारि ॥४॥
गगन चाँद पानिमा वारल सगर नगर वेभार ।
अमिय घट वोलि हाथ पसारल पाओल गरलक धार ॥६।

—— ० ——

राधा।

६४१

करओं बिनती जत जत मन लाइ। पिआ परिचव पचताव कें जाइ॥ २॥
धन धइरजे परिहरि पथ साचे। करम दोसें कनकेओ मे काचे॥ ४॥
निठुर बालम्भु सौं लाओल सिनेहे। न पुरल मनोरथ न छाड़ु सन्देहे॥ ६॥
सुपुरुस भाने मान धन गेल। दिन दिन मलिन मनोरथ भेल॥ ८॥
जदि दूपन गुन पहु न विचार। बड भए पसरओ पिसुन पसार॥१०॥
परिजन चित नहि हित परयाव। धरषने जीव कतए नहि धाव॥१२॥
हम अवधारि हलल परकार। विरह सिन्धु जिव दए वरु पार॥१४॥
भनइ विद्यापति सुन वर नारि। धैरज कए रह भेटत मुरारि॥१६॥

——•——

राधा।

६४२

जतनहु ओ रे जतेओ निरवह। ए कहु ततेओ आङ्गिरलह॥ २॥
से सवे विसरु तोंहे ओ रे विनु हेतु। मरए मधयहि मकरकेतु॥ ४॥
कपट कइये कत ओ रे कहु हित। वड़ बोल छड़ वड अनुचित॥ ६॥
मोजे अवला वरु ओ रे दय जिव। तरव दुसह नारि शिव शिव॥ ८॥
भनइ विद्यापति ओ रे सहि लेह। सुपुरुस वचन पसान रेह॥१०॥

——•——

राधा।

६४३

वारि वयस तोजि गेह। पिअ मन ओहय सन्देह ॥ २ ॥
तनि मन आछे ओह भान। एतय समय भेल आन ॥ ४ ॥
तोरित पठाओव सन्देस। आवे नहि उचित विदेस ॥ ६ ॥
जौवन रूप सिनेह। सेहे सुमरि खिन देह ॥ ८ ॥
विद्यापति कवि भान। अचिर होयत समाधान ॥१०॥

—— ० ——

राधा।

६४४

बड़ि बड़ाइ सबे नहि पावइ विधि निहारइ जाहि।
अपन वचन जे प्रतिपालय से बड़ सबहु चाहि ॥२॥
साजनि सुजन जन सिनेह।
कि दिय अजर कनक ऊपम कि दिय पासान रेह ॥४॥
ओ जदि अनल आनि पजारिय तइओ न होय विराम।
इ जदि असि कि कसि कइ काटी तइओ न तेजय ठाम ॥६॥
गरल आनि सुधारसे सिञ्चिय शीतल होमाय न पार।
जइओ सुधानिधि अधिक कुपित तइओ न वरिष खार ॥८॥
भनइ विद्यापति सुन रमापति सकल गुण निधान।
अपन वेदन ताको निवेदिय जे परवेदन जान ॥१०॥

—— ० ——

राधा ।

६४५

पहिलि पिरीति परान ऑतर तखने अइसन रीति ।
से आवे कबहुं हेरि न हेरथि भेलि निम सनि तीति ॥२॥
साजनि जिब्रथु सए पचास ।
सहसे रमनि रयनि खेपथु मोराहु तन्हिकि आस ॥४॥
कतने जतने गऊरि अराधिअ मागिअ स्वामि सोहाग ।
तथुहु अपन करम भुञ्जिय जइसन जकर भाग ॥६॥
समय गेले मेघे बरीसब कीदहु ते जलधार ।
सित समापले बसन पाइअ ते दहु की उपकार ॥८॥
रयनि गेले दीपे निबोधिअ भोजन दिवस अन्त ।
जउवन गेले जुवति पिरिति की फल पाओत कन्त ॥१०॥
धन अछइते जे नहि भोगए ता मने हो पचताव ।
जउवन जीवन बड़ निरापन गेले पलटि न आव ॥१२॥
भन विद्यापति सुनह जउवति समय बुझ सयान ।
राजा सिबसिंह रूप नरायन लखिमा देवि रमान ॥१४॥

—— o ——

राधा ।

६४६

लोचन धाए फेधाएल हरि नहि आएल रे ।
शिव शिव जिवओ न जाए आसे अरुझाएल रे ॥२॥

राधा।

६४३

वारि वयस तोजि गेह। पिअ मन ओहय सन्देह ॥ २ ॥
तनि मन आछे ओह भान। एतय समय भेल आन ॥ ४ ॥
तोरित पठाओव सन्देस। आवे नहि उचित विदेस ॥ ६ ॥
जौवन रूप सिनेह। सेहे सुमरि खिन देह ॥ ८ ॥
विद्यापति कवि भान। अचिर होयत समाधान ॥१०॥

—— o ——

राधा।

६४४

बड़ि बड़ाइ सबे नहि पावइ विधि निहारइ जाहि।
अपन वचन जे प्रतिपालय से बड़ सबहु चाहि ॥२॥
साजनि सुजन जन सिनेह।
कि दिय अजर कनक ऊपम कि दिय पासान रेह ॥४॥
ओ जदि अनल आनि पजारिय तइओ न होय विराम।
इ जदि असि कि कसि कइ काटी तइओ न तेजय ठाम ॥६॥
गरल आनि सुधारसे सिञ्चिय शीतल होमाय न पार।
जइओ सुधानिधि अधिक कुपित तइओ न वरिष खार ॥८॥
भनइ विद्यापति सुन रमापति सकल गुण निधान।
अपन वेदन ताको निवेदिय जे परवेदन जान ॥१०॥

—— o ——

राधा ।

६४५

पहिलि पिरीति परान आँतर तखने अइसन रीति ।
से आवे कबहुं हेरि न हेरथि मेलि निम सनि तीति ॥२॥
साजनि जिवथु सए पचास ।
सहसे रमनि रयनि खेपथु मोराहु तन्हिकि आस ॥४॥
कतने जतने गऊरि अराधिअ मागिअ स्वामि सोहाग ।
तथुहु अपन करम भुजिय जइसन जकर भाग ॥६॥
समय गेले मेघे वरीसव कीदहु तें जलधार ।
सित समापले वसन पाइअ ते दहु की उपकार ॥८॥
रयनि गेले दीपे निवोधिअ भोजन दिवस अन्त ।
जउवन गेले जुवति पिरिति की फल पाओत कन्त ॥१०॥
धन अछइते जे नहि भोगए ता मने हो पचताव ।
जउवन जीवन बड निरापन गेले पलटि न आव ॥१२॥
भन विद्यापति सुनह जउवति समय बुझ सयान ।
राजा सिवसिंह रूप नरायन लखिमा देवि रमान ॥१४॥

—o—

राधा ।

६४६

लोचन धाए फेधाएल हरि नहि आएल रे ।
शिव शिव जिवओ न जाए आसे अरुझाएल रे ॥२॥

मन करि तँह ऊड़ि जाइअ जँहा हरि पाइअ रे ।
पेम परसमनि जानि आनि उर लाइअ रे ॥४॥
सपनहु सङ्गम पाओल रङ्ग बढ़ाओल रे ।
से मोर विहि विघटाओल निन्दओ हेराएल रे ॥६॥
भनइ विद्यापति गाओल धनि धइरज कर रे ।
अचिरे मिलत तोहि बालम्भु पुरत मनोरथ रे ॥८॥

—:o:—

राधा ।

६४७

जतए सतत वहसे रसिक मुरारि । ततए लिखिह मोर नाम दुइ चारि ॥ २ ॥
सखिगण गणइते लइह मोर नाम । पिया बड़ विदगध विहि मोर वाम ॥ ४ ॥
दिने एक वेरि पिया लए मोर नाम । अरुन दुलह करे दए जल दान ॥ ६ ॥
इह सब अभरण दिह पिया ठाम । जनम अवधि मोर इह परणाम ॥ ८ ॥
निचय मरब हम कानुक उदेस । अवसर जानि मागब सन्देस ॥ १० ॥
भनइ विद्यापति सुन बरनारि । दिन दुइ चारि वहि मिलब मुरारि ॥ १२ ॥

— o —

सखी ।

६४८

सुन सुन सुन्दरि कर अवधान । नाह रसिकवर
कहि तुहुँ हृदये करसि अनुता मिलब सोइ

ऊदभट प्रेमे करसि अनुराग। निंति निंति ऐसन हिय माहा जाग ॥ ६ ॥
विद्यापति कह बान्धह थेह। सुपुरुख कबहुँ न तेजय नेह ॥ ८ ॥

—— o ——

राधा।

६४६

अविरल परए मदन सरधारा। एकल देह कत सहत हमारा ॥ २ ॥
सपनेहु तिला एक तह्नि सञो रङ्गे। निन्द विदेसल तहि पिया सङ्गे ॥ ४ ॥
काह्न कान लागि कहिहि भमरा। तोजे जानसि दुख अहनिसि हमरा ॥ ६ ॥
एतवा बोलि कहब मोरि सेवा। तिरथ जानि जल अञ्जुलि देवा ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति एहु रस जाने। राए सिवसिंह लखिमा देइ रमाने ॥ १० ॥

—— o ——

राधा।

६५०

नउमि दसा देखि गेलाहे नड़ाए। दसमि दसा ऊपगति भेलि आए ॥ २ ॥
हुह्नि अरजल अपजस अपकार। हमे जिबे आङ्गिरल जम वनिजार ॥ ४ ॥
आवे सुखे कन्हाइ करथु विदेस। सुमरि जलञ्जालि दिहुथि सन्देस ॥ ६ ॥
वह मलयानिल झर मकरन्द। ऊगओ सहस दस दारुन चन्द ॥ ८ ॥
करओ कमल वन केलि भमरा। आवे की भल मन्द होएत हमरा ॥ १० ॥
भनइ विद्यापति निरदय कन्त। एहि सों भल वरु जीवक अन्त ॥ १२ ॥

—— o ——

राधा ।

६५१

कमल सुखायल भमर नइ आव । पथिक पियासल पानि न पाव ॥ २ ॥
दिन दिन सरोवर होइ अगारि । अवहु नइ वरिषइ मही भर वारि ॥ ४ ॥
जंदि तोहें वरिषव समय ऊपेखि । की फल पाओव दिवस दिप लेखि ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति असमय वानी । मुरुछल जीवय चुरु एक पानी ॥ ८ ॥

—:o:—

सखी ।

६५२

कुसुमे रचल सेज मलयज पङ्कज पेयासि सुमुखि समाजे ।
कत मधु मास विलासे गमाओल अव पर कहइते लाजे ॥२॥
सखि हे दिन जनु काहु अवगाहे ।
सुरतरु तर सुखे जनम गमाओल धुथुरा तर निरवाहे ॥४॥
दखिन पवन सऊरभ ऊपभोगल पिऊल अमिय रस सारे ।
कोकिल कलरव ऊपवन पूरल ताह्नि कत कयल विकारे ॥६॥
पातहि सजो फुल भमरे अगोरल तरुतर लेलाह्नि वासे ।
से फल काटि कीटे ऊपभोगल भमरा भेल ऊदासे ॥८॥
भनइ विद्यापति कलिजुग परिनति चिन्ता जनु कर कोइ ।
पनअ करम अपने पए भुञ्जिय जञो जनमान्तर होइ ॥१०॥

—o:—

राधा।

६५३

सरसिज विनु सर सर विनु सरसिज
की सरसिज विनु सूरे।
जौवन विनु तन तनु विनु जौवन
की जौवन पिय दूरे ॥२॥
सखि हे मोर बड़ दैव विरोधी।
मदन वेदन बड़ पिया मोर बोल छड़
अवहुँ देहे परबोधी ॥४॥
चौदिश भमर भम कुसुमे कुसुमे रम
नीरसि माजरि पिवइ।
मन्द पवन वह पिक कुहु कुहु कह
सुनि विरहिनी कइसे जीवइ ॥६॥
सिनेह अछल जत हम भेल न टुटत
बड़ बोल जत सबेइ धीरे।
अइसन कए बोल दहु निअ सीम तेजि कहु
ऊछलु पयोनिधि नीरे ॥८॥
भनइ विद्यापति अरेरे कमलमुखि
गुनगाहक पिय तोरा।
राजा शिवसिंहँ रूपनरायन सहजे एको नहि भोरा ॥१०॥

—०—

राधा ।

६५४

कुन्द कुसुम भरि सेज सोहाओन चान्द इजोरिय राति ।
तिला एक सुपहु समागम पाओल मास वरख भेल साति ॥२॥
हरि हरि पुनु कइसे पलटि मधुरपुर जाएव पुनु कइसे भेटत मुरारि ।
चिन्ता जाल पड़लि हरिनी सनि कि करव विरहिनि नारी ॥४॥
एक भमर भमि बहुल कुसुम रमि कतहु न केओ कर वाध ।
बहुवल्लभ सओ सिनेह बढ़ाओल पड़ल हमर अपराध ॥६॥
दिवसे दिवसे वेआधक अधिकाएल दारुण भेल पचवान ।
आओर वरख कत आसे गमाओव संसअ परल परान ॥८॥
भनइ विद्यापति सुनु वर जौवति मन चिन्ता करु त्याग ।
अचिर मिलत हरि रहु धैरज धरि सुदिने पलटत भाग ॥१०॥

——:०.——

राधा ।

६५५

सखिहे कतहु न देखिअ मधाइ ।
काँप शरीर थीर नहि मानस अवधि निअर भेल आइ ॥२॥
माधव मास तीथि भऊ माधव अवधि कइए पिया गेला ।
कुच युग सम्भु परसि करे वोललह्नि ते परतिति मोहि

मृगमद चानन परिमल कुङ्कुम के बोल सीतल चन्दा ।
पिया विसलेखे अनल जञो वरिसए विपति चिह्निय भल मन्दा ॥६॥
भनइ विद्यापति सुन वर जौवति चिते जनु झाँखह आजे ।
पिय विसलेस कलेस मेटाएत वालस विलासि समाजे ॥८॥

—o—

राधा ।

६५६

साहर मजर भमर गुजर कोकिल पञ्चम गाव ।
दखिन पवन विरह वेदन निठुर कन्त न आव ॥२॥
साजनि रचह सेहे ऊपाए ।
मधु मास जञो माधव आवए विरह वेदन जाए ॥४॥
अछल अङ्गज भेल अनङ्गज धनु रिवाइल हाथ ।
नाह निरदय तेजि पड़ाएल ओड़ल हमर माथ ॥६॥
एक वेरि हरे भसम कएलाहे दुसह लोचन आगी ।
पुनु अहिर कुल जनम लेलह विरहि वधए लागि ॥८॥
जञो तोहि पावञोँ अरे विधाता वाँधि मेलञोँ अन्ध कूप ।
जाहेरि नाह विचखन नही ताकेँ काँ दिय रूप ॥२॥
आनकइ रूप हित पए करए हमर इ भेल काज ।
दिने दिने दुख सहए न पारञो पड़ए अधिक भार ॥२२॥

—o—

राधा ।

६५७

प्रथमहि ऊपजल नव अनुरागे । मन कर प्रान धरिअ तसु आगे ॥ २ ॥
आव दिने दिने भेल पेम पुराने । भुगुतल कुसुम सुरभि कर आने ॥ ४ ॥
हरिके कहव सखि हमरि विनती । विसरि न हलाविए पुरुब पिरिती ॥ ६ ॥
रभस समअ पिआ जत कहि गेला । अधराहु आध सेहओ दुर भेला ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति एहो रस भाने । राय सिवसिहँ लखिमा देइ रमाने ॥ १० ॥

—.०:—

६५८

राधा ।

कहत कहत सखि बोलत बोलत रे हमारि पिया कोन देश रे ।
मदन शरानले इ तनु जर जर कुशल शुनइत सन्देश रे ॥ २ ॥
हमारि नागर तथाय विभोर केहन नागरी मिलल रे ।
नागरी पाय नागर सुखी भेल हमारि हिया दय शेल रे ॥ ४ ॥
शङ्ख कर चूर वसन कर दूर तोड़ह गजमति हार रे ।
पिया यदि तेजल कि काज शिङ्गारे यामुन सलिले सब डाररे ॥ ६ ॥
सीयार सिन्दुर पोछि कर दूर पिया विनु सबहि नैराश रे ।
भनइ विद्यापति सुनह युवति दुख भेल अवशेष रे

—.०—

६५९

राधा ।

हम अभागिनी दोसर नहि भेला । कानु कानु करि जनम वहि गेला ॥ २ ॥
आओब करि मोर पिया चलि गेला । पुरवक जत गुण विसरित भेला ॥ ४ ॥
भनइ विद्यापति शुन धनि राइ । कानु समझाइते हम चलि जाइ ॥ ६ ॥

—:०:—

राधा ।

६६०

कि पुछसि मोहे निदान । कहइते दहइ परान ॥ २ ॥
तेजलु गुरुकुल सङ्क । पूरल दुकुल कलङ्क ॥ ४ ॥
विहि मोरे दारुण भेल । कानु निठुर भइ गेल ॥ ६ ॥
हम अवला मतिवामा । न गणलुँ इह परिणामा ॥ ८ ॥
कि करव इह अनुयोग । आपन करमक दोख ॥ १० ॥
कवि विद्यापति भान । तुरिते मिलायव कान ॥ १२ ॥

—०—

राधा ।

६६१

हिम हिमकर तापे तपायल भै मेल काल वसन्त ।
कान्त काक मुखे नहि सम्वादइ किये करु मदन दुरन्त ॥ २ ॥
जानलु रे सखि किये मोर कुदिवस भेल ।

कि क्षने विहि मोहे विमुख भेलरे पलटि दिठि नहि देल ॥ ४ ॥
एत दिन तनु मोर साधे साधाओल वुझलों अवहु निदान ।
अवधिक आश भेल सब कहिनी कत सह पाप पराण ॥ ६ ॥
विद्यापति भन माधव निकरुण काहे समुझायव खेद ।
इह वड़वानल ताप अधिक भेल दारुण पियाक विच्छेद ॥ ८ ॥

—०—

राधा ।

६६२

सुरतरुतल जव छाया छोड़ल हिमकर वरिखय आगि ।
दिनकर दिन फले शीत न वारल हम जीयव कथि लागि ॥ २ ॥
सजनि अब नहि बुझिये बिचार ।
धनका आरति धनपति न पूरल रहल जनम दुख भार ॥ ४ ॥
जनमे जनमे हरगौरि अराधलों शिव भेल शकति विभोर ।
काम धेनु कत कौतुके पूजलों न पूरल मनोरथ मोर ॥ ६ ॥
अमिया सरोवरे साधे सिनायलों संशय पड़ल पराण ।
विहि विपरीत किये भेल ऐसन विद्यापति परमाण ॥ ८ ॥

—०—

राधा ।

६६३

मधुपुर मोहन गेल रे मोरा विहरत छाति ।
गोपी सकल विसरलनि रे जत छिल अहिवाती ॥ २ ॥
शुतलि छलहुँ अपन गृह रे निन्दइ गेलउ सपनाइ ।
करसौं छुटल परशमणि रे कोन गेल अपनाइ ॥ ४ ॥
कत कहवो कत सुमिरव रे हम भरिय गराणी ।
आनक धन सों धनवन्ती रे कुवजा भेलि राणी ॥ ६ ॥
गोकुल चान चकोरल रे चोरी गेल चन्दा ।
विछुड़ि चललि दुहु जोड़ी रे जीव दइ गेल धन्धा ॥ ८ ॥
काक भाप निज भापह रे पहु आओत मोरा ।
क्षीरि खाड़ भोजन देव रे भरि कनक कटोरा ॥ १० ॥
भनहि विद्यापति गाओल रे धैरज धर नारी ।
गोकुल होयत शोहाओन रे फेरि मिलत मुरारि ॥ १२ ॥

राधा ।

६६४

प्रथम समागम भेल रे । हटन रयनी विती गेल रे ॥ २ ॥
नव तनु नव अनुराग रे । विनु परिचय रस मागरे ॥ ४ ॥

कि क्षने विहि मोहे विमुख भेलरे पलटि दिठि नहि देल ॥ ४ ॥
एत दिन तनु मोर साधे साधाओल वुझलों अवहु निदान ।
अवधिक आश भेल सब कहिनी कत सह पाप पराण ॥ ६ ॥
विद्यापति भन माधव निकरुण काहे समुझायव खेद ।
इह वड़वानल ताप अधिक भेल दारुण पियाक विच्छेद ॥ ८ ॥

—०—

राधा ।

६६२

सुरतरुतल जव छाया छोड़ल हिमकर वरिखय आगि ।
दिनकर दिन फले शीत न वारल हम जीयव कथि लागि ॥ २ ॥
सजनि अव नहि वुझिये विचार ।
धनका आरति धनपति न पूरल रहल जनम दुख भार ॥ ४ ॥
जनमे जनमे हरगौरि अराधलों शिव भेल शकति विभोर ।
काम धेनु कत कौतुके पूजलों न पूरल मनोरथ मोर ॥ ६ ॥
अमिया सरोवरे साधे सिनायलों संशय पड़ल पराण ।
विहि विपरीत किये भेल ऐसन विद्यापति परमाण ॥ ८ ॥

—०—

राधा ।

६६३

मधुपुर मोहन गेल रे मोरा विहरत छाति ।
गोपी सकल विसरलनि रे जत छिल अहिवाती ॥ २ ॥
शुतलि छलहुँ अपन गृह रे निन्दइ गेलउ सपनाइ ।
करसौं छुटल परशमणि रे कोन गेल अपनाइ ॥ ४ ॥
कत कहवो कत सुमिरव रे हम भरिय गराणी ।
आनक धन सों धनवन्ती रे कुवजा भेलि राणी ॥ ६ ॥
गोकुल चान चकोरल रे चोरी गेल चन्दा ।
विछुड़ि चलालि दुहु जोड़ी रे जीव दइ गेल धन्धा ॥ ८ ॥
काक भाष निज भाषह रे पहु आओत मोरा ।
क्षीरि खाड़ भोजन देव रे भरि कनक कटोरा ॥ १० ॥
भनहि विद्यापति गाओल रे धैरज धर नारी ।
गोकुल होयत शोहाओन रे फेरि मिलत मुरारि ॥ १२ ॥

राधा ।

६६४

प्रथम समागम भेल रे । हठन रयनी किंये गेल रे ॥ २ ॥
नव तनु नव अनुराग रे । विनु परिचय रम मागरे ॥

शैशव पहु तेजि गेल रे । यौवन उपगत भेल रे ॥ ६ ॥
अब न जीयव विनु कन्तरे । विरहे जीव भेल अन्त रे ॥ ८ ॥
भनहि विद्यापति भान रे । सुपुरुष गुनक निधान रे ॥ १० ॥

—:o:—

राधा ।

६६५

कत दिन माधव रहव मथुरापुर कबे घुचव विहि वाम ।
दिवस लिखि लिखि नखर खोयाओल विसरल गोकुल नाम ॥ २ ॥
हरि हरि काहे कहव इह सम्वाद ।
सुमरि सुमरि नेह खिन भेल मझु देह जीवने आछय किए साध ॥ ४ ॥
पुरुव पियारि नारि हम अछल अब दरशनहु सन्देह ।
भमर भमए भमि सवहु कुसुमे रमि न तेजय कमलिनि नेह ॥ ६ ॥
आश नियर करि जिउ कत राखव अवहि से करत पयान ।
विद्यापति कह धैरज धर धनि मिलव तुरितहि कान ॥ ८ ॥

—o—

राधा ।

६६६

सखि मोर पिया । अवहुँ न आओल कुलिश हिया ॥ २ ॥
नखर खोयाओलुँ दिवस लिखि लिखि । नयन अन्धाओलुँ पिया पथ पेखि ॥ ४ ॥

जब हम बाला परिहरि गेला । किये दोष किये गुण बुझय न भेला ॥ ६ ॥
अब हम तरुणी बुझल रस भास । हेन जन नहि मोर कहे पिया पास ॥ ८ ॥
आयब हेन करि मोर पिया गेला । पूरबक जत गुण बिसरित भेला ॥ १० ॥
भनहि विद्यापति शुन अब राइ । कानु समुझाइते अब चलि जाइ ॥ १२ ॥

—०—

राधा ।

६६७

जौवन रूप अछल दिन चारि । से देखि आदर कयल मुरारि ॥ २ ॥
आब भेल झाल कुसुम सबे छुछ । बारि बिहुन सबकेओ नहि पुछ ॥ ४ ॥
हमरि ए विनति कहब सखि रोय । सुपुरुष वचन अफल नहि होय ॥ ६ ॥
जावे रहइ धन अपना हाथ । तावे से आदर कर सङ्ग साथ ॥ ८ ॥
धनीकक आदर सब तँह होय । निरधन बापुर पुछय न कोय ॥ १० ॥
भनइ विद्यापति राखब शील । जो जग जीविय नवउ निधि मिल ॥ १२ ॥

—०—

६६८

राधा ।

पहिल पिया मोर मुखे मुख हेरल तिल एक न छोड़ल अङ्ग ।
अपरूप प्रेमपाशे तनु गाँथल अब तेजल मोर सङ्ग ॥ २ ॥

सखि हम जीयब कथि लागि ।
जे विनु तिलु एक रहइ न पारिय से भेल पर अनुरागि ॥ ४ ॥
अङ्गुलक अङ्गुटि से भेल वहुटि हार भेल अति भार ।
मनमथ वाणहि अन्तर जर जर विद्यापति दुख कहइ न पार ॥ ६ ॥

—०—

६६६

राधा ।

कालिक अवधि कइए पिया गेल । लिखइते कालि भीत भरि भेल ॥ २ ॥
भेल प्रभात कहत सवहि । कह कह सजनि कालि कवहि ॥ २ ॥
कालि कालि करि तेजल आश । कन्त नितान्त न मिलल पाश ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति शुन वरनारि । पुर रमणीगण राखल वारि ॥ ८ ॥

—०—

राधा ।

६७०

प्रेमक अङ्कुर जात आत भेल न भेल जुकल पलाशा ।
प्रतिपद चाँद उदय जैसे यामिनी सुख लव भै गेल निराशा ॥२॥
सखि हे अव मोहे निठुर मधाइ अवधि रहल विसराइ ॥४॥
के जाने चाँद चकोरिणी वञ्चव माधव मधुप सुजान ।
अनुभवि कानु पिरीति अनुमानिये विघटित विहि निरमान ॥६॥

पाप पराण आन नहि जानत कान्ह कान्ह करि झूर ।
विद्यापति कह निकरुण माधव गोविन्द दास रस पूर ॥८॥

—— ० ——

राधा ।

६७१

मोहि तेजि पिया मोर गेलाह विदेस । कोन परि खेपब वारि वएस ॥ २ ॥
सेज भेल परिमल फुल भेल वास । कतय भमर मोर परल उपास ॥ ४ ॥
सुमरि सुमरि चित नहि रह थीर । मदन दहन तन दगध शरीर ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति कवि जय राम । कि करत नाह दैव भेल वाम ॥ ८ ॥

—— ० ——

६७२

रूपक

साँझहि निय मुख प्रेम पियाइ । कमालिनि भमरी राखल छिपाइ ॥ २ ॥
सेज भेल परिमल फुल भेल वासे । कतय भमरा मोर परल उपासे ॥ ४ ॥
भमि भमि भमरी वालमु निज खोजे । मधु पिवि मधुकर शुतल सरोजे ॥ ६ ॥
नइ फुल कहेस नइ उगइ न सूरे । सिनेहो नहि जाय जीव सौ मोरे ॥ ८ ॥
केओ नहि कहे साखि वालमु वाते । रइन समागम भइ गेल प्राते ॥१०॥
भनइ विद्यापति शुनिये भमरी । वालमु आछि तोर अपनहि नगरी ॥१२॥

—— ० ——

राधा ।

६७८

जलउ जलधि जल मन्दा । जहा वसे दारुण चन्दा ॥ २ ॥
वचन नहि के परमाणे । समय न सह पचवाणे ॥ ४ ॥
कामिनी पिया विराहिनी । केवल रहिलि कहिनी ॥ ६ ॥
अवधि समापित भेला । कइसे हरि वचन चुकला ॥ ८ ॥
निठुर पुरुष पिरीति । जीव दए सन्तव युवती ॥१०॥
निचल नयन चकोरा । ढरिये ढरिये पल नोरा ॥१२॥
पथये रहओ हेरि हेरी । पिया गेल अवधि विसरी ॥१४॥
विद्यापति कवि गावे । पुन फले सुपुरुष की नहि पावे ॥१६॥

—— ० ——

सखी ।

६७६

केओ सुखे सुतए केओ दुखे जाग । अपन अपन थिक भिन भिन भाग ॥ २ ॥

राधा ।

६८०

चान ऊगल हम देखल सजनी गे देखि विकल मन होय ।
एहन विधाता निरदय सजनी गे परदेश पहु रहु सोय ॥२॥
चीर चिकुर साजि राखल सजनी गे जूही जोगाओल आज ।
वालभु विनु कइसे जीअव सजनी गे आव जीवन कोन काज ॥४॥
अङ्गहि उपज अधर रस सजनी गे इहो थिक विरहक आधि ।
भनइ विद्यापति गाओल सजनी गे औखधो नइ छुट वेआधि ॥६॥

—— ० ——

राधा ।

६८१

जेहे लता लघु लाए कन्हाइ । जल दए दए किछु गेलाहे बढ़ाइ ॥ २ ॥
से आवे भरे कुसुमित भेल आइ । परिमल पसरल दह दिस जाइ ॥ ४ ॥
पिआ के कहव पिक सुललित बानी । रभसक अवसर दुरजन जानि ॥ ६ ॥
हठे अवधारि विलम्ब नहि सहइ । फुलला फुल मधु वासि नहि रहइ ॥ ८ ॥

—— ० ——

राधा ।

६८२

कत कत सखि मोहे विरहे भै गेल तीता ।
गरल भखि मोञे मरव रचि देहे मोर चीता ॥२॥

राधा ।

६७८

जलउ जलधि जल मन्दा । जहा वसे दारुण चन्दा ॥ २ ॥
वचन नहि के परमाणे । समय न सह पचवाणे ॥ ४ ॥
कामिनी पिया विरहिनी । केवल रहिलि कहिनी ॥ ६ ॥
अवधि समापित भेला । कइसे हरि वचन चुकला ॥ ८ ॥
निठुर पुरुष पिरीति । जीव दए सन्तव युवती ॥१०॥
निचल नयन चकोरा । ढरिये ढरिये पल नोरा ॥१२॥
पथये रहओ हेरि हेरी । पिया गेल अवधि विसरी ॥१४॥
विद्यापति कवि गावे । पुन फले सुपुरुष की नहि पावे ॥१६॥

—— ० ——

सखी ।

६७९

केओ सुखे सुतए केओ दुखे जाग । अपन अपन थिक भिन भिन भाग ॥ २
कि करति अवला न चेतए हार । एकहि नगर रे वहुत वेवहार ॥ ४
माजरि तोरि भमर मधु पीव । से देखि पथिक कण्ठागत जीव ॥ ६
कन्ता कन्त मनोरथ पूर । विरहिनि विरहे वेआकुलि झुर ॥ ८
विद्यापति भन एहु रस जान । राए शिवसिंह रूपिनि देइ रमान ॥१०

—— ० ——

अपनहि कमल फुलायल। ताहि फुल भमर लोभायल ॥ ६ ॥
विद्यापति कवि गाओल। उचित पुरविल फल पाओल ॥ ८ ॥

—:०:—

सखी।

६६२

नमित अलके बेढ़ला मुखकमल शोभे।
राहु कि बाहु पसारला शशिमण्डल लोभे ॥२॥
मदन शरे मुरछली चित चेतन वाला।
देखलि से धनि हे वासि निमालिनी माला ॥४॥
कलस कुज लोटाइली धनसामरि वेनी।
कनय परय सूतली जनि कारि नगिनी ॥६॥
भनइ विद्यापति भाविनि थिर थाक न मने।
राजा रूपनरायण लखिमा देइ रमने ॥८॥

—०—

सखी

६६३

पिय विरहिनि अति मालिनि विलासिनि कोने परि जीउति रे।
अवधि न उपगत माधव आवे विष पिउति रे ॥२॥
आतपचर विधु रविकर चरन कि परशह भीमारे।
दिन दिन अवसन देह सिनेहक सीमारे ॥४॥

सुनि अपकम्प कांप मोर देह । गरय गरल विष सुमरि सिनेह ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति सुन वर नारि । धैरज धय रह मिलत मुरारि ॥ ८ ॥

—— o ——

राधा ।

६६०

सखि हे मोरे बोले पुछव कन्हाइ ।
हमर सपथ थिक विसरि न हलवे गए तेजि अवसर पाइ ॥ २ ॥
हुन्हि सञो पेम हठहि हमे लाओल हित उपदेस न लेला ।
तृणतरुअर छायातर वैसलाहु जइसन उचित से भेला ॥ ४ ॥
एके हमे नारि गमारि सबहु तह दोसरे सहज मतिहीनी ।
अपनुक दोस दैवके कि कहव ओ नहि भेलाहे चिन्ही ॥ ६ ॥
अकुलिन बोल नहि ओड़ धरि निरवह धरए अपन वेवहारे ।
आगिल दुर कर पाहिल चित धर जइसन बड़ि कुलियारे ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति सुन वर जउवति चिते जनु मानह आने ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन सकल कलारस जाने ॥ १० ॥

——:o:——

राधा ।

६६१

एहि जग नारि जनम लेल । पहिलहि वयस विरह भेल ॥ २ ॥
कथि लए दैव जनम देल । कठिन अभाग हमर भेल ॥ ४ ॥

पिआ बिसरल नेह अवसन भेल देह कत कत सहब सँताप ।
कालि कालि भए मदन आगु कए आओत पाउस ताप ॥५॥

—— o ——

राधा ।

७१०

वरिसए लागल गरजि पयोधर धरणी दन्तुदि भेली ।
नवि नागरि रत परदेस बालभु आओत आसा गेली ॥२॥
साजनि आवे हमे मदन अधारे ।
सून मन्दिर पाउस के जामिनि कामिनि की परकारे ॥४॥
लघु गुरु भए सवि पए भरे बाढ़लि नीचेओ भउ आगाधे ।
कओने परि पथिके अपन घर आओव सहजहि सब का बाधे ॥६॥
एहे वेआज कइए पिआ गेला आओव समय समाजे ।
मोहि वरु अतनु अतनु कए छाडथु से सुखे भुजथु राजे ॥८॥
तुअ गुन सुमरि कान्हे पुनु आओव विद्यापति कवि भाने ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन लाखिमा देवि रमाने ॥१०॥

—— o ——

राधा ।

७११

दरसन लागि पुजय निते काम । अनुखन जपए तोहरि पए नाम ॥ २ ॥
अवधि समापल मास अखाढ़ । अवे दिने दिने हे जीवन भेल गाढ़ ॥ ४ ॥

राधा ।

७०८

प्रथम वयस हम कि कहव सजनि पहु तेजि गेलाह विदेश ।
कत हम धैरज बाँधव सजनि तनि विनु सहव कलेश ॥२॥
आओन अवधि वितीत भेल सजनि जलधर छपल दिनेश ।
शिशिर वसन्त उषम भेल सजनि पाओस लेल परवेश ॥४॥
चहुदिश झिङ्गुर झनकरु सजनि पिक सुन्दर करु गान ।
मनसिज मारु मरम शर सजनि कतेक सुनव हम कान ॥६॥
शेज कुसुम नहि भावय सजनि विष सम चानन चीर ।
जइओ समीर शीतल बहु सजनि मन वच उडल शरीर ॥८॥
भनहि विद्यापति गाओल सजनि मन धनि करिय हुलास ।
सुदिन हेरि पहु आओत सजनि मन जनि करिय उदास ॥१०॥

—०—

राधा ।

७०९

परिजन कर लए देहरि मुह दए रोअए पथ निहारि ।
केओ न कहए पुर परिहरि माधुर कओन दिन आओत मुरारि ॥२॥
कहि दए समदव के सुमझाएत कठिन हृदय पिअ तोरा ॥३॥

कहव कलावति कन्त हमार । वारिस परदेश वसए गमार ॥१०॥
सब परदेसिश्रा एके सोभाव । गए परदेस पलटि नहि श्राव ॥१२॥
मार मनोज मरम सर श्राहि । वरसा वरिश्र वसन्तहु चाहि ॥१४॥

—o—

७१४

राधा ।

हम धनि तापिनी मन्दिरे एकाकिनी दोसर जन नहि सङ्ग ।
वरिषा परवेश पिया गेल दूरदेश रिपु भेल मत्त श्रनङ्ग ॥२॥
सजनि श्राजु शमन दिन होय ।
नव नव जलधर चौदिसे झाँपल हेरि जीउ निकसय मोर ॥४॥
घन घन गराजित सुनि जिउ चमकित कम्पित अन्तर मोर ।
पपिहा दारुण पिउ पिउ सुमरण भ्रमि भ्रमि देइ तसु कोर ॥६॥
वरिखय पुन पुन श्रागिदहन जनि जानलों जीवन श्रन्त ।
विद्यापति कह सुन रमणीवर मिलव पहु गुणवन्त ॥८॥

—o:—

७१५

राधा ।

सखि हे हमर दुखक नहि श्रोर रे ।
ई भर वादर माह भादव सून मन्दिर मोर रे ॥२॥

कहब समाद बालभु सखि मोर । सबतह समय जलद बड़ घोर ॥ ६ ॥
एके अबलाहे कुपुत पञ्चबान । मरम लखए कर सर सन्धान ॥ ८ ॥
तुअ गुन बान्धल अछए परान । परवेदन देख पर नहि जान ॥१०॥

—— o ——

७१२

राधा ।

सखि हे के नहि जानत हृदयक वेदन हरि परदेस रहइ ।
विरह दसा दुख काहि कहब जे तसु कहिनि कहइ ॥२॥
धारा सघन बरस धरणीतल विजुरि दशदिश विन्धइ ।
फिरि फिरि उतरोल डाके डाहुकिनि थिरहिनि कैसे जिवइ ॥४॥
जौवन भेल बन विरह हुताशन मनमथ भेल अधिकारि ।
विद्यापति कह कतहु से दुख सह वारिस निसि अँधियारि ॥६॥

——:o:——

७१३

राधा ।

की पहु पिसुन वचन देल कान । की पर कामिनि हरल गेआन ॥ २ ॥
की पहु विसरल पुरुवक नेह । की जीवन दहु परल सन्देह ॥ ४ ॥
झूठा वचन सुइलाहु मोजे लागि । तुरअ वाँधि घर लेसलि आगि ॥ ६ ॥
कन्त दिगन्त गेला हे कोँ लागि । सीतलि रअनि वरिस घने आगि ॥ ८ ॥

कहव कलावति कन्त हमार । वारिस परदेश वसए गमार ॥१०॥
सव परदेसिआ एके सोभाव । गए परदेस पलटि नहि आव ॥१२॥
मार मनोज मरम सर आहि । वरसा वरिअ वसन्तहु चाहि ॥१४॥

—o—

७१४

राधा ।

हम धनि तापिनी मन्दिरे एकाकिनी दोसर जन नहि सङ्ग ।
वरिषा परवेश पिया गेल दूरदेश रिपु भेल मत्त अनङ्ग ॥२॥
सजनि आजु शमन दिन होय ।
नव नव जलधर चौदिसे झाँपल हेरि जीउ निकसय मोर ॥४॥
घन घन गराजित सुनि जिउ चमकित काम्पित अन्तर मोर ।
पपिहा दारुण पिउ पिउ सुमरण भमि भमि देइ तसु कोर ॥६॥
वरिखय पुन पुन आगिदहन जनि जानलों जीवन अन्त ।
विद्यापति कह, सुन रमणिवर मिलव पहु गुणवन्त ॥८॥

—o—

७१५

राधा ।

सखि हे हमर दुखक नहि ओर रे ।
ई भर वादर माह भादव सून मन्दिर मोर रे ॥२॥

झम्पि घन गरजन्ति सन्तति भुवन भरि वरसन्तिया।
कन्त पाहुन काम दारुण सघने खर शर हन्तिया ॥४॥
कुलिश कत शत पात मुदित मयूर नाचत मातिया।
मत्त दादुरि डाके डाहुकि फाटि जाओत छातिया ॥६॥
तिमिर दिग भरि घोर जामिनी अथिर विजुरिक पाँतिया।
विद्यापति कह कैसे गमाओव हरि विनु दिन रातिया ॥८॥

—— ० ——

७१६

राधा।

खेदव मोञे कोकिल अलिकुल वारव करकङ्कन झमकाइ।
जखने जलदे धवला गिरि वारिसव तखनुक कओन उपाइ ॥२॥
गगन गरज घन सुनि मन शङ्कित वारिश हरि करु रावे।
दखिन पवन सौरभे जदि सतरव दुहु मन दुहु विछुरावे ॥४॥
से सुनि जुवति जीव जदि राखति सुन विद्यापति वानी।
राजा सिवसिंह इ रस विन्दक मदने वोधि देवि आनी ॥६॥

—— ० ——

७१७

राधा।

अङ्कुर तपन तापे जदि जारव कि करव वारिद मेहे।
इ नव जौवन विरहे गमाओव कि करव से पिया नेहे ॥२॥

हरि हरि के इह दैव दुराशा ।
सिन्धु निकटे जदि कण्ठ शुखायब के दूर करब पियासा ॥४॥
चन्दन तरु जब सौरभ छोड़ब शशधर वरिखब आगि ।
चिन्तामणि जब निज गुण छोड़ब कि मोर करम अभागि ॥६॥
श्रावण माह घन विन्दु न वरिखब सुरतरु बाँझ कि छान्दे ।
गिरिधर सेवि ठाम नहि पायब विद्यापति रहु धान्धे ॥८॥

—०—

राधा ।

७१८

काहु दिस काहल कोकिल रावे । मातल मधुकर दहदिस धावे ॥ २ ॥
केओ नहि बुझए निधन आने । भमि भमि लुटए मानिनि जन माने ॥ ४ ॥
कि कहिवो अगे सखि अपन विभाला । विनु कारने मनमथे करु धाला ॥ ६ ॥
किसलय सोभित नव नव चूते । धजका धरल देखिअ बहूते ॥ ८ ॥
कति कति गन कुसुम सर लेइ । प्रान न हरए विरह पए देइ ॥ १० ॥
दाहिन पवन कओने धरु नामे । अनुभव पाए सेहओ भेल वामे ॥ १२ ॥
मन्द समीर विरहि वध लागि । विकच पराग पजारए आगि ॥ १४ ॥

—०—

राधा ।

७१६

वसन्त रयनि रङ्गे पलटि खेप व सङ्गे
परम रमसे पिअ गेल कहि ।

झम्पि घन गरजान्ति सन्तति भुवन भरि वरसान्तिया ।
कन्त पाहुन काम दारुण सघने खर शर हन्तिया ॥४॥
कुलिश कत शत पात मुदित मयूर नाचत मातिया ।
मत्त दादुरि डाके डाहुकि फाटि जाओत छातिया ॥६॥
तिमिर दिग भरि घोर जामिनी अथिर विजुरिक पाँतिया ।
विद्यापति कह कैसे गमाओव हरि विनु दिन रातिया ॥८॥

—— ० ——

७१६।

राधा ।

खेदव मोञे कोकिल अलिकुल वारव करकङ्कन झमकाइ ।
जखने जलदे धवला गिरि वारिसव तखनुक कओन उपाइ ॥२॥
गगन गरज घन सुनि मन शङ्कित वारिश हरि करु रावे ।
दखिन पवन सौरभे जदि सतरव दुहु मन दुहु विछुरावे ॥४॥
से सुनि जुवति जीव जदि राखति सुन विद्यापति वानी ।
राजा सिवसिंह इ रस विन्दक मदने वोधि देवि आनी ॥६॥

—— ० ——

७१७

राधा ।

अङ्कुर तपन तापे जदि जारव कि करव वारिद मेहे ।
इ नव जौवन विरहे गमाओव कि करव से पिया नेहे ॥२॥

हरि हरि के इह दैव दुराशा ।
सिन्धु निकटे जदि कण्ठ शुखायव के दूर करव पियासा ॥४॥
चन्दन तरु जव सौरभ छोड़व शशधर वरिखव आगि ।
चिन्तामणि जव निज गुण छोड़व कि मोर करम अभागि ॥६॥
श्रावण माह घन विन्दु न वरिखव सुरतरु वाँझ कि छान्दे ।
गिरिधर सेवि ठाम नहि पायव विद्यापति रहु धान्धे ॥८॥

—— ० ——

राधा ।

७१८

काहु दिस काहल कोकिल रावे । मातल मधुकर दहदिस धावे ॥ २ ॥
केओ नहि बुझए निधन आने । भमि भमि लुटए मानिनि जन माने ॥ ४ ॥
कि कहिवो अगे सखि अपन विभाला । विनु कारने मनमथे करु धाला ॥ ६ ॥
किसलय सोभित नव नव चूते । धजका धरल देखिअ बहूते ॥ ८ ॥
कसि कसि गन कुसुम सर लेइ । प्रान न हरए विरह पए देइ ॥ १० ॥
दाहिन पवन कओने धरु नामे । अनुभव पाए सेहओ भेल वामे ॥ १२ ॥
मन्द समीर विरहि वध लागि । विकच पराग पजारए आगि ॥ १४ ॥

—— ० ——

राधा ।

७१९

वसन्त रयनि रङ्गे पलटि खेप व सङ्गे
परम रभसे पिअ गेल कहि ।

झम्पि घन गरजन्ति सन्तति भुवन भरि वरसन्तिया ।
कन्त पाहुन काम दारुण सघने खर शर हन्तिया ॥४॥
कुलिश कत शत पात मुदित मयूर नाचत मातिया ।
मत्त दादुरि डाके डाहुकि फाटि जाओत छातिया ॥६॥
तिमिर दिग भरि घोर जामिनी अथिर विजुरिक पाँतिया ।
विद्यापति कह कैसे गमाओव हरि विनु दिन रातिया ॥८॥

—— ० ——

७१६

राधा ।

खेदव मोजे कोकिल अलिकुल वारव करकङ्कन झमकाइ ।
जखने जलदे धवला गिरि वरिसव तखनुक कओन उपाइ ॥२॥
गगन गरज घन सुनि मन शङ्कित वारिश हरि करु रावे ।
दखिन पवन सौरभे जदि सतरव दुहु मन दुहु विछुरावे ॥४॥
से सुनि जुवति जीव जदि राखति सुन विद्यापति वानी ।
राजा सिवसिंह इ रस विन्दक मदने वोधि देवि आनी ॥६॥

—— ० ——

७१७

राधा ।

अङ्कुर तपन तापे जदि जारव कि करव वारिद मेहे ।
इ नव जौवन विरहे गमाओव कि करव से पिया नेहे ॥२॥

हरि हरि के इह दैव दुराशा ।
सिन्धु निकटे जदि कण्ठ शुखायव के दूर करव पियासा ॥४॥
चन्दन तरु जव सौरभ छोड़व शशधर वरिखव आगि ।
चिन्तामणि जव निज गुण छोड़व कि मोर करम अभागि ॥६॥
श्रावण माह घन विन्दु न वरिखव सुरतरु बाँझ कि छान्दे ।
गिरिधर सेवि ठाम महि पायव विद्यापति रहु धान्धे ॥८॥

—— ० ——

राधा ।

७१८

काहु दिस काहल कोकिल रावे । मातल मधुकर दहदिस धावे ॥ २ ॥
केओ नहि बुझए निधन आने । भमि भमि लुटए मानिनि जन माने ॥ ४ ॥
कि कहिवो अगे सखि अपन विभाला । विनु कारने मनमथे करु धाला ॥ ६ ॥
किसलय सोभित नव नव चूते । धजका धरल देखिअ वहूते ॥ ८ ॥
कसि कसि गन कुसुम सर लेइ । प्रान न हरए विरह पए देइ ॥ १० ॥
दाहिन पवन कओने धरु नामे । अनुभव पाए सेहओ भेल वामे ॥ १२ ॥
मन्द समीर विरहि वध लागि । विकच पराग पजारए आगि ॥ १४ ॥

—— ० ——

राधा ।

७१६

वसन्त रयनि रङ्गे पलटि खेप व सङ्गे
परम रभसे पिअ गेल कहि ।

कोकिल पचम गाव तइअओ न सुबन्धु आव,
उतिम वचन वेभिचर नहि ॥ २ ॥
साए उगलि वेरथा ॥ ३ ॥
अबहु न अएले कन्ता नहि भल परजन्ता
मो पति पछिम सुर उगि गेला ।
साहर सौरभे दिसा चाँद उजोरि निसा
तरुतर मधुकर पसरला ॥
इ रस हृदय धरि तइअओ न आव हरि
से जदि पुरुव पेम विसरला ॥ ६ ॥
कवि भने विद्यापति सुन वर जउवति
मानिनि मनोरथ सुरतरु ।
सिरि सिवसिंह देवा चरन कमल सेवा
महादेवि लखिमा देवि वरु ॥ ८ ॥

—:o:—

राधा ।

७२०

साहर सउरभ गगन भरे । भमरि भमर दुहु वाद करे ॥ २ ॥
लोभक सम्भ्रम सङ्कक दन्द । बहुल पिआसल थोर मकरन्द ॥ ४ ॥
से देखि ऋतुपति आएल चली । जाकर मो मन शङ्का छली ॥ ६ ॥
कोमल भाजरि कोकिल खाए । मानिनि मान पिवि-ओ न अघाए ॥ ८ ॥

जावे न ओङ्ग तरुनत भेल । तावे से कन्त दिगन्तर गेल ॥ १० ॥
परहित अहित सदा विहि वाम । दुइ अभिमत न रहए एक ठाम ॥ १२ ॥
धन कुल धरम मनोभव चोर । केओ न बुझाव मुगुध पिआ मोर ॥ १४ ॥
विद्यापति कवि एहो रस भान । राजा सिवसिंह लखिमा देवि रमान॥ १६ ॥

—— o:——

राधा ।

७२१

विपत अपत तरु पाओल रे पुन नव नव पात ।
विरहिनि नयन विहल विहि रे अविरल वरिसात ॥२॥
सखि अन्तर विरहानल रे नित बाढ़ल जाय ।
बिनु हरि लख उपचारहु रे हिय दुख नइ मिटाय ॥४॥
पिय पिय रटय पपिहरा रे हिय दुख उपजाव ।
कुदिना हित जन अनहित रे थिक जगत सोभाव ॥६॥
कवि विद्यापति गाओल रे दुःख मेटत तोर ।
हरपित चित तोहि भेटत रे पिय नन्दकिशोर ॥८॥

—— o ——

राधा ।

७२२

ललित लता जनि तरु मिलती । तन्हि पिअ कण्ठ गहए जुवती ॥ २ ॥
आजु अपन मन थिर न रहे । मधुकर मदन समाद कहे ॥ ४ ॥

भनइ सरस कवि रस सुजान । त्रिपुरसिंहसुत अरजुन नाम ॥ ६ ॥

—'o:—

राधा ।

७२३

सिसिर समय वहि बहल वसन्त । गरजँहु घर नहि आयल कन्त ॥ २ ॥
ओ परदेसिया धन वनिजार । मोरा हृदय भार भेल हार ॥ ४ ॥
गुनिजन भए पहु भेला भोर । आकुल हृदय तेज नहि मोर ॥ ६ ॥
ए सखि ए सखि कि कहवि तोहि । भलि कइ नाये विसरल मोहि ॥ ८ ॥
निज तन भमय कुसुम मकरन्द । गगन अनल भए उगल चन्द ॥ १० ॥
भइन विद्यापति पुनु पहु आस । जावत रहत देह तिल सास ॥ १२ ॥

—o—

राधा ।

७२४

कानने कानने कुन्द फूल । पलटि पलटि ताहि भमर भूल ॥ २ ॥
पुनमति तरुनि पिया सँग पाव । वरिसे वरिसे ऋतुराज आव ॥ ४ ॥
रआनि छोटि हो दिवस बाढ़ । जनि कामदेव करवाल काँढ़ ॥ ६ ॥
मलयानिल पिव जुवति मान । विरहिनि वेदन केओ न जान ॥ ८ ॥
भने विद्यापति रितु वसन्त । कुमर अमर ज्जनो देइ कन्त ॥ १० ॥

—o—

राजा ।

७२५

फिरि फिरि भमरा उनमत बूल । कानन कानन केसु फूल ॥ २ ॥
मोहि भान लागल कहओं काहि । रितुपति वेकतायल असकसाहि ॥ ४ ॥
चन्दा उगि चण्डाल भेल । द्विजराज धरमता विसरि गेल ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति वुझ रसमन्त । राघव सिंह सोनमति देवि कन्त ॥ ८ ॥

—— ० ——

राधा ।

७२६

सरोवर मझि समीरन विथरओ केवल कमल परागे ।
माधविका मधु पिवहि न पारए कोकिल दे उपरागे ॥२॥
साजनि साजनि साजनि साजनि सूनहि साजनि मोरी ।
वालम्भु सैं मझु दीठि मिलावहि होइहैं दासी तोरी ॥४॥
पाड़रि परिमल आसा पूरय मधुकर गावय गीते ।
चाँदिनि रजनी रभस बढ़ावए मोपति सवे विपरीते ॥६॥
हृदयक वाउलि कहिय पर जनु तोंही कहौ सयानी ।
विनु माधव रे मधु रजनी जाइति मीन कि जिव विनु पानी ॥८॥
विद्यापति कविवर एहु गावय होउ उपदेशौ रसमन्ता ।
अरजुन राए चरण पए सेवहि गूना देवि रानि कन्ता ॥१०॥

—— ० ——

हम छल न टुटव नेहा । सुपुरुख वचन पषाएक रेहा ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति साइ । न कर विषाद मने मिलव मधाइ ॥ ८ ॥

—— ० ——

राधा ।

७३३

कत दिन रहव कपोल कर लाय । रविक अछइत कमलिनि कुम्भिलाय ॥ २ ॥
कहब निअ उगुति जुगुति परचारि । आव नइ जिउति धनि तोहरि पियारि ॥ ४ ॥
अभरण भूखन हलु छिड़िआय । कमक लता सन फुल झड़ि जाय ॥ ६ ॥
वसन उघारि हेरल भरि दीठि । गारि नड़ाओल कुसुमक सीठि ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति सुन ब्रजनारि । धैरज धय रह मिलत मुरारि ॥१०॥

—— ० ——

राधा ।

७३४

सजनि के कह आओव मधाइ ।
विरह पयोधि पार किये पाओव भमु मने नहि पतियाइ ॥२॥
एखन तखन करि दिवस गमाओल दिवस दिवस करि मासा ।
मास मास करि वरस गमाओल छोड़लुँ जीवनक आशा ॥४॥
वरस वरस करि समय गमाओल खोयलुँ तनुक आसे ।
हिमकर किरण नलिनि यदि जारव कि करव माधवी मासे ॥६॥

अङ्कुर तपन तापे यदि जारब कि करब वारिद मेहे ।
इह नव यौवन विरहे गमाओव कि करब से पिया नेहे ॥८॥
भनइ विद्यापति सुन वरयुवति अब नहि होत निराश ।
से व्रजनन्दन हृदय आनन्दन झटिते मिलब तुय पास ॥१०॥

—— ० ——

राधा ।

७३५

जखने माधव पयान करल उगय से सब बोल ।
दुहुक हृदय करुना बाढ़ल नयन गरय नोर ॥२॥
करे कर धरि सिर परसल निभर आओल कान ।
अवधि कइए सपथ करल से सब भइ गेल आन ॥४॥
सखि हे अबहु न आयल नाह ।
दोसर बसन्त अगुसर भेल के सह मदनक दाह ॥६॥
पथ निहारइत चूत मञ्जुल फुटल माधवि लता ।
नविन कोकिल पञ्चम गावए गुञ्जर भमर जता ॥८॥
अवधि पूरल अबहु न आयल नागर पड़ि गेल भोर ।
कओन गुनवति कि गुने बाँधल मुगुध माधव मोर ॥१०॥

—— ० ——

हम छल न टुटव नेहा। सुपुरुख वचन पषाणक रेहा ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति साइ। न कर विषाद मने मिलव मधाइ ॥ ८ ॥

—— ० ——

राधा।

७३३

कत दिन रहव कपोल कर लाय। रविक अछइत कमलिनि कुम्भिलाय ॥ २ ॥
कहब निअ उगुति जुगुति परचारि। आव नइ जिउति धनि तोहरि पियारि ॥ ४ ॥
अभरण भूखन हलु छिड़िआय। कमक लता सन फुल झड़ि जाय ॥ ६ ॥
वसन उघारि हेरल भरि दीठि। गारि नड़ाओल कुसुमक सीठि ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति सुन व्रजनारि। धैरज धय रह मिलत मुरारि ॥१०॥

—— ० ——

राधा।

७३४

✓सजनि के कह आओव मधाइ।
विरह पयोधि पार किये पाओव भझु मने नहि पतियाइ ॥२॥
एखन तखन करि दिवस गमाओल दिवस दिवस करि मासा।
मास मास करि बरस गमाओल छोड़लुँ जीवनक आशा ॥४॥
बरस बरस करि समय गमाओल खोयलुँ तनुक आसे।
हिमकर किरण नलिनि यदि जारव कि करव माधवी मासे ॥६॥

अङ्कुर तपन तापे यदि जारव कि करव वारिद मेहे ।
इह नव यौवन विरहे गमाओव कि करव से पिया नेहे ॥८॥
भनइ विद्यापति सुन वरयुवति अब नहि होत निराश ।
से ब्रजनन्दन हृदय आनन्दन झटिते मिलव तुय पास ॥१०॥

—o—

राधा ।

७३५

जखने माधव पयान करल उगय से सब बोल ।
दुहुक हृदय करुना बाढ़ल नयन गरय नोर ॥२॥
करे कर धरि सिर परसल निभर आओल कान ।
अवधि कइए सपथ करल से सब भइ गेल आन ॥४॥
सखि हे अबहु न आयल नाह ।
दोसर बसन्त अगुसर भेल के सह मदनक दाह ॥६॥
पथ निहारइत चूत मञ्जुल फुटल माधवि लता ।
नविन कोकिल पञ्चम गावए गुञ्जर भमर जता ॥८॥
अवधि पूरल अबहु न आयल नागर पड़ि गेल भोर ।
कओन गुनवति कि गुने बाँधल मुगुध माधव मोर ॥१०॥

—o—

राधा ।

७३६

आज मोञे जानल हरि बड़ मन्द । बोल वदन तोर पुनिमक चन्द ॥ २ ॥
एके दिने पुरित दिनहु दिने खीन । ता सञे तुलना हरि हमे दीन ॥ ४ ॥
वइसलि अधोमुखि चितें गुन दन्द । एके विरहिनि हे दोसरे दह चन्द ॥ ६ ॥
नयन नीर ढर पानि कपोल । खने खने मुरुछि भरम कत बोल ॥ ८ ॥
सखि चेताउलि अवधिक आस । रिपु ऋतुराज तेज घन साँस ॥१०॥

——:o:——

राधा ।

७३७

जखने आओव हरि रहव चरण धरि चान्दे पुजव अरविन्दा ।
कुसुम सेज भलि करव सुरत केलि दुहु मन होएत सानन्दा ॥२॥
साए साए हमर परानाथ कओने विरमाओल कत जिव देव विसवासे ॥३॥
दिवस रहओं हेरि रअनि वइरिनि भेलि विसम कुसुम सर भावे ।
नयन नीर गल मुरछि धरनि पल निरदए कन्त नहि आवे ॥५॥
समअ माधव मास पिआ परदेश वस ताहि देस वसन्त न भेला ।
फुलल कदव गाछ हाट वाट सेहो अछ मोरे पिआ सेओ न देखला ॥७॥
भनइ विद्यापति सुन वर जउवति अछ तोकें जीवन अधारे ।
राजा सिवसिंह रूप नरायन एकादस अवतारे ॥६॥

——o——

राधा।

७३८

कत दिने घुचव इह हाहाकार। कत दिने घुचव गरुय दुखभार ॥ २ ॥
कत दिने चाँद कुमुदे हव मेलि। कत दिने भ्रमरा कमले करु केलि ॥ ४ ॥
कत दिने पिया मोरे पुछव वात। कबहुँ पयोधरे देश्रोव हात ॥ ६ ॥
कत दिने करे धरि वइसाश्रोव कोर। कन दिन मनोरथ पूरव मोर ॥ ८ ॥
विद्यापति कह सुन वरनारि। भागउ सकल दुख मिलव मुरारि ॥ १० ॥

——०——

सखी।

७३९

ए सखि काहे कहसि अनुयोगे। कानु से अवहि करवि प्रेमभोगे ॥ २ ॥
कोरे लेयव सखि तुहुँक पिया। हम चललों तुहुँ थिर कर हिया ॥ ४ ॥
एत कहि कानु पाशे मिलल से सखी। प्रेमक रीत कहल सव दुखी ॥ ६ ॥
सुनतहि माधव मिलल धनि पास। विद्यापति कह अधिक उलास ॥ ८ ॥

——०——

सखी।

७४०

चानन भेल विषम सर रे भूषन भेल भारी।
सपनहुँ नहि हरि हरि आयल रे गोकुल गिरिधारी ॥२॥

एकसरि ठाढ़ि कदमतर रे पथ हेरथि मुरारी ।
हरि बिनु हृदय दगध भेल रे झामर भेल सारी ॥४॥
जाह जाह तोहँ उधव हे तोंहे मधुपुर जाहे ।
चन्द्रवदनि नहि जिउति रे बध लागत काहे ॥६॥
भनइ विद्यापति तन मन रे सुनु गुनमति नारी ।
आजु आओत हरि गोकुल रे पथ चलु झटझारी ॥८॥

—०—

दूती ।

७४१

माधव विधुवदना । कबहुँ न जानइ विरहक वेदना ॥ २ ॥
तुहुँ परदेश तें भेलि क्षीणा । प्रेम परतापे चेतन हरु दीना ॥ ४ ॥
किशलय तेजि सुतलि आयासे । कोकिल कलरवे उठइ तरासे ॥ ६ ॥
नोरहि कुचकुङ्कुम दुर गेल । कृश भुज भूषण खितितल भेल ॥ ८ ॥
अवनत वयने हेरत गीम । क्षिति लिखइते भेल अङ्गुलि छीन ॥ १० ॥
कहइ विद्यापति उचित चरीत । से सब गणइते भेलि मुरछीत ॥ १२ ॥

—:०:—

दूती ।

७४२

माधव सुन्दरि नयनक वारि । पीन पयोधर खल झारि ॥ २ ॥
नीचे अछल उचे चल धाए । कनक भूधर गेल दहाए ॥ ४ ॥

त्रिवली अछलि तरङ्गिणि भेलि । जनि बढ़ियाइ उपटि चलि गेलि ॥ ६ ॥
सहजहि सङ्कट परवस पेम । पातकभीत परापति जेम ॥ ८ ॥
तोहरि पिरिति रीति दूरहि गेलि । कुल सञे कुलमति कुलटा भेलि ॥ १० ॥

—— ० ——

७४३

दूती ।

नदि वह नयनक नीर । पड़लि रहए तहि तीर ॥ २ ॥
सब खन भरम गेआन । आन पुछिअ कह आन ॥ ४ ॥
माधव अनुदिने खिनि भेलि राहि । चौदसि चान्दहु चाहि ॥ ६ ॥
केओ सखि रहलि उपेखि । केओ सिर धुनि धुनि देखि ॥ ८ ॥
केओ कर ससिकर आस । मञे धउलिहु तुअ पास ॥ १० ॥
विद्यापति कवि भानि । एत सुनि सारङ्ग पानि ॥ १२ ॥
हरसि चलल हरि गेह । सुमरिए पुरुव सिनेह ॥ १४ ॥

—— ० ——

दूती ।

७४४

लोचन नोर तटिनी निरमान । ततहि कमलमुखि करत सिनान ॥ २ ॥
वेरि एकु माधव तुय राइ जीवइ । जञो तुय रूप नयन भरि पीवइ ॥ ४ ॥
फुयल कवरी उलटि उर परइ । जनि कनयागिरि चामरे चरइ ॥ ६ ॥

तुय गुण गणइते निन्द न होइ । अवनत आनने धनि कत रोइ ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति सुन वरकान । बुझल तुय हिया दारुण पसान ॥१०॥

—o—

दूती ।

७४५

माधव अबला पेखलु मतिहीना ।
सारङ्ग शबदे मदन अधिकाओल तेजि दिने दिने भेल क्षीणा ॥२॥
गेल विदेश सन्देश न पठओलि कैसे जीयत व्रजबाला ।
तो विनु सुन्दरी ऐसनि भेलहि जइसे नलिनी पर पाला ॥४॥
सकल रजनी धनी रोइ गमावय सपने न देखय तोय ।
धैरज कइसे धरव वर कामिनी विपरीत काम विमोय ॥६॥
विद्यापति भन सुन वर माधव हम आओल तुय पास ।
चोके चलह अब धैरज न सह ऐसन विरह हुताश ॥८॥

—o—

दूती ।

७४६

माधव से अब सुन्दरि बाला ।
अविरत नयने वारि झरु निझर जनि घन-साङण माला ॥२॥

पुर्णामिक इन्दु निन्दि मुख सुन्दर से भेल अब शशी-रेहा ।
कलेवर कमलकाँति जिनि कामिनी दिने दिने खीण भेल देहा ॥४॥
उपवन हेरि मुरछि पडु भूतले चिन्तित सखीगण सङ्ग ।
पद अङ्गुलि देइ क्षिति पर लिखइ पाणि कपोल अवलम्ब ॥६॥
ऐसन हेरि तुरिते हम आयल अब तुहुँ करह विचार ।
विद्यापति कह निकरुण माधव बुझल कुलिशक सार ॥८॥

—o—

दूती ।

७४७

कि कहव माधव कि कहव काजे । पेखल कलावति प्रिय सखी माझे ॥२॥
आगे सोइ अछल कञ्चन पुतला । त्रिभुवने अनुपम रूपे गुणे कुशला ॥ ४ ॥
आबे भेल विपरित झामर देहा । दिवसे मलिन जनि चाँदक रेहा ॥ ६ ॥
वामकरे कपोल लोलित केश भारा । कर नखे लिखु महि आँखि जलधारा ॥ ८ ॥
विद्यापति भने सुन वरकान्हे । राजा शिवसिंह इथे परमाने ॥ १० ॥

—o—

दूती ।

७४८

माधव कठिन हृदय परवासी ।
तुअ पेयसि मोञे देखलि वराकिनि अबहु पलटि घर जासी ॥२॥

हिमकर हेरि अवनत कर आनन कर करुणापथ हेरी ।
नयन काजर लए लिखए विधुन्तुद भए रह ताहेरि सेरी ॥४॥
दखिण पवन वह से कइसे जुवति सह कर कवलित तसु अनङ्गे ।
गेल पराण आश दए राखए दश नखे लिखए भुअङ्गे ॥६॥
मीनकेतन भए शिव शिव कए धरनि लोटावए गेहा ।
करे रे कमल लए कुच सिरिफल दए शिव पूजए निज देहा ॥८॥
परभृत के डरे पाअस लए करे वाएस निकट पुकारे ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन करथु विरह उपचारे ॥१०॥

—— o ——

दूती ।

७४६

माधव देखलि वियोगिनि वामे ।
अधर न हास विलास सखि मङ्ग अहोनिश जप तुय नामे ॥२॥
आनन शरद सुधाकर सम तसु बोलइ मधुर धुनि वानी ।
कोमल अरुन कमल कुम्भिलायल देखि मन अइलहु जानि ॥४॥
हृदयक हार भार भेल सुवदनि नयन न होय निरोधे ।
सखी सब आय खेलाओल रङ्ग करि तसु मन किछुओ न वोधे ॥६॥
रगड़ल चानन मृगमद कुङ्कुम सभ तेजलि तुय लागि ।
जनि जलहीन मीन जक फिरइछ अहोनिश रहइछ जागि ॥८॥

दूति उपदेश सुनि गुनि सुमिरल तइखन चलला धाइ ।
मोदवती पति राघव सिंह गति कवि विद्यापति गाइ ॥१०॥

—— o ——

दूती ।

७५०

माधव हेरि आयलों राहि ।
विरह विपति न दय समति रहल वदन चाहि ॥२॥
मरकतथलि शुतलि अछलि विरहे से खीन देहा ।
निकष पाषाणे जनि पाँचवाणे कपल कनक रेहा ॥४॥
वयान मण्डल लुठय भुतल ताहे से अधिक शोहे ।
राहु भये शशी भुमे पड़ु खसि ऐसे उपजल मोहे ॥६॥
विरह वेदन कि तोहे कहव सुनह निठुर कान ।
भन विद्यापति से जे कुलवती जीवन संशय जान ॥८॥

—— o ——

दूती ।

७५१

माधव पेखलुँ से धनी राहि । चित पुतलि जनि एक दिठे चाहि ॥ २ ॥
वेढ़ल सकल सखी चौपाशा । अति खीण सास वहत तसु नासा ॥ ४ ॥
अति खीण तनु जनि काञ्चन रेहा। हेरइते कोइ न धरु निज देहा ॥ ६ ॥

हिमकर हेरि अवनत कर आनन कर करुणापथ हेरी।
नयन-काजर लए लिखए विधुन्तुद भए रह ताहेरि सेरी ॥४॥
दखिण पवन वह से कइसे जुवति सह कर कवलित तसु अनङ्गे।
गेल पराण आश दए राखए दश नखे लिखए भुअङ्गे ॥६॥
मीनकेतन भए शिव शिव कए धरनि लोटावए गेहा।
करे रे कमल लए कुच सिरिफल दए शिव पूजए निज देहा ॥८॥
परभृत के डरे पाअस लए करे वाएस निकट पुकारे।
राजा शिवसिंह रूपनरायन करथु विरह उपचारे ॥१०॥

—०—

दूती।

७४६

माधव देखलि वियोगिनि वामे।
अधर न हास विलास सखि सङ्ग अहोनिश जप तुय नामे ॥२॥
आनन शरद सुधाकर सम तसु बोलइ मधुर धुनि वानी।
कोमल अरुन कमल कुम्भिलायल देखि मन अइलहु जानि ॥४॥
हृदयक हार भार भेल सुवदनि नयन न होय निरोधे।
सखी सब आय खेलाओल रङ्ग करि तसु मन किछुओ न वोधे ॥६॥
रगडल चानन मृगमद कुङ्कुम सभ तेजलि तुय लागि।
जनि जलहीन मीन जक फिरइछ अहोनिश रहइछ जागि ॥८॥

चिकुरवरहिरे समारि करे लेअइ । फल उपहार पयोधर देअइ ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुनह मुरारी । तुय पथ हेरइते अछ वरनारी ॥१२॥

दूती ।

७५४

फूजलेओ चिकुर राहुक जोर । रोअए सुधाकर कामिनि कोर ॥ २ ॥
अरे कन्हु अरे कन्हु देखह आए । वड़िअ मधय देअ वाद छुड़ाए ॥ ४ ॥
दुहु अञ्जुलि भरि दुहु पुज शीव । कामदहन मोर राखह जीव ॥ ६ ॥
जदि न जाएव तोहे अपजस भेल । ससधर कला गगन चलि गेल ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति हरि मन हास । राहु छुड़ाए चाँद दिअ वास ॥१०॥

दूती ।

७५५

अकामिक मन्दिर भलि वहार । चउदिस सुनलक भमर झँकार ॥ २ ॥
मुरछि खसल महि न रहलि थीर । न चेतए चिकुर न चेतए चीर ॥ ४ ॥
केओ सखि गावए केओ कर चार । केओ चान्दन गदे करय सँभार ॥ ६ ॥
केओ वोल मतें कान तर जोलि । केओ केकिल खेद डाकिनी वोलि ॥ ८ ॥
अरे अरे अरे कान्हु कि रहसि वोरि। मदन भुअङ्गे डसु वालहि तोरि ॥ १० ॥
भनइ विद्यापति एहो रस भान । एहि विषगारुड़ एक पय कान्ह ॥ १२ ॥

कङ्कण वलया गलित दुहु हात । फुयल कवरी न सम्वरि माथ ॥ ८ ॥
चेतन मूरछन बुझइ न पारि । अनुखन घोर विरह जर जारि ॥१०॥
विद्यापति कहे निरदय देह । तेजल अब जगजन अनुलेह ॥१२॥

—.o·—

दूती ।

७५२

एके गोरि पातरि ताहे दुख कातरि अरु दुख विरहक जाला ।
कतय पराण पानि दए राखब गरासय मनमथ बाला ॥२॥
माधव भल नह तुअ अनुरागे ।
अपन पराण पिआ जा सञे बाटल हिआ ताहि दुख तोहे नहि लागे ॥४
करे धरि सिर गहि काहु किछु नहि कहि विरह विखिन धन रोइ ।
विरह वेयाधि भेलि सुन्दरि तो विनु औखध कोइ ॥६॥

—:o:—

दूती ।

७५३

लोचन नीर तटिनि निरमाने । करए कमलमुखि तथिहि सनाने ॥ २ ॥
सरस मृणाल कइए जपमाली । अहनिस जप हरि नाम तोहारी ॥ ४ ॥
वृन्दावन कान्हु धनि तप करई । हृदयवेदि मदनानल , वरई ॥ ६ ॥
जिव कर समिध समर करे आगी । करति होम वध होएवह भागी ॥ ८ ॥

चिकुरवरहिरे समरि करे लेअइ । फल उपहार पयोधर देअइ ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुनह मुरारी । तुय पथ हेरइते अछ वरनारी ॥१२॥

—:०:—

दूती ।

७५४

फूजलेओ चिकुर राहुक जोर । रोअए सुधाकर कामिनि कोर ॥ २ ॥
अरे कन्हु अरे कन्हु देखह आए । वड़िअ मधय देअ वाद छुडाए ॥ ४ ॥
दुहु अञ्जुलि भरि दुहु पुज शीव । कामदहन मोर राखह जीव ॥ ६ ॥
जदि न जाएव तोहे अपजस भेल । ससधर कला गगन चलि गेल ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति हरि मन हास । राहु छुड़ाए चाँद दिअ वास ॥१०॥

—:०:—

दूती ।

७५५

अकामिक मन्दिर भलि वहार । चउदिस सुनलक भमर झँकार ॥ २ ॥
मुरुछि खसल महि न रहलि थीर । न चेतए चिकुर न चेतए चीर ॥ ४ ॥
केओ सखि गावए केओ कर चार । केओ चान्दन गदे करय सँभार ॥ ६ ॥
केओ वोल भतें कान तर जोलि । केओ कोकिल खेद डाकिनी वोलि ॥ ८ ॥
अरे अरे अरे कान्हु कि रहसि वोरि। मदन भुअङ्गे डसु वालहि तोरि ॥ १० ॥
भनइ विद्यापति एहो रस भान । एहि विषगारुड़ एक पय कान्ह ॥ १२ ॥

—०—

कङ्कण वलया गलित दुहु हात । फुयल कवरी न सम्वरि माथ ॥ ८ ॥
चेतन मूरछन वुझइ न पारि । अनुखन घोर विरह जर जारि ॥१०॥
विद्यापति कहे निरदय देह । तेजल अव जगजन अनुलेह ॥१२॥

—०—

दूती ।

७५२

एके गोरि पातरि ताहे दुख कातरि अरु दुख विरहक जाला ।
कतय पराण पानि दए राखव गरासय मनमथ वाला ॥२॥
माधव भल नह तुअ अनुरागे ।
अपन पराण पिआ जा सञे वाटल हिआ ताहि दुख तोहे नहि लागे ॥४॥
करे धरि सिर गहि काहु किछु नहि कहि विरह विखिन घन रोइ ।
विरह वेयाधि भेलि सुन्दरि तो विनु औखध कोइ ॥६॥

—:०:—

दूती ।

७५३

लोचन नीर तटिनि निरमाने । करए कमलमुखि तथिहि सनाने ॥ २ ॥
सरस मृणाल कइए जपमाली । अहनिस जप हरि नाम तोहारी ॥ ४ ॥
वृन्दावन कान्हु धनि तप करई । हृदयवेदि मदनानल वरई ॥ ६ ॥
जिव कर समिध समर करे आगी । करति होम वध होएवह भागी ॥ ८ ॥

चिकुरवरहिरे समारि करे लेअइ । फल उपहार पयोधर देअइ ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुनह मुरारी । तुय पथ हेरइते अछ वरनारी ॥१२॥

—:o:—

दूती ।

७५४

फूजलेओ चिकुर राहुक जोर । रोअए सुधाकर कामिनि कोर ॥ २ ॥
अरे कन्हु अरे कन्हु देखह आए । वड़िअ मथथ देअ वाद छड़ाए ॥ ४ ॥
दुहु अञ्जुलि भरि दुहु पुज शीव । कामदहन मोर राखह जीअ ॥ ६ ॥
जदि न जाएव तोहे अपजस भेल । ससधर कला गगन चलि गेल ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति हरि मन हास । राहु छड़ाए चाँद दिअ वास ॥१०॥

—:o:—

दूती ।

७५५

अकामिक मन्दिर भलि वहार । चउदिस सुनलक भमर झँकार ॥ २ ॥
मुरछि खसल महि न रहलि थीर । न चेतए चिकुर न चेतए चीर ॥ ४ ॥
केओ सखि गावए केओ कर चार । केओ चान्दन गदे करय सँभार ॥ ६ ॥
केओ वोल मतें कान तर जोलि । केओ केकिल खेद डाकिनी वोलि ॥ ८ ॥
अरे अरे अरे कान्हु कि रहसि वोरि। मदन भुअङ्गे डसु वालहि तोरि ॥ १० ॥
भनइ विद्यापति एहो रस भान । एहि विषगारुड़ एक पय कान्ह ॥ १२ ॥

—o—

दूती ।

✓७५६

गगन गरज मेघा उठए धरणि थेघा पचशर हिय गेल सालि ।
से धनि देखलि खिन जिउति आजुक दिन के जान कि होइति कालि॥२॥
माधव मन दय शुनह सुवानी ।
कुजन निरुपि सुजन सखि सङ्गति जे किछु कहय सयानी ॥४॥
की हमे साँझक एकसरि तारा भादव चौठिक चन्दा ।
ऐसन कए पियाए मोर मुख मानल मो पति जीवन मन्दा ॥६॥
वामहु गति जत समदि पठौलनि से सवे कहि कहि गेलि ।
तेरसि तिथि ससि सामरपख निसि दसमि दसा मोरि भेलि ॥८॥
भनइ विद्यापति सुन वर जौवति मने जनु मानह आने ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन लखिमा पति रस जाने ॥१०॥

—o—

दूती ।

७५७

कुसुमित कानन हेरि कमलमुखी मुदि रहुय दुनयान ।
कोकिल कलरव मधुकर धनि सुनि कर देइ झपइ कान ॥२॥
माधव सुन सुन वचन हमारी ।
तुय गुणे सुन्दरी अति भेल दुवरि गुनि गुनि प्रेम तोहारी ॥४॥

धरणी धरि धनि कत वेरि बैठइ पुन तहि उठइ नहि पारा ।
कातर दिठि करि चौदिश हेरि हेरि नयने गलय जलधारा ॥६॥
तोहारि विरहे दीन क्षने क्षने तनु क्षीन चौदशी चाँद समान ।
भनइ विद्यापति शिवसिंह नरपति लछमीदेवी परमान ॥८॥

—o—

दूती ।

७५८

मलिन कुसुम तनु चीरे । करतल कमल नयन ढर नीरे ॥ २ ॥
कि कहब माधव ताही । तुय गुने लुबुधि मुगुधि भेलि राही ॥ ४ ॥
उर पर सामरी वेनी । कमल कोप जनि कारि नागिनी ॥ ६ ॥
केओ सखि ताकए निशासे । केओ नलिनी दले कर बतासे ॥ ८ ॥
केओ बोल आएल हरी । समरि उठलि चिर नाम सुमरी ॥१४॥
विद्यापति कवि गावे । विरह वेदन निअ सखि समुझावे ॥१२॥

—o—

दूती ।

७५६

माधव दुवरी पेखलु ताही ।
चौदशी चाँद जनि अनुखन क्षीयत ऐसन जीवय राही ॥२॥
नियरे सखीगन वचन जो पुछत उतर न देयइ राधा ।
हा हरि हा हरि अनुखन तुय मुख हेरइते साधा ॥४॥

सरसहि मलयज पङ्कहि पङ्कज परशे मानय जनि आगी ।
कवहि धरणी शयन तनु चमकित हृदि माहा मनमथ जागी ॥६॥
मन्द मलयानिल विष सम मानइ मुरछइ पिककुल रावे ।
मालती माल परशे तनु कम्पित भूपति कह इह भावे ॥८॥

—:o:—

दूती ।

७६०

नयन नोर धर वाहर पीछर
सवहु सखी दिठि नोरे ।
पिछरि पिछरि खस तैओ सुमुखि धस
मिलन आस मन तोरे ॥२॥
कि होइति हुनि के जाने ।
हमर वचन मन धरिय सुजन जन
करिय भवन परयाने ॥४॥
एत दिन जे धनि तोहर नाम सुनि
पुलके निवेद पराने ।
खने खने सुवदनि तथिहु सिथिल जनि
नोर भासय अनुमाने ॥६॥
मने मने बुझिकहु तावे चलिय पहु

जावे न कर पिक गाने ।
विद्यापति भन हरि बड़ चेतन
समय करत समधाने ॥८॥

—०—

दूती ।

७६१

चन्दन गरल समान । शीतल पवन हुताशन जान ॥ २ ॥
हेरइ सुधानिधि सूर । निशि बैठलि सुवदनि झूर ॥ ४ ॥
हरि हरि दारुण तोहारि सिनेह । ताहेरि जीवन पड़ल सँदेह ॥ ६ ॥
गुरुजन लोचन वारि । धनि वाटिया हेरइ तोहारि ॥ ८ ॥
तेजइ नयन घन नीर । कत वेदन सहत शरीर ॥१०॥
सुकवि विद्यापति भान । दूतीक वचन लजायल कान ॥१२॥

—:०—

दूती ।

७६२

सुन सुन निठुर कनाइ । जाइ न पेखह राइ ॥ २ ॥
किशलय रचित कुटीरे । शयने न वान्धइ थीरे ॥ ४ ॥
से अवला कुलवाला । कत सह विरहक ज्वाला ॥ ६ ॥
घामे घरमाइत देह । गलि गलि जायत सेह ॥ ८ ॥
नुनिक पुतलि तनु ताय । आतप ताये मिलाय ॥१२॥

हेरि सखी हरल गेयान । कराठहि आओत प्राण ॥१२॥
दीघल दिवस न जाय । कान्दिया रजनी पोहाय ॥१४॥
कबहु ऐसे मुरुछान । यामिनी दिवस न जान ॥१६॥
भूपति कि कहव तोय । पुन नाहि हेरावि मोय ॥१८॥

—:०:—

दूती ।

७६३

सुन सुन माधव सुन मोरि वानी । तुय दरसने विनु जइसनि सयानी ॥ २ ॥
सयन मगन भेल तोहरि देहा । कुहु तिथि मगनि जइसनि ससि रेहा ॥ ४ ॥
सखि जने ऑचरे धइलि झपाइ । अपनहि सॉसे जाइति उड़िआइ ॥६॥
मुरुछि खसलि महि पेयसि तोरी । हरि हरि शिव शिव एतवाए बोली ॥ ८ ॥
अब सेओ जीव तेजति तुअ लागी । ताक मरन वध होएवह भागी ॥१०॥
भनइ विद्यापति के कर तरान । तुअ दरशन एक जीव निदान ॥१२॥

—:०:—

दूती ।

७६४

सुपुरुष प्रेम सुधनि अनुराग । दिने दिने वाढ़ अधिक दिन लाग ॥ २ ॥
माधव हे मधुरापति नाह । अपन ४ ॥
कमलिनी सूर आने आने अनुभाव । भमि भमि गुण ॥
भनइ विद्यापति एहु रस भान । शिरि रस

:०:—

दूती ।

७६५

माधव कठिन हृदय परवासी ।
तुय पेअसि, मोये देखलि वराकिनि अवहु पलटि घर जासी ॥२॥
हिमकर हेरि अवनत कर आनन करु करुना पथ हेरी ।
नयन काजर लए लिखए विधुन्तुद भए रह ताहेरि सेरी ॥४॥
दखिन पवन वह से कइसे जुवति सह कर कवलित तसु अङ्गे ।
गेल परान आस दए राखय दस नखे लिखए भुअङ्गे ॥६॥
मीनकेतन भए शिव शिव शिव कए धरनि लोटावए देहा ।
करे रे कमल लए कुच सिरिफल दए शिव पूजए निज देहा ॥८॥
परभृतके डरें पाअस लए करे वाएस निकट पुकारे ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन करथु विरह उपचारे ॥१०॥

—०—

दूती ।

७६६

नव किसलअ सयन सुतलि न बुझ दिवस राती ।
चान्द सुरज विसेख न जानए चान्दने मानए साती ॥२॥
विरह अनल मने अनूभव परके कहए न जाइ ।
दिवसे दिवसे खिनी वाली चान्द अवथाजे जाइ ॥४॥
माधव रमनि पाउलि मोहे ।
आज धरि मोञे आसे जिआउलि ओतए जानह तोहे ॥६॥

कतहु कुसुम कतहु सौरभ कतहु भर रावे ।
इन्दिअ दारुन जतहि हटिअ ततहि ततहि धावे ॥८॥
मदन सरे जे तनु पसाहल ऋतुपति के रोसे ।
अपन वालभु जओ होअ आएत तओ दिअ परक दोसे ॥१०॥
भन विद्यापति सुन तोजे जउवति रहहि सङ्ग सपूने ।
कन्त दिगन्तर जाहि न सुमर की तसु रूप कि गूने ॥१२॥

——:०:——

दूती ।

७६७

खने सन्ताप सीत जर जाड़ । की उपचरब सन्देह न छाड़ ॥ २ ॥
उचितओ भूषन मानए भार । देह रहल अछ सोभासार ॥ ४ ॥
ए हरि तोरित करिअ अवधारि । जे किछु समदलि सुन्दरि नारि ॥ ६ ॥
वेदन मानए चान्दन आगि । बाट हेरए तुअ अहनिसि जागि ॥ ८ ॥
जीनल वदन इन्दु तें ताव । की दहु होइति एहि परथाव ॥१०॥
नव आखर गद गद सर रोए । जे किछु सुन्दरि समदल गोए ॥१२॥
कहए न पारिअ तसु अवसाद । दोसरा पद अछ सकल समाद ॥१४॥
भनइ विद्यापति एहो रस भान । अबुझ न बुझए बुझए मतिमान ॥१६॥
राजा सिवसिंह परतख देओ । लखिमा देइ पति पुनमत सेओ ॥१८॥

——:०:——

दूती ।

७६८

प्रथमहि रङ्ग रभस उपजाए । प्रेमक ऑकुर गेलाहे बढ़ाय ॥ २ ॥
से आवे दिन दिन तरुनत भास । तॉ तरवर मनमथे लेल वास ॥ ४ ॥
माधव कर्के विसरलि वर नारि । वड परिहर गुन दोस विचारि ॥ ६ ॥
पिक पञ्चम डरे मदन तरास । सर गद गद घन तेज निसास ॥ ८ ॥
नयन सरोज दुहू वह नीर । काजर पधरि पधरि पर चीर ॥१०॥
तँहि तिमित भेल उरज सुवेस । मृगमदे पूजल कनक महेस ॥१२॥
सुपुरुष वाचा सुपहु सिनेह । कवहु न विचल पखानक रेह ॥१४॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि । धरु मन धीरज मिलत मुरारि ॥१६॥

—०—

दूती ।

७६९

सुन सुन माधव पड़ल अकाज । विरहणी रोदिति मन्दिर माझ ॥ २ ॥
अचेतन सुन्दरी न मिलये दिठि । कनक पुतलि जैसे अवनीये लोठि ॥ ४ ॥
के जाने कैसन तोहारि पिरीति । बाढइ दारुण प्रेम वधइ युवति ॥ ६ ॥
कह विद्यापति सुनह मुरारि । सुपुरुख न छोड़इ रसवती नारि ॥ ८ ॥

—०—

दूती ।

७७०

माधव जानल न जिउति राही ।
जतवा जकर लेले छलि सुन्दरि से सवे सोपलक ताही ॥२॥
सरदक ससधर मुखरुचि सोपलक हरिनके लोचन लीला ।
केसपास लए चमरिके सोपल पाए मनोभव पीला ॥४॥
दसन दसा दालिवके सोपलक वन्धु अधर रुचि देली ।
देहदसा सउदामिनि सोपलक काजर सनि सखि भेली ॥६॥
भउहेरि भङ्ग अनङ्ग चाप दिहु कोकिलके दिहु वाणी ।
केवल देह नेह अछ लओले एतवा अएलाहु जानी ॥८॥
भनइ विद्यापति सुन वर जउवति चिते जनु झाँखह आने ।
राजा सिवसिंह रुपनराअन लखिमा देवि रमाने ॥१०॥

—०:—

दूती ।

७७१

छलिहु पुरुव भोरे न जाएव पिआ मोरे
पानिक सुता धनि कलहइ ।
क्षने एके जागलि रोअए लागलि
पिआ गेल निज कर मुदरी दइ ॥२॥

दिने दिने तनु सेख दिवस वरिस लेख
सुन कन्हु तोह विनु जैसनि रमनी ॥३॥
परक वेदन दुख न बुझए मुरुख
पुरुप निरापन चपल मती ।
रभस पड़लि बोल सत कए तन्हि लेल
कि करति अनाइति पड़लि जुवति ॥५॥

—o—

दूती ।

७७२

कत कत भमि पुरुस देखल कत कलावति नारि ।
जिव सञो पेम पलक उपजइ सबे से बुझ विचारि ॥२॥
तकरि आसा देखि देखि तवे मोहि न रह गेंआन ।
जाहि वधतव से जेहेन कर तोंह चाहि नहि आन ॥४॥
माधव कहञो तोहि वुझाइ ।
से आवे मरन सरन जानलि तोहर विरह पाइ ॥६॥
धरनि सयन मुदल नयन नलिन मलिन समे ।
कते जतने वोलिकहु धनि तोरि वइसाउलि हमे ॥८॥
तैअओ जदि पुछले न वाजलि वचन न सुन आधे ।
सुमरि से सखि तोह मोह गोलि विधि वसे भेलि वाधे ॥१०॥

पीरिति गुन विपरीत होए साए विसरि न कर नाह ।
दिवस दोसे से की नहि सम्भव पेम परानहु चाह ॥१२॥
भनइ विद्यापति सुन तजे जुवति रस नहि अवसान ।
राजा सिरि सिवसिंह जिवओो लखिमा देवि रमान ॥१४॥

—·०—

दूती ।

७७३

मोरि अविनए जत परलि खेओव तत चिते सुमरवि मोरि नामे ।
मोहि सनि अभागनि दोसरि जनु होअ तन्हि सन पहु मिल कामे ॥२॥
माधव मोरि सखि समन्दल सेवा ।
जुवति सहस सङ्गे सुख विलसव रङ्गे हम जल आजुरि देवा ॥४॥
पुरव पेम जत निते सुमरव तत सुमर जत न होअ सेखे ।
रहए सरिर जओो कीन भुँजिअ तओो मिलए रमनि सत संखे ॥६॥
पेआसि समाद सुनिए हरि विसमय करु पाए तताहि वेरा ।
कवि भने विद्यापति राजा रूपनराएन लखिमा देवि सुसेरा ॥८॥

—:०.—

दूती ।

७७४

धटक विहि विधाता जानि । काचे कञ्चने छाउलि आनि ॥ २ ॥
कुच सिरिफल सञ्चा पूरि । कुँदि वइसाओल कनक कटोरि ॥ ४ ॥

रूप कि कहव मञे विसेखि । गए निरुपिअ झटित देखि ॥ ६ ॥
नयन नलिन सम विकास । चान्दह तेजल विरह भास ॥ ८ ॥
दिने रजनी हेरए वाट । जनि हरिनी विछुरल ठाट ॥१०॥

—:o:—

दूती ।

७७५

सुन सुन माधव कर अवधान । तो विनु दिवस रजनि नहि जान ॥ २ ॥
जतहु कलानिधि सपुरन भेल । ततहु कलावति छिन भइ गेल ॥ ४ ॥
निल नलिनि लए जब कर वाय । हृदये रहु भय उड़ि जनु जाय ॥ ६ ॥

—o—

दूती ।

७७६

सुजन वचन हे जतने परिपालए कुलमति राखए गारि ।
से पहु वरिसे विदेस गमाओल की होइति वर नारि ॥२॥
कन्हाइ पुनु पुनु सुवदनि समाद पठाओल अवधि समापलि आए ॥३॥
साहर मुकुलित करए कोलाहल पिक भमर करए मधुपान ।
मधुजामिनि हे कइसे कए गमाउति तोह विनु तेजति परान ॥५॥
कुच रुचि दुरे गेल देह अति खिन भेल नयन गरए जलधारा ।
विरह पयोधि काम नाव तहि आस धरए कड़हार ॥७॥

—:o:—

दूती ।

७७७

कि कहव माधव वेदन कातर । जसु करुना सुनि न कॉदय नागर ॥ २ ॥
जखन सुनल साखि हिमकर नाम । तैखने मुरछि पड़ल सोइ ठाम ॥ ४ ॥
कालि पुनिम शशि कइसे जिउ धरति । चान्द छटा धनि टुटहि पड़ति ॥ ६ ॥
सजल नलिनि दल सेज विछाओल । सब साखि आनि ताहि सुताओल ॥ ८ ॥
अनुखन चन्दन सीतल नीरे । ते कि ताप जुड़ाओत सरीरे ॥१०॥

—०—

दूती ।

७७८

अहे कन्हु तुहु गुनवान । हमर वचन कर अवधान ॥ २ ॥
धतुरक फुले जव मधुकर केलि । मालति नाम दैव दुर गेलि ॥ ४ ॥
जहॉ तहॉ जलधर पियव चकोर । सहजहि हिमकर आदर थोर ॥ ६ ॥
काक सवद जव गरुअ सोहाग । दुरे रहु कोकिल पञ्चम राग ॥ २ ॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि । सुजनक दुख दिवस दुइ चारि ॥१०॥

—०—

दूती ।

७७९

गमन अवधि तुय न भेल विशेख । भित भरि गेल दिने दिने रेख ॥ २ ॥
ताहि मेटि केहो उ न सुनावे । वदन सिचइ केहो जल लय धावे ॥ ४ ॥
कि होइति माधव कमलमुखी । जतने जीयाओल सकल सखी ॥ ६ ॥

काहुका नलिनी दल काहुका चन्दना। केओ कहे आओल नन्दनन्दना ॥ ८ ॥
शीतल पनारी हृदय धरु कोय। चान किरणे केओ करे धरु गोय ॥१०॥
केहु मलयानिल वारइ चीरे। केहु करय नव किशलय दूरे ॥१२॥
मधुकर धुनि सुनि केओ मुन काने। करतल ताल कोकिल खेद आने ॥१४॥
कन्त दिगन्तहि केहो केहो जाय। केहो केहो हरि गुण परयाय ॥१६॥
अबुझ सखि जन न जानथि आधि। आन ओपध कर आन उपाधि ॥१८॥

—.०.—

दूती ।

७८०

किशलय सयने आगिं कए मानए सखिगण न पार बुझाय ।
मनिमय मुकुरे देखि पुनु मुख चान्द भरमे मुरछाय ॥२॥
माधव कहलम तोहर दोहाइ ।
जइसन राहि आजु हम पेखल कहइते के पतिआइ ॥४॥
विगलित केश सास वह खरतर नहि रह नीवि निवन्ध ।
कम्बु कन्दर धरए न पारइ टुटल पञ्जर वन्ध ॥६॥
नव किशलय चन्दने सोयाअल अधिक जर जनि आगि ।
कि घर वाहर पडय निरन्तर अहनिसि पेखय जागि ॥८॥
भनइ विद्यापति सुनह शिरोमणि तोरित मिलह धनि पास ।
सकल सखिगण हेरत वियोगिनि दसमि दसा परकास ॥१०॥

—०—

दूती ।

७८१

करहि मिलल रह मुख नहि सुन्दर जनि खिन दिवसक चन्दा ।
प्रकृति न रह थिर नयन गरय निर कमल गरए मकरन्दा ॥२॥
हे माधव तुअ गुणे झामरि रामा ।
दिने दिने खिन तनु पिड़ए कुसुमधनु हरि हरि ले पए नामा ॥४॥
निन्दय चन्दन परिहर भूषन चाँद मानए जनि आगी ।
दसमि दसा आवे तें धनि पाओल वधक होएवह तोंहे भागी ॥६॥
अवसर बहला कि नेह बढ़ाओव विद्यापति कवि भाने ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

—— ० ——

दूती ।

७८२

कत नलिनी दल सेज सोआउवि कत देव मलअज पङ्का ।
जलज दल न कत देह देआओव तथुहु हुतासन शङ्का ॥२॥
कह कइसे राखवि तरुणी तरुण मदन परतापे ॥३॥
चिन्ताञे करतल लीन वदन तसु देखि उपजु मोहि भाने ।
दर लोभे विहि अपुरुव जनि सिरिजल चान्द कमल सन्धाने ॥५॥
दारुन पचसर मुरुछि धरनि पल सुमरि सुमरि तुअ नेहे ।
तोहें पुरुषोतम त्रिभुवन सुन्दर अपद न अपजस लेहे ॥६॥

—— ० ——

दूती ।

७८३

विधि वसे तुअ सङ्गम तेजल दरसन भेल साध ।
समय वसे मधु न मिलए सौरभ के कर वाध ॥२॥
माधव कठिन तोहर नेह ।
तुअ विरह वेआधि मुरछाजे जीवन तासु सन्देह ॥४॥
जगत नागरि कत न आगरि तथुहु गुपुत पेम ।
से रस रभस पुनु पाविअ देलहु सहस हेम ॥६॥

—— ०——

दूती ।

७८४

ओजे अभागलि देहरि लागलि पथ निहारए तोर ।
निचल लोचन सुन न वचन ढरि ढरि खस नोर ॥२॥
माधव कान्जि विसरलि वाला ।
ओ नवि नागरि गुनक आगरि भेलि निमालक माला ॥४॥
रुखलि भुखलि दुखलि देखलि देखलि सखि समेतें ।
फूजलि कावरि न वाध सामरि सुन्दरि अवय एते ॥६॥
तोंहे विसरलि अदिग पड़लि दुवर झामर देह ।
जनि सोनारें कसि कसउटा तेजल कनक रेह ॥८॥

दूती ।

७८७

माधव कत परबोधव राधा ।
हा हरि हा हरि कहतहि वेरि वेरि अब जीउ करब समाधा ॥२॥
धरणी धरिय धनि जतनहि वैसत पुनहि उठए नहि पारा ।
सहजहि विरहिनि जग माहा तापिनि वैरि मदन शरधारा ॥४॥
अरुण नयन नोरे तीतल कलेवर विलुलित दीघल केशा ।
मन्दिरे वाहिर करइते संशय सहचरी गणतहि शेषा ॥६॥
आनि नलिनि केओ रमनि सुताओलि केओ देइ मुखपर नीरे ।
निसवद पेखि केओ सास निहारय केओ देइ मन्द समीरे ॥८॥
कि कहव खेद भेद जनि अन्तर घन घन उतपत श्वास ।
भनइ विद्यापति सेहो कलावति जीवन वन्धन आश पाश ॥१०॥

—— ० ——

दूती ।

७८८

सखिगन कन्दरे थोइ कलेवर घर सञे वाहिर होय ।
विनि अवलम्बने उठए न पारइ अतए निवेदल तोय ॥२॥
माधव कत परबोधव ओहि ।
देह दिपति गेल हार भार भेल जनम गमाओल रोइ ॥४॥

भनइ विद्यापति सुनह नागर चिते न मानह आन ।
दिवस थोर वहि मिलव नागरि मने गुनि इह जान ॥८॥

—.०.—

दूती ।

७६२

अनुखन माधव माधव सुमरइत सुन्दरि भेलि मधाइ ।
ओ निज भाव सोभावहि विसरल अपन गुण लुबधाइ ॥२॥
माधव अपरुब तोहर सिनेह ।
अपन विरहे अपन तनु जर जर जिवइते भेलि सन्देह ॥४॥
भोरहि सहचरि कातर दिठि हेरि छल छल लोचन पानि ।
अनुखण राधा राधा रटतहिं आधा आधा वानि ॥६॥
राधा सञो जब पुनतहि माधव माधव सञो जब राधा ।
दारुण प्रेम तबहि नहि टूटत बाढ़त विरहक बाधा ॥८॥
दुहु दिश दारुदहने जैसे दगधइ आकुल कीट परान ।
ऐसन वल्लभ हेरि सुधामुखी कवि विद्यापति भान ॥१०॥

—०—

राधा ।

७६३

रितुराज आज विराज हे सखि नागरी जन वन्दिते ।
नवरङ्ग नवदल देखि उपवन सहज शोभित कुसुमिते ॥२॥

माधव ।

७६०

तिल एक शयन ओत जिउ न सह न रहु दुहु तनु भीन ।
माझे पुलक गिरि अन्तर मानिय ऐसन रहु निशि दीन ॥२॥
सजनि कोन पर जीयव कान ।
राही रहल दूर हम मथुरापुर एतहु सहय परान ॥४॥
ऐसन नगर ऐसे नव नागरि ऐसन सम्पद मोर ।
राधा विनु सब बाधा मानिय नयन न तेजय नोर ॥६॥
सोइ जमुना जल सोइ रमनिगण सुनइते चमकितचीत ।
कह कविशेखर अनुभवि जानलों बड़क बड़इ पिरीत ॥८॥

—.o,—

माधव ।

७६१

रामा हे सपथ करहु तोर ।
से जे गुनवति गुन गनि गनि न जान कि गति मोर ॥२॥
से सब सुमरि दहइ मदन हृदय लागल धन्ध ।
ताहि विनु हम जीवन मानिय मरन अधिक मन्द ॥४॥
सगर रजनि रोइ गमाओल सघन तेज निसास ।
नयने नयने पुनु कि मिलव पुनु कि पुरव आस ॥६॥

भनइ विद्यापति सुनह नागर चिते न मानह आन ।
दिवस थोर वहि मिलव नागरि मने गुनि इह जान ॥८॥

—:०:—

दूती ।

७६२

अनुखन माधव माधव सुमरइत सुन्दरि भेलि मधाइ ।
ओ निज भाव सोभावहि विसरल अपन गुण लुवधाइ ॥२॥
माधव अपरुव तोहर सिनेह ।
अपन विरहे अपन तनु जर जर जिवइते भेलि सन्देह ॥४॥
भोरहि सहचरि कातर दिठि हेरि छल छल लोचन पानि ।
अनुखण राधा राधा रटतहिं आधा आधा वानि ॥६॥
राधा सञो जव पुनतहि माधव माधव सञो जव राधा ।
दारुण प्रेम तवहि नहि टूटत वाढ़त विरहक वाधा ॥८॥
दुहुं दिश दारुदहने जैसे दगधइ आकुल कीट परान ।
ऐसन वल्लभ हेरि सुधामुखी कवि विद्यापति भान ॥१०॥

—०—

राधा ।

७६३

रितुराज आज विराज हे सखि नागरी जन वन्दिते ।
नवरङ्ग नवदल देखि उपवन सहज शोभित कुसुमिते ॥२॥

माधव ।

७६०

तिल एक शयन ओत जिउ न सह न रहु दुहु तनु भीन ।
माझे पुलक गिरि अन्तर मानिय ऐसन रहु निशि दीन ॥२॥
सजनि कोन पर जीयव कान ।
राही रहल दूर हम मथुरापुर एतहु सहय परान ॥४॥
ऐसन नगर ऐसे नव नागरि ऐसन सम्पद मोर ।
राधा विनु सब बाधा मानिय नयन न तेजय नोर ॥६॥
सोइ जमुना जल सोइ रमनिगण सुनइते चमकितचीत ।
कह कविशेखर अनुभवि जानलोँ बड़क बड़इ पिरीत ॥८॥

—— o ——

माधव ।

७६१

रामा हे सपथ करहु तोर ।
से जे गुनवति गुन गनि गनि न जान कि गति मोर ॥२॥
से सब सुमरि दहइ मदन हृदय लागल धन्ध ।
ताहि विनु हम जीवन मानिय मरन अधिक मन्द ॥४॥
सगर रजनि रोइ गमाओल सघन तेज निसास ।
नयने नयने पुनु कि मिलव पुनु कि पुरव आस ॥६॥

भावोल्लास ।

राधा ।

७६५

सरस वसन्त समय भल पाश्रोलि दछिन पवन बहु धीरे ।
स्वपनहुँ रुप वचन एक भाखिय मुख सौ दूरि करु चीरे ॥२॥
तोहर बदन सन चान होयथि नहि जइश्रो जतन विह देला ।
कइ बेरि काटि वनाश्रोल नव कइ तइश्रो तुलित नहि भेला ॥४॥
लोचन तुल कमल नहि भइ शक से जग के नहि जाने ।
से फेरि जाय लुकायल जल भय पङ्कज निज अपमाने ॥६॥
भनहि विद्यापति सुनु वर जयौवति इ सभ लछमी समाने ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देइ पति भाने ॥८॥

—०—

राधा ।

७६६

कि कहव रे सखि रजनिक काज । स्वपनहि हेरलुँ नागर राज ॥ २ ॥
श्राजु शुभ निशि कि पोहायलुँ हाम । प्राण-पिया के करलुँ परणाम ॥ ४ ॥
विद्यापति कहे सुन वरनारि । धैरज धर तोहे मिलव मुरारि ॥ ६ ॥

—०—

दूती ।

७६७

सपने श्राएल सखि मझु पिया पासे । तखनुक कि कहव हृदय हुलासे ॥ २ ॥

आरे कुसुमित कानन कोकिल साद। मुनिहुँक मानस उपजु विसाद ॥ ४ ॥
आयल उनमद समय वसन्त। दारुन मदन निकारुन कन्त ॥ ६ ॥
अति मत्त मधुकर रव कर मालती मधु सञ्चिते।
समय कन्त उदन्त नहि किछु हमहि विधिवस वञ्चिते ॥८॥
वञ्चित नागर सेह संसार। एहि रितु पति सौं न कर विहार ॥१०॥
अति हार भार मनोद मारय। चन्द रवि सखि भानए ॥
पुरुव पाप सन्ताप जतहो मन मनोभव जानए ॥१२॥
जारय मनसिज मार शर साधि चानने देह चौगुन हो धाधि ॥१४॥
सवे धाधि आधि वेआधि जाइति करिय धैरज कामिनी।
सुपहु मन्दिर तोरित आयोत सुफले जाइति जामिनी ॥१६॥
जामिनि सुफले जाइति अवसान। धैरज धरु विद्यापति भान ॥१८॥

—o—

राधा।

७६४

आजे तिमिर दह दीस छुड़ला। आजे दिधर भए दिवस बढ़ला ॥ २ ॥
आजे अकथ भेल परिजन कथा। आरति न रहए उचित चेथा ॥ ४ ॥
ए सखि ए सखि फललि सुवेला। निअर आएल पिआ लोचन मेला ॥ ६ ॥
विरहे दगध मन कत दुर धओला। मागल मनोरथ कओने सखि पओला॥ ८ ॥
कति खन धरव जाइते जिव राखि। आसा बाँध पड़ल मन साखि ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुन सजनी। वालभु सुन भेल महधि रजनी ॥१२॥

—o—

मालति पाओल रसिक भमरा । मेल वियोग करम दोस मोरा ॥ ८ ॥
निधने पाओल धन अनेक जतने । आँचर सओ खसि पलल रतने ॥ १० ॥

—०—

राधा ।

७००

सुतलि छलहुँ हम घरवा रे गरवा मोति हार ।
राति जखनि भिनसरवा रे पिअ आएल हमार ॥२॥
कर कौशल कर कपइत रे हरवा उर टार ।
कर पङ्कजें उर थपइत रे मुख चन्द निहार ॥४॥
केहनि अभागलि वैरिनि रे भागलि मोर निन्द ।
भल कए नहि देखि पाओल रे गुणमय गोविन्द ॥६॥
विद्यापति कवि गाओल रे धनि मन धरु धीर ।
समय पाय तरुवर फड़ रे कतओ सिचु नीर ॥८॥

—०—

राधा ।

८०१

सपन देखल पिय मुख अरविन्द । तोहि खन हे सखि टुटलि निन्द ॥ २ ॥
आज सगुन फल सम्भव सोँच । वेरि वेरि वाम नयन मोर नाच ॥ ४ ॥

न देखिअ धनुगुन न देखु सन्धाने । चौदिस परए कुसुम सर वाने ॥ ४ ॥
वङ्क विलोचन विकसित थोरा । चाँद उगल जनि समुद्र हिलोरा ॥ ६ ॥
उठलि चेहाए आलिङ्गन वेरी । रहलि लजाए सूनि सेज हेरी ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति सुनह सपने । जत देखलह तत पूरतौह मने ॥१०॥

—०—

राधा

७६८

करे कुचमण्डल रहलिहुँ गोए । कमल कनक गिरि झाँपि न होए ॥ २ ॥
हरख सहित हेरलाह्नि मुख काँति । पुलकित तनु मोर धर कत भाँति ॥ ४ ॥
तखने हरल हरि अञ्चल मोर । रस भरे ससरु कसनिकेर डोर ॥ ६ ॥
सपना एक सखि देखल मोञे आज । तखनुक कौतुक कहइते लाज ॥ ८ ॥
आनन्दे नोरे नयन भरि गेल । पेमक आँकुरे पल्लव देल ॥१०॥
भनइ विद्यापति सपना सरुप । रस बूझ रूपनरायन भूप ॥१२॥

—०—

राधा ।

७६९

सपन देखल हरि उपजल रङ्गे । पुलक पुरल तनु जागु अनङ्गे ॥ २ ॥
वदन मेराए अधर रस लेला । निसि अवसान कान्ह कँहा गेला ॥ ४ ॥
का लागि नीन्द भाँगलि विधि मोरा । न भेले सुरत सुख लागल भोरा ॥ ६ ॥

मालति पाओल रसिक भमरा । भेल बियोग करम दोस मोरा ॥ ८ ॥
निधने पाओल धन अनेक जतने । आँचर सओ खसि पलल रतने ॥ १० ॥

—o—

राधा ।

७००

सुतलि छलहुँ हम घरवा रे गरवा मोति हार ।
राति जखनि भिनसरवा रे पिअ आएल हमार ॥२॥
कर कौशल कर कपइत रे हरवा उर टार ।
कर पङ्कजें उर थपइत रे मुख चन्द निहार ॥४॥
केहनि अभागलि वैरिनि रे भागलि मोर निन्द ।
भल कए नहि देखि पाओल रे गुणमय गोविन्द ॥६॥
विद्यापति कवि गाओल रे धनि मन धरु धीर ।
समय पाय तरुवर फड़ रे कतओ सिचु नीर ॥८॥

—o—

राधा ।

८०१

सपन देखल पिय मुख अरविन्द । तेहि खन हे सखि टुटलि निन्द ॥ २ ॥
आज सगुन फल सम्भव साँच । वेरि वेरि वाम नयन मोर नाच ॥ ४ ॥

ा देखिअ धनुगुन न देखु सन्धाने । चौदिस परए कुसुम सर वाने ॥ ४ ॥
ङ्क विलोचन विकसित थोरा । चाँद उगल जनि समुद्र हिलोरा ॥ ६ ॥
उठलि चेहाए आलिङ्गन वेरी । रहलि लजाए सूनि सेज हेरी ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति सुनह सपने । जत देखलह तत पूरतौह मने ॥१०॥

—o—

राधा

७६८

करे कुचमण्डल रहलिहुँ गोए । कमल कनक गिरि झाँपि न होए ॥ २ ॥
हरख सहित हेरलाह्नि मुख काँति । पुलकित तनु मोर धर कत भाँति ॥ ४ ॥
तखने हरल हरि अञ्चल मोर । रस भरे ससरु कसनिकेर डोर ॥ ६ ॥
सपना एक सखि देखल मोजे आज । तखनुक कौतुक कहइते लाज ॥ ८ ॥
आनन्दे नोरे नयन भरि गेल । पेमक आँकुरे पल्लव देल ॥१०॥
भनइ विद्यापति सपना सरुप । रस बूझ रूपनरायन भूप ॥१२॥

—o—

राधा ।

७६६

सपन देखल हरि उपजल रङ्गे । पुलक पुरल तनु जागु अनङ्गे ॥ २ ॥
वदन मेराए अधर रस लेला । निसि अवसान कान्ह कँहा गेला ॥ ४ ॥
का लागि नीन्द भाँगलि विधि मोरा । न भेले सुरत सुख लागल भोरा ॥ ६ ॥

मालति पाओल रसिक भमरा। भेल वियोग करम दोस मोरा॥ ८ ॥
निधने पाओल धन अनेक जतने। ऑचर सओ खसि पलल रतने॥ १० ॥

—o—

राधा।

७००

सुतलि छलहुँ हम घरवा रे गरवा मोति हार।
राति जखनि भिनसरवा रे पिअ आएल हमार ॥२॥
कर कौशल कर कपइत रे हरवा उर टार।
कर पङ्कजें उर थपइत रे मुख चन्द निहार ॥४॥
केहनि अभागलि वैरिनि रे भागलि मोर निन्द।
भल कए नहि देखि पाओल रे गुणमय गोविन्द ॥६॥
विद्यापति कवि गाओल रे धनि मन धरु धीर।
समय पाय तरुवर फड़ रे कतबो सिचु नीर ॥८॥

—o—

राधा।

८०१

सपन देखल पिय मुख अरविन्द। तोहि खन हे सखि टुटलि निन्द ॥ २ ॥
आज सगुन फल सम्भव सॉच। वेरि वेरि वाम नयन मोर नाच ॥ ४ ॥

आङ्गन वइसि सगुन कह काक । विरह विभञ्जन दिनपरिपाक ॥ ६ ॥
आज देखव पिय अलखक चान । विद्यापति कविवर एह भान ॥ ८ ॥

—०—

राधा ।

८०२

मोराहि रे अँगना चाँदन केरि गछिआ ताहि चढ़ि कुरुरए काक रे ।
सोने चञ्चु बँधए देव मोए वाअस जओं पिआ आओत आज रे ॥२॥
गावह सहिलोरि झूमरि मअन अराधने जाञु ॥३॥
चउदिस चम्पा मउलि फुलालि चान्द उजोरिए राति ।
कइसे कए मअन अराधवा रे होइति बड़ि रति साति ॥५॥
विद्यापति कवि गाविआ रे तोंके अछ गुनक निधान ।
राउ भोगिसर गुन नागरा रे पदमा देवि रमान ॥७॥

—:०:—

राधा ।

८०३

सुरभि समय भल चल मलआनिल साहर सउरभ सार लो ।
काहुक वीपद काहुक सम्पद नाना गति संसार लो ॥२॥
कोइली पञ्चम रागे रमन गुन सुमराओ कुसल आओत मोर नाह लो ।
धरिए हमे आसहि अछलिहु सुमरि न छड़ल ठाम लो ॥४॥

भमर देखि भञ भावे पराएल गहए सरासन काम लो ।
भनइ विद्यापति रूपनराएन सिरि सिवसिंह देव नाम लो ॥६॥

—:o.—

सखी ।

८०४

गगन वलाहके छाड़ल रे वारिस काल अतीत ।
करिय विनति सौँ ऍ आयव जन्हि विनु तिहुयन तीत ॥२॥
आवहो सुमति संघातिनि रे वाट निहारय जाँउ ।
कुदिना सब दिन नहि रह सुदिवस मन हरखाउ ॥४॥
सामर चन्दा उगलाह रे चान्दे पुन गेलाह अकास ।
एतवहि पियाकै अयवा रे पलटत विरहिनि साँस ॥६॥
सूतिये दुरहि निहरवा रे जति दुर हियरा धाव ।
कि करत हियरा आकुला रे आगिहि बात न पाव ॥८॥
विद्यापति कवि गएवा रे रस जनिए रसमन्त ।
मन्ति महेसर सुन्दर रे रेणुक देवि कन्त ॥१०॥

—o.—

राधा ।

८०५

हमर मन्दिरे जव आओव कान । दिठि भरि हेरव से चान्द वयान ॥ २ ॥
नहि नहि बोलव जव हम नारि । अधिक पिरीति तव करव मुरारि ॥ ४ ॥

आङ्गन वइसि सगुन कह काक । विरह विभञ्जन दिनपरिपाक ॥ ६ ॥
आज देखव पिय अलखक चान । विद्यापति कविवर एह भान ॥ ८ ॥

—o—

राधा ।

८०२

मोराहि रे अँगना चाँदन केरि गछिआ ताहि चढ़ि कुररए काक रे ।
सोने चञ्चु बँधए देव मोए वाअस जञो पिआ आओत आज रे ॥२॥
गावह सहिलोरि झूमरि मअन अराधने जाञु ॥३॥
चउदिस चम्पा मउलि फुलालि चान्द उजोरिए राति ।
कइसे कए मअन अराधवा रे होइति बड़ि रति साति ॥५॥
विद्यापति कवि गाविआ रे तोंके अछ गुनक निधान ।
राउ भोगिसर गुन नागरा रे पदमा देवि रमान ॥७॥

—:o:—

राधा ।

८०३

सुरभि समय भल चल मलआनिल साहर सउरभ सार लो ।
काहुक वीपद काहुक सम्पद नाना गति संसार लो ॥२॥
कोइली पञ्चम रागे रमन गुन सुमराञो कुसल आओत मोर नाह लो ।
धरिए हमे आसहि अछलिहु सुमरि न छड़ल ठाम लो ॥४॥

भमर देखि भञ भावे पराएल गहए सरासन काम लो ।
भनइ विद्यापति रूपनराएन सिरि सिवसिंह देव नाम लो ॥६॥

—:०:—

सखी ।

८०४

गगन वलाहकें छाड़ल रे वारिस काल अतीत ।
करिय विनति सैाँ एँ आयव जन्हि विनु तिहुयन तीत ॥२॥
आवहो सुमति संघातिनि रे वाट निहारय जाँउ ।
कुदिना सव दिन नहि रह सुदिवस मन हरखाउ ॥४॥
सामर चन्दा उगलाह रे चान्दे पुन गेलाह अकास ।
एतवहि पियाकै अयवा रे पलटत विरहिनि साँस ॥६॥
सूतिये दुरहि निहरवा रे जति दुर हियरा धाव ।
कि करत हियरा आकुला रे आगिहि वात न पाव ॥८॥
विद्यापति कवि गएवा रे रस जनिए रसमन्त ।
मन्ति महेसर सुन्दर रे रेणुक देवि कन्त ॥१०॥

—.०.—

राधा ।

८०५

हमर मन्दिरे जव आओव कान । दिठि भरि हेरव से चान्द वयान ॥ २ ॥
नहि नहि वोलव जव हम नारि । अधिक पिरीति तव करव मुरारि ॥ ४ ॥

राधा।

८१०

जे दुखदायक से सुख देथु। अबला जन सों आसिस लेथु ॥ २ ॥
पिय मोर आयल आन परोस। विरह व्यथा जानि गेल लख कोस ॥ ४ ॥
नहि छथि उगथु सहस दिजराज। कुदिवस हितकर अनहित काज ॥ ६ ॥
त्रिविध समीर वहथु दिनराति। पञ्चम गावथु कोकिल जाति ॥ ८ ॥
से गृह गृह नित उत्सव आज। विद्यापति भन मन निर्व्याज ॥१०॥

—o—

राधा।

८११

दारुण वसन्त जत दुख देल। हरिमुख हेरइते सब दूर गेल ॥ २ ॥
जतहुँ अछल मोर हृदयक साध। से सब पूरल हरि परसाद ॥ ४ ॥
कि कहव रे सखि आजुक आनन्द ओर। चिरदिने माधव मन्दिरे मोर ॥ ६ ॥
रभस आलिङ्गने पुलकित भेल। अधरक पाने विरह दूर गेल ॥ ८ ॥
भनहि विद्यापति आर नह आधि। समुचित औखधे न रह वेयाधि ॥१०॥

—o—

राधा।

८१२

विह मोर परसन भेल। हरि मोहि दरशन देल ॥ २ ॥
देखलि वदन अभिराम। पूरल सकल मन काम ॥ ४ ॥

जागि उठल पञ्चवान । वसि नहि रहल गेयान ॥ ६ ॥
भनहि विद्यापति भान । सुपुरुष न कर निदान ॥ ८ ॥

—— ० ——

राधा ।

८१३

आजु रजनी हम भागे गमाओल पेखल पिया मुख चन्दा ।
जीवन यौवन सफल करि मानल दश दिश भेल निरदन्दा ॥ २ ॥
आजु मझु गेह गेह करि मानल आजु मझु देह भेल देहा ।
आजु विहि मोहे अनुकुल होयल टूटल सबहु सन्देहा ॥ ४ ॥
सोइ कोकिल अब लाख डाकउ लाख उदय करु चन्दा ।
पाँचबाण अब लाख बाण होउ मलय पवन बहु मन्दा ॥ ६ ॥
अब मझु जब पिया सङ्ग होयत तबहि मानब निज देहा ।
विद्यापति कह अलप भागि नह धनि धनि तुय नव नेहा ॥ ८ ॥

—— ० ——

राधा ।

८१४

जनम कृतारथ सुपुरुष सङ्ग । सेहे दिवस जों नहि मन भङ्ग ॥ २ ॥
हृदयक आनन्दे सुख परगास । तरनि तेजेँ हो कमल विगास ॥ ४ ॥
भल भेल माइ हे कुदिवस गेल । हरि निधि मिलल सकल सिधि भेल ॥६॥

राधा।

८१०

जे दुखदायक से सुख देथु। अवला जन सों आसिस लेथु ॥ २ ॥
पिय मोर आयल आन परोस। विरह व्यथा जानि गेल लख कोस ॥ ४ ॥
नहि छथि उगथु सहस दिजराज। कुदिवस हितकर अनहित काज ॥ ६ ॥
त्रिविध समीर वहथु दिनराति। पञ्चम गावथु कोकिल जाति ॥ ८ ॥
से गृह गृह नित उत्सव आज। विद्यापति भन मन निर्व्याज ॥१०॥

राधा।

८११

दारुण वसन्त जत दुख देल। हरिमुख हेरइते सब दूर गेल ॥ २ ॥
जतहुँ अछल मोर हृदयक साध। से सब पूरल हरि परसाद ॥ ४ ॥
कि कहव रे सखि आजुक आनन्द ओर। चिरदिने माधव मन्दिरे मोर ॥ ६ ॥
रभस आलिङ्गने पुलकित भेल। अधरक पाने विरह दूर गेल ॥ ८ ॥
भनहि विद्यापति आर नह आधि। समुचित औखधे न रह वेयाधि ॥१०॥

राधा।

८१२

विह मोर परसन भेल। हरि मोहि दरशन देल ॥ २ ॥
देखलि वदन अभिराम। पूरल सकल मन काम ॥ ४ ॥

जागि उठल पञ्चवान । वसि नहि रहल गेयान ॥ ६ ॥
भनहि विद्यापति भान । सुपुरुष न कर निदान ॥ ८ ॥

—— ० ——

राधा ।

८१३

आजु रजनी हम भागे गमाओल पेखल पिया मुख चन्दा ।
जीवन यौवन सफल करि मानल दश दिश भेल निरदन्दा ॥ २ ॥
आजु मझु गेह गेह करि मानल आजु मझु देह भेल देहा ।
आजु विहि मोहे अनुकुल होयल टूटल सबहु सन्देहा ॥ ४ ॥
सोइ कोकिल अब लाख डाकउ लाख उदय करु चन्दा ।
पाँचबाण अब लाख बाण होउ मलय पवन बहु मन्दा ॥ ६ ॥
अब मझु जब पिया सङ्ग होयत तबहि मानब निज देहा ।
विद्यापति कह अलप भागि नह धनि धनि तुय नव नेहा ॥ ८ ॥

—— ० ——

राधा ।

८१४

जनम कृतारथ सुपुरुष सङ्ग । सेहे दिवस जौं नहि मन भङ्ग ॥ २ ॥
हृदयक आनन्दे सुख परगास । तरनि तेजेँ हो कमल विगास ॥ ४ ॥
भल भेल माइ हे कुदिवस गेल । हरि निधि मिलल सकल सिधि भेल ॥ ६ ॥

एक दिस मनिमय नव निधि हेम । अओका दिस नवरस सुपुरुप पेम ॥ ८ ॥
निकुती तौलि कएल अनुमान । प्रीति अधिक थी के नहि जान ॥१०॥
प्रीतिक सम हे दोसर नहि आन । जाहि तुलना दिअ अपन परान ॥११॥
भनइ विद्यापति अनुपम रीति । दम्पति कॉ हो अचल पिरीति ॥१४॥

—— o ——

राधा ।

८१५

दिरादिन छिल विहि मोहे प्रतिकूल । पिया परसादे भेल अनुकूल ॥ २ ॥
अछल दारुण विरहे विभोर । तुरित आवि पिया मोहे लेल कोर ॥ ४ ॥
तृषित चातक जनि नव घन मेलि । भुखल चकोर चाँद करु केलि ॥ ६ ॥
जनि वनजानले दगध परान । ऐसन होयल अमिया सिनान ॥ ८ ॥

—— o ——

राधा ।

८१६

अरे रे परम प्रेम सजनि नयन गोचर कओन दिन जनि
नाह नागर गुणक आगर कला सागर रे ।
जखने मधुरिपु भवन आओव दूरे रहि मुझे काहि पठाओव
सकल दूखन तोजि भूखन समक साजव रे ॥२॥
लाज नति भये निकटे आओव रसिक व्रजपति हिये सम्भाओव
कौशल कोप काजर तबहु राजव रे ।

कबहुं कोकिल मधुर कुहु कुहु   कबहुं कपोत कण्ठ रव मुहु
करजशासन केला आसन कछु न गोयब रे ॥४॥
कबहुं दुहु मेलि सङ्गीत गाओब   कबहुं कर गहि कण्ठ लाओब
कबहुं कौतुक कोप किये रस राखि रुषब रे ।
जतन करि हरि कत न भाखब   आश देइ पिया पाश राखब
समय बुझि तहि माङ्घ होइ पुन साङ्घ होयब रे ॥६॥
वचन छले जब साध मानब   मीनकेतन जुझत जानब
मदन मय मत्त हाती मातब अचिरे मूषब रे ।
एतहु कहिते सखी तुरिते आओलि   सुधा सम बात लाओलि
कानु सुन्दर चतुर मन्दिर निकट आओल रे ॥८॥
हरखि हासि हासि बोलय राधा   अचिरे विहि किये पूरब साधा
शरद चाँद चकोर मिलल सिंह भूपति गावइ रे ॥६॥

—o—

सखी ।

८१७

अधर सुधा मिठि दूधे धवरि डिठि मधु सम मधुरिम वानी रे ।
अति अरथित जे जतने न पाइअ सबे विहि तोहि देल आनि रे ॥२
जनु रुसह भाविनि भाव जनाइ ।
तुय गुने लुबुधल सुपहु अधिक दिने पाहुन आएल मधाइ ॥४॥

जसु गुन झखइते झामरि भेलि हे रयनि गमओलह् जागि रे ।
से निधि निधि अनुरागे मिलल तोहि कन्हु सम पिआ अनुरागि रे ॥६॥
भनइ विद्यापति गुणमति राखए वालमुके अपराध रे ।
राजा शिवसिंह रूपनराएन लखिमा देवि अराध रे ॥८॥

—०—

सखी ।

८१८

जा लागि चाँदन विख तह् भेल चाँद अनल जा लागि रे ।
जा लागि दखिन पवन भेल सायक मदन वैरि जा लागि रे ॥२॥
से कान्हु कते दिने पाहुन हसि न निहारसि ताहि रे ।
हृदयक हार हठे टारह जनु पेम सुधा अवगाहि रे ॥४॥
रोयइते नोरे आतुर भेल लोचन रयनि जाम जुगे गेलि रे ।
फूजल चिकुर चीर नहि चेतए हार भार तनु भेल रे ॥६॥
तप तोर तरुणा करुने कान्हु आएल काँइ बढ़ावसि मान रे ।
जेओ न अछल मन सेओ भेल संपन कवि विद्यापति भान रे ॥८॥

—०—

राधा ।

८१९

कत न दिवस लए अछल मनोरथ हरि सञो बढ़ाओव नेहा ।
सफल भेल विहि अभिमत देल सहजे आएल मभु गेहा ॥२॥

माइ हे जनम कृतारथ भेला ।
वदन निहारि अधर मधु पिविकहु हरि परिरम्भन देला ॥४॥
पीन पयोधर हरखि परासि करु निविवन्ध खोएलन्हि पानी ।
पुलक पुरल तनु मुदित कुसुमधनु गावए सुललित वानी ॥६॥
तोंओ धनि पुनमति सब गुण गुणमति विद्यापति कवि भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

—०—

सखा ।

८२०

सरदक चान्द सरिस तोर मुख रे । छाड़ल विरह अँधारक दुख रे ॥ २ ॥
अमिल मिलिल अछ सुदृढ़ समाज रे । पुरुवक ुन परिनत भेल आज रे ॥ ४ ॥
हेरि हल सुन्दरि सुनह वचन मोर रे । परिहर लाज सुलह मन तोर रे ॥ ६ ॥
रसमति मालति भल अवसर रे । पिवओ मधुर मधु भूखल भमर रे ॥ ८ ॥
उपनत पाहुन ऋतुपति साह रे । अपनुक अङ्गिरल कर निरवाह रे ॥१०॥
सुपुरुखे पाओल सुमुखि सुनारि रे । दैवे मेराओल उचित विचारि रे ॥१२॥

—०—

सखी ।

८२१

चिरदिने से विहि भेल निरवाध । पुराओल दुहुक मनोभव साध ॥ २ ॥
आओल माधव रति सुख वास । बाढ़ल रमनिक मनहि उलास ॥ ४ ॥

से तनु परिमले भरल दिगन्त । अनुभवि मुरुछि पड़ल रतिकन्त ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति कुमुदिनि इन्दु । उछलल सखिगन आनन्द सिन्धु ॥ ८ ॥

—:o—

सखी ।

८२२

दुहुक दुलह दुहु दरशन भेल । विरह जनित दुख सब दूरे गेल ॥ २ ॥
करे धरि वैसाओल विचित्र आसने । रमय रतन श्याम रमणी रतने ॥ ४ ॥
बहुविध विलसय बहुविधि रङ्ग । कमले मधुप जानि पाओल सङ्ग ॥ ६ ॥
नयाने नयान दुहुँ वयाने वयान । दुहु गुणे दुहु गुण दुहु जने गान ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति नागरी भोर । त्रिभुवनविजयी नागर चोर ॥१०॥

—o—

सखी ।

८२३

मदन मदालसे श्याम विभोर । शशिमुखि हँसि हँसि करु कोर ॥ २ ॥
नयन ढुलाढुलि लहु लहु हास । अङ्ग हेलाहेलि गद गद भास ॥ ४ ॥
रसवति नारि रसिकवर कान । रहि रहि चुम्बइ नाह वयान ॥ ६ ॥
दुहु तनु मातल दुहु शर हान । विद्यापति करु से रस गान ॥ ८ ॥

—.o.—

राधा ।

८२४

चिरदिने से विहि भेल अनुकूल रे । दुहु मुख हेरइते दुहु से आकुल रे ॥ २ ॥
बाहु पसारिया दुहोँ दुहाँ धरु रे । दुहु अधरामृते दुहु मुख भरु रे ॥ ४ ॥
दुहु तनु कॉपइ मदन उछल रे । कि कि कि करि किङ्किणी रुचल रे ॥ ६ ॥
जातहि स्मित नव वदन मिलिल रे । दुहु पुलकावलि ते लहु लहु रे ॥ ८ ॥
रसे मातल दुहु वसन खसल रे । विद्यापति कह रससिन्धु उछलिल रे॥१०॥

—— ० ——

राधा ।

८२५

आर दूरदेशे हम पिया न पठाओ । आँचर भरिया जदि महानिधि पाओ ॥ २ ॥
शीतेर ओड़न पिया गिरिपेर बा । वरिखेर छत्र पिया दरियार ना ॥ ४ ॥
निधन वलिया पियार न कलुँ जतन । एवे हम जानलुँ पिया वड़ धन ॥ ६ ॥
भनये विद्यापति सुन वरनारि । नागर सङ्गे करु रस परिहारि ॥ ८ ॥

——।०।——

सखी ।

८२६

दुहुँ दुहाँ निरखइ नयनक कोने । दुहुँ हिय जर जर मनमथ वाने ॥ २ ॥

ए सखि सुपहु समागम सुख कहहि न जाए ।
मन कर मनाओ न छाड़िअ राखिअ हिअ लाए ॥४॥
पुरव गौरि हमे पूजलि पुने परिनत नेह ।
जीव एक कए मानल की जओ दुइ देह ॥६॥
लछमी नराएन नृप कह तोंहे गुनमति नारि ।
जा सञो नेह बढ़ावह सेहे देव मुरारि ॥८॥

—o—

राधा ।

८३१

के मोरा जाएत दुरहुक दूर । सहस सौतिनि वस मधुरपुर ॥ २ ॥
अपनहि हात चललि अछ नीधि । जुग दश जपल आजे भेलि सीधि ॥ ४ ॥
भल भेल माइ हे कुदिवस गेल । चान्द कुमुद दुहु दरशन भेल ॥ ६ ॥
कतए दमोदर देव वनमारि । कतए कहमे धनि गोप गोयारि ॥ ८ ॥
आजे अकामिक दुइ दिठि मेलि । देव दाहिन भेल हृदय उवेलि ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि । कुदिवस रहए दिवस दुइ चारि ॥१२॥

—o—

राधा

८३२

माधव कत तोर करव बड़ाइ ।
। तोहर हम ककरा कहव [illegible] अधिक [illegible]

जौं श्रीखण्ड सौरभ अति दुर्लभ तौं पुन काठ कठोर ।
जौं जगदीश निशाकर तौं पुन एकहि पक्ष इजोर ॥४॥
मनि समान अओरो नहि दोसर तनिकँहु पाथर नामे ।
कनक कदलि छोट लज्जित भै रहु की कहु ठामहि ठामे ॥६॥
तोहर सरिस एक तोह माधव मन होइछ अनुमाने ।
सज्जन जन सौं नेह कठिन थिक कवि विद्यापति भाने ॥८॥

—— o ——

राधा ।

८३३

खिति रेणु गन जदि गगनक तारा । दुइ कर सिंचि जदि सिन्धुक धारा ॥ २ ॥
पुरुब भानु जदि पछिम उदीत । तइअओ विपरित नह सुजन पिरीत ॥ ४ ॥
माधव कि कहब आन । ककर उपमा दिय पिरिति समान ॥ ६ ॥
अचल चलय जदि चित्त कह बात । कमल फुटय जदि गिरिवर माथ ॥ ८ ॥
दावानल शितल हिमगिरि ताप । चान्द जदि विष धर सुधा धर साप ॥१०॥
भनइ विद्यापति शिवसिंह राय । अनुगत जन छाड़ि नहि उजियराय ॥१२॥

—— o ——

राधा ।

८३४

हातक दरपन माथक फुल । नयनक अञ्जन मुखक ताम्बुल ॥ २ ॥
हृदयक मृगमद गीमक हार । देहक सरवस गेहक सार ॥ ४ ॥

ए सखि सुपहु समागम सुख कहहि न जाए ।
मन कर मनाओ न छाड़िअ राखिअ हिअ लाए ॥४॥
पुरब गौरि हमे पूजलि पुने परिनत नेह ।
जीव एक कए मानल की जओ दुइ देह ॥६॥
लछमी नराएन नृप कह तोंहे गुनमति नारि ।
जा सओ नेह बढ़ावह सेहे देव मुरारि ॥८॥

—०—

राधा ।

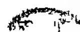
८३१

के मोरा जाएत दुरहुक दूर । सहस सौतिनि वस मधुरपुर ॥ २ ॥
अपनहि हात चललि अछ नीधि । जुग दश जपल आजे भेलि सीधि ॥ ४ ॥
भल भेल माइ हे कुदिवस गेल । चान्द कुमुद दुहु दरशन भेल ॥ ६ ॥
कतए दमोदर देव वनमारि । कतए कहमे धनि गोप गोयारि ॥ ८ ॥
आजे अकामिक दुइ दिठि मेलि । देव दाहिन भेल हृदय उवेलि ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि । कुदिवस रहए दिवस दुइ चारि ॥१२॥

—०—

राधा

८३२

माधव कत तोर करव वड़ाइ ।

ान। तोहर हम ककरा कहव कहितँहु अधिक लजाइ ॥२॥

जौं श्रीखण्ड सौरभ अति दुर्लभ तौं पुन काठ कठोर।
जौं जगदीश निशाकर तौं पुन एकहि पक्ष इजोर ॥४॥
मनि समान अओरो नहि दोसर तनिकँहु पाथर नामे।
कनक कदलि छोट लज्जित भै रहु की कहु ठामहि ठामे ॥६॥
तोहर सरिस एक तोह माधव मन होइछ अनुमाने।
सज्जन जन सौं नेह कठिन थिक कवि विद्यापति भाने ॥८॥

—०—

राधा।

८३३

खिति रेणु गन जदि गगनक तारा। दुइ कर सिंचि जदि सिन्धुक धारा ॥ २ ॥
पुरुब भानु जदि पछिम उदीत। तइअओ विपरित नह सुजन पिरीत ॥ ४ ॥
माधव कि कहब आन। ककर उपमा दिय पिरिति समान ॥ ६ ॥
अचल चलय जदि चित्त कह बात। कमल फुटय जदि गिरिवर माथ ॥ ८ ॥
दावानल शितल हिमगिरि ताप। चान्द जदि विष धर सुधा धर साप ॥१०॥
भनइ विद्यापति शिवसिंह राय। अनुगत जन छाड़ि नहि उजियराय ॥१२॥

—०—

राधा।

८३४

हातक दरपन माथक फुल। नयनक अञ्जन मुखक त।
हृदयक मृगमद गीमक हार। देहक सरवस गेहक

ाखिक पाख मीनक पानि। जीवक जीवन हम तुहु जानि ॥ ६ ॥
तुहु कइसे माधव कह तुहु मोय। विद्यापति कह दुहु दोहा होय ॥ ८ ॥

—:०:—

राधा ।

८३५

सखि कि पुछसि अनुभव मोय ।
सेहो पिरिति अनुराग बखानइत तिले तिले नूतुन होय ॥२॥
जनम अवधि हम रुप निहारल नयन न तिरपित भेल ।
सेहो मधुर बोल श्रवणहि सुनल श्रुतिपथे परश न गेल ॥४॥
कत मधु जामिनिय रभसे गमाओल न बुझल कैसन केल ।
लाख लाख जुग हिय हिय राखल तइओ हिया जुड़न न गेल ॥ ६ ॥
कत विदगध जन रस अनुमगन अनुभव काहु न पेख ।
विद्यापति कह प्राण जुड़ाइत लाखवे न मिलल एक ॥८॥

—०—

राधा ।

८३६

सुनु रसिया ।
नइ बजाउ विपिन वसिया ॥२॥

वार वार चरणारविन्द गहि सदा रहव बनि दसिया ।
कि छलहुँ कि होयव से के जाने वृथा होयत कुल हसिया ॥४॥
अनुभव ऐसन मदन भुजङ्गम हृदय हमार गेल डसिया ।
नन्दनन्दन तुय शरण न त्यागव वनु जनु अहा दुरजासिया ॥६॥
विद्यापति कह सुनु वनितामणि तोर मुखे जीतल शशिया ।
धन्य धन्य तोर भाग गोयालिनि हरि भजु हृदय हुलसिया ॥८॥

—:o:—

प्रार्थना ।

८३७

जतने जतेक धन पापे वटोरलों मिलि मिलि परिजन खाय ।
मरणक बेरि हेरि कोइ न पुछत करम भङ्गे चलि जाय ॥२॥
ए हरि वन्दो तुय पद नाय ।
तुय पद परिहर पाप पयोनिधि पार होयव कओन उपाय ॥४॥
जावत जनम हम तुय पद न सेवल युवति मति मजे मेलि ।
अमृत तेजि किये हलाहल पीयल सम्पदे विपदहि भेलि ॥६॥
भनइ विद्यापति नेह मने गणि कहले कि वाढव काजे ।
साँझक वेरि सेव कोन मागइ हेरइते तुया पाय लाजे ॥८॥

—o—

८३८

माधव वहुत मिनति कर तोय ।
दए तुलसी तिल देह सोँपल दया जनु छोड़वि मोय ॥२॥
गणइते दोष गुणलेश न पाओवि जव तुहुँ करवि विचार ।
तुहुँ जगन्नाथ जगते कहाओसि जग वाहिर नह मोञे छार ॥४॥
किए मानुष पशु पाखी भए जनमिय अथवा कीट पतङ्ग ।
करम विपाके गतागत पुन पुन मति रहु परसङ्ग ॥६॥
भनइ विद्यापति अतिशय कातर तरइते इह भवसिन्धु ।
तुय पदपल्लव करि अवलम्वन तिल एक देह दीनवन्धु ॥८॥

—:o:—

८३६

तातल सैकत वारिविन्दु सम सुतमितरमणी समाजे ।
तोहे विसरि मन ताहे समपल अव मझु हव कोन काजे ॥२॥
माधव हम परिणाम निराशा ।
तुहुँ जगतारण दीन दयामय अतये तोहारि विशोयासा ॥४॥
आध जनम हम निंदे गमाओल जरा शिशु कतदिन गेला ।
निधुवने रमणी रसरङ्गे मातल तोहे भजव कोन वेला ॥६॥
कत चतुरानन मरि मरि जाओत न तुया आदि अवसाना ।
तोहे जनमि पुन तोहे समाओत सागर लहरि समाना ॥८॥

भनये विद्यापति शेष शमन भय तुया विनु गति नहि आरा ।
आदि अनादिक नाथ कहाओसि अब तारण भार तोहारा ॥१०॥

८४०

खेत कएल रखवारे लुटल ठाकुर सेवा भोर ।
वणिजा कएल लाभ नहि पओले अलप निकट भेल थोर ॥२॥
रामधन वनिजहु वेज अछ लाभ अनेक ॥३॥
मोति मजीठ कनक हमे वनिजल पोसल मनमथ चोर ।
जोखि परेखि मनहि हमे निरसल धन्ध लागल मन मोर ॥५॥
इ ससार हाट कए मानह सबेओ वनिक वनिजार ।
जे जस वनिजए लाभ तस पावए सुपुरुष मरहि गमार ॥७॥
विद्यापति कह सुनह महाजन राम भगति अछ लाभ ॥६॥

८४१

वएस कतए तेजि गेला ।
तोंह सेवइते जनम वहल तइअओ न अपन भेला ॥२॥
सैसव दसा चाहि खोअओला हे मधुर माएक छीर ।
दुइ सिरीफल छाहँ सोअओला हे कोमल कॉच सरीर ॥४॥
दॉत झाड़ि मुह थोथड भए गेल झाड़ि गेल सबे दाप ।
तीनू भुअन वइसल देखिअ जनि कचुमाएल साप ॥६॥
आँखि मलामलि दूर न सूझए वन फुटि गेल कासी ।
दुअओ धराधर धरि निरोधिय तर उपर उकासी ॥८॥

हरगौरी पदावली ।

१

विदिता देवी विदिता हो अविरलकेस सोहन्ती ।
एकानेक सहसको धारिनि जरि रङ्गा पुरनन्ती ॥२॥
कज्जल रुप तुअ काली कहिअओ उज्ज्वल रुप तुअ वानी ।
रविमण्डल परचण्डा कहिए गङ्गा कहिए पानी ॥४॥
ब्रह्माघर ब्रह्मानी कहिए हर घर कहिए गौरी ।
नारायन घर कमला कहिए के जान उतपति तोरी ॥६॥
विद्यापति कविवर एहो गाओल जाचक जन के गती ।
हासिनि देइ पति गरुड़नरायन देवसिंह नरपती ॥८॥

—:०:—

२

जय जय भैरवि असुर भयाउनि पशुपति भाविनि माया ।
सहज सुमति वर दिअओ गोसाउनि अनुगति गति तुअ पाया ॥२॥
वासर रैनि शवासन शोभित चरण चन्द्रमणि चूड़ा ।
कतओक दैत्य मारि मुह मेलल कतओ उगिल कैल कूड़ा ॥४॥
सामर वरन नयन अनुरञ्जित जलद जोग फुल कोका ।
कट कट विकट ओठ फुट पाँड़रि लिधुर फेन उठ फोका ॥६॥

घन घन घनय घुघुर कत बाजय हन हन कर तुअ काता ।
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक पुत्र बिसरु जनु माता ॥८॥

—.०.—

३

जय जय भगवति जय महामाया । त्रिपुर सुन्दरि देवि करु दाया ॥ आहे माता ॥२ ॥
दालिम कुसुम सम तुअ तनु छवी । तखने उदित भेल जनि रवी ॥ ४ ॥
धनु सर पास अङ्कुस हाथ । तेतिस कोटि देव नाव माथ ॥ ६ ॥
चन्दिम उपम न पाव । काम रमनि दासि पद दाव ॥ ८ ॥

—.०.—

४

जय जय भगवति भीमा भवानी । चारि वेदे अवतरु ब्रह्मवादिनी ॥ २ ॥
हरि हर ब्रह्मा पुछइत भमे । एकओ न जान तुअ आदि मरमे ॥ ४ ॥
भनइ विद्यापति राय मुकुटमणि । जिवओ रुपनरायन नृपति धरणि ॥ ६ ॥

—०—

५

कनक भूधर शिखरवासिनि चन्द्रिकाचय चारु हासिनि
दशन कोटि विकाश वङ्किम तुलित चन्द्र कले ।
क्रुद्ध सुररिपुबलनिपातिनि महिष शुम्भनिशुम्भघातिनि ।
भीतभक्त भयापनोदन पाटल प्रबले ॥२॥

हरगौरी पदावली ।

१

विदिता देवी विदिता हो अविरलकेस सोहन्ती ।
एकानेक सहसको धारिनि जरि रङ्गा पुरनन्ती ॥२॥
कज्जल रुप तुअ काली कहिअओ उज्ज्वल रुप तुअ वानी ।
रविमराडल परचराडा कहिए गङ्गा कहिए पानी ॥४॥
ब्रह्माघर ब्रह्मानी कहिए हर घर कहिए गौरी ।
नारायन घर कमला कहिए के जान उतपति तोरी ॥६॥
विद्यापति कविवर एहो गाओल जाचक जन के गती ।
हासिनि देइ पति गरुड़नरायन देवसिंह नरपती ॥८॥

—:०:—

२

जय जय भैरवि असुर भयाउनि पशुपति भाविनि माया ।
सहज सुमति वर दिअओ गोसाउनि अनुगति गति तुअ पाया ॥२॥
वासर रैनि शवासन शोभित चरण चन्द्रमणि चूड़ा ।
कतओक दैत्य मारि मुह मेलल कतओ उगिल कैल कूड़ा ॥४॥
सामर वरन नयन अनुरञ्जित जलद जोग फुल कोका ।
कट कट विकट ओठ फुट पाँड़रि लिधुर फेन उठ फोका ॥६॥

घन घन घनय घुघुर कत बाजय हन हन कर तुअ काता ।
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक पुत्र विसरु जनु माता ॥८॥

—:o:—

३

जय जय भगवति जय महामाया । त्रिपुर सुन्दरि देवि करु दाया ॥ आहे माता ॥ २ ॥
दालिम कुसुम सम तुअ तनु छवी । तखने उदित भेल जनि रवी ॥ ४ ॥
धनु सर पास अङ्कुस हाथ । तेतिस कोटि देव नाव माथ ॥ ६ ॥
चन्दिम उपम न पाव । काम रमनि दासि पद दाव ॥ ८ ॥

—o—

४

जय जय भगवति भीमा भवानी । चारि वेदे अवतरु ब्रह्मवादिनी ॥ २ ॥
हरि हर ब्रह्मा पुछइत भमे । एकओ न जान तुअ आदि मरमे ॥ ४ ॥
भनइ विद्यापति राय मुकुटमणि । जिवओ रुपनरायन नृपति धरणि ॥ ६ ॥

—o—

५

कनक भूधर शिखरवासिनि चन्द्रिकाचय चारु हासिनि ,
दशन कोटि विकाश वङ्किम तुलित चन्द्र कले ।
क्रुद्ध सुररिपुबलनिपातिनि महिष शुम्भनिशुम्भघातिनि ।
भीतभक्त भयापनोदन पाटल प्रबले ॥२॥

जय देवि दुर्गे दुरितहारिणि दुर्गमारि विमर्दकारिणि
भक्तिनम्र सुरासुराधिप मङ्गलायतरे ।
गगनमण्डल गर्भगाहिनि समरभूमिषु सिंहवाहिनि
परशु पाश कृपाणशायक शङ्ख चक्रधरे ॥४॥
अष्ट भैरवि सङ्गशालिनि सुकर कृत्तकपालकदम्बमालिनि
दनुजशोणित पिशितवर्द्धित पारणारभसे ।
संसारबन्धनिदानमोचनि चन्द्रभानुकृशानु लोचिनि
योगिनीगण गीत शोभित नृत्यभूमि रसे ॥६॥
जगति पालन जनन मारण रुप कार्य सहस्र कारण
हरिविरञ्चि महेश शेखर चुम्व्यमान पदे ।
सकल पापकला परिच्युति सुकवि विद्यापति कृत स्तुति
तोषिते शिवसिंह भूपति कामना फलदे ॥८॥

—— ० ——

६

भल हर भल हरि भल तुअ कला । खने पित वसन खनहि बघछला ॥ २ ॥
खने पञ्चानन खने भुज चारि । खने शङ्कर खने देव मुरारि ॥ ४ ॥
खने गोकुल भए चराइअ गाए । खने भिखि माँगिअ डमरु बजाए ॥ ६ ॥
खने गोविन्द भए लिअ महदान । खनहि भसमे भरु काँख वोकान ॥ ८ ॥

एक शरीर लेल दुइ वास । खने वैकुण्ठ खनहि कैलास ॥१०॥
भनइ विद्यापति विपरित वानि । ओ नारायन ओ सुलपानि ॥१२॥

—०—

७

जए जए शङ्कर जए त्रिपुरारि । जए अध पुरुस जए अध नारि ॥ २ ॥
आधा धवल आधा तनु गोरा । आध सहज कुच आध कटोरा ॥ ४ ॥
आध हड़माला आधा गजमोती । आधा चन्दन सोभे आध विभूती ॥ ६ ॥
आध चेतन मति आधा भोरा । आध पटोर आध मुज डोरा ॥ ८ ॥
आध जोग आध भोग विलासा । आध पिधान आध नग वासा ॥१०॥
आध चान्द आध सिन्दुर सोभा । आध विरुप आध जग लोभा ॥१२॥
भने कविरतन विधाता जाने । दुइ कए वाटल एक पराने ॥१४॥

—०—

८

एतए कतए अएल जति गोरि अछ तपे ।
राजरे कुमारि वेटि डरव देखि सापे ॥२॥
तोड़व मोञे जटाजुट फोड़व वोकाने ।
हटल न मान जति होएत अपमाने ॥४॥
तीनि नअन हर वीषम जर दहनू ।
उमा मोरि ननुमि हेरह जनू ॥६॥

जय देवि दुर्गे दुरितहारिणि दुर्गमारि विमर्दकारिणि
भक्तिनम्र सुरासुराधिप मङ्गलायतरे ।
गगनमण्डल गर्भगाहिनि समरभूमिषु सिंहवाहिनि
परशु पाश कृपाणशायक शङ्ख चक्रधरे ॥४॥
अष्ट भैरवि सङ्गशालिनि सुकर कृत्तकपालकदम्बमालिनि
दनुजशोणित पिशितवर्द्धित पारणारभसे ।
संसारबन्धनिदानमोचनि चन्द्रभानुकृशानु लोचिनि
योगिनीगण गीत शोभित नृत्यभूमि रसे ॥६॥
जगति पालन जनन मारण रुप कार्य सहस्र कारण
हरिविरञ्चि महेश शेखर चुम्ब्यमान पदे ।
सकल पापकला परिच्युति सुकवि विद्यापति कृत स्तुति
तोषिते शिवसिंह भूपति कामना फलदे ॥८॥

—o—

६

भल हर भल हरि भल तुअ कला । खने पित वसन खनहि बघछला ॥ २ ॥
खने पञ्चानन खने भुज चारि । खने शङ्कर खने देव मुरारि ॥ ४ ॥
खने गोकुल भए चराइअ गाए । खने भिखि माँगिअ डमरु बजाए ॥ ६ ॥
` गोविन्द भए लिअ महदान । खनहि भसमे भरु काँख बोकान ॥ ८ ॥

एक शरीर लेल दुइ वास। खने बैकुण्ठ खनहिं कैलास॥१०॥
भनइ विद्यापति विपरित बानि। ओ नारायन ओ सुलपानि॥११॥

—o—

७

जए जए शङ्कर जए त्रिपुरारि। जए अध पुरुख जए अध नारी॥२॥
आधा धवल आधा तनु गोरा। आध सहज कुच आध कटोरा॥४॥
आध हड़माला आधा गजमोती। आधा चन्दन सोहे आध विभूती॥६॥
आध चेतन मति आधा भोरा। आध पटोर आध मुञ्ज डोरा॥८॥
आध जोग आध भोग विलासा। आध पिधान आध दिग वासा॥१०॥
आध चान्द आध सिन्दुर सोभा। आध विरुप आध जग लोभा॥१२॥
भने कविरतन विधाता जाने। दुइ कए बाँटल एक पराने॥१४॥

—o—

भनइ विद्यापति सुन जगमाता।
ओ नहि उमत त्रिभुवन दाता ॥८॥

—:o:—

९

पाहुन आएल भवानी वाघ छाल। वइसए दिअ आनी ॥ २ ॥
वसह चढ़ल बुढ़ आवे। धुथुर गजाए भोजन हुनि भावे ॥ ३ ॥
भसम विलेपित आङ्गे। जटा वसथि सिर सुरसरि गाङ्गे ॥ ५ ॥
हाड़माल फनिमाल सोभे। डमरु वजाव हर जुवतिक लोभे ॥ ७ ॥
विद्यापति कवि भाने। ओ नहि बुढ़वा जगत किसाने ॥ ६ ॥

—:o:—

१०

ए मा कहए मोञे पुछों तोही।
ओहि तपोवन तापसि भेटल कुसुम तोड़ए देल मोही ॥२॥
आँजलि भरि कुसुम तोड़ल जे जत अछल जाँहा।
तीनि नयने खने मोहि निहारए वइसलि रहलि जाँहा ॥४॥
गरा गरल नयन अनल सिर सोभइछि ससी।
डिमि डिमि कर डामरु बाजए एहे आएल तपसी ॥६॥
सिर सुरसरि भमू कपाला हाथ कमण्डलु गोटा।
वसह चढ़ल आएल दिगम्बर विभुति कएल फोटा ॥८॥

भन विद्यापति सामिक निन्दा न कर गोरी माता ।
तोहर सामि जगत इसर भुगुति मुकुति दाता ॥१०॥

—o—

११

आजे अकामिक आएल भेखधारी । भीखि भुगुति लए चललि कुमारी ॥ २ ॥
भिखिया न लेइ बढ़ावए रिसी । वदन निहारए विहुसि हसी ॥ ४ ॥
एहि ठाम सखि सङ्गे निकहि अछली । ओहि जोगिया देखि मुरुछि पड़ली ॥ ६ ॥
दुर कर गुनमन अरे भेषधारी । कॉ डिठि अओलए राजकुमारी ॥ ८ ॥
केओ बोल देखए देहे जनु काहू । केओ बोल ओझा आनि चाहू ॥१०॥
केओ बोल जोगि आहि देहे दहु आनी । हुनि कि अभए वरु जिवओ भवानी ॥१२॥
मनइ विद्यापति अभिमत सेवा । चन्दल देविपति वैजल देवा ॥१४॥

—:o:—

१२

जोगिया मन भावइ हे मनाइनि ।
भायन वसहा चढ़ि विभूति लगाए हे । मन मोर हरलनि डामरु वजाए हे ॥३॥
सुन्दर गात अजर पति से नाहे । चित सौं नइ छुटाथि जानथि किछु टोना हे ॥५॥
तीनि नयन एक अगनिक ज्वाला हे । भाल तिलक चान फटिकक माला हे ॥७॥
भेद सिरेन्द्र नाययिका मोर पति हे । विद्यापति कह मोर गौरीहर गति हे ॥६॥

—:o:—

१३

आगे माइ एहन उमत वर लइला हेमत गिरि देखि देखि लगइछ रङ्ग ।
एहन उमत बुढ़ घोड़वो न चढ़इक जाहि घोड़ रङ्ग रङ्ग जङ्ग ॥२॥
वाघछाल जे वसहा पलानल सापक लगले तङ्ग ।
डिमिकि डिमिकि जे डमरु वजइन खटर खटर करु अङ्ग ॥४॥
भकर भकर जे भाङ्ग भकोसथि छटर पटर कर वङ्ग ।
चानन सों अनुराग न थिकइन भसम चढ़ावथि अङ्ग ॥६॥
भूत पिशाच अनेक दल सिरिजल शिर सों वहि गेल गङ्ग ।
भनहि विद्यापति सुनिए मनाइनि थिकाह दिगम्बर भङ्ग ॥८॥

———:o:———

१४

घर घर भरमि जनम नित तनिका केहन विवाह ।
से अब करव गौरी वर इ होय कतय निरवाह ॥२॥
कतय भवन कत आङ्गन वाप कतय कत माय ।
कतहु ठहोर नहि ठेहर के कर एहन जमाय ॥४॥
कोन कयल एहो असुजन केओ न हिनक परिवार ।
जे कयल हिनक निबन्धन धिक थिक से पजियार ॥६॥
कुल पलिवार एको नहि जनिका परिजन भूत वैताल ।
देखि झुर होय तन के सहय हृदयक शाल ॥८॥

विद्यापति कह सुन्दरि धैरज मन अवगाह ।
जे अछि जानिक विवाहिनी तनिका सेह पय नाह ॥१०॥

—:०:—

१५

मङ्गल विलुविअ सिन्दुरे पिठारे । तोंहें भालि सोपलि साजलि छारे ॥ २ ॥
चलह चल हर पलटि दिगम्बर । हमरि गोसाञुनि तोह न जोग वर ॥ ४ ॥
हर चाह गुरु गउरवे गोरी । कि करव तवे जयमाली तोरी ॥ ६ ॥
नअने निहारव सम्भ्रम लागी । हिमगिरि धीए सहब कइसे आगी ॥ ८ ॥
भाल वलइ नयनानल रासी । झरकत मउल डाढ़ति पटवासी ॥१०॥
वड़े सुखे सासु चुमओवाह मथा । ओठ बुरत सुरसरिके सथा ॥१२॥
करव सखी जने केलि अलापे । विलग होएत फुफुआएत सापे ॥१४॥
विद्यापति भन बुझह जुगुती । मेलि कराउवि हमे सिव सकती ॥१६॥

—०—

१६

जटाजुट दह दिस दए हलु नमाए । वसह चढल उपगत भेल आए ॥ २ ॥
दुर सञो मन्दाइनि हलिअ पुछाए । के वरिआती के इथि जमाए ॥ ४ ॥
कण्ठे आएल छइह्नि वासुकि राए । सेहे वरिआती इसर जमाए ॥ ६ ॥
अइसन ठाकुर हर सम्पति थोरी । भर उठि आइलिछइह्नि भसमक झोरी ॥ ८ ॥
विधि न करए हर खेलए पासा सारि । सापक सङ्गे शिवे रचलि धमारि ॥१०॥

१३

आगे माइ एहन उमत वर लइला हेमत गिरि देखि देखि लगइछ रङ्ग ।
एहन उमत बुढ़ घोड़वो न चढ़इक जाहि घोड़ रङ्ग रङ्ग जङ्ग ॥२॥
बाघछाल जे वसहा पलानल सापक लगले तङ्ग ।
डिमिकि डिमिकि जे डमरु बजइन खटर खटर करु अङ्ग ॥४॥
भकर भकर जे भाङ्ग भकोसथि छटर पटर कर बङ्ग ।
चानन सों अनुराग न थिकइन भसम चढ़ावथि अङ्ग ॥६॥
भूत पिशाच अनेक दल सिरिजल शिर सों वहि गेल गङ्ग ।
भनहि विद्यापति सुनिए मनाइनि थिकाह दिगम्बर भङ्ग ॥८॥

१४

घर घर भरमि जनम नित तनिका केहन विवाह ।
से अब करब गौरी वर इ होय कतय निरवाह ॥२॥
कतय भवन कत आङ्गन वाप कतय कत माय ।
कतहु ठहोर नहि ठेहर के कर एहन जमाय ॥४॥
कोन कयल एहो असुजन केओ न हिनक परिवार ।
जे कयल हिनक निबन्धन धिक थिक से पजियार ॥६॥
कुल पलिवार एको नहि जनिका परिजन भूत वैताल ।
देखि झुर होय तन के सहय हृदयक शाल ॥८॥

विद्यापति कह सुन्दरि धैरज मन अवगाह ।
जे अछि जानिक विवाहिनी तनिका सेह पय नाह ॥१०॥

——:०:——

१५

मङ्गल विलुविअ सिन्दुरे पिठारे । लोंहे भलि सोपलि साजलि छारे ॥ २ ॥
चलह चल हर पलटि दिगम्बर । हमरि गोसाञुनि तोह न जोग वर ॥ ४ ॥
हर चाह गुरु गउरवे गोरी । कि करव तवे जयमाली तोरी ॥ ६ ॥
नअने निहारव सम्भ्रम लागी । हिमगिरि धीए सहव कइसे आगी ॥ ८ ॥
भाल वलइ नयनानल राली । झरकत मउल डाढ़ति पटवासी ॥१०॥
वड़े सुखे सासु चुमओवाह मथा । ओठ वुरत सुरसरिके सथा ॥१२॥
करव सखी जने केलि अलापे । विलग होएत फुफुआएत सापे ॥१४॥
विद्यापति भन वुझइ जुगुती । मेलि कराउवि हमे सिव सकती ॥१६॥

——:०:——

१६

जटाजुट दह दिस दए हलु नमाए । वसह चढ़ल उपगत भेज आए ॥ २ ॥
दुर सञो मन्दाइनि हलिअ पुछाए । के वरिआती के इथि जमाए ॥ ४ ॥
कण्ठे आएल छइहि बासुकि राए । सेहे वरिआती इसर जमाए ॥ ६ ॥
अइसन ठाकुर हर सम्पति थोरी । भर उठि आइलिछइहि भसमक झोरी ॥ ८ ॥
विधि न करए हर खेलए पासा सारि । सापक सङ्गे शिवे रचलि धमारि ॥१०॥

खिरि न खाए हर चुकति गजाए । एहन उमत कोने जोहल जमाए ॥१२॥
भनइ विद्यापति एहो रस भान । ओ नहि उमता जगत किसान ॥१४॥

—:०:—

१७

जखने शङ्करे गौरि करे धरि आनलि मण्डप माझ ।
सरद सँपुन जनि ससधर उगल समय साँझ ॥२॥
चौदह भुअन शिव सोहाओन गौरि राजकुमारि ।
हेरि हरिखित भेलि मदाइनि आएल जनि जभारि ॥४॥
हेमत सरिर पुलके पूरल सफल जनम मोरि ।
हरि विराञ्चि दुहू जन वैसल हरके देल मोञे गोरि ॥६॥
नारद तुम्बुर मङ्गल गावथि आओर कत न नारि ।
कौतुक कोवर कौशले कामिनी सवे सवे देअ गारि ॥८॥
भन विद्यापति गौरि परीनय कौतुक कहए न जाए ।
साप फुफुकारे नारि पड़ाइलि वसन ठाम नड़ाए ॥१०॥

—.०.—

१८

उमता न तेजए अपनि वानि । वस ससुरा कत कर उवानि ॥ २ ॥
गङ्गाजले सिचु रङ्ग भूमि । पिछरि खसल हर घूमि घूमि ॥ ४ ॥
गोरी तोरए जाए । करकङ्कन फनि उठ फँफाए ॥ ६ ॥
सवतहु चोल गिरिजमाए । वसह चढ़ल हर रुसल जाय ॥ ८ ॥

जमाइक परिहन वाघछाल । चरन घाघर वाजए मुण्डमाल ॥१०॥
भनइ विद्यापति शिव विलास । गोरि सहित हर पुरथु आस ॥१२॥

——:o:——

१६

मेनका ।

कतहु समसधर कतहु पयोधर
भल वर मिलल सुशोभे ।
अधङ्ग धइलि नारि व गुनलि निज गारि
गरुअ गौरी गुनलोभे ॥ २ ॥
आलो शिव शम्भू तुमी शिव शम्भू
तुमि जे वधिलो पच वाने ॥ ३ ॥

शम्भू ।

गाङ्ग लागि गिरिजाक मनउलिहे कके देवि बोलह मन्दा ।
चरन नमित फनी मनिमय भूषन घर खिखियायल चन्दा ॥ ५ ॥
भनइ विद्यापति सुनह त्रिलोचन पअ पङ्कज मोरि सेवा ।
चन्दल देइ पति वैद्यनाथ गति
नीलकण्ठ हर देवा ॥ ७ ॥

——:o:——

२०

प्रथमहि शङ्कर सासुर गेला । बिनु परिचए उपहास पड़ला ॥ २ ॥
पुछिओ न पुछल के बैसलाह जहाँ। निरधन आदर के कर कहाँ ॥ ४ ॥
हेमगिरि मड़प कौतुक बसी । हेरि हसल सबे बुढ़ तपसी ॥ ६ ॥
से सुनि गोरि रहलि शिर लाए। के कहत माके तोहर जमाए ॥ ८ ॥
साप शरीर काँख बोकाने । प्रकृति औषध के दहु जाने ॥१०॥
भनइ विद्यापति सहज कहु । आड़मुरे आदर हो सब तहू ॥११॥

—:०:—

२१

अञ्जलि भरि फूल तोड़ि लेल आनी । शम्भु अराधए चललि भवानी ॥ २ ॥
जाहि जुहि तोड़ल मोजे आओर वेल पाते। उठिअ महादेव भए गेल पराते ॥ ४ ॥
जखने हेरलि हरे तिनिहु नयने । ताहि अवसर गोरि पिड़लि मदने॥ ६ ॥
करतल काँपु कुसुम छिड़िआउ । विपुल पुलक तनु वसन झँपाउ ॥ ८ ॥
भल हर भल गोरि भल व्यवहारे । जप तप दुर गेल मदन विकारे ॥१०॥
भनइ विद्यापति इ रस गावे । हर दरसने गोरि मदन सँतावे ॥१२॥

—:०:—

२२

माटी भलि जोहिकहु आनलि वानी । शम्भू अराधए चललि भवानी ॥ २ ॥
आक धुथुर फुल देल मोजे जोही । जगत जननि डर छाड़ल मोही ॥ ४ ॥

यमकिङ्कर मोर कि करत अङ्गे। रह अपराधी वलिया सङ्गे ॥ ६ ॥
जे सबे कएल हर सबे मोर दोसे। से सबे कएल हर तोहरि भरोसे ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति शङ्कर सुनु। अन्तकाल मोहि विसरह जनु ॥१०॥

—o—

२३

हम सैाँ रुसल महेशे। गौरी विकल मन करथि उदेशे ॥ २ ॥
पुछिय पँथुक जन तोही। ए पथ देखल कहुँ बूढ़ वटोही ॥ ४ ॥
अङ्गमे विभूति अनूपे। कतेक कहव हुनि जोगिक सरुपे ॥ ६ ॥
विद्यापति भन ताही। गौरी हर लए भेलि वताही ॥ ८ ॥

—o:—

२४

केहु देखल नगना। भिखिआ मगइते बुल आइने आइना ॥ २ ॥
उगन उमत केहु देखल विधाता। गोरिक नाह अभय वरदाता ॥ ४ ॥
विभुति भुषन कर वीस अहारे। कण्ठ वासुकि सिर सुरसरि धारे ॥ ६ ॥
केलि भूत सङ्गे रहए मसाने। तैलोक इसर हर के नहि जाने ॥ ८ ॥

—o—

२५

उगना हे मोर कतय गेला। कतय गेला शिव कि दहु भेला ॥ २ ॥
भाङ नहि वटुया रुसि वेसलाह। जोहि हेरि आनि देल हँसि ७८

२०

प्रथमहि शङ्कर सासुर गेला । बिनु परिचए उपहास पड़ला ॥ २ ॥
पुछिओ न पुछल के बैसलाह जहाँ। निरधन आदर के कर कहाँ ॥ ४ ॥
हेमगिरि मड़प कौतुक वसी । हेरि हसल सबे बुढ़ तपसी ॥ ६ ॥
से सुनि गोरि रहलि शिर लाए। के कहत माके तोहर जमाए ॥ ८ ॥
साप शरीर काँख वोकाने । प्रकृति औषध के दहु जाने ॥१०॥
भनइ विद्यापति सहज कहु । आड़मुरे आदर हो सब तहू ॥११॥

—:०:—

२१

अञ्जलि भरि फूल तोड़ि लेल आनी । शम्भु अराधए चललि भवानी ॥ २ ॥
जाहि जुहि तोड़ल मोञे आओर वेल पाते। उठिअ महादेव भए गेल पराते ॥ ४ ॥
जखने हेरलि हरे तिनिहु नयने । ताहि अवसर गोरि पिड़लि मदने॥ ६ ॥
करतल काँपु कुसुम छिड़िआउ । विपुल पुलक तनु वसन झँपाउ ॥ ८ ॥
भल हर भल गोरि भल व्यवहारे । जप तप दुर गेल मदन विकारे ॥१०॥
भनइ विद्यापति इ रस गावे । हर दरसने गोरि मदन सँतावे ॥१२॥

—०—

२२

माटी भलि जोहिकहु आनलि वानी । शम्भू अराधए चललि भवानी ॥ २ ॥
फुल देल मोञे जोही । जगत जनमि डर छाड़ल मोही ॥ ४ ॥

यमकिङ्कर मोर कि करत अङ्गे। रह अपराधी वलिया सङ्गे ॥ ६ ॥
जे सवे कएल हर सवे मोर दोसे। से सवे कएल हर तोहरि भरोसे ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति शङ्कर सुनु। अन्तकाल मोहि विसरह जनु ॥१०॥

—— o ——

२३

हम सैं रुसल महेशे। गौरी विकल मन करथि उदेशे ॥ २ ॥
पुछिय पँथुक जन तोही। ए पथ देखल कहुँ वूढ़ वटोही ॥ ४ ॥
अङ्गमे विभूति अनूपे। कतेक कहव हुनि जोगिक सरुपे ॥ ६ ॥
विद्यापति भन ताही। गौरी हर लए मेलि वताही ॥ ८ ॥

——.o:——

२४

केहु देखल नगना। भिखिआ मगइते वुल आङ्गने आङ्गना ॥ २ ॥
उगन उमत केहु देखल विधाता। गोरिक नाह अभय वरदाता ॥ ४ ॥
विभुति भुषन कर वीस अहारे। कण्ठ वासुकि सिर सुरसरि धारे ॥ ६ ॥
केलि भूत सङ्गे रहए मसाने। तैलोक इसर हर के नहि जाने ॥ ८ ॥

—— o ——

२५

उगना हे मोर कतय गेला। कतय गेला शिव कि दहु भेला ॥ २ ॥
भाङ नहि वटुया रुसि वैसलाह। जोहि हेरि आनि देल हसि उठलाह ॥ ४ ॥

जे मोर कहता उगना उदेश । ताहि देवँ ओ कर कङ्गना वेश ॥ ६ ॥
नन्दन वन मे भेटल महेश । गौरि मन हरषित मेटल कलेश ॥ ८ ॥
विद्यापति भन उगना सोँ काज । नहि हितकर मोर त्रिभुवन राज ॥१०॥

——:o:——

२६

पीसल भाँग रहल एहि गती । कथि लँइ मनाएव उमता जती ॥ २ ॥
आन दिन निकहि छलाह मोर पती । आइ बढ़ाए देल कोन उदमती ॥ ४ ॥
आनक नीक अपन हो छती । ठामे एक ठेसता पड़त विपती ॥ ६ ॥
भनहि विद्यापति सुन हे सती । ई थिक वाउर त्रिभुवनपती ॥ ८ ॥

—— o ——

२७

मोर निरधन भोरा । अपने भिखारि विलह नहि थोरा ॥ २ ॥
फाड़ि कचोटा हर इसर बोलावे । मगत जना सबे कोटि कोटि पावे ॥ ४ ॥
सबे बोल हुनि हर जगत किसाने । बूढ़ वड़द कुट कॉख वोकाने ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति पुछु हुनि दहू । की लए पोसव दहु परिजन पुत बहू ॥ ८ ॥

—— o ——

२८

कओने उमतओला हे तैलोक नाथ । निते उगारिय निते भसम साथ ॥ २ ॥
पटम्बर धर उतारि । बाघछल निते पहिर झारि ॥ ४ ॥

तुरय छाड़ि चढ़ बसह पीठि। लाजे मरिअ जञो हेरिअ दीठि ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति सुनह गोरि। हर नहि उमता तोंहहि भोरि ॥ ८ ॥

———

२६

पञ्च वदन हर भसमे धवला। तीनि नयन एक वरए अनला ॥ २ ॥
दुखे बोलए भवानी। जगत भिखारि हम मिलल सामी ॥ ४ ॥
विषधर भूषन दिग परिधाना। विनु विते इसर नाम उगना ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति सुनह भवानी। हर नहि निधन जगत सामी ॥ ८ ॥

———

३०

शिव हे सेवए अयलाँहु सुख लागी। विषम नयन अनुखने बर आगी ॥ २ ॥
बसहा पड़ाएल आगे। पैसि पताल नुकाएल नागे ॥ ४ ॥
ससि उठि चलल अकासे। गोरि चललि गिरिराजक पासे ॥ ६ ॥
उचित बोलए नहिं जाइ। उमत बुझओव कओने उपाइ ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति दासे। गौरी शङ्कर पुरावथु आसे ॥१०॥

———

३१

बेरि बेरि अरे शिव मोञे तोके बोलञो किरिषि करिय मन लाइ।
बिनु संसरे हर भिखिए पए मांगिय गुन गौरव दूर जाइ ॥२॥

जे मोर कहता उगना उदेश । ताहि देवँ ओ कर कङ्गना वेश ॥ ६ ॥
नन्दन वन मे भेटल महेश । गौरि मन हरषित मेटल कलेश ॥ ८ ॥
विद्यापति भन उगना सेँ काज । नहि हितकर मोर त्रिभुवन राज ॥१०॥

—:o:—

२६

पीसल भाँग रहल एहि गती । कथि लँइ मनाएव उमता जती ॥ २ ॥
आन दिन निकहि छलाह मोर पती । आइ वढ़ाए देल कोन उदमती ॥ ४ ॥
आनक नीक अपन हो छती । ठामे एक ठेसता पड़त विपती ॥ ६ ॥
भनहि विद्यापति सुन हे सती । ई थिक वाउर त्रिभुवनपती ॥ ८ ॥

—o—

२७

मोर निरधन भोरा । अपने भिखारि विलह नहि थोरा ॥ २ ॥
फाड़ि कचोटा हर इसर बोलावे । मगत जना सबे कोटि कोटि पावे ॥ ४ ॥
सबे बोल हुनि हर जगत किसाने । बूढ़ वड़द कुट कॉख वोकाने ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति पुछु हुनि दहू । की लए पोसव दहु परिजन पुत वहू ॥ ८ ॥

—o—

२८

ने उमतओला हे तैलोक नाथ । निते उगारिय निते भसम साथ ॥ २ ॥
पटम्बर धर उतारि । बाघछल निते पहिर झारि ॥ ४ ॥

तुरय छाड़ि चढ़ बसह पीठि । लाजे मरिअ जञो हेरिअ दीठि ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति सुनह गोरि । हर नहि उमता तोंहहि भोरि ॥ ८ ॥

——:०:——

२९

पञ्च बदन हर भसमे धवला । तीनि नयन एक वरए अनला ॥ २ ॥
दुखे बोलए भवानी । जगत भिखारि हम मिलल सामी ॥ ४ ॥
विषधर भूषन दिग परिधाना । विनु विचे इसर नाम उगना ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति सुनह भवानी । हर नहि निधन जगत सामी ॥ ८ ॥

——·०·——

३०

शिव हे सेवए अयलॉहु सुख लागी । विषम नयन अनुखने वर आगी ॥ २ ॥
बसहा पड़ाएल आगे । पैसि पताल नुकाएल नागे ॥ ४ ॥
ससि उठि चलल अकासे । गोरि चललि गिरिराजक पासे ॥ ६ ॥
उचित बोलए नहिं जाइ । उमत बुझओव कओने उपाइ ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति दासे । गौरी शङ्कर पुरावथु आसे ॥१०॥

—— ० ——

३१

वेरि वेरि अरे शिव मोञे तोके बोलञो किरिषि करिय मन लाइ ।
विनु समरे हर भिखिए पए मागिय गुन गौरव दूर जाइ ॥२

निरधन जन बोलि सबे उपहासए नहि आदर अनुकम्पा ।
तोहें शिव पाओल आक धुथर फुल हरि पाओल फुल चम्पा ॥ ४ ॥
खटग काटि हरे हर जे बँधाओल त्रिशुल भँगय करु फारे ।
बसहा धुरन्धर हर लए जोतिअ पाएत सुरसरिधारे ॥६॥
भनइ विद्यापति सुनह महेशर इ जानि कइलि तुअ सेवा ।
एतए जे वरु से वरु होअओ ओतए सरन देवा ॥८॥

—— ०,——

३२

मोर वौरा देखल केओ कतहु जात । वसहा चढ़ल विष भाङ्ग खात ॥ २ ॥
ऑखि निड़ड़ मुह बुयइ लार । पथके चलत वौरा विशम्भार ॥ ४ ॥
वाट जाइत केओ हलव ठेलि । अव हुनि वौरा विनु मय अकेलि ॥ ६ ॥
हात डमरू कर लोइया साय । योग जुगुलि कृमि भरल भाय ॥ ८ ॥
अरगजा चटाइय आठो आङ्ग । शिर सुरसरि जटा बोल गाङ्ग ॥१०॥
भनहि विद्यापति शम्भूदेव । अवसर अवश हमर सुधि लेव ॥१२॥

—— ० ——

३३

विकट जटाचय किछु नइ लोक भय हे उर फणीपति दिग वास ।
कओन पथे भेटताह हे, आगे माइ, आइत उमत हमार ॥ २ ॥
त्रिपुर दहन कर छारइ खाल भरु हे वसहा चढ़ल वर बुढ़ ।
तीनि नयन हर एक अनल भर हे शिरे सुरसरि जलधार ॥ ४ ॥
भनइ विद्यापति गौरी विकल मति हे ओहि उमताक उदेश ॥ ५ ॥

—— ० ——

३४

तोही कोन बुँधि देल हे उमता ।
ललित धाम तेजि वसथि मशाने हे । अमिय नहि पिवथि करथि विषपाने हे ॥ ३ ॥
चानन नहि हित विभूति भूषणे हे । मणि नइ धरह फणी कओन भूषने हे ॥ ५ ॥
हय गज रथ तेजि वसहा पलाने हे । पलङ्ग नइ शुतथि ओ भूमि शयाने हे ॥ ७ ॥
भनहि विद्यापति विपरीत काजे हे । अपनइ भिखारी सेवक दीय राजे हे ॥ ६ ॥

३५

वाँधए विकट जटा । तँइ थिहु चँदिन फोटा ॥ २ ॥
कत जुग सहस वयस विति गेला । उमत महादेव सुमत न भेला ॥ ४ ॥
मौलि मेलए छार । सहजइ न तेजए पार ॥ ६ ॥
सुकवि विद्यापति गाउ । जीव सिवसिंह राउ ॥ ८ ॥

शिव ।

३६

आइ तों सुनिय उमा भल परिपाटी । उमगल फिरे मूस झोरी मोर काटी ॥ २ ॥
झोरीरे काटिए मूस जटा काटि जीवे । सिरम वैसल सुरसरि जल पीवे ॥ ४ ॥
वेटारे कातिक एक पोसल मजूर । सेहो देखि डर मोर फणिपति झूर ॥ ६ ॥
तोह जे पोसल गौरी सिंह वड़ मोटा । सेहो देखि डर मोर वसहा गोटा ॥ ८ ॥
भनहि विद्यापति वाँसक सिङ्गा । तपवन नाचथि धतिङ्गा तिङ्गा ॥१०॥

३७

बूढ़हु बएस हर वेसन न छूड़ले की फल वसह धवाइ ।
भाग भेल शिव चोट न लगले के जान कि होइ आइ ॥२॥
वसह पड़ाएल के जान कतए गेल हाड़ माल की भेला ।
फुटि गेल डामरु भसम छिड़िआएल अपथे सँपति दुर गेला ॥४॥
हमर हटल शिव तोहँहि न मानह अपना हठ वेवहारे ।
सगरा जगत सवहुकाँए सुनिअ घरनिक बोल नहि टारे ॥६॥
भनइ विद्यापति सुनह महेसर इ जानि ऐलाहु तुअ पासे ।
तोहरा लग शिव विघनि विनासव आनक कोन तरासे ॥८॥

—०—

शिव ।

३८

निते मोञे जाञो भिखि आनओ मागि । कवहु न गेल मोरा सङ्गहु लागि ॥ २ ॥
भोरि आहु लेवाके नहि उसास । इपोसि होएत परतरक आस ॥ ४ ॥
एहे गउरि मोर कओन दोस । वइसले जेम गण कओन भरोस ॥ ६ ॥

गौरी ।

थूल पेट भूमि लड़ए न पार । शिव देखए न पारह हमर वार ॥ ८ ॥
[illegible] देहे वरु निकालि जाउ । मोरे नामे भिखि मागि खाउ ॥१०॥

देखह लोक हे अइसनि जोए । मनुस उपरि कइसे माउग होए ॥१२॥
अपना पुत के न जानए काज । निठुर भइ कत मोहु सञो वाज ॥१४॥
भनइ विद्यापति देवहि देओ । करिअ करम जइसे हस न केओ ॥१६॥
गणपति देखले होअ काज । राए सिवसिंह एकछत्र राज ॥१८॥

—— ० ——

पार्व्वती ।

३६

आने बोलव कुल अधिकह हीन । तेंहि कुमार अछल एत दीन ॥ २ ॥
तोहर हमर सिव वएस भेल आए । आवहु न चिन्तह विआह उपाए ॥ ४ ॥
भल सिव भल सिव भल वेवहार । चिता चिन्ता नहि वेटा कुमार ॥ ६ ॥

हर ।

हसि हर बोलथि सुनह भवानी । जनितहु कके देवि होह अगेयानी ॥ ८ ॥
देस वुलिए वुलि खोजओ कुमारी । तुह्निक सरिस मोहि न मिलए नारी ॥१०॥

कातिक ।

एत सुनि कातिक मने भेल लाज । हम न हे माए विआहक काज ॥१२॥
नहि विआहव रहव कुमार । न कर कन्दल अमा सपथ हमार ॥१४॥
भनइ विद्यापति एहे भल भेल । कातिक वचने कन्दल दुर गेल ॥१६॥
हे हर जगत वुलिए दिअ अभय वरे । जग जनि जीवथु महथ महेसरे ॥१८॥

—— ० ——

४०

खेले लखमी भवानि रितु वसन्त । गौरि भ्रुकुटिल देवि करे अनन्त ॥ २ ॥
इसर नाम धरु कोन अज्ञान । छाड़ि तुरग वसहा पलान ॥ ४ ॥
जटा भुजङ्गम अङ्ग चाह । एहन उमत गौरा तोहर नाह ॥ ६ ॥
मछ्छ कच्छ वाधा वराह । वामन कुवड़ा तोहर नाह ॥ ८ ॥
दछिना जाचथि वलिक थान । तव न वरजलह अपन कान्ह ॥१०॥
कुलविहीन तपसीक वेस । सङ्ग लागि गौरि फिरह देस ॥१२॥
तोहर नहि सुर मुनिक लाज । सामि नचौलह कोन काज ॥१४॥
उदधितनया हरु तोहर ज्ञान । खोजि वियहलह अहिर कान ॥१६॥
सदा वसथि जमुनाक तीर । परजुवतीकेर हरथि चीर ॥१८॥
हस शिवशङ्कर ओ मुरारि । दुहु जनिक भल होइछ रारि ॥२०॥
भन जयदेव हरि हरक दास । नीलकण्ठ हरि पुरथु आस ॥२२॥

—o—

४१

कञ्चने झोरि सिन्दुर भरलि भसमे भरु बोकान ।
वसहा केसरि मयुर मुसा चारिहु पलु पलान ॥२॥
डिमिक डिमिक डामरु वाजइ इसर खेलइ फागु ।
भसमे सिन्दुरे दुयओ खेड़ा एकहि दिवस लागु ॥४॥
सञ्झाय सिन्दुर भरु सरस्सति लछिहि भरलि गौरि ।
इसर भसमे भरु नरायण पीत वसन बोरि ॥६॥

एक तौ नॅागट अश्रोके तो उमत ईशर धथुर खाय ।
अश्रोके उमति खेडि खेड़ावय किछु न वोलइ जाय ॥८॥
गरुड़वाहन देव नरायण वसहा चढ़ु महेश ।
भनइ विद्यापति कौतुक गाश्रोल सङ्गहि फिरथु देश ॥१०॥

—— ० ——

कवि ।

४२

तोंह प्रभु त्रिभुवन नाथे । हे हर हम निरदोश अनाथे ॥ २ ॥
करम धरम तप हीने । पड़लहुँ पाप अधीने ॥ ४ ॥
वेढ़ भासल माझ धारे । भैरव धरु करुआरे ॥ ६ ॥
सागर सम दुख भारे । अवहु करिअ प्रतिकारे ॥ ८ ॥
भनहि विद्यापति भाने । सङ्कट करिय तराने ॥१०॥

——.०.——

४३

शिव शङ्कर हे
भालि अनुगति फल भेला ।
एतए सङ्गति एति परतर कोन गति ।
मनोरथ मनहि रहला ॥२॥

तोंह होएव परसन पाओव अमोल धन
जनम वहलि एहि आसे।
जमहु सङ्कट पुनु उपोखि हलह जनु
सेओलहे वड़े परआसे ॥४॥
स्रवन नयन गेले तनु अवसन भेले
यदि तोहे होएव परसने।
कि करव ततिखने हय गअ मणि धने
झखइते वेआकुल मने ॥६॥
ईद चाँद गन हरि कमलासन
सबे परिहरि हमे देवा।
भगत बछल प्रभु वान महेसर
इ जानि कइलि तुअ सेवा ॥८॥
विद्यापति भन पुरह हमर मन
छाड़ओ जमक तरासे।
हरह हमर दुख तथिहु तोहर सुख
सब होअओ तुअ परसादे ॥१०॥

४४

ए हर गोसाञे नाथ तोहर सरन कएलओ।
किछु न धरव सबे बिसरव पछाँ जे जत कएलओ ॥२॥

कपट मह पड़, कलेवर गिड़ल मश्रन गोहे ।
भल मन्द सबे किछु न गुनल जनम वहल मोहे ॥४॥
कएल उचित भेल अनउचित मने मने पचतावे ।
आवे कि करव सिरे पए धुनव गेल दिना नहि आवे ॥६॥
अपथ पथ चरन चलाओल भगति मन न देला ।
परधनि धन मानस वाढ़ल जनम निफले गेला ॥८॥
चरित चातर मन वेआकुल मोर मोर अनुबन्धा ।
पुत कलत्त सहोदर बन्धव अन्तकाल सबे धन्धा ॥१०॥
भन विद्यापति सुनह शङ्कर कइलि तोहरि सेवा ।
एतए जे वरु से वरु करव औतए सरन देवा ॥१२॥

———:o:———

गङ्गा गीत ।

१

बड़ सुख साधे पाश्रोल तुय तीरे । छाड़इते निकट नयन वह नीरे ॥ २ ॥
कर जोड़ि विनमओं विमल तरङ्गे । पुन दरसन होइह पुनमति गङ्गे ॥ ४ ॥
एक अपराध खेमव मोर जानी । परशल माए पाए तुय पानी ॥ ६ ॥
कि करब जप तप जोग धेआने । जनम कृतारथ एकहि सनाने ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति समदओं तोही । अन्तकाल जनु बिसरह मोही ॥१०॥

———:०:———

२

सुरसुरि सेवि मोरा किछुओ न भेला । पुनमति गङ्गा भगीरथ लय गेला ॥ २ ॥
जखन महादेव गङ्गा कयल दाने । सुन भेल जटा ओ मलिन भेल चाने ॥ ४ ॥
उठवह वनिओं तों हाट वजारे । एहि पथ आयोत सुरसुरि धारे ॥ ६ ॥
छोट मोट भगीरथ छितनी कपारे । से कोना लाओताह सुरसरि धारे ॥ ८ ॥
विद्यापति भन विमल तरङ्गे । अन्त शरन देव पुनमति गङ्गे ॥१०॥

——०——

३

ब्रह्म कमण्डलु वास सुवासिनि सागर नागर गृहवाले ।
पातक महिष विदारण कारण धृत करवाल वीचिमाले ॥२॥
जय गङ्गे जय गङ्गे शरणागत भय भङ्गे ॥४॥

नानाविषयक पदावली ।

१

तात वचने वेकले वन खेपल जनम दुखहि दुखे गेला ।
सीअक सोगें स्वामि सन्तापल विरहे विखिन तन भेला ॥२॥
मन राघव जागे राम चरन चित लागे ॥४॥
कनक मिरिगि मारि विराध वधल वालि वानर सेन वटुराइ ।
सेतु वन्ध दिअराम लङ्क लिअ रावन मारि नड़ाइ ॥६॥
दशरथनन्दन दशशिरखण्डन तिहुअन के नहि जाने ।
सीता देविपति राम चरण गति कवि विद्यापति भाने ॥८॥

—०—

२

कुसुम रस अति मुदित मधुकर कोकिल पञ्चम गाव ।
ॠतु वसन्त विदेस वालभु मानस दहो दिस धाव साजनिआ ॥२॥
तेजल तेल तमोल तापन सपन निशि सुख रङ्ग ।
हेमन्त विरह अनन्त पाविय सुमरि सुमरि पिया सङ्ग साजनिआ ॥४॥
मोर दादुर सोर अहोनिसि वरिस वुँद सवुन्द ।
विषम वारिस विना रघुवर विरहिनि जीवन अन्त साजनिया ॥६॥
सुमुखि धैरज सकल सिधि मिल सुनह कत सुत्रानि ।
सिसिर सुभ दिन राम रघुवर आओव तुय गुन जानि साजनिआ ॥८॥

—०—

विक्रम।

३

कीर कुटिल मुख न बुझ वेदन दुख बोल वचन परमाने।
विरह वेदन दह कोक करुणा सह सरुप कहत के आने ॥२॥
हरि हरि मोरि उरवासि की भेली।
जोहइते धावओ कतहु न पावओ मुरछि खसओं कत बेली ॥४॥
गिरि नरि तरुअर कोकिल भ्रमर वर हरिन हाथि हिमधामा।
सभक परओं पय सवे भेल निरदय के ओ न कहे तसु नामा ॥६॥
मधुर मधुर धुनि नेपुर रवसुनि भमओं तरङ्गिनि तीरे।
मोरे करमे कलहंस नाद भेल नयन विमुञ्चों नीरे ॥८॥
हरि हरि कोन परि मिलति से परसनि कवि विद्यापति भाने।
लखिमा देविपति सकल सुजन गति नृप शिवसिंह रस जाने ॥१०॥

——:०:——

४

कुन्द परिमल सङ्ग सुन्दर नव्य पल्लव पूजिते।
कामदैवत कर्म्म निर्म्मित कोकिलाकलकूजिते ॥२॥
देहि नवीन देव दैव समीर विभ्रति त्रोधति विभ्रमे।
माधवी लतया समं परिनृत्यतीव वनद्रुमे ॥४॥
माधव मास मधु समये राजति राधा रभसमये ॥६॥

विरहि चित्त विभेद लक्षण चूत मुकुल भयङ्करे ।
पाटला मधुलब्ध मधुकर निकर नाद मनोहरे ॥८॥
चन्द्र चन्दन कुङ्कमा गुरुहार कुन्तल मण्डिता ।
हार भार विलास कौशल निधुवन क्षण पण्डिता ॥१०॥
कुलिशकठिना कठिन मानस सावसीदति सुन्दरी ।
दुर्ब्बलाति दुराशया वरवेदि मध्य कृशोदरी ॥१२॥
गच्छ गच्छ वदन्ति किन्तव सानुजीवति कामिनी ।
पद्ममिव मधुपावली नव शस्त्र मिवा मधुयामिनी ॥१४॥
अन्यया सा शरणमेष्यति विरहि खेद निवारणम् ।
देवसिंह नरेन्द्र नन्दन सिद्ध मिद्ध मिवारणम् ॥१६॥
भूमिपति शिवसिंह देवमनन्त विक्रम साहसं ।
सुकवि विद्यापति निवेदित मुदित काम कलारसं ॥१८॥

—:o:—

५

माइ हे वालम्भु अवहु न आव ।
जाहि देस सखि न मनोभव भाव ॥ २ ॥
तरुण शाल रसाल कानन कुञ्ज कुडमल पुष्पिते ।
पद्म पाटलि परम परिमल वकुल सङ्कुल विकाशिते ॥ ४ ॥
अरुण किसलय राग मुद्रित मञ्जरी भर लम्बिते ।

विक्रम।

३

कीर कुटिल मुख न बुझ वेदन दुख बोल वचन परमाने।
विरह वेदन दह कोक करुणा सह सरुप कहत के आने ॥२॥
हरि हरि मोरि उरवसि की भेली।
जोहइते धावओ कतहु न पावओ मुरछि खसओं कत बेली ॥४॥
गिरि नरि तरुअर कोकिल भ्रमर वर हरिन हाथि हिमधामा।
सभक परओँ पय सबे भेल निरदय केओ न कहे तसु नामा ॥६॥
मधुर मधुर धुनि नेपुर रवसुनि भमओं तरङ्गिनि तीरे।
मोरे करमे कलहंस नाद भेल नयन विमुञ्चों नीरे ॥८॥
हरि हरि कोन परि मिलति से परसनि कवि विद्यापति भाने।
लखिमा देविपति सकल सुजन गति नृप शिवसिंह रस जाने ॥१०॥

——:०:——

४

कुन्द परिमल सङ्ग सुन्दर नव्य पल्लव पूजिते।
कामदैवत कर्म्म निर्म्मित कोकिलाकलकूजिते ॥२॥
देहि नवीन देव दैव समीर विभ्राति वोधति विभ्रमे।
माधवी लतया समं परिनृत्यतीव वनद्रुमे ॥४॥
माधव मास मधु समये राजति राधा रमसमये ॥६॥

विरहि चित्त विभेद लक्षण चूत मुकुल भयङ्करे ।
पाटला मधुलब्ध मधुकर निकर नाद मनोहरे ॥८॥
चन्द्र चन्दन कुङ्कमा गुरुहार कुन्तल मण्डिता ।
हार भार विलास कौशल निधुवन क्षण पण्डिता ॥१०॥
कुलिशकठिना कठिन मानस सावसीदति सुन्दरी ।
दुर्व्वलाति दुराशया वरवेदि मध्य कृशोदरी ॥१२॥
गच्छ गच्छ वदन्ति किन्तव सानुजीवति कामिनी ।
पद्ममिव मधुपावली नव शस्त्र मिवा मधुयामिनी ॥१४॥
अन्यथा सा शरणमेष्यति विरहि खेद निवारणम् ।
देवसिंह नरेन्द्र नन्दन सिद्ध मिद्ध मिवारणम् ॥१६॥
भूमिपति शिवसिंह देवमनन्त विक्रम साहसं ।
सुकवि विद्यापति निवेदित मुदित काम कलारस ॥१८॥

——०——

५

माइ हे बालम्भु अबहु न आव ।
जाहि देस सखि न मनोभव भाव ॥ २ ॥
तरुण शाल रसाल कानन कुञ्ज कुडमल पुष्पिते ।
पद्म पाटलि परम परिमल वकुल सङ्कुल विकाशिते ॥ ४ ॥
अरुण किसलय राग मुद्रित मञ्जरी भर लम्बिते ।

मधुलुब्ध मधुकर निकर मुद्रित लोभ चुम्बन चुम्बिते ॥ ६ ॥
चुम्बति मधुकर कुसुम पराग । कोरक परसे वाढ़ल अनुराग ॥ ८ ॥
चौदिस कर ए भृङ्ग झँकार । से सुनि वाढ़य मदन विकार ॥१०॥
चीर चन्दन चन्द्रतारक पावको सम मानसे ।
हार कालभुजङ्गमेव हि विष सरस घन रस चय विसे ॥१२॥
मानिनी मन मानहारक कोकिलारव कलकले ।
वह ए मारुत मलय संयुत सरल सौरभ शीतले ॥१४॥
शीतल दखिन पवन वह मन्द । ता तनु ताव ए चान्दन चन्द ॥१६॥
हृदय हार भेल भुजग समान । कोकिल कलरवे पिड़ल परान ॥१८॥
शरद निर्म्मल पूर्णचन्द्र सुवक्तृ सुन्दर लोचनी ।
कथं सीदति सुन्दरी । प्रिय विरह दुःख विमोचिनी ॥२०॥
ताहि तर तरुण पयोधर धनी । ओजा शङ्कर कृष्णाजनी ॥२२॥
अवसर पाउति एति खने विद्यापति कवि सुदृढ़ भने ॥२४॥

—:०:—

६

गोर पयोधर नखरेख सुन्दर मृगमद पङ्के लेपला ।
जनि सुमेरु ससि खण्ड उदित भेल जलधर जाले झपला ॥ २ ॥
अभिसारिनि हे कपट करह कॉ लागी ।
कोन पुरुष गुने लुबुध तोहर मन रयनि गमउलह जागी ॥ ४ ॥

विजावइ कविवर एहु गावए मानव मन आनन्द भएओ ।
सिंहासन सिवसिंह वइट्ठो उच्छवै वैरस विसरि गएओ ॥१४॥

शिवसिंह का युद्ध ।

१०

दूर दुग्गम दमसि भञ्जे ओ   गाड़ गड़ गूठीअ गञ्जे ओ
पातिसाह ससीम सीमा समर दरसेओ रे ॥१॥
ढोल तरल निशान सद्दहि   भेरि काहल सङ्ख नद्दहि
तीनि भुअन निकेत केतकि सन भरिओ रे ॥२॥
कोहे नीरे पयान चालि ओ   वायु मध्ये राय गरु ओ
तरणि तेअ तुलाधार परताप गहिओ रे ॥३॥
मेरु कनक सुमेरु कम्पिय   धरणि पूरिय गगन झम्पिय
हाति तुरय पदाति पयभर कमन सहिओ रे ॥४॥
तरल तर तरवारि रङ्गे   विज्जुदाम छटा तरङ्गे
घोर धन सङ्घात वारिस काल दरसेओ रे ॥५॥
तुरय कोटि चाप चूरिय   चार दिस चौ विदिस पूरिय
विषम सार आसार धारा धोरनी भरिओ ॥६॥
अन्ध कुअ कवन्ध लाइअ   फेरवि फफ्फारिस गाइअ
रुहिर मत्त परेत भूत वेताल विछलिओ ॥७॥

उत्तर ।

पुरुव देखल पय सपने न देखिअ ऐसनि न करवि वुधा ।
रस सिङ्गार पार के पाओत अमोल मनोभव सिधा ॥
भनइ विद्यापति अरे वरजौवति जानल सकल मरमे ।
शिवसिंह राय तोरा मन जागल कान्ह कान्ह करसि भरमे ॥ ८ ॥

——:०:——

६

शिवसिंह का सिंहासनारोहण ।

अनँल रन्ध्र करँ लक्खन नरवए सक समुँद करँ आगँनि ससी ।
चैत कारि छठि जेठा मिलिओ वार वेहप्पए जाउलसी ॥ २ ॥
देवसिंहे जं पुहवी छड्डिअ अद्धासन सुरराए सरु ।
दुहु सुरतान नीन्दे अवे सोअउ तपन हीन जग तिमिरे भरु ॥ ४ ॥
देखहु ओ पृथिमी के राजा पौरुस माझ पुन्न वलिओ ।
सतवले गङ्गा मिलित कलेवर देवसिंह सुरपुर चलिओ ॥ ६ ॥
एक दिस ससकल जीवन वल चलिओ ओका दिस से जम राए चरु ।
दूअओ दलटि मनोरथ पूरे ओ गरुअ दाप सिवसिंहे करु ॥ ८ ॥
सुरतरु कुसुम घालि दिस पूरे ओ दुन्दुहि सुन्दर साद धरु ।
वीरछत्त देखनको कारन सुरगन सते गगन भरु ॥१०॥
आरम्भिअ अन्तेठ्ठि महामख राजसूय असमेध जहाँ ।
पण्डित घर आचार वखानिअ ज़ाचकको घर दान कहाँ ॥१२॥

विज्जावइ कविवर एहु गावए मानव मन आनन्द भएओ ।
सिंहासन सिवसिंह वइट्ठो उच्छवे वैरस विसरि गएओ ॥१४॥

———:०:———

शिवसिंह का युद्ध ।

१०

दूर दुग्गम दमसि भञ्जेओ गाढ़ गड़ गूठीअ गञ्जेओ
पातिसाह ससीम सीमा समर दरसेओ रे ॥१॥
ढोल तरल निशान सद्दहि भेरि काहल सङ्ख नद्दहि
तीनि भुअन निकेत केतकि सन भरिओ रे ॥२॥
कोहे नीरे पयान चलिओ वायु मध्ये राय गरुओ
तरणि तेअ तुलाधार परताप गहिओ रे ॥३॥
मेरु कनक सुमेरु कम्पिय धरणि पूरिय गगन झम्पिय
हाति तुरय पदाति पयभर कमन सहिओ रे ॥४॥
तरल तर तरवारि रङ्गे विज्जुदाम छटा तरङ्गे
घोर घन सङ्घात वारिस काल दरसेओ रे ॥५॥
तुरय कोटि चाप चूरिय चार दिस चौ विदिस पूरिय
विषम सार आसार धारा धोरनी भरिओ ॥६॥
अन्ध कुअ कवन्ध लाइअ फेरवि फफ्फरिस गाइअ
रुहिर मत्त परेत भूत वेताल विछलिओ ॥७॥

पार भइ परिपन्थि गञ्जिअ   भमि मराडल मुराडे मरिडअ
चारु चन्द्र कलेव कीत्ति सुकेत की तुलिओ ॥८॥
राम रुपे स्वधरम रखिखअ   दान दप्पे दधाचि खखिअ
सुकवि नव जयदेव भनिओ रे ॥६॥
देवसिंह नरेन्द्र नन्दन   शत्रु नरवइ कुल निकन्दन
सिंह सम सिवसिंह राया सकल गुनक निधान गाणिओ रे ॥१०॥

——:o:——

११

सपन देखल हम शिवसिंह भूप । वतिस बरस पर सामर रुप ॥ २ ॥
बहुत देखल गुरुजन प्राचीन । आब भेलहु हम आयु बिहीन ॥ ४ ॥
समटु समटु निअ लोचन नीर । ककरहु काल न राखथि थीर ॥ ६ ॥
विद्यापति सुगतिक प्रस्ताव । त्याग के करुणा रसक स्वभाव ॥ ८ ॥

——:o:——

१२

दुल्लहि तोहरि कत ए छथि माय । कहु न ओ आवथु एखन नहाय ॥ २ ॥
वृथा बुझथु संसार विलास । पल पल नाना तरहक त्रास ॥ ४ ॥
माय वाप जों सदगति पाव । सन्तति कॉ अनुपम सुख आव ॥ ६ ॥
विद्यापति आयु अवसान । कातिक धवल त्रयोदशि जान ॥ ८ ॥

——:o:——

सुरमुनिमनुज रचित पूजोचित कुसुम विचित्रित तीरे ।
त्रिनयन मौलि जटाचय चुम्बन भूति भूषित सित नीरे ॥६॥
हरिपद कमलगलित मधुसोदर पुण्य पुनित सुर लोके ।
प्रविलसदमरपुरीपद दान विधान विनाशित शोके ॥८॥
सहजदयालुतया पातकि जन नरक विनाश निपुणे ।
रुद्रसिंह नरपति वरदायक विद्यापति कवि भणितगुणे ॥२०॥

—— ० ——

१३

तोहैं जलधर सहजहि जलराज । हमे चातक जलविन्दुक काज ॥ २ ॥
जल दए जलद जीव मोर राख । अवसर देले सहस हो लाख ॥ ४ ॥
तनु देअ चाँद राहु कर पान । कवहु कला नहि होअ मलान ॥ ६ ॥
वैभव गेले रह ए विवेक । तइसन पुरुख लाख थिक एक ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति दूती से । दुइ मन मेल कराव एजे ॥१०॥

——•०•——

परकीया नायिका।

१

अपर पयोधि मगन भेल सूर। नाखि कुलें सङ्कुल बाट बिदूर ॥ २ ॥
नरि परिहरि नाविक धर गेल। पथिक गमन पथ संसय भेल ॥ ४ ॥
अनत ए पथिक करि अ परवास। हमे धनि एकालि कन्त नहि पास ॥ ६ ॥
एके चिन्ता अओके मनमथ सोस। दसमि दसा मोहि कओनक दोस ॥ ८ ॥
रअनि न जाग साखि जन मोर। अनुखन सगर नगर भम चोर ॥१०॥
तोहे तरुनत हमे बिरहिनि नारि। उचितहु वचन उपज कुल गारि ॥१२॥
वामा वचन वाम पथ धाव। अपन मनोरय उकुति बुझाव ॥१४॥
भनइ विद्यापति नारि सआनि। मल कए रखलक दुहु अनुमानि ॥१६॥

—o—

२

अपना मन्दिर वैसलि अछलहु घर नहि दोसर केवा।
तहिखने पहिआ पाहुन आएल बरिसए लागल देवा ॥२॥
के जान कि बोलति पिसुन परौसिनि वचनक भेल अवकासे ॥३॥
घर अन्धार निरन्तर धारा दिवसहि रजनी भाने।
कओनक कहव हमे के पतिआएत जगत विदित पचवाने ॥५॥

—o—

३

परतह परदेश परहिक आस विमुख न करिअ अवस दिअ वास ॥२॥
एतहि जानिअ सखि पियतम कथा ॥३॥
भल मन्द ननन्द हे मने अनुमानि पथिकके न बोलिअ टुटलि वानि ॥५॥
चरण पखालल आसन दान मधुरहि वचने करिअ समधान ॥७॥
ए सखि अनुचित एते दुर जाइ आव करिअ जत अधिक बड़ाइ ॥६॥

—o—

४

कमल मिलल दल मधूप चलल घर
विहगे गहल निज ठामे ।
अरे रे पथिक जन थिर रे करिय मन
बड़ पाँतर दुर गामे ॥२॥
ननदि रुसिए रहु परदेश वस पहु
सासुहि न सुभ समाजे ।
निठुर समाज पुछार उदासिन
आओर कि कहव वेआजे ॥४॥
चन्दन चारु चम्प घन चामर
अगर कुङ्कुम घरवासे ।
परिमल लोभे पथिक नित सञ्चर
तँइ नहि बोलय उदासे ॥६॥

नायिका।

आवह वैसह पिव लह पानि। जे तोँ खोजवह से देव आनि॥ ८॥
ससुर भैंसुर मोर गेलाह विदेस। स्वामिनाथ गेल छथि तनिक उदेस॥१०॥
सासुघर आह्लरि नैन नहि सूझ। वालक मोर वचन नहि बूझ।
भनहि विद्यापति अपरूप नेह। येहन विरह हो तेहन सिनेह॥ १२॥

—०—

१२

पिया मोर वालक हम तरुणी। कोन तप चुकलौँह भेलौँह जननी॥ २॥
पहिर लेल सखि एक दछिनक चीर। पिया के देखैति मोर दगध शरीर॥ ४॥
पिया लेलि गोदकेँ चललि बजार। हटियाक लोक पुछे के लागु तोहार॥ ६॥
नहि मोर देओर कि नहि छोट भाइ। पुरव लिखल छल स्वामी हमार॥ ८॥
वाट रे बटोहिया कि तोँही मोर भाइ। हमरो समाद नैहर लेनें जाहु॥१०॥
क़हिहुन ववा किनय धेनु गाइ। दुधवा पिलायकेँ पोसत जमाइ॥१२॥
नहि मोरा टका अछि नहि धेनु गाइ। कओनइ विधि पोसव वालक जमाइ॥१४॥
भनइ विद्यापति सुनु ब्रज नारी। धैरज धय रहु मिलत मुरारी॥१६॥

—०—

१३

मोरा हिरे अङ्गना पाकड़ी सुनु वालहिआ।
पटेवा आउअ वास परम हरि वालहिआ॥ २॥

चल चल पथुक चलह पथ माह । वास नगर बोलि अनतहु याह ॥ ६ ॥
ऑतर पॉतर साँझक वेरि । परदेस वसिअ अनागत हेरि ॥ ८ ॥
घोर पयोधर जामिनि भेद । जेकर रह ताकर परिछेद ॥१०॥
भनइ विद्यापति नागरि रीति । व्याज वचने उपजाव पिरीति ॥१२॥

—— o ——

१०

हमराहु घर नहि घरिनिक लेस । तें कारने गुनिअ परदेस ॥ २ ॥
नाना रतन अछए मझु हाथ । सेवक चाकर केओ नहि साथ ॥ ४ ॥
सहजक भीरु थिकाहु मतिभोर । रअनि जगाए के करत अगोर ॥ ६ ॥
वैसि गमाओव कओनक माझ । अवगुन अछए रतऊँधी साँझ ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति छइल सोभाव । नागर पथुक उकुति विरमाव ॥१०॥

—— o ——

११

पथिक ।

सुन्दरि हे तोँ सुबुधि सेयानि । मरी पियास पियावह पानि ॥ २ ॥

परकीया नायिका ।

के तोँ थिकार ककर कुल जानि । बिनु परिचय नहि देव पिढ़ि पानी ॥ ४ ॥

पथिक ।

थिकहुँ पथुकजन राजकुमार । धनि के विओ भरमि संसार ॥६॥

नायिका ।

आवह वैसह पिव लह पानि । जे तोँ खोजवह से देव आनि ॥ ८ ॥
ससुर भैँसुर मोर गेलाह विदेस । स्वामिनाथ गेल छथि तनिक उदेस ॥१०॥
सासुघर आह्लुरि नैन नहि सूभ । बालक मोर वचन नहि बूभ ।
भनहि विद्यापति अपरूप नेह । येहन विरह हो तेहन सिनेह ॥ १२ ॥

—— ० ——

१२

पिया मोर बालक हम तरुणी । कोन तप चुकलौँह भेलौँह जननी ॥ २ ॥
पहिर लेल सखि एक दछिनक चीर । पिया के देखैति मोर दगध शरीर ॥ ४ ॥
पिया लेलि गोदकँ चललि बजार । हटियाक लोक पुछे के लागु तोहार ॥ ६ ॥
नहि मोर देओर कि नहि छोट भाइ । पुरब लिखल छल स्वामी हमार ॥ ८ ॥
बाट रे बटोहिया कि तोँही मोर भाइ । हमरो समाद नैहर लेनेँ जाहु ॥१०॥
कहिहुन रवा किनय धेनु गाइ । दुधवा पिलायकँ पोसत जमाइ ॥१२॥
नहि मोरा टका अछि नहि धेनु गाइ । कओनइ विधि पोसब बालक जमाइ ॥१४॥
भनइ विद्यापति सुनु व्रज नारी । धैरज धय रहु मिलत मुरारी ॥१६॥

—— :० ——

१३

मोरा हिरे अङ्गना पाकड़ी सुनु वालहिआ ।
पटेवा आउअ वास परम हरि वालहिआ ॥ २ ॥

पटेवा भइश्रा हीत नीत सुन बाल हिश्रा ।
चोलरि एक विनि देहि परम हरि बालहिश्रा ॥ ४ ॥
जञो हमे चोलरि बीनही सुन बालहिश्रा ।
काह विन ञुनी देह परम हरि बालहिश्रा ॥ ६ ॥
लहुड़ी देउ रातासना सुन बालहिश्रा ।
ननद बिनउनी देञ परम हरि बालहिश्रा ॥ ८ ॥
चोलरि पहिरि हमे हाट गञे सुन बालहिश्रा ।
चोर परीखन लागु परम हरि बालहिश्रा ॥१०॥
विद्यापति कवि गाविश्रा सुन बालहिश्रा ।
राए शिवसिंह गुन जान परम हरि बालहिश्रा ॥११॥

—:०:—

१४

मोराहि जे अँगना चँदनकेर गाछे । सौरभे आव ए भमर पचासे ॥ २ ॥
अरे अरे भमरा न फेरु कवारे । ऑचर सुतल अछ पदुम कुमारे ॥ ४ ॥
सङ्गहि सखिए सुत देहरि भइसूरे । कइसे कए बाहर होएव बाजत नेपूरे ॥ ६ ॥
गोड़हुक नेपुर भेल जिव काले । नहु नहु पएर दश्रॉ उठ झँमकारे ॥ ८ ॥
माइ वापे दए हलु नेपुर गढाइ । नेपुर भँगवइते जिव अँकुराइ ॥१०॥
भनइ विद्यापति एहु रस जाने । राए सिवसिंह लखिमा रमाने ॥१२॥

—०—

रूपक ।

१५

हमे धनि कूटनि परिनति नारि । वैसहु वास न कहों विचारि ॥ २ ॥
काहुके पान काहु दिअ सान । कत न हकारि कयल अपमान ॥ ४ ॥
कय परमाद धिया मोर भेल । आहे यौवन कतय चल गेल ॥ ६ ॥
भाङ्गल कपोल अलक भरि साजु । सङ्कुल लोचने काजर आजु ॥ ८ ॥
धवला केस कुसुम करु वास । अधिक सिङ्गारे अधिक उपहास ॥१०॥
घोथर थैया थन दुओ भेल । गरुअ नितम्ब कहाँ चल गेल ॥१२॥
यौवन शेष सुखाएल अङ्ग । पाछु हेरि विलुलइते उमत अनङ्ग ॥१४॥
खने खस घोघट विघट समाज । खने खने आव हकारलि लाज ॥१६॥
भनहि विद्यापति रस नहि छेओ । हासिनि देविपति देवसिंह देओ ॥१८॥

—०—

प्रहेलिका ।

१

कुसुमित कानन कुञ्ज वसि । नयनक काजर घोरि मसि ॥ २ ॥
नखसों लिखल नलिनी दल पात । लीखि पठाओल आखर सात ॥ ४ ॥
पहिलहि लिखलनि पहिल वसन्त । दोसरेंलिखलनि तेसरक अन्त ॥ ६ ॥
लिखि नहि सकलि अनुज वसन्त । पहिलहि पद अछि जीवक अन्त ॥ ८ ॥
भनहि विद्यापति आखर लेख । बुँध जन हो से कहय विशेख ॥१०॥

—— ० ——

२

प्रथम एकादश दइ पहु गेल । सेहो रे वितल कते दिन भेल ॥ २ ॥
ऋतु अवतार वयस मोर भेल । तइओ न पहु मोर दरशन देल ॥ ४ ॥
चान किरण मोहि सहलो नइ जाय । चानन शीतल मोहि न शोहाय ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति शुनु व्रजनारि । धैरज धैरह मिलत मुरारि ॥ ८ ॥

—— ०, ——

३

सिन्धु सुतापति दुति गेल माइहे निरधिनी वापूरे ।
केवा विगलित पुलकित माइ हे से देखि हिअरा भूरे ॥२॥
मोर पिआर गगन भरि आएल न अएले मोर पिआरा ॥३॥
मालि मउलि हस वालम्भु विदेस वस अहि भोअने महि पूरे ।
सरअ सरोज वन्धु कर वञ्चित कुमुद मुद दिनकरे ॥५॥

सखि हे कमलनयन परदेस ।
हमे अबला अतिदीन दुखित मति श्रवने न सुनिअ सन्देस ॥७॥
चातक पोतक हरखित नाचथि सुखे सिखि नाचथि रङ्गे ।
कन्त कोर पइसि चपला विलसथि से देखि झामर अङ्गे ॥९॥
नलिनी नीरे लुकाइलि माइ हे कन्त न आएल पास ।
भमर चरन पञ्चासे अधिक अध वसु तेजि करति गरास ॥११॥

—o—

४

नव हरि तिलक वैरी सख यामिनी कामिनी कोमल काँति ।
यमुना जनक तनय रिपु घरणी सोदर सुय कर शाति ॥२॥
माधव तुय गुने लुबधलि रमनी ।
अनुदिने खीन तनु दनुज दमन धनी भवनज वाहन गमनी ॥४॥
दाहिन हरितह पाव पराभव एत सबे सह तुय लागी ।
वेरि एक शर सागर गुनि खाइति वधक होयब तोहें भागी ॥६॥
सारङ्ग साद विषाद बढावय पिक धुनि सुनि पछतावे ।
अदितितनय भोअन रुचि सुन्दर दशमी दशा लग आवे ॥८॥
विद्यापति भन गुनि अबला जन समुचित चलु निअ गेहा ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन लखिमा लखिमी देहा ॥१०॥

—o—

५

हरि सम आनन हरि सम लोचन हरि तह हरि वर आगी ।
हरिहि चाहि हरि हरि न सोहावए हरि हरि कए उठ जागी ॥२॥
माधव हरि रहु जलधर छाइ ।
हरि नयनी धनि हरि घरिनी जति हरि हेरइते दिन जाइ ॥४॥
हरि भेल भार हार भेल हरि सम हरिक बचन न सोहावे ।
हरिहि पइसि जे हरि जे नुकाएल हरि चढ़ि मोर बुझावे ॥६॥
हरिहि वचने पुनु हरि सञो दरसन सुकवि विद्यापति भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनराअन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

—.o:—

६

दखिन पवन वह मदन धनुषि गह तेजल सखी जन मेरी ।
हरि रिपु रिपु तासु तनय रिपु कए रहु ताहरि सेरी ॥२॥
माधव तुअ विनु धनि बड़ि खिनी ।
वचन धरब मन बहुत खेद कर अदबुद ताहेरि कहिनी ॥४॥
मलयानिल हार तसु पीव ए मनमथ ताहि डराइ ।
आतुर भए जत डरहि निवारव तुअ विनु विरह न जाइ ॥६॥

— o —

७

माधव आवे बूझल तुअ साजे ।
पञ्च दुन दह दुन दह गुन माए गुन से देलह कोन काजे ॥२॥

माधव तुअ गुणे धनि बड़ि खीनी ।
महिखातनअ भान छिल ता विधु देह दुबरि ता जीनी ॥४॥
राजाभसन दरस कराठीरव अछिक दहिन सतावे ।
लाए तमोर जीवे तवे खाइति जदि न आओव परथावे ॥६॥
काकोदर प्रभु रिपुध्वज किङ्कर विद्यापति कवि भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनराअन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

—— o ——

१२

द्विज आहर आहर सुत नन्दन सुत आहर सुत रामा ।
वनज वन्धु सुत सुत दए सुन्दरि चललि सङ्केतक ठामा ॥२॥
माधव बूझल कला विशेखी ।
तुअ गुण लुबुधलि पेम पिआसलि माधव आइलि उपेखी ॥४॥
हरि अरि पति ता सुअ वाहन जुवति नाम तसु होइ ।
गोपति पति अरि सह मिलु वाहन विरमति कबहु न होइ ॥६॥
नागरि नाम जोग धनि आव हरि अरि अरिपति जाने ।
नउमि दसाहे एके मिलु कामिनि सुकवि विद्यापति भाने ॥८॥

—— o ——

१३

हरि रिपु रिपु प्रभु तनय से घरिनि ।
विबुधालन सम वचन सोहाओन

९

जननी असन वाहन के भासा सारग अरि कर सादे ।
ते दुहु मिलित नाम एक दुरजन तेँ मोहि परम बिषादे ॥२॥
सखि हे रमन भवन परवासी ।
ऋतुपति राए आय संप्रापत तेँ भउ परम उदासी ॥४॥
सुर अरि गुरु वाहन रिपु ता रिपु ता रिपु अनुखने तावे ।
हरि कपट नपति तासु अनुज हित से मोहि अवहु न आवे ॥६॥

—o.—

१०

हरि पति वैरि सखा सम तामसि रहसि गमावसि रोइ ।
समन पिता सुत रिपु घरिनी सख सुत तनु वेदन होइ ॥२॥
माधव तुअ गुने धनि बड़ि खानी ।
पुररिपु तिथि रजनी रजनीकर ताहू तह बड़ि हीनी ॥४॥
दिविषद पति सुअ सुअ रिपु वाहन भख भख दाहिन मन्दा ।
ब्रह्मनाद सर गुनिकहु खाइति छाड़ि जाएत सबे दन्दा ॥६॥
सारङ्ग साद कुलिस कए मान ए विद्यापति कवि भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

—.o:—

११

अजर धुनी जनि रिपु सुअ घरिनि ता वन्धु न देअए राही ।
तेसर दिगपति पतने सतावए बड़ वेदन हरि चाही ॥२॥

माधव तुअ गुणे धनि बड़ि खीनी ।
महिखातनअ भान छिल ता विधु देह दुबरि ता जीनी ॥४॥
राजाभसन दरस कण्ठीरव अछिक दहिन सतावे ।
लाए तमोर जीवे तवे खाइति जदि न आओव परथावे ॥६॥
काकोदर प्रभु रिपुध्वज किङ्कर विद्यापति कवि भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनराअन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

—— ०——

१२

द्विज आहर आहर सुत नन्दन सुत आहर सुत रामा ।
वनज वन्धु सुत सुत दए सुन्दरि चललि सङ्केतक ठामा ॥२॥
माधव बूझल कला विशेखी ।
तुअ गुण लुबुधलि पेम पिआसलि माधव आइलि उपेखी ॥४॥
हरि अरि पति ता सुअ वाहन जुवति नाम तसु होइ ।
गोपति पति अरि सह मिलु वाहन विरमति कबहु न होइ ॥६॥
नागरि नाम जोग धनि आव हरि अरि अरिपति जाने ।
नउमि दसाहे एके मिलु कामिनि सुकवि विद्यापति भाने ॥८॥

—— ०——

१३

हरि रिपु रिपु प्रभु तनय से घरिनि ।
विबुधासन सम बचन सोहाओन कमलासन सम गमनी ॥२॥

साए साए जाइते देखलि मग ।
जिन ए आइलि जग विबुधाधिप पुर गोरी ॥३॥
धटज असन सुत ताहेरि तइसन मुख चञ्चल नयन चकोरा ।
हेरितहि सुन्दरि हरि जनि लए गेलि हररिपुवाहन मोरा ॥५॥
उदधितनय सुत सिन्दुरे लोटाएल हासे देखलि रदकाँति ।
खटपदवाहन कोष वइसाओल विहिलिहु सिखरक पाँती ॥७॥
रविसुत तनअ दइए गेलि सुन्दरि विद्यापति कवि भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनराअन लखिमा देवि रमाने ॥९॥

—— ० ——

१४

हरि रिपु रिपु सुअ अरि भूषन ता भोअन अछ ठामे ।
पाँचवदन अरि वाहन ता प्रभु ता प्रभु लेइ अछ नामे ॥२॥
माधव कत परवोधलि रामा ।
सुरभि तनय पति भूषन सिरोमनि रहत जनम भरि ठामा ॥४॥
कत दिन राखति आसे ।
शङ्कर वान वेद गुनि खाइति यदि न आओव तोहे पासे ॥६॥
सुरतनया सुत दए परवोधलि वाढ़ति कओन वड़ाइ ।
अम्बर सेख लेखि कए छाड़ति विहि हलु छभगर छड़ाइ ॥८॥
भनइ विद्यापति सुन वर जउवति तोहँ अछ जीवन अधारे ।
शिवसिंह रूपनराएन एकादस अवतारे ॥१०॥

—— ० ——

१५

विरह अनल आनि जुड़ावए सीतल सीकर आनि ।
सैलवती सुत दरसने मुरुछिखस सयानि ॥२॥
माधव कह कि करति नारि ।
गिरि सुता पति हार विरोधी गामी तनय धारि ॥४॥
अति जे विकलि चित न चेत ए दूरे परीहर हार ।
विहगवल्लभ असन असन से सखि सह ए न पार ॥६॥
दरसे चन्दन मिडि नडाव ए करे न कुसुम लेय ।
हरि भगिनी नन्दन वालहि सोदर किछु न देय ॥८॥
अधिक आधि वेआधि वढ़ाउलि दिनहु दुवर काए ।
आजे जमपुर सगर नगर उजर देति बसाए ॥१०॥

—— ० ——

१६

पङ्कजवन्धुवैरिको बन्धव तसु सम आनन सोभे ।
नयन चकोर जोड़ जनि सञ्चर तथिहु सुधारस लोभे ॥२॥
सखि हे जाइते देखलि वर रमणी ।
हरकङ्कन आनन सम लोचन तसु वरवाहन गमनी ॥४॥
सैसव दसा दोने परिपाललि तसु सम वोलइते ।
गिरिजापति रिपु रूप मनोहर विहि निरमाओ ॥
सिन्धु वन्धु गिरि तात सहोयर पीन पयोधर
दुइ पय छाड़ि तेसर नहि सञ्चर हारा सुर ।

साए साए जाइते देखलि मग ।
जिन ए आइलि जग विबुधाधिप पुर गोरी ॥३॥
घटज असन सुत ताहेरि तइसन मुख चञ्चल नयन चकोरा ।
हेरितहि सुन्दरि हरि जनि लए गेलि हररिपुवाहन मोरा ॥५॥
उदधितनय सुत सिन्दुरे लोटाएल हासे देखलि रदकाँति ।
खटपदवाहन कोष वइसाओल विहिलिहु सिखरक पाँती ॥७॥
रविसुत तनञ दइए गेलि सुन्दरि विद्यापति कवि भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनराअन लखिमा देवि रमाने ॥६॥

—— ० ——

१४

हरि रिपु रिपु सुअ अरि भूषन ता भोअन अछ ठामे ।
पाँचवदन अरि वाहन ता प्रभु ता प्रभु लेइ अछ नामे ॥२॥
माधव कत परवोधलि रामा ।
सुरभि तनय पति भूषन सिरोमनि रहत जनम भरि ठामा ॥४॥
कत दिन राखति आसे ।
शङ्कर वान वेद गुनि खाइति यदि न आओव तोहे पासे ॥६॥
सुरतनया सुत दए परवोधलि वाढ़ति कओन वड़ाइ ।
अम्बर सेख लेखि कए छाड़ति विहि हलु छमगर छड़ाइ ॥८॥
भनइ विद्यापति सुन वर जउवति तोहँ अछ जीवन अधारे ।
जा। शिवसिंह रूपनराएन एकादस अवतारे ॥१०॥

नयन सिंगार बाहु लिखि राख । करति बरत रवि शिव शिव राख ॥१४॥
भनइ विद्यापति आखर लेख । बुध जन हो से कह ए बिसेख ॥१६॥

—:o:—

१६

माधव देखलि मोञे सा अनुरागी ।
मलयज रज लए सम्भु उकुति कए उरज पुज ए तुअ लागी ॥२॥
भव हित अरि भगिनी पति जननी तनय तात बन्धु रुपे ।
नागसिरज सिर सोभ दुखज सम देखल बदन सरुपे ॥४॥
खगपति पतिप्रिय जनक तनय सम वचने निरुपलि रमनी ।
सुरपति अरि दुहिता बरवाहन तसु असन सम गमनी ॥६॥
तुअ दरसन लागि ऊपजल बिपधर सुकवि विद्यापति भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनराअन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

—o:—

२०

वसु बिस पावे हरल पिआ मोर । अन्ध तनअ प्रिय से ओ भेल थोर ॥ २ ॥
जिवसञो पञ्चम से तनु जार । मधुरिपु मलय पवन पिक मार ॥ ४ ॥
पहिलुक दोसर आइति गेल । आदिक तेसर अनाएत भेल ॥ ६ ॥
सूर प्रिया सुत तन्हिकर [illegible] २ते खिन भेल गात ॥ ८ ॥
आवे जाएत जिव पातक तो [illegible] जिव मोहि ॥१०॥
भनइ विद्यापति [illegible] मुरारि ॥१२॥

अपुरुव रुपे जे विहि निरमाउलि विद्यापति कवि भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन लखिमा देइ विरमाने ॥१०॥

—o—

१७

हर रिपु तनय तात रिपु भूषन ता चिन्ता मोहि लागी ।
तासु तनअ सुत ता सुत वन्धव उठलि चतुर धनि जागी ॥२॥
माधव तेँ तनु खिनि भेलि वाला ।
हरि हेरइते चिन्ताजे मने आकुलि कठिन मदन सर साला ॥४॥
पुनु चिन्तह हरि सारङ्ग सवद सुनि ता रिपु लए पए नामा ।
तासु तनअ सुत ता सुत बन्धव अपजस रह निज ठामा ॥६॥
तरणि तनअ सुत ता सुत वन्धव विद्यापति कवि भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

—o—

१८

ए हरि ए हरि कर अवधान । तुअ विनु करति भुअन ऋतु पान ॥
पचिस अठारह हरि तनु जार । क्षिति सुत तेसर नाम बरु मार ॥
छओ अठारह हरि सम लाग । खतखरिया जके मलयज जाग ॥
पहिल पचिस अठाइस लेव । तासु वदन हेम हरि देव ॥
हरिवाहन भख तइसन हार । कुच जुग भेल महीधर भार ॥१
हीत जत तत कर दन्द । विधि विपरीत सब ए भउ मन्द ॥१

नयन सिगार बाहु लिखि राख । करति बरत रवि शिव शिव राख ॥१४॥
भनइ विद्यापति आखर लेख । बुध जन हो से कह ए विसेख ॥१६॥

——:o:——

१६

माधव देखलि मोजे सा अनुरागी ।
मलयज रज लए सम्भु उकुति कए उरज पुज ए तुअ लागी ॥२॥
भव हित अरि भगिनी पति जननी तनय तात वन्धु रुपे ।
नागसिरज सिर सोभ दुखज सम देखल वदन सरुपे ॥४॥
खगपति पतिप्रिय जनक तनय सम वचने निरुपलि रमनी ।
सुरपति अरि दुहिता वरवाहन तसु असन सम गमनी ॥६॥
तुअ दरसन लागि ऊपजल विषधर सुकवि विद्यापति भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनराअन लखिमा देवि रमाने ॥८॥

——:o:——

२०

वसु विस पावे हरल पिआ मोर । अन्ध तनअ प्रिय से ओ भेल थोर ॥ २ ॥
जिवसञो पञ्चम से तनु जार । मधुरिपु मलय पवन पिक मार ॥ ४ ॥
पहिलुक दोसर आइति गेल । आदिक तेसर अनाएत भेल ॥ ६ ॥
सूर प्रिया सुत तन्हिकर तात । दिने दिने रखइते खिन भेल गात ॥ ८ ॥
आवे जाएत जिव पातक तोहि । वड़ कए मदने हनव जिव मोहि ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारी । चतुर चतुरभुज मिलत मुरारि ॥१२॥

——:o:——